एकार्थक कोश

पादवो व दुमो व त्ति, रुक्खो वा अगमो त्ति वा।
तधा थावरकायो त्ति विडवि त्ति व जो वदे।।

वाचना-प्रमुख
गणाधिपति तुलसी

प्रधान-संपादक
आचार्य महाप्रज्ञ

संपादक
मुनी दुलहराज
समणी कुसुम प्रज्ञा

एकार्थक कोश

(समानार्थक कोश)

वाचना-प्रमुख
आचार्य तुलसी

प्रधान-संपादक
युवाचार्य महाप्रज्ञ

संपादक
मुनि दुलहराज
समणी कुसुम प्रज्ञा

जैन विश्व भारती प्रकाशन

एकार्थक कोश

कोशश्चैव महीपानां, कोशश्च विदुषामपि।
उपयोगो महानेष, क्लेशस्तेन विना भवेत्॥

शक्तिग्रहं व्याकरणोपमानं,
कोशाप्तवाक्याद् व्यवहारतश्च।
वाक्यस्य शेषाद् विवृतेर्वदन्ति,
सान्निध्यत: सिद्धपदस्य वृद्धाः॥

संपादक
मुनि दुलहराज
समणी कुसुम प्रज्ञा

जैन विश्व भारती प्रकाशन

प्रकाशक : जैन विश्व भारती
लाडनूं (राजस्थान)

© जैन विश्व भारती, लाडनूं

द्वितीय संस्करण : सन् २००३

पृष्ठांक : ४००

मूल्य : १००/=

मुद्रक : कला भारती,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-३२

Managing Editer :
Shreechand Rampuria

© Jain Vishva Bharati, Ladnun

Second Edition : 2003

Pages : 440

Price : 100/—

Printers : Kala Bharati,
Naveen Shahdara, Delhi- 32

EKARTHAKA KOSA

(A Dictionary of Synonyms)

Vacana Pramukha
ACARYA TULSI

Chief Editor
YUVACARYA MAHAPRAJNA

EDITOR
Samani Kusumprajna

JAIN VISHVA BHARATI
LADNUN (RAJASTHAN)

आशीर्वचन

प्रस्तुत ग्रन्थ आगम कल्पवृक्ष की एक उपशाखा है। जैसे-जैसे समय बीता, वैसे-वैसे आगमवृक्ष का विस्तार हो गया। आगम शब्दकोश की कल्पना आगम-संपादन कार्य के साथ-साथ हुई थी, किन्तु उसकी क्रियान्विति उसके पचीस वर्षों बाद हुई। इस कार्य के लिए हमने शताधिक ग्रन्थों का चयन किया और वह कार्य प्रारंभ हो गया। इस विशाल कार्य में निरुक्त, एकार्थक शब्द, देशी शब्द आदि का पृथक् वर्गीकरण किया गया। इस आधार पर उस महान् कोश में से प्रस्तुत कोश का अवतरण हो गया। इस अवतरण कार्य में अनेक साध्वियों, समणियों और मुमुक्षु बहिनों ने अपना योग दिया है। इसे कोश का रूप दिया है **समणी कुसुमप्रज्ञा** ने। **मुनि दुलहराज** की श्रम-संयोजना और कल्पना ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह एक सुखद संयोग है कि आगम शब्दकोश तथा उसकी शाखा-विस्तार का सारा कार्य महिला जाति के द्वारा सम्पन्न हुआ है।

वैदिक और बौद्ध साहित्य में निरुक्त अथवा एकार्थक शब्दों पर कार्य हुआ है, किन्तु जैन आगम-साहित्य पर इस प्रकार का कार्य नहीं हुआ था। समीक्षात्मक और तुलनात्मक दृष्टि से इसमें कार्य करने का पर्याप्त अवकाश है, फिर भी प्रारंभिक स्तर पर जिस सामग्री का संकलन हुआ है, वह कम मूल्यवान् नहीं है।

जिन-जिन व्यक्तियों ने इस कार्य में अपना योग दिया है, उन्हें साधुवाद और उनके लिए मंगल भावना है कि उनकी कार्य-क्षमता उत्तरोत्तर बढ़े और समग्र आगम शब्दकोश की सम्पन्नता में उनका कर्तत्व और अधिक निखार पाए।

लाडनूं
१५-१-८४

आचार्य तुलसी
युवाचार्य महाप्रज्ञ

पुरोवचन

एकार्थक शब्दों का संकलन हम यास्क रचित निघण्टुकोश में पाते हैं। इसमें शब्दों का संकलन सुनियोजित रूप में किया गया है। प्रथम अध्याय में पृथ्वी, अंतरिक्ष, मेघ, नदी आदि वस्तुओं के एवं उनसे सम्बद्ध क्रियाओं के वाचक ४१५ पर्यायवाची शब्द संकलित हैं। द्वितीय अध्याय में मनुष्य एवं उसके अंगों आदि से सम्बद्ध ५१६ पर्यायवाची शब्द दिये गये हैं। तीसरे अध्याय में ४१० पर्यायवाची शब्दों का संग्रह है। इस प्रकार उत्तरवर्ती अध्यायों में भी एकार्थक शब्द संकलित हैं। पर्यायवाची शब्दों के एक समूह में से केवल एक-आध शब्द की ही व्याख्या यास्क ने की है। उदाहरणार्थ - गत्यर्थक १२२ शब्दों में से किसी भी शब्द द्वारा वाच्य गति विशेष का निरूपण नहीं किया गया है। केवल इतना ही कह दिया है कि १२२ धातुएं गत्यर्थक हैं। इस पर टिप्पणी करते हुए वृत्तिकार ने कहा है—"अत्र पुनर्यद्यपि गतिकर्मणां द्वाविंशतिशतसंख्यानाम् अविशिष्टं गमनमेकोऽर्थ उक्तः, तथापि प्रसिद्ध्यनुरोधाय कसति, लोठते, श्चोतते इत्येवमादयः प्रतिनियत-सत्त्व-गमन विषया एव द्रष्टव्या····।" तात्पर्य यह है कि एकार्थक शब्द एक ही विषय की विभिन्न अवस्थाओं को स्पष्ट करते हैं। ऐसा भी देखा जाता है कि एक ही वर्ण के वाचक भिन्न-भिन्न शब्द भिन्न-भिन्न वस्तुओं एवं विषयों के लिये प्रयुक्त हुए हैं। उदाहरणार्थ—गौर्लोहितः, अश्वः शोणः। गौः कृष्णः, अश्वो हेमः। गौः श्वेतः, अश्वः कर्कः।

आचार्य जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण ने आवश्यक के पर्याय नामों के विषय में कहा है कि वे अभिन्नार्थक, सुप्रशस्त, यथार्थनियत, अव्यामोहनिमित्त एवं नानादेशीय शिष्यों को अनायास प्रतिपत्ति कराने वाले हैं। एकार्थक शब्द अपने प्रतिपाद्य विषय को सुव्यवस्थित रूप से निर्धारित करते हैं। एकार्थवाची शब्दों द्वारा विद्यार्थी को बहुश्रुत बनाया जाता है एवं प्रतिपाद्य विषय के विभिन्न अंगों का प्रतिपादन भी व्यवस्थित रूप से किया जाता है। एकार्थक शब्द का अभिप्राय वस्तुतः समानार्थक से है। किसी भी विषय के विभिन्न पहलुओं को समानार्थक अनेक शब्दों द्वारा सरलता से समझाया जा सकता है। एक ही विषय के लिये विभिन्न देशों में विभिन्न शब्द प्रयुक्त होते हैं। एकार्थक कोश में उन सब शब्दों का संकलन किया जाता है अतः विभिन्न देशों के शिष्य अपनी-अपनी बोली में उस विषय को स्पष्ट रूप से ऐसे कोश के माध्यम से समझ लेते हैं।

लेखक का एकार्थक सम्बन्धी ज्ञान जितना समृद्ध होगा, उसका रचनाकौशल भी उतना ही गंभीर होगा, सौष्ठवपूर्ण होगा। "वचोविन्यासवैचित्र्यं" भी इस ज्ञान का एक फलित है।

प्राचीन काल में पर्यायवाची शब्दों द्वारा ही किसी पदार्थ के विभेद, गणना, लक्षण, निरूपण और परीक्षण किये जाते थे। उदाहरणार्थ, 'आभिणिबोहिय' शब्द के पर्यायवाची ईहा, अपोह, विमर्श, मार्गणा, गवेषणा, स्मृति, मति, प्रज्ञा आदि शब्दों के आधार पर आभिनिबोधिक ज्ञान के विभाग, लक्षण एवं अन्य विशेष विवरण हमें सहज ही उपलब्ध हो जाते हैं। आभिनिबोधिक या मतिज्ञान के इन विभिन्न पर्यायों के आधार पर ही जैन तार्किकों ने प्रमाणशास्त्र का निर्माण किया है। परवर्ती समय में रचित पारिभाषिक ग्रन्थ इन पर्यायवाची शब्दों के ही परिष्कृत रूप हैं।

एकार्थवाची शब्दों के आधार पर हम किसी विषय का सर्वांगीण ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। उदाहरणार्थ, अहिंसा शब्द के अन्तर्गत आए हुए ६० शब्दों के माध्यम से अहिंसा-साधना के मूलभूत उपाय, अहिंसा का स्वरूप तथा उसकी निष्पत्ति को हम सूक्ष्म रूप से हृदयंगम कर सकते हैं। शील, संवर, गुप्ति, क्षांति, यतना, अप्रमाद आदि शब्द अहिंसा-साधना के उपायों के द्योतक हैं। दया, कान्ति, विरति, कल्याण, नन्दा, भद्रा, विभूति आदि शब्द उसके स्वरूप के वाचक हैं। निर्वाण, बोधि, समाधि, सिद्धावास, निर्वृति आदि शब्द अहिंसा की निष्पत्ति के वाचक हैं।

प्रस्तुत एकार्थक शब्दकोश के अवलोकन से जैन दर्शन सम्बन्धी कई बातें स्पष्ट रूप से हमारे सामने उभर आती हैं, जो उसकी विशेषताओं का स्पष्ट निर्देश करती हैं। उदाहरणार्थ, "मोहणिज्जकम्म" के पर्यायों को लीजिये। इन पर्यायों में मात्र चारित्र मोहनीय के अंगों का निर्देश है। दर्शन मोहनीय कर्म का उल्लेख बिल्कुल नहीं हुआ है। इसके विपरीत पाली ग्रन्थों में जब मोह शब्द के पर्यायों को देखते हैं तो मात्र अज्ञान या अविद्या से सम्बन्धित शब्दों को ही पाते हैं, चारित्र मोहनीय से सम्बन्धित किसी शब्द का समावेश वहां नहीं है। इसी प्रकार सम्यग्दृष्टि के ३० से भी अधिक पर्याय धम्मसंगहणि जैसे बौद्ध ग्रन्थ में उपलब्ध होते हैं जबकि आवश्यक निर्युक्ति में सम्यक्त्व-सामायिक के मात्र ये ७ पर्याय निर्दिष्ट हैं—सम्यग्दृष्टि, अमोह, शोधि, सद्भावदर्शन, बोधि, अविपर्यय एवं सुदृष्टि। ऐसा प्रतीत होता है कि जैनाचार्यों ने सम्यग्दर्शन के आध्यात्मिक

पहलुओं पर उतना अधिक ध्यान नहीं दिया जितना कि बौद्ध चिन्तकों ने। जैन कर्मग्रन्थों में सम्यग्दर्शन के सम्बन्ध में अनेक गंभीर चिन्तन उपलब्ध है। परन्तु उसके बौद्धिक पक्ष पर अपेक्षित प्रकाश नहीं डाला गया है। इसके विपरीत बौद्ध दार्शनिकों ने सम्यग्दर्शन पर विशेष प्रकाश इसलिए डाला कि चारित्र मोहनीय के निराकरण की आधारशिला सम्यग्दर्शन ही है। बौद्धों ने संवर को विशेष महत्त्व दिया परन्तु तपस्या को आध्यात्मिक साधना का अनिवार्य अंग स्वीकार नहीं किया, जैसा कि जैन परम्परा में किया गया है। यही कारण है कि चारित्र मोहनीय के पर्याय शब्द बौद्ध साहित्य में एक स्थान पर संकलित नहीं किये गये, फिर भी राग, द्वेष, मान आदि शब्दों के पर्याय अत्यन्त विस्तृत रूप से उसमें संगृहीत हैं।

प्रस्तुत कोश एक विशाल योजना का प्रारंभिक अंग है। परमाराध्य आचार्यश्री तुलसी एवं युवाचार्यश्री महाप्रज्ञजी (आचार्य महाप्रज्ञ) की प्रेरणा से जैन विश्व भारती के शोध विभाग ने जैन आगम शब्द कोश की महान् योजना बनायी है। इसी के अन्तर्गत निरुक्त कोश, एकार्थक कोश, देशी शब्द कोश आदि तैयार किये गए हैं। इस क्रम में अभी दो कोश—निरुक्त कोश तथा एकार्थक कोश प्रकाशित किए जा रहे हैं। प्रस्तुत कोश का सुव्यवस्थित संकलन एवं संपादन कर **समणी कुसुमप्रज्ञा** ने अत्यधिक श्रमसाध्य कार्य को अत्यल्प समय में सम्पूर्ण किया है। इस कार्य में उन्हें **मुनिश्री दुलहराज जी** का मार्ग-दर्शन निरन्तर प्राप्त होता रहा है। प्रस्तुत कोश में तीन महत्त्वपूर्ण परिशिष्ट भी संलग्न किये गये हैं, जिनके आधार पर पाठक सरलता से इस कोश का उपयोग कर सकते हैं। द्वितीय परिशिष्ट में एकार्थक शब्दों की सार्थकता को समझाने का प्रयत्न किया गया है, जो कि अत्यन्त सराहनीय है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह कोश सुधी समाज में समादर प्राप्त करेगा।

लाडनूं
२८-१-८४

नथमल टांटिया
निदेशक, अनेकान्त शोधपीठ
जैन विश्व भारती

भूमिका

कोश का महत्त्व

लाक्षणिक साहित्य में कोश का अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है। भाषा विकास का ऐतिहासिक ज्ञान कोश-साहित्य से ही संभव है। किसी भी भाषा की समृद्धि का ज्ञान उसके शब्दकोश से किया जा सकता है। जिस प्रकार यत्र तत्र बिखरा पानी कोई उपयोगी नहीं होता अधिक मात्रा होने पर वह बाढ़ का रूप ले लेता है, उसी पानी को यदि एक स्थान पर बांध दिया जाए तो विद्युत् पैदा की जा सकती है तथा उससे अनेक स्थानों पर सिंचाई आदि का कार्य किया जा सकता है, इसी प्रकार इधर-उधर बिखरी हुई शब्द-सम्पत्ति निरुपयोगी होती है। कोश के माध्यम से निरुपयोगी और मृत शब्दावली भी व्यवस्थित होकर जीवन्त और उपयोगी हो जाती है। इसलिए प्राचीन काल से कोश-निर्माण का कार्य होता रहा है। डॉ. हेमचन्द्र जोशी के अनुसार भारत में कोशों का अस्तित्व छब्बीस सौ वर्ष से भी अधिक प्राचीन है। दृष्टिवाद अंग में सत्यप्रवाद और विद्याप्रवाद—ये दो पूर्व शब्दों के अनुशासन से सम्बन्धित थे। भारत में विभिन्न भाषाओं में लिखे गये लगभग १००० से अधिक कोश हैं। आज कोश का कार्य विद्यार्थी पुस्तकों से करते हैं। प्राचीनकाल में विद्यार्थी को संपूर्ण कोश कंठीकृत होता था। सिडनी एम. लैम्ब ने शब्दकोशों के अन्तर्गत शब्द और अर्थ के छह प्रकार के सम्बन्धों का विवेचन किया है—१. अनेकार्थक शब्द, २. एकार्थक शब्द, ३. सहयोगी विनिश्चयार्थक शब्द, ४. संयोगी शब्दों का अर्थ-निर्णय, ५. विपर्यय शब्द, ६. सामान्य गर्भित शब्द के अर्थ का द्योतन करने वाले शब्द ।[१]

संस्कृत व प्राकृत आदि भाषाओं की यह विशेषता है कि शब्द प्राय: धातुओं से निष्पन्न होते हैं। इस विशेषता के आधार पर कौन शब्द किस अर्थ को ध्वनित करता है, यह जानने में कोश ही एक मात्र सहायक होता है। एक ही धातु कहीं-कहीं अनेक अर्थों में प्रयुक्त होती है, वहां प्रसंगानुसार भिन्न-भिन्न अर्थों का वास्तविक ज्ञान कोश के द्वारा ही संभव है। अनेक स्थानों पर व्याकरण द्वारा व्युत्पत्ति का अर्थ शब्द के मूल अर्थ से बहुत दूर चला जाता है, वहां कोश ही वास्तविक अर्थ का ज्ञान देता है, जैसे—'पृश्-पालन-पूरणयो:' धातु से 'ऊष' प्रत्यय लगाने पर 'परुष' शब्द बनता है। धातु का अर्थ पालन व पूरण है लेकिन शब्द का अर्थ कठोर है, जो कि धातु के अर्थ से मेल नहीं

---

१. लिंग्विस्टिक्स, १९६९, पृ. ४५।

खाता। इसी प्रकार अन्य अनेक रूढ शब्दों का ज्ञान कोश से ही संभव है।

भाषा विज्ञान के अनुसार प्रत्येक शब्द के अर्थ का अपकर्ष और उत्कर्ष होता रहता है। जैसे 'पाषण्डी' (पाखण्डी) शब्द प्राचीन काल में व्रती के लिए प्रयुक्त था लेकिन आज उसके अर्थ का अपकर्ष हो गया। 'साहसी' शब्द प्राचीन काल में बिना विचारे काम करने वाले के अर्थ में प्रयुक्त होता था लेकिन आज इस शब्द के अर्थ का उत्कर्ष हो गया है। इस प्रकार कोश के माध्यम से शब्द के अर्थ का इतिहास जाना जा सकता है क्योंकि प्रत्येक कोशकार केवल शब्द-संचय ही नहीं बल्कि अपने से पूर्व निर्मित कोशों का भी सहारा लेता है।

एक ही शब्द भिन्न-भिन्न क्षेत्रों, प्रकरणों एवं संदर्भों में भिन्न-भिन्न अर्थ का वाचक होता है, जैसे—उपयोग, धर्म, आकाश, गुण आदि जैनदर्शन के पारिभाषिक शब्द हैं, सामान्य अर्थ से इनके अर्थों में भिन्नता है। कोश के माध्यम से भिन्न-भिन्न अर्थों का ज्ञान किया जा सकता है। इसलिए विशिष्ट ज्ञान-वृद्धि के लिए कोशों की रचना हुई, यह कहा जा सकता है।

एकार्थक कोश का उत्स

यास्क (७०० ई. पू.) द्वारा प्रणीत निरुक्त में सर्वप्रथम एकार्थक शब्दों का व्यवस्थित संग्रह मिलता है। भगवती सूत्र के प्रारम्भ में गौतम स्वामी भगवान् महावीर से प्रश्न पूछते हैं—एए णं भंते! नव पदा किं एगट्ठा नाणाघोसा नाणावंजणा? उदाहु नाणट्ठा नाणाघोसा नाणावंजणा?—भंते! ये चलमाण चलित आदि नौ पद एकार्थक, नानाघोष और नानाव्यञ्जन वाले हैं अथवा अनेकार्थक, नानाघोष और नानाव्यञ्जन वाले हैं?

भगवान् महावीर ने समाधान देते हुए कहा—'इनमें चलमान चलित, उदीर्यमान उदीरित, वेद्यमान वेदित और प्रहीयमाण प्रहीण आदि प्रथम चारों पद एकार्थक, नानाघोष व नानाव्यञ्जन वाले हैं। शेष पांच पद अनेकार्थक, नानाघोष तथा नानाव्यञ्जन वाले हैं।[१]'

टीकाकार ने 'चलमान चलित' आदि चारों शब्दों में स्पष्ट रूप से आर्थिक विभेद स्वीकार करते हुए भी इनको उत्पाद-पर्याय की अपेक्षा से एकार्थक माना है[२] क्योंकि ये चारों एक ही काल में उत्पन्न होते हैं। तुल्यकाल

---

१. भग १/१२ : गोयमा! चलमाणे चलिए, उदीरिज्जमाणे उदीरिए, वेदिज्जमाणे वेदिए, पहिज्जमाणे पहीणे—एए णं चत्तारि पदा एगट्ठा नाणाघोसा नाणावंजणा।

२. भटी प. १७।

की अपेक्षा से ये चारों पद एकार्थक कहलाते हैं। इसके अतिरिक्त ये चारों पद केवलज्ञान को प्रकट करने रूप एक ही कार्य के कर्त्ता होने से एकार्थक हैं। 'छिद्यमान छिन्न' आदि पांच पद विनाश पर्याय की अपेक्षा से नानार्थक, नानाघोष तथा नानाव्यञ्जन वाले हैं।

व्यवहार भाष्यकार ने शब्द और अर्थ के संबंध में भाषा संबंधी चतुर्भंगी प्रस्तुत की है[१]—

१. शब्द अभेद—अर्थ अभेद—एकार्थक, जैसे—इंद्र इंद्र आदि।

२. शब्द भेद—अर्थ अभेद—एकार्थक, जैसे—इंद्र, शक्र आदि।

३. शब्द अभेद—अर्थ भेद—अनेकार्थक शब्द, जैसे—गो शब्द भूप, गाय, रश्मि आदि अनेक अर्थों में प्रयुक्त होता है।

४. शब्द भेद—अर्थभेद, जैसे—घट, पट आदि।

एकार्थक की अर्थ-मीमांसा

एकार्थक शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए स्थानांग टीका में लिखा है कि जिन शब्दों का एक ही अभिधेय/अर्थ हो, वे एकार्थक कहलाते हैं।[२] इसके लिए अभिवचन शब्द का प्रयोग भी हुआ है।[३] इसके अतिरिक्त आवश्यक निर्युक्ति में चार प्रकार की सामायिक के पर्याय दिये हैं, उस प्रसंग में एकार्थक के लिए निरुक्त[४], निरुक्ति[५] और निर्वचन[६] शब्द का उल्लेख मिलता है।

भारोपीय भाषा परिवार में संस्कृत व उसके समकक्ष प्राकृत, पालि आदि भाषाओं की विशेषता है कि उसमें एक शब्द को बताने के लिए अनेक शब्दों का प्रयोग होता है। भाषाविदों के अनुसार कोई भी दो शब्द वस्तुत: एक अर्थ को व्यक्त नहीं करते। एकार्थवाची शब्दों का दूसरा नाम पर्यायवाची है। यह शब्द अधिक सार्थक प्रतीत होता है। जैन दर्शन में पर्याय शब्द पारिभाषिक शब्द के रूप में प्रयुक्त है। एक ही पदार्थ या व्यक्ति के लिए जब दो शब्दों का प्रयोग होता है तब वे प्राय: उस पदार्थ या व्यक्ति की दो भिन्न-भिन्न पर्यायों को व्यक्त करते हैं। जैन दर्शन में इसे समभिरूढ़नय के द्वारा समझाया गया है।

---

१. व्यभा १५५-१५७।

२. स्थाटी पृ. ४७२।

३. भ. २०/१५।

४. आवनि ५६१।

५. आवहाटी १ पृ. २४३।

६. आवहाटी १ पृ. २४२ : चतुर्विधस्यापि सामायिकस्य निर्वचनम्।

उदाहरण के लिए इन्द्र शब्द के पर्याय में जब शक्ति को बताना हो तब 'शक्र' शब्द का प्रयोग होता है और जब ऐश्वर्य बताना हो तब 'इंद्र' तथा पाक नामक शत्रु को नाश करने की मुख्यता को द्योतित करना हो तो 'पाकशासन' शब्द का प्रयोग होता है। इसी प्रकार इंद्र के अन्य नामों की सार्थकता है। (देखें— परिशिष्ट २ 'सक्क' शब्द का टिप्पण)। ये सभी शब्द भिन्न-भिन्न प्रवृत्ति के निमित्त से भिन्न होते हुए भी इंद्र अर्थ के वाचक हैं अत: एकार्थक हैं।[1]

कुछ व्यञ्जनों के पर्यायवाची शब्द नहीं होते। वे अपने अभिधेय को प्रकट करने वाले एकमात्र शब्द होते हैं, जैसे—अलोक, स्थण्डिल आदि। कुछ शब्दों के अनेक पर्याय होते हैं, जैसे—जीव शब्द के प्राण, भूत, सत्त्व आदि २३ पर्यायवाची शब्द हैं।

इस प्रकार एकार्थक/पर्यायवाची शब्द हमारी शब्द-समृद्धि ही नहीं करते बल्कि किसी भी पदार्थ या व्यक्ति विषयक पूरी जानकारी भी प्रस्तुत करते हैं। उदाहरण के रूप में हम 'उवहि' शब्द पर विचार करें। उसके आठ पर्यायवाची शब्द हैं। वे सब 'उपधि' की विभिन्न अवस्थाओं और विशेषताओं के द्योतक हैं। इन पर्यायवाची शब्दों से उपधि का पूरा रूप सामने आ जाता है।[2] इसी प्रकार 'दिट्ठिवाय', 'ववहार', 'अहिंसा', 'अदिण्णादाण' आदि शब्दों के विभिन्न पर्याय संपूर्ण विषय-वस्तु का बोध कराते हैं।

एकार्थक का प्रयोजन

प्राचीन काल में प्रत्येक विषय को बारह प्रकार से समझाया जाता था, उसमें एकार्थक का भी महत्त्वपूर्ण स्थान था।[3] विद्यार्थी को कोश ज्ञान अलग से न कराकर विषय के अध्ययन के साथ ही करा दिया जाता था। प्राचीन साहित्य के अध्ययन से यह भी स्पष्ट प्रतीत होता है कि आगम-काल में स्वतंत्र रूप से कोश न पढ़ाकर चालू पाठ में ही विद्यार्थी को पांच दस पर्यायवाची शब्दों का ज्ञान करा दिया जाता था। जैसे मंदर पर्वत के लिए मेरु, गिरिराय, सयंपभ आदि १६ एकार्थक शब्दों का एक साथ प्रयोग किया गया है। इसी प्रकार जणसंमद्द, तमुक्काय, हट्ठचित्त, उद्दाण आदि शब्दों के एकार्थक भी द्रष्टव्य हैं। बृहत्कल्प भाष्य में उल्लेख है कि साधु को विविध भाषाओं में कुशल होना चाहिए, जिससे कि वह जनता को अधिक लाभ पहुंचा सके।[4]

---

१. अनुद्वामटी प. २४६ : परमैश्वर्यादीनि भिन्नान्येवात्र भिन्नप्रवृत्तिनिमित्तानि.....।

२. ओनिटी प. २०७ : 'तत्त्वभेदपर्यायैर्व्याख्ये' इति न्यायात् पर्यायान् प्रतिपादयन्नाह।

३. बृभा १४९ : निक्खेवेगट्ठ निरुत्त विहि पवित्ती य केण वा कस्स।
तद्दार-भेय-लक्खण-तदरिहपरिसा य सुत्तत्थो॥

४. बृभा १२२९।

एकार्थक का प्रयोजन बताते हुए ग्रन्थकारों ने अनेक स्थलों पर कहा है कि अनेक देशों के शिष्यों के अनुग्रह के लिए एकार्थकों का प्रयोग होता है।[१] प्राचीन काल में गुरु के पास विभिन्न देशों के विद्यार्थी उपस्थित होते थे, उन्हें अवबोध देने के लिए एक ही शब्द के वाचक विभिन्न देशों में प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया जाता था, जिससे सभी शिष्य अपनी-अपनी भाषा में उस शब्द के अर्थ को समझ सकें। यही कारण है कि आगम एवं उसके व्याख्या ग्रंथों में एक अर्थ के वाचक विभिन्न प्रान्तीय शब्दों का संभार स्वत: विकसित होता चला गया। उदाहरणार्थ—दुग्ध, पय, वालु, पीलु और क्षीर—ये दूध के एकार्थक हैं। इनमें आज भी वालु (हालु) शब्द कर्नाटक में तथा पीलु (पाल) शब्द तमिलनाडु में दूध का वाचक है। एकार्थकों से विभिन्न शब्दों के आधार पर भाषा वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक इतिहास का अवबोध भी मिलता है। जैसे स्तुति और स्तव दोनों शब्द अर्थभेद को द्योतित करते हैं पर नंदी चूर्णिकार ने इन दोनों शब्दों को भिन्न-भिन्न देशों में प्रयुक्त होने वाले एकार्थक माना है।[२]

एकार्थकों के प्रयोग का दूसरा प्रयोजन यह प्रतीत होता है कि किसी बात पर बल देने के लिए तथा उसकी विशेषता प्रकट करने के लिए भी एकार्थक शब्दों का प्रयोग होता है।[३] जैसे—भाव-क्रिया के प्रसंग में 'तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पियकरणे तब्भावणाभाविए' ये सभी शब्द भावक्रिया की महत्ता को व्यक्त कर रहे हैं।[४] प्रसंगवश एक ही अर्थ के वाचक अनेक शब्दों का प्रयोग पुनरुक्ति दोष नहीं है।[५]

एकार्थक शब्दों से व्युत्पन्न मति छात्र एक प्रसंग के साथ अनेक शब्दों का ज्ञान कर लेते थे और मंद बुद्धि छात्र विभिन्न शब्द पर्यायों से अर्थ समझ लेते थे। इस प्रकार एकार्थक का कथन दोनों प्रकार के शिष्यों के लिए लाभप्रद होता था।[६] इससे पदार्थ विषयक कोई मूढता नहीं रहती थी।[७] उदाहरणार्थ

१. जंबूटी प. ३३ : नानादेशविनेयानुग्रहार्थं एकार्थिका:।
२. नंदीचू पृ. ४९ : अन्योन्यविषयप्रसिद्धा ह्येते एकार्थवचना:।
३. (क) भटी प. १४ : समानार्था: प्रकर्षवृत्तिप्रतिपादनाय स्तुतिमुखेन ग्रन्थकृतोक्ता:।
(ख) अंतटी. प. १९ : एकार्थशब्दोपादानं तु प्राधान्यप्रकर्षख्यापनार्थम्।
(ग) ज्ञाटी प. १७ : ·······एकार्थशब्दत्रयोपादानं चात्यन्तशुक्लताख्यापनार्थम्।
४. अनुद्वामटी प. २७ : एकार्थिकानि वा विशेषणान्येतानि प्रस्तुतोपयोगप्रकर्षप्रतिपादनपराणि।
५. भटी प. ११६ : एकार्थशब्दोच्चारणं च क्रियमाणं न दुष्टम्।
६. नंदीटी पृ. ५८ : विनेयजनसुखप्रतिपत्तए मतिज्ञान······।
७. अनुद्वाहाटी पृ. २० : असम्मोहार्थं पर्यायनामानि।

देखें—'पिंड', 'उग्गह', 'दुम', 'उप्पल' आदि के एकार्थक।

बृत्कल्पभाष्य में एकार्थक शब्दों के चार प्रयोजनों का उल्लेख हुआ है—

१. छंदानुलोमता
२. सूत्र-लाघव
३. असम्मोह
४. तीर्थंकर के गुणों का प्रकाशन अथवा शास्त्र के वैशिष्ट्य का ख्यापन।

छंद-रचना में रिक्तता की पूर्ति के लिए एकार्थक शब्दों की आवश्यकता होती है, जिससे उसी अर्थ का वाचक दूसरा शब्द प्रयुक्त किया जा सके।[१] काव्य में अनुप्रास अलंकार का सटीक प्रयोग वही कर सकता है, जिसका एकार्थक शब्द-ज्ञान समृद्ध होता है।

अनुकूल शब्द का प्रयोग करने से सूत्र में लाघव गुण उत्पन्न हो जाता है अर्थात् कम शब्दों में अधिक अर्थ का गुम्फन किया जा सकता है।

एकार्थक शब्दों के प्रयोग से अर्थ को जानने में सुगमता रहती है। एक शब्द न जानने से दूसरे शब्द द्वारा अर्थ जाना जा सकता है। जैसे शक्र, पुरन्दर और मघवा—इन तीन एकार्थकों के प्रयोग से किसी एक शब्द द्वारा इन्द्र का अर्थबोध हो सकता है।

एकार्थक शब्दों का चौथा प्रयोजन बताते हुए भाष्यकार कहते हैं कि इससे तीर्थंकर या शास्त्रकर्त्ता का वाग् वैशिष्ट्य प्रकाशित होता है। लोग समझते हैं कि इनका शब्दज्ञान कितना समृद्ध है।

एकार्थक संचयन की प्रक्रिया

संकलन के प्रारम्भिक काल में आगमों एवं उसके प्राकृत व्याख्या साहित्य में जहां 'एगट्ठा' या 'पज्जाया' शब्दों का उल्लेख था उन्हीं एकार्थकों का संकलन किया गया किन्तु पुनश्चिन्तन किया गया कि संस्कृत टीका-साहित्य में भी अनेक महत्त्वपूर्ण एकार्थकों का प्रयोग हुआ है तथा चूर्णि साहित्य में भी मिश्रित भाषा के प्रयोग से बहुत एकार्थक विशुद्ध संस्कृत जैसे प्रतीत होते हैं जैसे—घातो हिंसा मारणं दंड अधर्म इत्यनर्थान्तरम्। (सूचू २ पृ. ३३८) अत: संस्कृत व्याख्या साहित्य के एकार्थक शब्दों का भी संचयन किया

---

१. विभाकोटी पृ. ६३८ : एतदनेकपर्यायख्यानं प्रदेशान्तरेषु सूत्रबन्धानुलोम्यार्थम्‌····।

गया, जैसे—रयः वेगः चेष्टाऽनुभवः फलमित्यनर्थान्तरम्। इस प्रकार यह संस्कृत और प्राकृत भाषा का सम्मिश्रित कोश है। कोश की परम्परा में संभवतः यह प्रथम कोश है, जिसमें संस्कृत और प्राकृत भाषा के शब्दों का एक साथ संकलन है।

चूंकि इस ग्रंथ में आगम एवं उसके व्याख्या-साहित्य के एकार्थकों का वर्णन है अतः प्रामाणिकता की दृष्टि से पाठ को छोटा या बड़ा करना संभव नहीं था अतः कहीं कहीं एकार्थकों की पुनरावृत्ति भी हुई है। जैसे भिक्खु और समण। इन दोनों शब्दों के कई एकार्थक आपस में मिलते हैं लेकिन उनको रखना भी अनिवार्य था।

आगमों के मूल पाठ में अनेक स्थलों पर एक शब्द के वाचक शब्दों का उल्लेख एकार्थक का निर्देश किये बिना किया गया है। उन सबका समावेश भी इस कोश में अनिवार्य प्रतीत हुआ, जैसे—'**आइण्ण**', '**उक्किट्ठ**', '**आसुरत्त**' इत्यादि। व्याख्या-साहित्य में इन शब्दों की भिन्न-भिन्न व्याख्या देते हुए भी इनको एकार्थक माना है।[१]

कहीं कहीं शब्द एकार्थक नहीं हैं लेकिन प्राचीन आचार्यों ने उनको एकार्थक माना है, जैसे—अशन, पान, खादिम और स्वादिम—ये चारों शब्द भोज्य वस्तुओं की भिन्नता के बोधक हैं, परन्तु इनको भोज्य वस्तु की अपेक्षा से एकार्थक माना है।[२] इसी प्रकार 'विपरिणामइत्ता' आदि चारों शब्द भिन्नार्थक प्रतीत होते हैं। इन्हें भी विनाश के वाचक होने से एकार्थक माना है।[३]

कार्य का निरीक्षण करते हुए एक बार युवाचार्य प्रवर (वर्तमान आचार्य महाप्रज्ञ) ने फरमाया कि व्याख्या ग्रंथों में ग्रंथकार ने किसी शब्द को स्पष्ट करने के लिए उसके वाचक यदि तीन या चार एकार्थक शब्दों का उल्लेख किया है तो उनका समावेश भी इस कोश में हो सकता है। इस दृष्टि से टीका-साहित्य का पुनः पारायण किया गया जिससे अनेक महत्त्वपूर्ण एकार्थक इस कोश के साथ जुड़ गये। जैसे—'फुल्ल' 'अनुकाश' 'आपूरित' 'वर्द्धन' इत्यादि शब्दों के एकार्थक।

---

१. (क) भटी प. १५५ : आइन्नमित्यादयः एकार्था अत्यन्तव्याप्तिदर्शनाय।
   (ख) भटी प. १७८ : एकार्था वैते शब्दाः प्रकर्षवृत्तिप्रतिपादनाय।
   (ग) उपाटी पृ. १०५ : एकार्था शब्दाः कोपातिशयप्रदर्शनार्थाः।

२. प्रसाटी प. ५१।

३. जीवटी प. २१ : विपरिणामइत्ता·····एतानि चत्वार्यपि पदान्येकार्थिकानि विनाशार्थप्रति-
पादकानि नानादेशजविनेयानुग्रहार्थमुपात्तानि।

इस कोश को तैयार होते-होते अनेक बार कार्डों को बदलना पड़ा। अन्तिम रूप देते समय एक ही शब्द से शुरू होने वाले अनेक कार्ड थे। उसमें छांटना था कि कोई शब्द छूट न जाये तथा पुनरुक्ति भी न हो। प्रारम्भ में हमने क-ग, त-य, र-ल, ण-न आदि व्यञ्जनों के अन्तर वाले एकार्थकों का भी इसमें समावेश किया था, लेकिन पुनश्चिन्तन के पश्चात् उनको नहीं रखा गया क्योंकि सामान्यत: प्राकृत का पाठक इस अंतर को समझ सकता है। जहां प्राकृत भाषा में निर्युक्ति, चूर्णि आदि में एकार्थक आया है और वही यदि संस्कृत भाषा में टीका साहित्य में आया है तो उसका संकलन प्राय: हमने नहीं किया है। इसके अतिरिक्त कहीं-कहीं एक ही एकार्थक का प्रयोग अनेक ग्रंथों में हुआ है, जैसे—हेतु : निमित्तं कारणमिति पर्याया: आदि। उनमें कालक्रम का ध्यान न रखते हुए जहां अधिक स्पष्टता लगी, उसी को प्रमुखता दी है।

प्रस्तुत कोश में एकार्थकों का संचयन बहुत व्यापक संदर्भ में हुआ है। एक ही जाति के द्योतक व्यक्ति या पदार्थ को जातिगत समानता के आधार पर एकार्थक माना है, जैसे—'उप्पल' और 'पदुम' शब्द के अन्तर्गत एकार्थक शब्द कमल की विभिन्न जातियों के वाचक हैं, वहां जातिगत समानता के कारण इनको एकार्थक माना है। इसी प्रकार 'अंताहार', 'सेज्जा' आदि शब्दों के एकार्थक भी द्रष्टव्य हैं।

कुछ शब्दों को उपादान की समानता से एकार्थक माना है, जैसे—'अरंजर' शब्द के पर्याय में सभी शब्द भिन्न-भिन्न आकार के घड़ों के वाचक हैं, लेकिन सभी मिट्टी से निर्मित हैं अत: उपादान की समानता से इनको एकार्थक स्वीकृत किया है। मन में एक प्रश्न था कि इन शब्दों के एकार्थक प्रयोग से उन शब्दों का निश्चित अर्थ-निर्धारण नहीं किया जा सकता। परन्तु इस दुविधा का समाधान चूर्णिकार एवं टीकाकारों ने कर दिया क्योंकि उन्होंने भी व्यापक अर्थ में एकार्थकों का प्रयोग किया है जैसा कि पहले कहा जा चुका है।

नंदी चूर्णि में एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठाया गया है कि भिन्न-भिन्न अर्थ होने पर भी शब्दों को एकार्थक मानना क्या विरोध नहीं है? चूर्णिकार ने स्वयं इस प्रश्न को समाहित किया है कि किसी भी वस्तु के स्वरूप को समवेत रूप से देखने पर यह विरोध नहीं है। भिन्न-भिन्न दृष्टि से देखने पर विरोध हो सकता है।[१] इसी अभिप्राय को ध्यान में रखकर हमने अंगविज्जा ग्रंथ से ऐसे

---

१. नंदी चू पृ. ३६ : णणु भिण्णत्थदंसणे एगट्ठित त्ति विरुद्धं ? उच्यते ण विरुद्धं, जतो सव्व-विकप्पेसु।······।

अनेक एकार्थकों का संकलन किया है, जैसे—'तट्टक' 'कुंडल' 'भग्ग', 'ओसारित' आदि।

एकार्थक कोश के साथ यह समानार्थक कोश भी है। कुछ एकार्थक समवेत रूप से एक ही अर्थ को व्यक्त करते हैं, जैसे—'पीणणिज्ज', 'अच्चिय', 'थेज्ज' इत्यादि।

प्रस्तुत कोश में एक ही पदार्थ अथवा भाव की क्रमिक अवस्था व्यक्त करने वाले शब्दों का भी एकार्थक में समावेश किया गया है। जैसे–'फासिय',' अहासुत्त' आदि। फासिय आदि शब्द व्रतपालन की उत्तरोत्तर अवस्थाओं के वाचक हैं।

जहां 'एगट्ठा','पज्जाया', 'एकोऽर्थः' या 'अनर्थान्तरम्' आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है, वहां हमने दो समानार्थक शब्दों को भी इस कोश में समाविष्ट किया है, जैसे–ऊसढं ति वा उच्चं ति वा एगट्ठा। राशिर्गच्छ इत्यनर्थान्तरम्। भोज्जं ति वा संखडि त्ति वा एगट्ठं, भद्दं ति सुंदरं ति य तुल्लत्थो आदि। लेकिन जहां एगट्ठा आदि शब्दों का उल्लेख नहीं है, वहां हमने दो समानार्थक शब्दों को इस कोश में संगृहीत नहीं किया है।

सामान्यतः इस कोश में जिस शब्द से एकार्थक प्रारम्भ हुआ है, उसी को मुख्य शब्द के रूप में रखा है। लेकिन जहां कहीं टीकाकार या चूर्णिकार ने किसी विशेष शब्द के एकार्थक का निर्देश किया है, वहां प्रारम्भिक शब्द को मूल न मानकर निर्दिष्ट शब्द को मूल माना है। जैसे—

समता सम्मत्त पसत्थ, सुविहित संति सिव हित सुहं अणिंदं च।
अदुगुंछितमगरहितं अणवज्जमिमेऽवि एगट्ठा॥
(आवनि ६५८)

यह गाथा 'समया' से प्रारम्भ होती है लेकिन हरिभद्र ने इस गाथा को सामायिक का पर्याय माना है। इसी प्रकार 'पवयण','भिक्खु','कम्म','चंडाल' आदि के एकार्थक भी द्रष्टव्य हैं।

अनेक स्थलों पर एकार्थक गाथा में भी अन्तिम पद में भाष्यकार अथवा निर्युक्तिकार ने किसी विशिष्ट शब्द के एकार्थक का उल्लेख किया है तो उसी को मूल माना है। जैसे—

ईहा अपोह वीमंसा, मग्गणा य गवेसणा।
सण्णा सती मती पण्णा,सव्वं आभिणिबोहियं॥
(आवनि १२)

—ये सब 'आभिणिबोहिय' (मतिज्ञान) के एकार्थक हैं।

यद्यपि इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है कि शब्दों की पुनरावृत्ति न हो, लेकिन जहां कहीं भी एक अर्थ का वाचक दूसरे शब्द से प्रारम्भ होने वाला एकार्थक आया है, यदि एक या दो शब्द भी उसमें नवीन हैं तो उन दोनों को अलग-अलग ग्रहण किया है, जैसे- 'इंद' शब्द के पर्याय में लगभग सभी शब्द 'सक्क' के एकार्थकों में समाविष्ट हैं, लेकिन 'इंद' शब्द नवीन है इसीलिए विशेष लक्ष्यपूर्वक इसको अलग लिया गया है।

अनेक स्थलों पर एक शब्द के एकार्थक के अन्तर्गत नवीन एकार्थक शब्द की दृष्टि से तीन-चार एकार्थकों के संदर्भ स्थलों का समावेश उसी के नीचे कर दिया है, जैसे—आणा (आज्ञा) शब्द के एकार्थक—

० आण त्ति उववायो त्ति आगमो त्ति वा एगट्ठा।

० आणे ति वा सुतं ति वा वीतरागादेसो त्ति वा एगट्ठा।

० आण त्ति वा नाणं ति वा पडिलेहि त्ति वा एगट्ठा।

० आणा-उववाय-वयण-निद्देसे।

प्राकृत भाषा के कुछ शब्द ऐसे होते हैं, जिनके भिन्न-भिन्न अर्थ होते हैं। जैसे-'संत','माण','आगार','सक्क' आदि।

'संत' शब्द चार अर्थों का वाचक है—तथ्य, शान्त, श्रान्त और सत्।

'माण' शब्द दो अर्थों का वाचक है—अभिमान और परिमाण।

'आगार' शब्द दो अर्थों का वाचक है—आकृति और घर।

'सक्क' शब्द दो अर्थों का वाचक है—शक्र और शक्य।

इन सबके एकार्थक अर्थ की भिन्नता के कारण अलग अलग शीर्षक से इस कोश मे गृहीत हैं।

प्रस्तुत कोश में एक ही अर्थ के पर्याय विभिन्न शब्दों से प्रारम्भ हो रहे हैं। इससे उस शब्द विषयक अनेक पर्यायों का ज्ञान सहज ही हो जाता है। जैसे- माया के एकार्थक 'उक्कंचण', 'कूड', 'कवड' ,'माया','कक्क', 'पलिउंचण' आदि विभिन्न शब्दों से प्रारम्भ हो रहे हैं। इनको एक स्थान पर देने से अनुक्रमणिका के क्रम में असुविधा थी लेकिन किसी भी शब्द के सभी अर्थों के ज्ञान हेतु परिशिष्ट-१ सहयोगी हो सकता हैं।

अनेक स्थलों पर एक संस्कृत के शब्द के दो प्राकृत रूपों को एकार्थक माना है। जैसे-इसि त्ति वा रिसि त्ति वा एगट्ठा, अणं ति वा रिणं ति वा एगट्ठा,

भवति त्ति वा हवइ त्ति वा एगट्ठा। यहां ऋषि, ऋण और भवति शब्द के ही दो प्राकृत रूप बने हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन काल में प्राकृत व्याकरण का ज्ञान भी एकार्थकों के माध्यम से कराया जाता था।

कहीं-कहीं चूर्णिकारों ने सामान्य एकार्थकों का प्रयोग किया है जैसे— उभओ त्ति वा दुहओ त्ति एगट्ठा। बहवे त्ति वा अणेगे त्ति वा एगट्ठा। ऐसे एकार्थकों का प्रयोग प्राचीन अध्यापन-पद्धति पर विशेष महत्त्व डालता है।

भगवती सूत्र में क्रोध आदि चारों कषायों के एकार्थक उल्लिखित हैं। समवायांग में 'मोहनीय कर्म' के पर्याय के रूप में वे ही नाम संगृहीत हैं। क्रोधादि के तथा मोहनीय कर्म के पर्यायों को शब्द-गत समानता होने पर भी अर्थभेद की दृष्टि से अलग ग्रहण किया है।

कहीं-कहीं एक ही गाथा दो भिन्न- भिन्न अर्थों में प्रयुक्त है। उसको भी हमने अलग-अलग ग्रहण किया है। जैसे पावे वज्जे वेरे········यह गाथा 'पाप' और 'कर्म'—इन दोनों अर्थों में प्रयुक्त है। इसी प्रकार 'पतिट्ठा' और 'अवत्था' आदि के एकार्थक द्रष्टव्य हैं।

एक ही शब्द के आगे भिन्न-भिन्न उपसर्ग या शब्द लगने से वे एक ही अर्थ के वाचक बन गये हैं। टीकाकार ने इनको एकार्थक माना है।[१] जैसे- अक्कोहा निक्कोहा खीणकोहा। इसी प्रकार 'अमोह','अणावरण','अगोय' आदि शब्दों के एकार्थक द्रष्टव्य हैं। ऐसे एकार्थकों का प्रयोग अन्य कोशों में देखने को नहीं मिलता है।

प्रस्तुत कोश में पांच अस्तिकाय के एकार्थक अपना विशेष महत्त्व रखते हैं। प्राणातिपात विरमण से मनगुप्ति तक के शब्द धर्म के विविध अंग हैं जो कि धर्मास्तिकाय से सर्वथा पृथक् हैं। लेकिन धर्म शब्द के साधर्म्य से सूत्रकार ने इनको धर्मास्तिकाय के अभिवचन या पर्याय के रूप में संगृहीत कर लिया है।[२]

प्रस्तुत कोश में आगम ग्रंथों के अध्यायों के एकार्थक नवीनता के परिचायक हैं। 'दुमपुप्फिया' के एकार्थक के प्रसंग में दशवैकालिक के प्रथम अध्ययन को जिन-जिन उपमाओं से उपमित किया, उनको इस अध्ययन के पर्यायवाची स्वीकृत कर लिया है।[३] इसी प्रकार बारहवें अंग 'दिट्ठिवाय' तथा

---

१. औपटी पृ. २०२ : एकार्था वैते शब्दा:, अनुद्वामटी प. १०७।

२. भटी पृ. १४३१।

३. दशहाटी प. १८।

दशवैकालिक के चतुर्थ अध्ययन 'जीवाभिगम' के पर्याय भी ग्रंथकारों ने उसकी वर्ण्य-वस्तु के आधार पर स्वीकृत किये हैं।

प्रस्तुत कोश मे अनेक महत्त्वपूर्ण जैन पारिभाषिक शब्दों के पर्याय संकलित हैं, जैसे- 'तमुक्काय' ,'अकम्मवीरिय', 'उक्खोडभंग','लघुक' द्वितीयसमवसरण आदि। अनेक देशी शब्दों के पर्यायवाची शब्दों का संकलन भी इस कोश में है, जैसे—उक्खडुमड्डु, खोडभंग, खोरक, डिप्फर आदि।

प्रस्तुत कोश में शब्दों के साथ धातुओं के एकार्थक भी संगृहीत हैं। जैसे-'उज्झीयति','आसाएइ', 'फासेइ' आदि। एक ही धातु के अनेक उपसर्ग लगाकर भी उनको एकार्थक माना है जैसे- 'आलुक्कति पलुक्कति लुक्कति संलुक्कति य एगट्ठा' यहां 'लोकृङ्-दर्शने' धातु के आगे ही विविध उपसर्ग हैं। लेकिन अर्थ की दृष्टि से साम्य है। इसके विपरीत अनेक स्थलों पर उपसर्ग के साथ ही धातु का अर्थ भी बदल गया है जैसे- 'परिभासति', 'उप्पज्जते', 'उद्वेति' इत्यादि।

कहीं-कहीं टीकाकार एवं चूर्णिकार ने भिन्न-भिन्न अर्थ में प्रयुक्त धातुओं को भी एकार्थक माना है, जैसे—

० वोसिरति विसोधेति णिल्लवेति त्ति एगट्ठा।

० चाएति साहति सक्केइ वासेइ तुट्ठाएति वा धाडेति वा एगट्ठा।

अनेक स्थलों पर टीकाकार ने धातुओं को एकार्थक मानते हुए भी अर्थ-भेद किया है[१], जैसे—'सहइ' धातु के एकार्थक में—

सहते — अभय होकर सहना।

क्षमते— क्रोध मुक्त होकर सहन करना।

तितिक्षते— दीनता रहित होकर सहना।

अधिसहते— अत्यधिक सहना।

इसके अतिरिक्त अनेक कालों में प्रयुक्त धातुओं के एकार्थक भी इस कोश में समाविष्ट हैं, जैसे- 'चयाहि', 'चालिज्जाति' 'छड्डे',' इत्यादि।

इसी क्रम में कृदन्त तथा तद्धित के प्रत्ययों से युक्त शब्दों के भी एकार्थक भी इसमें हैं। जैसे-'छिंदंत','पीणणिज्ज', 'सोऊण','नस्समाण','पडुच्च', 'वसित्तु', 'छर्दितुम्','इट्ठत्ता', इत्यादि शब्दों के एकार्थक।

---

१. अंतटी प. २२ : सहत इत्यादीनि एकार्थानि पदानीति केचित्, अन्ये तु······।

कोश का बाह्य स्वरूप

यह कोश गद्य और पद्य मिश्रित है। इसमें मूल एकार्थक लगभग १५५० हैं लगभग २२५ अवान्तर एकार्थक मिलाने से करीब १७७५ शब्दों के एकार्थकों का संकलन इस कोश में है। प्रत्येक एकार्थक शब्द का अर्थ-निर्देश और प्रमाण दिया गया है। इसमें लगभग ८१०० से अधिक शब्दों का संकलन है।

इस कोश में अनेक भाषाओं का मिश्रण है। आगम ग्रंथों के आर्ष-प्रयोग सहज ही इसमें समाविष्ट हैं। इसके अतिरिक्त प्राकृत भाषा के अनेक प्रयोग भी इसमें हैं। अनेक एकार्थकों में सभी शब्द देशी हैं, जैसे—उक्खड्डुमड्डु, खोडभंग आदि।

भाषा की दृष्टि से इस कोश का एक वैशिष्ट्य है कि कुछ शब्दों के एकार्थक एक ही व्यञ्जन से शुरु हुए हैं, जैसे-'पम्हुट्ठ' शब्द के पर्याय में २१ शब्द हैं। सभी शब्द 'प' से प्रारम्भ हुए हैं। इसी प्रकार 'णिस्सारित', 'उल्लोइत', 'णिम्मज्जित' आदि शब्दों के एकार्थक ज्ञातव्य हैं।

परिशिष्ट

इस कोश में दो महत्त्वपूर्ण परिशिष्ट दिये गए हैं। प्रथम परिशिष्ट में इस कोश में प्रयुक्त सभी शब्दों की अकारादि क्रम से सूची है। इस परिशिष्ट में लगभग ८१०० से अधिक शब्द हैं।

इस परिशिष्ट की विशेषता यह है कि इसमें शब्द-ज्ञान के लिए कोष्ठक में मूल शब्द दिया है, जिससे सामान्यत: केवल परिशिष्ट देखने मात्र से वह शब्द कितने अर्थ में प्रयुक्त है, यह ज्ञान हो सकता है। परिशिष्ट में शब्दों को निर्विभक्तिक और प्रत्यय रहित लिया है, जबकि धातुओं को सुविधा के लिए प्रत्यय सहित लिया है।

द्वितीय परिशिष्ट में एकार्थकों की स्पष्टता तथा सार्थकता प्रमाण सहित टिप्पणों के रूप में व्याख्यायित है। जैसे-'अलिय', 'परिग्गह' आदि शब्दों के ३०-३० पर्याय उल्लिखित हैं। उनकी विशेष व्याख्या टीका के आधार पर परिशिष्ट २ में दी गयी है। द्वितीय परिशिष्ट में लगभग ३२६ टिप्पण हैं। कहीं-कहीं टिप्पणों के साथ आगमेतर साहित्य में उसके संवादी एकार्थक मिले हैं, उनको भी जोड़ा गया है। देखें 'अवग्रह', 'ईहा', 'क्रोध', चित्त आदि के टिप्पण।

प्रस्तुत कोश में एकार्थकों का संकलन लगभग सौ से अधिक ग्रन्थों से

किया गया हैं। एकार्थक की दृष्टि से उनमें कुछेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ ये हैं—

भगवती

इस ग्रन्थ में जैन सिद्धान्त व दर्शन सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण एकार्थक उपलब्ध हैं। जैसे— 'तमुक्काय','कण्हराति',पांच अस्तिकाय एवं चार कषाय आदि से सम्बन्धित एकार्थक। इसके साथ 'राहु' के नौ नाम नवीनता लिए हुए हैं। संस्कृत कोशों में ये नाम नहीं मिलते हैं। इसके अतिरिक्त प्रकीर्णक रूप से और भी अनेक महत्त्वपूर्ण एकार्थक इसमें हैं।

प्रश्नव्याकरण

इसमें पांच आस्रव—पाणवह, अलिय, अदिण्णादाण, अबंभ आदि के ३०-३० तथा अहिंसा के ६० पर्याय उल्लिखित हैं। सामान्यत: ये एकार्थक प्रतीत नहीं होते लेकिन टीकाकार ने बहुत स्पष्टता के साथ इनको एकार्थक स्वीकार किया हैं। इनकी स्पष्ट व्याख्या के लिए देखें परिशिष्ट २ के तद् तद् नाम विषयक टिप्पण। इसके अतिरिक्त 'पाव','गोणस', 'सद्दूल' आदि अनेक स्फुट एकार्थकों का भी इसमें प्रयोग मिलता है।

अनुयोगद्वार

अनुयोगद्वार व्याख्यापद्धति का अनूठा ग्रन्थ है। इसमें प्रत्येक विषय को समझाने के लिए पहले एकार्थक दिये हैं, जैसे— 'आवस्सय','सुत्त','गण' इत्यादि।

आवश्यकचूर्णि

आवश्यकचूर्णि के एकार्थक नवीनता की दृष्टि से अपना विशेष महत्त्व रखते हैं। चूर्णिकार ने लगभग अपरिचित व समस्त शब्दों से युक्त एकार्थकों का प्रयोग किया हैं, जो अन्य कोशों में नहीं मिलते, जैसे— 'संजमत-वड्डय','पावकम्मनिसेहकिरिया','दुक्कड','अप्पियववहारिय' इत्यादि।

निशीथचूर्णि

यह आकर ग्रन्थ है, जिसमें प्रसंगवश सभी विषयों का विस्तार से वर्णन हुआ है। इसमें भी नवीन एवं अपरिचित एकार्थकों का प्रयोग हुआ है। जैसे— 'उक्खड्डुमड्डु','दगतीर','उक्खोडभंग' 'नयन' इत्यादि।

दशवैकालिक जिनदास चूर्णि

दशवैकालिक एक महत्त्वपूर्ण निर्यूढ कृति है। इस पर दो चूर्णियां उपलब्ध हैं। एकार्थक शब्दों की दृष्टि से जिनदास स्थविर की चूर्णि अधिक महत्त्वपूर्ण है। इसकी विशेषता यह है कि प्राय:सभी एकार्थक दो शब्दों के हैं। कहीं कहीं तीन शब्दों का उल्लेख भी है।

अंगविज्जा

'अंगविज्जा' ज्योतिषविद्या का दुर्लभ ग्रन्थ है। इसमें प्राचीन संस्कृति, सभ्यता व आभूषणों के अनेक नवीन पर्यायवाची शब्दों का संकलन है जैसे— 'हत्थिक','कुंडल' 'तट्टक' ,'अरंजर', 'णावा','दीहसक्कुलिका','काहापण' इत्यादि शब्दों के एकार्थक। इसके अतिरिक्त ग्रन्थकार ने अनेक स्थलों पर 'एते सद्दा समा भवे' का उल्लेख किया हैं। इस ग्रन्थ के एकार्थक प्राचीन संस्कृति व सभ्यता की समृद्धि का बोध कराते हैं। इसके अतिरिक्त अतिवत्त, महव्वय, पम्हुट्ठ, डिप्फर, णिम्मज्जित, णिस्सारित आदि अनेक शब्दों के एकार्थक इसमें संगृहीत हैं। ये एकार्थक संस्कृत या प्राकृत के किसी अन्य कोश में दृष्टिगत नहीं होते अत: ये अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं।

इसके अतिरिक्त बृहत्कल्प, ओघनिर्युक्ति, जीतकल्पभाष्य आदि ग्रन्थों में भी प्रचुर मात्रा में एकार्थकों का प्रयोग हुआ है।

यह कोश अपने आप में पूर्ण है, ऐसा कहना उचित नहीं होगा, संभव है यत्र-तत्र कुछेक महत्त्वपूर्ण एकार्थक छूट भी गए हों।

कार्य का इतिवृत्त

वि. सम्वत् २०३७ में चैत्र का महीना था। शोध, साधना व शिक्षा की संगमस्थली जैन विश्व भारती के विशाल प्रांगण में युवाचार्यश्री महाप्रज्ञजी (आचार्य महाप्रज्ञ) का लाडनूं प्रवास था। उस दौरान अनेक महत्त्वपूर्ण कार्यों की संयोजना हुई। लाडनूँ में स्थित पारमार्थिक शिक्षण संस्था में अध्ययनरत बहिनों के शैक्षणिक विकास के विषय में चिन्तन चला। उस समय जैन विश्व भारती संस्थान का अस्तित्व नहीं था अत: मुमुक्षु बहिनों के अध्ययन और विकास की सारी जिम्मेवारी जैन विश्व भारती और ब्राह्मी विद्या पीठ के अन्तर्गत थी।

एक दिन जैन विश्व भारती ब्राह्मी विद्यापीठ के अन्तर्गत स्नातकोत्तर कक्षाओं में पढ़ने वाली साध्वियों व मुमुक्षु बहिनों की श्रद्धेय युवाचार्यश्रीजी की सन्निधि में गोष्ठी हुई। गोष्ठी के दौरान युवाचार्यश्री ने पूछा— 'तुम सबकी रुचि गहन अध्ययन में हैं अथवा आजकल के विद्यार्थियों की भान्ति केवल डिग्रियां प्राप्त करने में?' सभी ने एक स्वर से उत्तर दिया— 'हम गहन अध्ययन करना चाहती हैं।' उसी भाषा को दोहराते हुए युवाचार्यश्री ने पुन: फरमाया—'गहराई से सोचकर उत्तर दे रही हो अथवा केवल श्रद्धा या भावावेश

में बोल रही हो? एक क्षण के लिए हमारी मुद्रा गंभीर हो गयी लेकिन पुनः सबने करबद्ध प्रार्थना की—'गुरुदेव! हम गंभीर अध्ययन करने के लिए कृतसंकल्प हैं। आर्चायप्रवर व युवाचार्यश्री के कुशल मार्गदर्शन में हम नया ज्ञान प्राप्त कर सकेंगी, ऐसा विश्वास है। हमारी मनोभावना को जानकर युवाचार्यश्री ने मन ही मन भावी कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार कर ली।

महावीर जयन्ती के पावन दिन पर सूर्य की अरुण रश्मियों के साथ हमें प्रथम वाचना प्राप्त हुई। यह प्रथम वाचना छेदसूत्र व आवश्यक के व्याख्या ग्रन्थों के साथ प्रारम्भ हुई। प्रारम्भ में कार्य में पांच मंडलियां थीं, जिनका नेतृत्व साध्वियां कर रही थीं। मुमुक्षु बहिनें उनकी सहयोगी के रूप में कार्यरत थीं। कार्य की योजना बहुत विशाल थी। हमारा अनुभव नया था, पर दोनों मनीषियों की अनन्त ऊर्जा हमें सतत मिल रही थी। हम पूरी तन्मयता और उत्साह के साथ कार्य में जुट गयीं। इस कार्य के साथ पांच कोशों की योजना जुड़ी हुई थी—

१. आगम शब्द कोश— प्राकृत के सभी पारिभाषिक शब्दों का अर्थ व प्रमाण सहित निर्देश।

२. जैन विश्व कोश— जैन पारिभाषिक शब्दों पर अंग्रेजी भाषा में निबन्धात्मक विश्लेषण।

३. देशी शब्द कोश— आगम तथा व्याख्या ग्रन्थों में प्रयुक्त देशी शब्दों का अर्थ और प्रसंग सहित निर्देश।

४. निरुक्त कोश— आगम एवं व्याख्या ग्रन्थों में प्रयुक्त निरुक्तों का संदर्भ सहित चयन तथा हिन्दी अनुवाद।

५. एकार्थक कोश— शताधिक ग्रन्थों से एकार्थक शब्दों का संकलन एवं विशिष्ट शब्दों की व्याख्या।

इसके साथ कुछ विशेष दृष्टियां भी दी गयीं, जिनके परिप्रेक्ष्य में हमें आगम ग्रन्थों तथा व्याख्या साहित्य का अध्ययन करना था। वे कुछेक दृष्टि-बिन्दु ये थे—

१. **गाथा वर्गीकरण तथा पद्यानुक्रमणिका** (भाष्य, निर्युक्ति व चूर्णि में आयी गाथाओं का अकारादि क्रम से निर्देश, जिससे शोधकर्त्ताओं को गाथा खोजने मे सुगमता हो सके।)

२. **धर्मकथासंग्रह**— व्याख्या ग्रन्थों में आयी कथाओं का संकलन।

३. सूक्तिसंग्रह।

४. सभ्यता-संस्कृति के मुख्य तत्त्वों का चयन।
५. इतिहास-परम्परा।
६. चिकित्सा विज्ञान सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
७. स्वास्थ्य-विज्ञान तथा मनोविज्ञान के स्थलों का चयन।
८. दार्शनिक व शैक्षणिक तथ्य।
९. सम्प्रदाय— प्राचीन सम्प्रदायों के अस्तित्व, मान्यता, आचार्य आदि विषयक जानकारी।
१०. साधना विषयक जानकारी।
११. वैज्ञानिक तथ्य।
१२. जीवविज्ञान।
१३. आहारविज्ञान।

कार्य प्रारम्भ होने के कुछ दिनों पश्चात् पूज्य गुरुदेव भी लाडनूं पधार गए। कार्य अपनी गति से चलता रहा, लेकिन उसके साथ परीक्षण भी अनिवार्य था अत: समय-समय पर कार्य का परीक्षण व निरीक्षण करने हेतु आचार्य श्री तुलसी और युवाचार्यश्री वर्द्धमान ग्रंथागार पधारते रहते थे। कार्य प्रारम्भ के लगभग एक वर्ष बाद समण श्रेणी की स्थापना हुई, जिसमें कार्य करने वाली कुछ मुमुक्षु बहिनें समणियां बन गयीं। कालान्तर में आगम कोश में कार्य की गति मंथर देखकर युवाचार्य प्रवर ने मुस्कराते हुए फरमाया—'कार्य दो साल में पूरा करना है, भले ही इसके लिए रोटी-पानी छोड़ना पड़े।' हमने निवेदन किया यदि युवाचार्य प्रवर की लाडनूँ में सतत सन्निधि मिले तो यह कार्य संभव हो सकता है, अन्यथा कार्य में बार-बार अवरोध उत्पन्न होता है और अनेक स्थल प्रश्नचिह्न बने रहते हैं। युवाचार्य प्रवर ने फरमाया—'समस्या के समाधान के लिए हमारे पास आया जा सकता हैं। हमें नयी प्रेरणा और ऊर्जा संप्रेषित करके आचार्य प्रवर ने लाडनूँ से मारवाड़ की ओर प्रस्थान कर दिया। अब कार्य मुख्य रूप से साध्वियों और समणियों के जिम्मे था।

विक्रम सम्वत् २०३६ का मर्यादा महोत्सव नाथद्वारा की ऐतिहासिक धरा पर हुआ। महोत्सव की समाप्ति के पश्चात् कार्य करने वालों की एक गोष्ठी आयोजित की गयी। अन्तिम निष्कर्ष यह था कि कार्य गतिमान् किया जाये और उसे अन्तिम रूप दिया जाए। आचार्यवर एवं युवाचार्य प्रवर ने फरमाया—'यदि कार्य में विलम्ब होगा तो 'काल:पिबति तद्रसम्' वाली कहावत चरितार्थ

होगी।' पूज्यवरों के इस कथन ने कार्य की महत्ता को और अधिक उजागर कर दिया।

वि. स. २०४० में मुनिश्री दुलहराजजी को आगम कार्य के लिए लाडनूँ भेजा गया। लाडनूं पधारते ही मुनिश्री ने एक दिन ग्रन्थागार में आगम कोश के कार्य को देखा। तीन वर्षों के कार्य का निरीक्षण कर आपने कहा—''कार्य बहुत हुआ है। अब इसे अंतिम रूप देकर समेटना आवश्यक है। यदि मेरा इसमें यत्किञ्चित् सहयोग अपेक्षित हो तो मैं इसके लिए सहर्ष प्रस्तुत हूं।'' हमारा उत्साह बढ़ा और सभी कार्यरत साध्वियों एवं समणियों की गोष्ठी आयोजित की गयी। सर्वप्रथम एकार्थक कोश, निरुक्त कोश और देशी कोश को अन्तिम रूप देने का निर्णय हुआ। कार्य का दायित्व जिन-जिन पर आया उन्होंने अपना पूरा समय तद् तद् कार्य के लिए समर्पित कर दिया और जो कार्य एक महाअरण्य-सा प्रतीत हो रहा था वह कुछ ही महीनों मे पूरा होने लगा।।

निरुक्त कोश का कार्य साध्वी सिद्धप्रज्ञाजी एवं निर्वाणश्रीजी को दिया गया।

देशी शब्दकोश का कार्य एक बार साध्वी अशोकश्रीजी और साध्वी विमलप्रज्ञाजी ने प्रारंभ कर दिया।

मुझे एकार्थक कोश का कार्य संपन्न करना था। मैं इस कार्य में दत्तचित्त हो गई। यद्यपि अलग-अलग ग्रंथों से साध्वियों एवं मुमुक्षु बहिनों ने एकार्थकों का संकलन किया था लेकिन एक बार लगभग सभी आगम एवं उसके व्याख्या ग्रंथों को एकार्थक की दृष्टि से देखना अनिवार्य लगा। पुन: पारायण से अनेक एकार्थक इस ग्रंथ में और जुड़ गए। कार्य की सम्पन्नता में रात्रि में सोने का समय भी मात्र दो-तीन घंटा हो गया। कार्य आगे बढ़ा और पूर्णता के शिखर पर चढ़ गया।

सर्वप्रथम मेरा भक्ति भरा प्रणाम उन आगम पुरुष प्राचीन आचार्यों को है, जिन्होंने श्रुत-परम्परा को समृद्ध किया है।

परमश्रद्धेय, शक्तिस्रोत आचार्यप्रवर एवं युवाचार्यश्री का वात्सल्यपूर्ण आशीर्वाद मेरी साधना का संबल है। मैं उनकी प्रभुता और महानता के प्रति प्रणत हूँ क्योंकि इसमें जो कुछ है, वह उन्हीं का अवदान है। मैं तो मात्र निमित्त बनी हूं। पुन: पुन: उन पावन चरणों में अपनी कोमल अभिवन्दनाएँ प्रस्तुत

करती हूँ और कामना करती हूँ कि उनका स्नेहपूरित आशीर्वाद भविष्य में मेरी सृजनशक्ति को उजागर करने में निमित्त बनता रहे तथा मेरे आध्यात्मिक मार्ग को प्रशस्त करता रहे।

मैं महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा श्रीकनकप्रभाजी के प्रति प्रणत हूँ जिनके हार्दिक स्नेह और निश्छल वात्सल्य ने प्रेरणा का कार्य किया है। आशा करती हूँ कि भविष्य में उनके आध्यात्मिक संरक्षण में आगम-साहित्य का गहन पारायण करती रहूं।

मुनिश्री दुलहराजजो ने एकार्थक कोश के चयन तथा परिशिष्टों के निरीक्षण में अपना बहुमूल्य समय प्रदान कर मेरा मार्ग-दर्शन किया, उनके प्रति मैं जितना भी आभार व्यक्त करूं, उतना थोड़ा है। यह उनके प्रोत्साहन और मार्गदर्शन का ही परिमाण है कि यह गुरुतर कार्य इतने स्वल्प समय में सम्पन्न हो सका।

अन्त में मैं उन समस्त साध्वियों, समणियों और मुमुक्षु बहिनों के सहयोग का स्मरण करती हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से स्वल्प या अधिक इस कार्य में अपने श्रम-बिन्दु अर्पित किये हैं—

निर्देशिका	**ग्रन्थ**
१. साध्वी कनकश्री	निशीथ
२. साध्वी यशोधरा	व्यवहार
३. साध्वी अशोकश्री	आचारांग, दशाश्रुतस्कंध, पंचाशक प्रकरण, सूर्यप्रज्ञप्ति
४. साध्वी जिनप्रभा	सूत्रकृतांग (प्रथम श्रुतस्कन्ध)
५. साध्वी कल्पलता	दशवैकालिक
६. साध्वी विमलप्रज्ञा	आवश्यक (द्वितीय भाग), नवीन कर्मग्रन्थ
७. साध्वी सिद्धप्रज्ञा	सूत्रकृतांग (द्वितीय श्रुतस्कन्ध), स्थानांग, बृहत्कल्प, पिण्डनिर्युक्ति
८. साध्वी निर्वाणश्री	आवश्यक (प्रथम भाग), सूत्रकृतांग-१
९. समणी स्मितप्रज्ञा	उत्तराध्ययन
१०. समणी कुसुमप्रज्ञा	भगवती, ज्ञाताधर्मकथा, उपासकदशा, अंतकृद्दशा, अनुत्तरौपपातिकदशा, प्रश्नव्याकरण, विपाकश्रुत, औपपातिक,

राजप्रश्नीय, जीवाभिगम, जम्बूद्वीप-
प्रज्ञप्ति, निरयावलिका, अंगविज्जा, सूर्यप्रज्ञप्ति,
अनुयोगद्वार, नंदी, ओघनिर्युक्ति, जीत-
कल्पभाष्य, प्रवचनसारोद्धार, इसिभासियं
पंचवस्तु, सभी प्रकीर्णक, सित्तरी,
प्राचीनकर्मग्रंथ आदि।

इस कार्य की सम्पन्नता में बहिन निर्मला चोरडिया एवं कार्य में संलग्न कुछ मुमुक्ष बहिनों का सहयोग भी रहा। अन्त में श्रुतयात्रा में प्रस्थित सभी सहयोगियों के प्रति मैं मंगल कामना करती हुई अपने प्रति यह मंगलभावना व्यक्त करती हूँ कि भविष्य में मेरे जीवन के क्षण इस बहुमूल्य कार्य की सम्पन्नता में लगते रहें ।

१-२-८४ विनयावतन
लाडनूँ **समणी कुसुमप्रज्ञा**

अनुक्रम

आशीर्वचन ७
पुरोवचन ९
प्रस्तुति १३
प्रयुक्त ग्रंथ-संकेत सूची ३५
एकार्थक कोश १

परिशिष्ट

शब्द-अनुक्रम
विशेष शब्द-विवरण

द्वितीय संस्करण

प्रथम संस्करण की सम्पन्नता पर द्वितीय संस्करण के प्रकाशन की आवश्यकता महसूस हुई। कुछ महत्त्वपूर्ण ग्रंथ जो उस समय छूट गए थे, उनके एकार्थकों का समाहार इसमें किया गया है तथा कुछ एकार्थक जो महत्त्वपूर्ण नहीं लगे उनको हमने इस ग्रंथ से निकाल दिया है। इन २१-२२ सालों में अनेक ग्रंथ प्रकाशित एवं संपादित हो गए अत: उनके संदर्भ-स्थल भी बदल दिए हैं, जैसे—व्यवहारभाष्य आवश्यक निर्युक्ति और अनुयोगद्वार आदि ग्रंथ। कार्य के दौरान अनुभव हुआ कि द्वितीय संस्करण भी उतना ही श्रमसाध्य रहा जितना कि प्रथम संस्करण। यद्यपि कार्य में बाधाएं बहुत आईं पर आज कार्य की परिसम्पन्नता पर हर्ष की अनुभूति हो रही है।

प्रथम संस्करण में ग्रंथ के साथ तीन परिशिष्ट थे। तीसरे परिशिष्ट में हमने धातुओं का अनुक्रम एवं उनकी मूल प्रकृति का निर्देश किया था। अधिक उपयोगी न होने से द्वितीय संस्करण में हमने उस परिशिष्ट को नहीं जोड़ा है।

मैं अपना सौभाग्य समझती हूँ कि परमाराध्य पूज्य गुरुदेव एवं आचार्यप्रवर ने मुझे शाश्वत के प्रति आकर्षण पैदा करने की दृष्टि प्रदान की। यदि इस कार्य में संलग्नता नहीं रहती तो संभव है अनेक क्षणिक आकर्षण मन को खींच सकते थे। जैन परम्परा में महिला जाति द्वारा सम्पादित यह प्रथम कोश प्रकाश में आया है। इस बहुमूल्य एवं निर्जराजन्य कार्य में पूज्यवरों ने मुझे जोड़ा, इसके लिए मेरे मन में अत्यन्त अहोभाव है।

उस प्रारम्भिक काल में यदि मुनिश्री दुलहराजजी का कठोर अनुशासन नहीं होता तो स्वतंत्र रूप से अनुवाद या कार्य करने का अनुभव प्राप्त नहीं होता। व्यवस्थागत कठिनाई के कारण पर्युषणकालीन समय में लगभग एक मास तक मुनिश्री दुलहराजजी स्वयं हमारे आवास-स्थल अतिथिभवन में मार्गदर्शन के लिए पधारते। साध्वी श्री कनकश्रीजी ने उदारभाव से कल्प के लिए एक साध्वी की व्यवस्था की। प्रारम्भिककाल के उन अनुभवों को मन में संजोती हुई मैं गणाधिपति पूज्य गुरुदेव की स्मृति के साथ परम पूज्य आचार्य प्रवर एवं युवाचार्यश्री के प्रति अत्यन्त कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, जिनके शक्ति-संप्रेषण एवं आशीर्वाद से ही यह कार्य सम्पन्न हो सका। साध्वी प्रमुखा श्री जी का निश्छल वात्सल्य मेरी जीवन यात्रा का सम्बल है। आदरणीया नियोजिकाजी एवं सभी समणीजी का हार्दिक आत्मीयभाव भी कार्य में सहयोगी रहा है। मनोज भोजक, कुसुम सुराणा ने इसे कम्प्यूटर पर फीड किया है तथा पिंकी सिन्हा और निर्मला ने प्रूफ-संशोधन में सहयोग दिया है। आचार्यवर के आशीर्वाद से श्रुतसागर में निमज्जन करती हुई अपने जीवन के हर क्षण को सार्थक कर सकूं, यही अभीप्सा है।

समणी कुसुमप्रज्ञा

परिशिष्ट

१. शब्द-अनुक्रम
२. विशेष शब्द-विवरण

ग्रंथानुक्रम

आशीर्वचन	७
पुरोवचन	९
प्रस्तुति	१२
द्वितीय संस्करण	३२
एकार्थक कोश	१
परिशिष्ट	
० शब्द-अनुक्रम	१५७
० विशेष शब्द-विवरण	२७६
० प्रयुक्त ग्रंथ संकेत-सूची	२७७

शब्द-अनुक्रम

(प्रस्तुत परिशिष्ट के अन्तर्गत जिन शब्दों के आगे कोष्ठक में पृष्ठ संख्या दी गयी है वे एकार्थवाची शब्दों के प्रारंभिक शब्द के द्योतक हैं। शेष एकार्थक शब्दों के आगे मूल एकार्थक शब्द का संकेत किया है।)

अइबल	**(पृ. १)**
अइब्बल	**(ओहबल)**
अइभय	**(बीहणय)**
अंकण	**(वध)**
अंकुटिक	**(नागदन्तक)**
अंग	**(पृ. १)**
अंग	**(आयार)**
अंगजक	**(गंडूपक)**
अंगणा	**(पत्ति)**
अंगुलेयक	**(पृ. १)**
अङ्गज	**(अत्तय)**
अंचेति	**(पृ. १)**
अंजलिपग्गह	**(सक्कार)**
अंत	**(तीरित)**
अंतंनीत	**(शिक्षित)**
अंतगड	**(सिद्ध)**
अंतजीवि	**(अंताहार)**
अंतर	**(पृ. १)**
अंतर	**(छिद्द)**
अंतर	**(छिड्ड)**
अंतरप्प	**(पृ. १)**
अंतरप्प	**(जीवत्थिकाय)**
अंतलिक्ख	**(आगासत्थिकाय)**
अंताहार	**(पृ. १)**
अंतिग	**(पृ. २)**
अंदोलति	**(पृ. २)**
अंधकार	**(छाया)**
अंधकार	**(नील)**
अंधकार	**(तमस्)**
अंधकार	**(तमुक्काय)**
अंबर	**(आगासत्थिकाय)**
अंबरस	**(आगासत्थिकाय)**
अंश	**(कला)**
अंश	**(विकल्प)**
अंश	**(प्रकृति)**
अंश	**(भेद)**
अंस	**(पृ. २)**
अकंटय	**(ओहयकंटय)**
अकंत	**(अणिट्ठ)**
अकंत	**(दुक्ख)**
अकंतस्सर	**(हीणस्सर)**
अकंप	**(धुवक)**
अकडिपड	**(निग्गतवसण)**
अकतत्थ	**(दीण)**
अकथ्य	**(गरहित)**
अकम्म	**(सिद्ध)**
अकम्मगत	**(सिद्धिगत)**
अकम्मवीरिय	**(पृ. २)**
अकयत्थ	**(अधन्न)**
अकयलक्खण	**(अधन्न)**

अकरणा	**(दुगुंछणा)**	अक्रिया	**(पृ. ३)**
अकरणाए अब्भुट्ठिज्जइ	**(आलोइज्जइ)**	अक्रोधवद्	**(शान्त)**
अकरणीय	**(मिच्छा)**	अक्षर	**(पृ. ३)**
अकलुस	**(अदीण)**	अखंड	**(पृ. ३)**
अकलुस	**(अणासव)**	अखंड	**(पृ. ३)**
अकषायवद्	**(शान्त)**	अखण्ड	**(सर्व)**
अकसाइ	**(अणाइल)**	अखमा	**(कोह)**
अकिंचण	**(अणासव)**	अखमा	**(मोहणिज्जकम्म)**
अकिंचण	**(संत)**	अखिल	**(अचल)**
अकिच्च	**(पाणवह)**	अग	**(दुम)**
अकिट्ठ	**(पृ. २)**	अगणि	**(अग्गि)**
अकिरिय	**(संजय)**	अगणिझामिय	**(पृ. ३)**
अकीर्ति	**(अवण्ण)**	अगणिझूसिय	**(अगणिझामिय)**
अकुटिल	**(ऋजु)**	अगणिपरिणामिण	**(अगणिझामिय)**
अकुटिलत्तण	**(उज्जुगत्तण)**	अगम	**(आगासत्थिकाय)**
अकुडिल	**(पृ. २)**	अगम	**(पादव)**
अकुडिल	**(उज्जुय)**	अगरहिय	**(सामायिक)**
अकुसल	**(पृ. २)**	अगर्भिणी	**(नववधू)**
अक्कोस	**(पृ. २)**	अगीतार्थ	**(अल्पश्रुत)**
अक्कोसति	**(आहणइ)**	अगुणकित्तण	**(परिवयण)**
अक्कोसेज्ज	**(पृ. २)**	अगुत्ति	**(परिग्गह)**
अक्कोह	**(पृ. २)**	अगृद्ध	**(पृ. ३)**
अक्ख	**(दुमपुप्फिया)**	अगेहि	**(लाघविय)**
अक्खण	**(आलोयण)**	अगेहि	**(असंजण)**
अक्खय	**(धुव)**	अगोय	**(पृ. ३)**
अक्खर	**(चेयण्ण)**	अग्ग	**(पृ. ३)**
अक्खुभिय	**(अभीय)**	अग्ग	**(पृ. ३)**
अक्खेव	**(अदिण्णादाण)**	अग्गि	**(पृ. ३)**
अक्खोडभंग	**(खोडभंग)**	अग्गिकुंड	**(अग्घुप्पत्ति)**
अक्खोला	**(लोमसिका)**	अग्गिट्ठ	**(अग्घुप्पत्ति)**

अग्गिसिहा	**(हुतासणसिहा)**
अग्गिहोत्त	**(बंभण)**
अग्गिहोत्तरति	**(बंभण)**
अग्घातित	**(पृ. ३)**
अग्घुप्पत्ति	**(पृ. ४)**
अग्र	**(पृ. ४)**
अग्रेसरत्व	**(पोरेवच्च)**
अचंचल	**(असाहस)**
अचंचलसील	**(अबालसील)**
अचरम	**(पृ. ४)**
अचल	**(पृ. ४)**
अचलित	**(धुवक)**
अचलिय	**(अभीय)**
अचवल	**(अणुव्विग्ग)**
अचवल	**(अतुरिय)**
अचवल	**(असाहस)**
अचिंतण	**(असरण)**
अचियत्त	**(पृ. ४)**
अचेल	**(निग्गतवसण)**
अचोक्ख	**(असुइ)**
अच्चण	**(थुइ)**
अच्चलीण	**(अणुपविट्ठ)**
अच्चि	**(मुम्मुर)**
अच्चि	**(जुइ)**
अच्चित	**(वंदित)**
अच्चिय	**(पृ. ४)**
अच्छ	**(पृ. ४)**
अच्छ	**(तरच्छ)**
अच्छ	**(मंदर)**
अच्छिद्द	**(अणासव)**
अच्छिन्न	**(सकल)**
अच्छिन्न	**(साहारण)**
अछलणा	**(दया)**
अजर	**(सिद्ध)**
अजरामर	**(अचल)**
अजीवाभिगम	**(जीवाभिगम)**
अजोग	**(अणल)**
अज्जावेयव्व	**(हंतव्व)**
अज्जीवाइवात	**(अहिंसा)**
अज्झत्थिय	**(पृ. ४)**
अज्झयण	**(पृ. ४)**
अज्झयणछक्कवग्ग	**(आवस्सय)**
अज्झवसाण	**(पणिहाण)**
अज्झवसाण	**(मणसंकप्प)**
अज्झवसायठाण	**(संजमठाण)**
अज्झास	**(अंतिग)**
अज्झीण	**(अज्झयण)**
अज्झीत	**(उवचार)**
अज्झोववज्जइ	**(सज्जइ)**
अज्झोववण्ण	**(पृ. ४)**
अज्झोववण्ण	**(लोलुय)**
अज्झोववण्ण	**(मुच्छिय)**
अज्झोववण्ण	**(सत्त)**
अज्झोस	**(पृ. ४)**
अज्ञ	**(बाल)**
अज्ञानावृत	**(मन्द)**
अट्ट	**(पृ. ५)**
अट्ट	**(अलिय)**
अट्ट	**(आगासत्थिकाय)**
अट्यते	**(अर्द्यते)**

अट्ठिक (**णिम्मंसक**)
अट्ठिकलेवर (**णिम्मंसक**)
अट्ठिकसंकल (**णिम्मंसक**)
अट्ठिचम्मावणद्ध (**सुक्क**)
अडवी (**गहण**)
अड्ड (**पृ. ५**)
अड्डग (**गड्डिक**)
अण (**पृ. ५**)
अणंत (**पृ. ५**)
अणंत (**अणुत्तर**)
अणंत (**विच्छिन्न**)
अणंत (**हत्थखड्डुग**)
अणंत (**निव्वाण**)
अणंत (**आगासत्थिकाय**)
अणंत (**केवल**)
अणंतपएसियखंध (**पोग्गलत्थिकाय**)
अणंतरहित (**अणंतरिय**)
अणंतराय (**पृ. ५**)
अणंतरिय (**पृ. ५**)
अणकर (**पाणवह**)
अणगार (**उज्जु**)
अणगार (**समण**)
अणगार (**भिक्खु**)
अणज्ज (**पाव**)
अणज्ज (**अकुसल**)
अणज्ज (**अलिय**)
अणज्जव (**उवधि**)
अणणुतावित्ता (**अविविचित्ता**)
अणण्ण (**पृ. ५**)
अणत्त (**भग्ग**)
अणत्थ (**भय**)
अणत्थ (**परिग्गह**)
अणत्थक (**परिग्गह**)
अणप्पज्झ (**पृ. ५**)
अणभिज्झियत्ता (**इट्ठत्ता**)
अणल (**पृ. ५**)
अणल (**अग्गि**)
अणलि (**दीव**)
अणवज्ज (**सामायिक**)
अणाइल (**पृ. ५**)
अणाइल (**अदीण**)
अणाइलभाव (**पृ. ५**)
अणाउय (**पृ. ५**)
अणाउल (**अभीय**)
अणाढायमाण (**असरण**)
अणाध (**भग्ग**)
अणाबाहपय (**हीणस्सर**)
अणाबाहपय (**निव्वाण**)
अणाम (**पृ. ६**)
अणायतण (**पृ. ६**)
अणायरण (**मोहणिज्जकम्म**)
अणारिय (**पच्चंतिक**)
अणारिय (**पाव**)
अणालसत्त (**उच्छाह**)
अणावरण (**पृ. ६**)
अणावुट्ठि (**अपातय**)
अणासव (**पृ. ६**)
अणासव (**संत**)

अणासव	**(अहिंसा)**
अणाह	**(अत्ताण)**
अणिग्गयभाव	**(अणाइलभाव)**
अणिग्गह	**(अबंभ)**
अणिग्गह	**(उच्चच्छंद)**
अणिट्ठ	**(पृ. ६)**
अणिट्ठ	**(दुक्ख)**
अणिट्ठस्सर	**(हीणस्सर)**
अणितिय	**(भेउरधम्म)**
अणियत	**(उच्चच्छंद)**
अणिवारियवावार	**(केवल)**
अणिव्वुत	**(दीण)**
अणिह	**(अकुडिल)**
अणिहुयपरिणाम-दुप्पयोगि	**(पाव)**
अणु	**(पृ. ६)**
अणु	**(कस)**
अणुओग	**(पृ. ६)**
अणुक	**(कस)**
अणुक	**(खुड्डुलक)**
अणुकंपण	**(पृ. ६)**
अणुकंपमाण	**(सारक्खेमाण)**
अणुकंपा	**(अणुकंपण)**
अणुकंपा	**(अणुसट्ठि)**
अणुक्कम	**(आणंतरिय)**
अणुजोगगत	**(दिट्ठिवाय)**
अणुज्जग	**(अलिय)**
अणुज्जल	**(असाहस)**
अणुज्जुय	**(वंक)**
अणुण्णा	**(पृ. ६)**
अणुत्तम	**(अणुत्तर)**
अणुत्तर	**(पृ. ७)**
अणुत्तर	**(पृ. ७)**
अणुत्तर	**(अणंत)**
अणुत्तर	**(निव्वाण)**
अणुत्तर	**(खेम)**
अणुधम्म	**(विरयाविरइ)**
अणुपरिवाडि	**(आणंतरिय)**
अणुपविट्ठ	**(पृ. ७)**
अणुपविट्ठ	**(अतिगत)**
अणुपालेइ	**(फासेइ)**
अणुपालेमाण	**(सारक्खेमाण)**
अणुपुव्वि	**(विहि)**
अणुबद्ध	**(सयय)**
अणुब्भड	**(असाहस)**
अणुभूत	**(णियत)**
अणुमय	**(संमय)**
अणुमय	**(थेज्ज)**
अणुमात्र	**(पृ. ७)**
अणुवसंत	**(रुट्ठ)**
अणुव्विग्ग	**(पृ. ७)**
अणुव्विग्ग	**(अभीय)**
अणुसंचरइ	**(पृ. ७)**
अणुसट्ठि	**(पृ. ७)**
अणुसमय	**(पृ. ७)**
अणेग	**(बहु)**
अणेगणामभेद	**(अणेगपडिरय)**
अणेगपज्जाय	**(अणेगपडिरय)**
अणेगपडिरय	**(पृ. ७)**
अणेह	**(णिण्णेहक)**

अणोज्जा (पृ. ८)
अण्ण (पृ. ८)
अण्णाण (**अवद्य**)
अण्णाय (पृ. ८)
अण्णेसणा (**एसणा**)
अण्हयकर (पृ. ८)
अण्हयकर (**पावय**)
अण्हेते (**जेमेति**)
अतत्थ (**अभीय**)
अतथाभूय (**णट्ठ**)
अतलपलाइत (**संगाम**)
अतिकाय (**थूल**)
अतिकिमण (**अलस**)
अतिक्कंत (**अतिवत्त**)
अतिगत (पृ. ८)
अतिगत (**अणुपविट्ठ**)
अतिगत (**पविट्ठ**)
अतिच्छिय (**अतिवत्त**)
अतिथोव (**रहस्स**)
अतिदिग्घ (**अतिदूर**)
अतिदुस्सह (**तिव्व**)
अतिदूर (पृ. ८)
अतिदूर (**अतिगत**)
अतिपण्डर (**अवदात**)
अतिप्रभूत (**पडिहत्थ**)
अतिभय (**पाव**)
अतिम्महंत (**अतिदूर**)
अतियार (पृ. ८)
अतिरेकित (**पडिहत्थ**)
अतिवत्त (पृ. ८)
अतिवाहयन्ति (**विनयन्ति**)
अतिविसुद्ध (**सेत**)
अतिस (**अरति**)
अतिसरित (**पविट्ठ**)
अतीत (**अतिवत्त**)
अतीत (**विगत**)
अतुरिय (पृ. ९)
अत्त (पृ. ९)
अत्तकम्म (**आहाकम्म**)
अत्तय (पृ. ९)
अत्तव (पृ. ९)
अत्ताण (पृ. ९)
अत्तुक्कोस (**माण**)
अत्तुक्कोस (**मोहणिज्जकम्म**)
अत्थ (पृ. ९)
अत्थ (**ववहार**)
अत्थ (**पवयण**)
अत्थ (**मंदर**)
अत्थयति (पृ. ९)
अत्थरक (**डिप्फर**)
अत्थाम (पृ. ९)
अत्थि (पृ. ९)
अत्थि (**संत**)
अत्थिभाव (**सपज्जाय**)
अदत्त (**अदिण्णादाण**)
अदर्शन (**छन्न**)
अदिट्ठ (**अण्णाय**)
अदिण्णादाण (पृ. ९)
अदिण्णादाण (**अधम्मत्थिकाय**)
अदिण्णादाणवेरमण (**धम्मत्थिकाय**)

अदीण	**(पृ. १०)**
अदुगुंछिय	**(सामायिक)**
अदृष्ट	**(अपूर्व)**
अद्दीणमाणस	**(अणाइल)**
अद्धकविट्ठग	**(तट्टक)**
अद्धा	**(पृ. १०)**
अद्धा	**(काल)**
अद्धा	**(अवड्ढ)**
अद्धितिकरण	**(अधिकरण)**
अधण	**(पृ. १०)**
अधण्ण	**(पृ. १०)**
अधन्न	**(पृ. १०)**
अधम	**(अधर)**
अधम्म	**(अबंभ)**
अधम्म	**(अधम्मत्थिकाय)**
अधम्मत्थिकाय	**(पृ. १०)**
अधर	**(पृ. १०)**
अधर्म	**(घात)**
अधिकरण	**(पृ. ११)**
अधिकरण	**(अधितिकरण)**
अधिकार	**(उपयोग)**
अधिकिरण	**(विउस्सग)**
अधिगम	**(उवचार)**
अधिगम	**(भाव)**
अधिगम	**(णाण)**
अधिगम	**(पृ. ११)**
अधिगम	**(संविद्)**
अधितिकरण	**(पृ. ११)**
अधीत	**(शिक्षित)**
अधीत	**(उवचरित)**
अध्रुव	**(भेउरधम्म)**
अध्रुव	**(विचल)**
अध्रुव	**(अनित्य)**
अधेकम्म	**(आहाकम्म)**
अध्यवसाय	**(ज्ञान)**
अध्युपपन्न	**(सक्त)**
अध्युपपन्न	**(ग्रथित)**
अनगार	**(पृ. ११)**
अनध्युपपन्न	**(अगृद्ध)**
अननुकूल	**(असमंजस)**
अननुमार्ग	**(व्यवहार)**
अनभिप्रेत	**(असमंजस)**
अनर्थ	**(पृ. ११)**
अनल	**(पृ. ११)**
अनाचार	**(अनायतन)**
अनात्मवश	**(अणप्पज्झ)**
अनादर	**(अश्लाघा)**
अनायतन	**(पृ. ११)**
अनारंभ	**(अक्रिया)**
अनार्जव	**(माया)**
अनिंद	**(सामायिक)**
अनित्य	**(अशाश्वत)**
अनित्य	**(पृ. ११)**
अनुकंपा	**(कोलुण)**
अनुकाश	**(पृ. ११)**
अनुकूल	**(अनुलोम)**
अनुकूल	**(अविजात)**
अनुकूलप्रतिकूल	**(उच्चावच)**
अनुक्रम	**(आनुपूर्विन्)**
अनुक्रम	**(क्रम)**

अनुगत (पृ. ११)
अनुगुण (अनुलोम)
अनुद्घाति (गुरुक)
अनुपदेश (व्यवहार)
अनुपद्रव (कल्याण)
अनुपयोग (अनर्थ)
अनुपरिपाटिन् (आनुपूर्विन्)
अनुपलब्धि (छन्न)
अनुपविष्ट (निषन्न)
अनुपशम (क्रोध)
अनुपशम (कोप)
अनुबद्ध (अनुगत)
अनुबद्ध (संतत)
अनुबद्धवैर (निर्द्धर्म्म)
अनुभव (रयस्)
अनुभाषक (रात्निक)
अनुमत (अनुगत)
अनुराग (हर्ष)
अनुलोम (पृ. ११)
अनृत (मिथ्या)
अन्तगमन (पार)
अन्विष्ट (पृ. १२)
अपंगुत (उद्वित)
अपंडिय (जड्ड)
अपकड्ढति (नीहारेति)
अपकड्ढित (अपसारित)
अपकृष्य (पृ. १२)
अपगत (व्यावृत्त)
अपचय (क्षपणा)
अपच्चल (अणल)
अपछुद्ध (अपमट्ठ)
अपछुद्ध (अपसारित)
अपडिबद्धया (लाघविय)
अपणत (अपमट्ठ)
अपणत (अपसारित)
अपणामित (अपमट्ठ)
अपणासित (अपसारित)
अपधजात (उद्वित)
अपनीतबन्धन (उद्दामित)
अपमज्जिय (रहस्स)
अपमट्ठ (पृ. १२)
अपमाण (पृ. १२)
अपरक्कम (अत्थाम)
अपरच्छ (अदिण्णादाण)
अपरिणिव्वाण (असात)
अपरितंतजोगि (अदीण)
अपरिताविय (अकिट्ठ)
अपरिमियबल (अइबल)
अपरिस्पन्द (अक्रिया)
अपरिस्सावि (अणासव)
अपलिखित (अपमट्ठ)
अपलोलित (अपमट्ठ)
अपवट्टित (अपमट्ठ)
अपवत्त (अपमट्ठ)
अपवाम (वाम)
अपविट्ठ (अपमट्ठ)
अपसव्व (वाम)
अपसारित (पृ. १२)
अपसारित (अपमट्ठ)
अपहित (अपसारित)

अपातय **(पृ. १२)**
अपात्र **(पृ. १२)**
अपाय **(अर्थाध्यवसाय)**
अपियत्त **(अचियत्त)**
अपुणब्भव **(सिद्धउपपत्ति)**
अपुन्न **(अधन्न)**
अपुरिसक्कार **(अत्थाम)**
अपुरुस **(णपुंसक)**
अपूर्व **(पृ. १२)**
अपृथग् **(अणण्ण)**
अपोल्ल **(पृ. १२)**
अपोह **(आभिणिबोहिय)**
अपोह **(आभोग)**
अपोह **(ईहा)**
अप्प **(अणुमात्र)**
अप्प **(रहस्स)**
अप्पकम्मतर **(पृ. १२)**
अप्पकिरियतर **(अप्पकम्मतर)**
अप्पग्गंथ **(अप्पडिबद्ध)**
अप्पग्घ **(वाम)**
अप्पच्चय **(अलिय)**
अप्पच्चय **(अदिण्णादाण)**
अप्पडिकंटय **(ओहयकंटय)**
अप्पडिबद्ध **(पृ. १२)**
अप्पमाय **(अहिंसा)**
अप्पसंत **(कलुस)**
अप्पाय **(कम्म)**
अप्पासवतर **(अप्पकम्मतर)**
अप्पिच्छा **(लाघविय)**
अप्पिय **(दुक्ख)**
अप्पिय **(अणिट्ठ)**
अप्पियववहारिय **(पृ. १३)**
अप्पियस्सर **(हीणस्सर)**
अप्पीइ **(अरति)**
अप्फिडित **(अपसारित)**
अप्फुडिय **(अखंड)**
अप्रकाश **(गंभीर)**
अप्रकाश **(छन्न)**
अप्रच्युति **(धारणा)**
अप्रमत्त **(पयत)**
अप्रयोजन **(अनर्थ)**
अप्रविबुद्ध **(मुकुल)**
अप्रसूता **(नववधू)**
अप्रान्त **(अचरम)**
अबंधव **(अत्ताण)**
अबंभ **(पृ. १३)**
अबल **(अत्थाम)**
अबहिलेस्स **(अणाइलभाव)**
अबहिलेस्स **(सचित्त)**
अबहुश्रुत **(अल्पश्रुत)**
अबाल **(देसकालण्ण)**
अबाल **(पंडित)**
अबालसील **(पृ.१३)**
अब्भंगण **(उस्सिंघण)**
अब्भंतर **(अणुपविट्ठ)**
अब्भंतरग **(अणुपविट्ठ)**
अब्भक्खाण **(अलिय)**
अब्भक्खाण **(अधम्मत्थिकाय)**
अब्भक्खाणविवेग **(धम्मत्थिकाय)**
अब्भणुण्णत **(वण्णित)**

अब्भपलाइत **(संगाम)**
अब्भसण **(परियट्टण)**
अब्भहियतर **(पृ. १३)**
अब्भास **(पृ. १३)**
अब्भुक्कढित **(णिब्भामित)**
अब्भुग्गय **(पृ. १३)**
अब्भुज्जय **(अब्भुग्गय)**
अब्भुट्ठाण **(सक्कार)**
अब्भुट्ठि **(आउट्टि)**
अब्भुट्ठिय **(उवट्ठिय)**
अब्भुट्ठिय **(अब्भुग्गय)**
अब्भुण्णय **(अब्भुग्गय)**
अभय **(सात)**
अभय **(अहिंसा)**
अभव **(धुवक)**
अभाजन **(अपात्र)**
अभार **(अलस)**
अभिगच्छइ **(जाणइ)**
अभिगच्छति **(पृ. १३)**
अभिगयट्ठ **(लद्धट्ठ)**
अभिग्गह **(पच्चक्खाण)**
अभिग्रह **(प्रतिमा)**
अभिज्जा **(मोहणिज्जकम्म)**
अभिज्झा **(पृ. १३)**
अभिज्झा **(लोभ)**
अभिणिव्वट्ट **(अभिसंभूत)**
अभिणिव्वुड **(खंत)**
अभिण्ण **(अणण्ण)**
अभिधेय **(णाम)**
अभिनन्द **(राग)**
अभिनव **(बाल)**
अभिनव **(तरुणय)**
अभिप्पात **(विण्णाण)**
अभिप्पाय **(पृ. १३)**
अभिप्पाय **(पणिहाण)**
अभिप्पायंति **(अभिलसंति)**
अभिप्राय **(संविद्)**
अभिप्राय **(प्रणिधान)**
अभिप्राय **(छंद)**
अभिप्राय **(भाव)**
अभिभव **(विजय)**
अभिरुइय **(इच्छिय)**
अभिरूव **(पासादिय)**
अभिलषणीय **(कान्त)**
अभिलसइ **(आसाएइ)**
अभिलसइ **(कंखइ)**
अभिलसइ **(तक्केइ)**
अभिलसंति **(पृ. १३)**
अभिलसन **(पीहन)**
अभिलसमाण **(पत्थेमाण)**
अभिलाप्य **(प्रज्ञापनीय)**
अभिलाष **(राग)**
अभिलाष **(लोभ)**
अभिलाष **(छंद)**
अभिलासा **(परिज्झा)**
अभिवादित **(वंदित)**
अभिवायण **(पृ. १४)**
अभिष्वङ्ग **(संस्तव)**
अभिसंजात **(अभिसंभूत)**
अभिसंधान **(माया)**

अभिसंभूत (पृ. १४)
अभिसंवुड्ढ (**अभिसंभूत**)
अभिसन्दध्यात् (**संधयेत्**)
अभिसमण्णागत (**लद्ध**)
अभिसमण्णागय (**नाय**)
अभिहणति (पृ. १४)
अभिहणेज्ज (पृ. १४)
अभीय (**अणुव्विग्ग**)
अभीय (पृ. १४)
अभूतिभाव (पृ. १४)
अभेद (**अणु**)
अभ्युपगत (**प्रतीष्ट**)
अमणमंत (पृ. १४)
अमणाम (**दुक्ख**)
अमणाम (**अणिट्ठ**)
अमणामस्सर (**अणिट्ठस्सर**)
अमणुण्ण (**अणिट्ठ**)
अमणुण्णस्सर (**हीणस्सर**)
अमनोज्ञ (**फरुस**)
अमम (**अणासव**)
अमम (**संत**)
अमर (**सिद्ध**)
अमर (**देव**)
अमाघाय (**अहिंसा**)
अमाण (पृ. १४)
अमाया (पृ. १४)
अमुच्छा (**लाघविय**)
अमुत्ति (**परिग्गह**)
अमुय (**अण्णाय**)
अमूढ (पृ. १४)
अमूर्च्छित (**अगृद्ध**)
अमोह (पृ. १४)
अमोह (**सम्मद्दिट्ठि**)
अमोहा (**जंबू**)
अयन (पृ. १४)
अयस (**अवण्ण**)
अयुक्त (**अस्थान**)
अयोगगत (**सिद्धिगत**)
अयोग्य (**अपात्र**)
अयोग्य (**अनल**)
अरइय (**गंड**)
अरंजर (पृ. १५)
अरति (पृ. १५)
अरभस (**असाहस**)
अरय (पृ. १५)
अरय (**कम्म**)
अरविंद (**उप्पल**)
अरविन्द (**कमल**)
अरसाहार (**अंताहार**)
अरह (पृ. १५)
अरि (पृ. १५)
अरिट्ठ (पृ. १५)
अरिह (पृ. १५)
अरुजगत (**सिद्धिगत**)
अरुणोदय (**तमुक्काय**)
अरोग (**हट्ठ**)
अरोगशाला (**तेगिच्छियसाला**)
अर्थविज्ञान (**चित्त**)
अर्थव्याख्या (**भासा**)
अर्थाध्यवसाय (पृ. १५)

अर्थापयति	**(आग्राहयति)**
अर्घ्यते	**(पृ. १५)**
अर्पित	**(पृ. १६)**
अर्पित	**(गमित)**
अर्यते	**(पृ. १६)**
अर्ह	**(वस्तु)**
अर्हद्वचन	**(प्रवचन)**
अलंदक	**(करोडक)**
अलकपरिक्खेव	**(तिरीड)**
अलक्तक	**(आदर्श)**
अलम्	**(पृ. १६)**
अलस	**(पृ. १६)**
अलस	**(पृ. १६)**
अलस	**(निर्द्धर्म्म)**
अलाय	**(मुम्मुर)**
अलिंद	**(अरंजर)**
अलिय	**(पृ. १६)**
अलियधम्मनिरय	**(अकुसल)**
अलियाण	**(अकुसल)**
अलोह	**(पृ. १६)**
अल्पश्रुत	**(पृ. १६)**
अल्पसत्त्व	**(अधितिकरण)**
अल्लग	**(सिंगबेर)**
अल्लीण	**(अणुपविट्ठ)**
अवंक	**(ऋजु)**
अवंग	**(णिडालमासक)**
अवंगुत	**(उब्भिण्ण)**
अवकड्ढित	**(पृ. १६)**
अवकर	**(शंकर)**
अवकिण्ण	**(विक्खिण्ण)**
अवक्कमण	**(निग्गमण)**
अवक्कोस	**(मोहणिज्जकम्म)**
अवक्कोस	**(माण)**
अवगततत्त्व	**(बुद्ध)**
अवगम	**(अर्थाध्यवसाय)**
अवगम	**(निश्चय)**
अवगम	**(संविद्)**
अवगम	**(व्यवसाय)**
अवगाढ	**(पृ. १६)**
अवगाढावगाढ	**(आइण्ण)**
अवगास	**(ओवास)**
अवगाह	**(स्पर्शना)**
अवगिरण	**(उस्सग्ग)**
अवग्गह	**(उग्गह)**
अवज्ञा	**(अश्लाघा)**
अवट्ठाण	**(पतिट्ठा)**
अवट्ठिय	**(ध्रुव)**
अवट्ठिय	**(फासिय)**
अवड्ढ	**(पृ. १७)**
अवण्ण	**(पृ. १७)**
अवतंस	**(मंदर)**
अवतरति	**(उवेति)**
अवत्थग	**(अलिय)**
अवत्था	**(पृ. १७)**
अवत्था	**(पतिट्ठा)**
अवत्थाण	**(अवत्था)**
अवत्थित	**(अचल)**
अवत्थिय	**(असाहस)**
अवत्थु	**(अलिय)**
अवदात	**(पृ. १७)**

अवद्य (पृ. १७)
अवधान (पृ. १७)
अवधारण (उग्गह)
अवधावन (लोटन)
अवधि (अवधान)
अवधित (चोदित)
अवधूय (अपकृष्य)
अवन (पृ. १७)
अवबोह (ववसाय)
अवमट्ठ (रहस्स)
अवमाणण (अक्कोस)
अवमाणित (परिभीत)
अवमण्णति (हीलेति)
अवमण्णति (परिभासति)
अवय (नीय)
अवयव (अंग)
अवयव (कला)
अवलंबण (उग्गह)
अवलोव (अलिय)
अवसक्कित (उट्ठित)
अवसण (निग्गतवसण)
अवसर (पृ. १७)
अवसर (देश)
अवसर (योग)
अवसव्व (वाम)
अवसाण (अमणमंत)
अवसारित (उट्ठित)
अवस्थारूपकाल (भूमि)
अवस्सकम्म (पावकम्मनिसेह किरिया)
अवस्सकरण (आवस्सग)
अवस्सकरणिज्ज (आवस्सय)
अवस्सकायव्व (आवस्सग)
अवस्सकिरिया (पावकम्मनिसेह किरिया)
अवहड (खीण)
अवहार (अदिण्णादाण)
अवहीय (अलिय)
अवाय (पृ. १७)
अविकप्पित (केवल)
अविगतचित्त (अविमनस्)
अविग्गहमण (धम्ममण)
अविचालित (अपूर्व)
अविच्चुति (धरण)
अविजात (पृ. १७)
अविज्जमाणभाव (असपज्जाय)
अविण्णाय (अण्णाय)
अवितह (जहाभूत)
अवितह (तह)
अवितह (सच्च)
अवितह (संत)
अवितहभाव (विणिच्छय)
अविदित (अपूर्व)
अविद्धत्थ (अविराय)
अविधिपरिहारि (संजमतवड्ढय)
अविधूणित्ता (अविविचित्ता)
अविनीत (खलुंक)
अविभत्त (साहारण)
अविभाग (भाग)
अविमण (धम्ममण)

अविमण	(**अदीण**)	अव्वहिय	(**अकिट्ठ**)
अविमनस्	(**पृ.१७**)	अव्वाहय	(**निव्वाण**)
अवियाउरी	(**वंझा**)	अव्वोकड्ढ	(**उक्कड्ढ**)
अवियोग	(**परिग्गह**)	अशक्त	(**मन्द**)
अविरति	(**आरंभ**)	अशाश्वत	(**पृ. १८**)
अविरति	(**अवद्य**)	अशुषिर	(**अपोल्ल**)
अविरय	(**पाव**)	अशून्यमनस्	(**अविमनस्**)
अविरल	(**अखंड**)	अशेष	(**पृ. १८**)
अविरहितोवयोग	(**केवल**)	अश्रुत	(**अपूर्व**)
अविरहिय	(**अणुसमय**)	अश्लाघा	(**पृ. १८**)
अविराधित	(**अखंड**)	असंकिलिट्ठ	(**अणासव**)
अविराय	(**पृ. १८**)	असंखेज्ज	(**गणणमतिक्कंत**)
अविलीण	(**अविराय**)	असंखेज्ज–पएसियखंध	(**पोग्गलत्थिकाय**)
अविवज्जय	(**सम्मद्दिट्ठि**)		
अविविचित्ता	(**पृ. १८**)	असंग	(**असंजण**)
अविवित्त	(**गरहित**)	असंग	(**सिद्ध**)
अविसंदिद्ध	(**सच्च**)	असंजण	(**पृ. १८**)
अविसादि	(**अदीण**)	असंजम	(**आरंभ**)
अविसोहि	(**अतियार**)	असंजम	(**अदिण्णादाण**)
अविस्मृति	(**धारणा**)	असंजम	(**पाणवह**)
अवीइ	(**अणुसमय**)	असंजय	(**पाव**)
अवीरिय	(**अत्थाम**)	असंतक	(**अलिय**)
अवीर्य	(**अक्रिया**)	असंति	(**भय**)
अवीसंभ	(**पाणवह**)	असंतोस	(**परिग्गह**)
अवेगिय	(**असाहस**)	असंदिद्ध	(**जहाभूत**)
अवेयण	(**पृ. १८**)	असंदिद्ध	(**तह**)
अव्यक्त	(**पृ. १८**)	असंभंत	(**अतुरिय**)
अव्यक्त	(**प्रकृति**)	असंभंत	(**अभीय**)
अव्वय	(**धुव**)	असंमुच्छित्ता	(**अविविचित्ता**)
अव्वहित	(**अणाइल**)	असंसारोपपत्ति	(**सिद्धउपपत्ति**)

असकल	**(विकल)**
असकल	**(पृ. १८)**
असक्कत	**(दीण)**
असक्कार	**(अपमाण)**
असगल	**(अंग)**
असच्च	**(मिच्छा)**
असच्चसंधत्तण	**(अलिय)**
असज्जण	**(असत)**
असट्ठिय	**(मिच्छा)**
असण	**(पृ. १८)**
असत	**(पृ. १८)**
असपज्जाय	**(पृ. १८)**
असमंजस	**(पृ. १९)**
असमंजस	**(दुस्सह)**
असमंजस	**(उच्चावच)**
असमय	**(अलिय)**
असम्बद्धप्रलापिन्	**(मुखर)**
असम्भव	**(अनायतन)**
असरण	**(अत्ताण)**
असरण	**(पृ. १९)**
असरीरकध	**(सिद्ध)**
असात	**(पृ. १९)**
असात	**(पाव)**
असात	**(भय)**
असाधारण	**(केवल)**
असाम्प्रत	**(अस्थान)**
असाय	**(दारुण)**
असाय	**(कम्म)**
असार	**(तुच्छ)**
असासय	**(भेउरधम्म)**
असाहस	**(पृ. १९)**
असित	**(कण्ह)**
असिद्धत्थ	**(अधण्ण)**
असिद्धत्थ	**(दीण)**
असीलया	**(अबंभ)**
असुइ	**(पृ. १९)**
असुभ	**(अणिट्ठ)**
असुस्सूसमाण	**(वुच्चमाण)**
असोहि	**(पडिसेवणा)**
असोहिठाण	**(अणायतन)**
अस्ति	**(पृ. १९)**
अस्थान	**(पृ. १९)**
अस्थान	**(अनायतन)**
अस्स	**(पृ. १९)**
अस्सि	**(पृ. १९)**
अस्सुत	**(अण्णाय)**
अहंकार	**(माण)**
अहकम्म	**(आहाकम्म)**
अहम	**(दीण)**
अहयकम्म	**(आहाकम्म)**
अहरगतीगाहण	**(अधिकरण)**
अहाअत्थ	**(पृ. १९)**
अहाकप्प	**(अहासुत्त)**
अहाछंद	**(पृ. १९)**
अहातच्च	**(अहाअत्थ)**
अहातच्च	**(अहासुत्त)**
अहामग्ग	**(अहासुत्त)**
अहामग्ग	**(अहाअत्थ)**
अहासम्म	**(अहासुत्त)**
अहासुत्त	**(पृ. २०)**

अहिंसा (पृ. २०)
अहिंसा (**पव्वज्जा**)
अहिंसा (**दया**)
अहिकरण (**अधिकरण**)
अहिकिच्च (**पडुच्च**)
अहिक्खेव (**पिट्ठिमंस**)
अहिगच्छइ (**जाणइ**)
अहिगम (**णाण**)
अहिगार (**पगत**)
अहिट्ठुयति (पृ. २०)
अहिधावति (**ओधावति**)
अहियासण (**परिसहण**)
अहियासेइ (**सहइ**)
अहियासेति (**खमिति**)
अहीकरण (**अधिकरण**)
अहीत (**उवचार**)
अहीरकरण (**अधिकरण**)
अहेकम्म (**आहाकम्म**)
अहोकरण (**अधिकरण**)
अहोतरण (**अधिकरण**)
आइक्खइ (पृ. २०)
आइक्खामि (पृ. २०)
आइण्ण (पृ. २०)
आइण्ण (**आयार**)
आइन्न (पृ. २०)
आउट्टि (पृ. २०)
आउडिज्जमाण (पृ. २१)
आउत्त (**संजमतवड्ढय**)
आउयकम्मस्स उवद्दव (**पाणवह**)
आउयकम्मस्स गालणा (**पाणवह**)
आउयकम्मस्स णिट्ठवण (**पाणवह**)
आउयकम्मस्स भेय (**पाणवह**)
आउयकम्मस्स संखेव (**पाणवह**)
आउयकम्मस्स संवट्टग (**पाणवह**)
आउल (**गण**)
आउल (**वंद**)
आओडावेइ (पृ. २१)
आओसणा (पृ. २१)
आओसेज्ज (पृ. २१)
आकड्ढ (**पहर**)
आकार (**स्थापना**)
आकारित (**शापित**)
आकाश (**खं**)
आकुंडित (**रहस्स**)
आकुट्टि (पृ. २१)
आक्रान्त (**आस्पृष्ट**)
आक्रोश (पृ. २१)
आखोटयति (**आओडावेइ**)
आख्यात (**आहित**)
आख्यात (पृ. २१)
आख्यातुम् (पृ. २१)
आख्यान (**आलोचन**)
आख्यापयति (**आग्राहयति**)
आगच्छति (**एति**)
आगत (पृ. २१)
आगम (पृ. २१)
आगम (**लाभ**)
आगम (**छंद**)
आगम (**आय**)
आगम (**आणा**)

आगम **(णिप्फत्ति)**
आगम **(सुत्त)**
आगम **(समय)**
आगम **(ज्ञान)**
आगमित **(ज्ञान)**
आगमित **(आगत)**
आगमित **(विदित)**
आगमिय **(उवचार)**
आगमिय **(नाय)**
आगर **(आयार)**
आगरिसण **(कढण)**
आगार **(पृ. २१)**
आगार **(पृ. २२)**
आगारित **(आरित)**
आगाल **(आयार)**
आगास **(आगासत्थिकाय)**
आगासत्थिकाय **(पृ. २२)**
आगिति **(आगार)**
आगिति **(संठाण)**
आग्राहयति **(पृ. २२)**
आघवणा **(पृ. २२)**
आघविय **(पृ. २२)**
आचरण **(आचार)**
आचार **(पृ. २२)**
आचार **(कल्प)**
आचारप्रकल्प **(पृ. २२)**
आचाल **(आयार)**
आचिक्खति **(पृ. २२)**
आज्जाइ **(आयार)**
आटव्य **(शरभ)**

आढाइ **(पृ. २२)**
आणंतरिय **(पृ. २३)**
आणंद **(तुट्ठि)**
आणंदकर **(णिव्वाणिकर)**
आणंदकर **(मधुर)**
आणंदिय **(हट्ठचित्त)**
आणवयण **(सुत्त)**
आणा **(पृ. २३)**
आणा **(उववाय)**
आणाए आराहिय **(फासिय)**
आणाए आराहेइ **(फासेइ)**
आणाते अणुपालिय **(फासिय)**
आणुकंपिय **(हियकामग)**
आणुगामिय **(हिय)**
आणुपुव्वि **(पृ. २३)**
आणेति **(पृ. २३)**
आतंक **(पृ. २३)**
आतट्ठि **(पृ. २३)**
आतव **(सूरलेस्सा)**
आताहकम्म **(आहाकम्म)**
आतिक्खिय **(अग्घातित)**
आतिण्ण **(पृ. २३)**
आतुर **(दीण)**
आत्मज **(अत्तय)**
आत्मन् **(जीव)**
आत्मप्रशंसा **(श्लोक)**
आत्मार्थिन् **(आतट्ठि)**
आदर्श **(पृ. २३)**
आदान **(पृ. २३)**
आदि **(मूल)**

आदित्य	**(पृ. २३)**	आम्रचिञ्चा	**(पृ. २५)**
आदियणा	**(अदिण्णादाण)**	आय	**(पृ. २५)**
आदियति	**(पृ. २४)**	आय	**(पृ. २५)**
आदियति	**(आपिबति)**	आय	**(जीवत्थिकाय)**
आदेश	**(पृ. २४)**	आय	**(अज्झयण)**
आदेस	**(उपदेश)**	आयंत	**(पृ. २५)**
आद्य	**(प्रथम)**	आयगुत्त	**(आयट्ठि)**
आद्य	**(मुद्ध)**	आयजोगि	**(आयट्ठि)**
आधार	**(आगासत्थिकाय)**	आयट्ठि	**(पृ. २५)**
आधार	**(मूल)**	आयणिप्फेडय	**(आयट्ठि)**
आधार	**(पात्र)**	आयतण	**(अहिंसा)**
आधुत	**(विचल)**	आयतन	**(पृ. २५)**
आनुपूर्विन्	**(पृ. २४)**	आयतस्थित	**(संविग्न)**
आपडित	**(अपमट्ठ)**	आयतार्थिन्	**(आतट्ठि)**
आपिबति	**(पृ. २४)**	आयपरक्कम	**(आयट्ठि)**
आपियइ	**(पियति)**	आययण	**(पृ. २५)**
आपीड	**(आमेलक)**	आयर	**(परिग्गह)**
आपूरित	**(पृ. २४)**	आयरइ	**(अहिट्ठयति)**
आप्त	**(पृ. २४)**	आयरक्खिय	**(आयट्ठि)**
आप्त	**(पृ. २४)**	आयरण	**(माया)**
आभिणिबोहिय	**(पृ. २४)**	आयरणा	**(विहि)**
आभिणिबोहियणाण	**(मइ)**	आयरणिज्ज	**(जीय)**
आभोग	**(पृ. २४)**	आयरिस	**(आयार)**
आभोगण	**(पृ. २४)**	आयव	**(दीव)**
आभोगण	**(ईहा)**	आयहिय	**(आयट्ठि)**
आमगन्धि	**(विश्र)**	आयाकम्म	**(आहाकम्म)**
आमर्षण	**(पृ. २५)**	आयाणुकंपय	**(आयट्ठि)**
आमेलक	**(पृ. २५)**	आयाम	**(पृ. २५)**
आमोक्ख	**(आयार)**	आयार	**(पृ. २६)**
आम्बिली	**(आम्रचिञ्चा)**	आयार	**(पृ. २६)**

आयार	(**कप्प**)
आयार	(**जीवाभिगम**)
आयार	(**पूया**)
आयास	(**परिग्गह**)
आयास	(**पृ. २६**)
आयाहकम्म	(**आहाकम्म**)
आयुष्	(**स्थिति**)
आयुष्क	(**जीवित**)
आरंभ	(**पृ. २६**)
आरंभ	(**पाणवह**)
आरंभ	(**संरंभ**)
आरंभकड	(**पृ. २६**)
आरभइ	(**पृ. २६**)
आरम्भ	(**करण**)
आराहणा	(**आवस्सय**)
आराहिय	(**फासिय**)
आरित	(**पृ. २६**)
आरिय	(**पृ. २६**)
आरियदंसि	(**आरिय**)
आरियपण्ण	(**आरिय**)
आरुभति	(**दुरुहइ**)
आरूढ	(**अवगाढ**)
आरोग	(**णिव्वुत**)
आरोवण	(**ववहार**)
आरोह	(**पृ. २६**)
आलंब	(**पृ. २६**)
आलंबण	(**मेढि**)
आलय	(**उवसग**)
आलीन	(**पृ. २६**)
आलुक्कति	(**पृ. २७**)
आलोइज्जइ	(**पृ. २७**)
आलोचन	(**पृ. २७**)
आलोय	(**आभोग**)
आलोयण	(**पृ. २७**)
आलोयण	(**ववहार**)
आलोयणा	(**पृ. २७**)
आलोलित	(**ण्हात**)
आवट्टण	(**अवाय**)
आवण	(**साला**)
आवलिका	(**वंश**)
आवस्सग	(**पृ. २७**)
आवस्सय	(**पृ. २७**)
आवहंति	(**पृ. २७**)
आवासत	(**आवस्सय**)
आविर्भाव	(**प्रकाश**)
आविल	(**आयास**)
आवीलए	(**पृ. २७**)
आश्रय	(**आदान**)
आश्रव	(**आगम**)
आसंदग	(**पृ. २८**)
आसंदी	(**सेज्जा**)
आसंसजोग	(**बंध**)
आसक्ति	(**कांक्षा**)
आसणाणुप्पदाण	(**सक्कार**)
आसणाभिग्गह	(**सक्कार**)
आसत्ति	(**परिग्गह**)
आसन्न	(**अंतिग**)
आसव	(**अरिट्ठ**)
आसवदारनिरोह	(**पच्चक्खाण**)
आससणायवसण	(**अदिण्णादाण**)

आसाएइ	(पृ. २८)	इच्छा	(**छंद**)
आसारेइ	(**उव्वत्तेइ**)	इच्छा	(**मोहणिज्जकम्म**)
आसालय	(**डिप्फर**)	इच्छा	(**राग**)
आसास	(**अहिंसा**)	इच्छा	(**लोभ**)
आसास	(**आयार**)	इच्छा	(**अदिण्णादाण**)
आसासण	(**लोभ**)	इच्छाछंद	(**अहाछंद**)
आसुरत्त	(पृ. २८)	इच्छित	(पृ. २९)
आसेवित	(**संविचिण्ण**)	इच्छिय	(पृ. २९)
आस्पृष्ट	(पृ. २८)	इच्छियत्ता	(**इट्ठत्ता**)
आहकम्म	(**आहाकम्म**)	इच्छियपडिच्छिय	(**इच्छिय**)
आहणइ	(पृ. २८)	इज्जा	(पृ. २९)
आहरण	(**णाय**)	इज्या	(**यजन**)
आह्वान	(पृ. २८)	इट्टका	(**सेज्जा**)
आहाकम्म	(पृ. २८)	इट्ठ	(**अत्त**)
आहातहिय	(**सच्च**)	इट्ठ	(पृ. २९)
आहार	(**मेढि**)	इट्ठ	(**मधुर**)
आहार	(**आलंब**)	इट्ठ	(**णिव्वाणिकर**)
आहार	(**भोयण**)	इट्ठ	(**आप्त**)
आहारएसणा	(**दुमपुप्फिया**)	इट्ठत्ता	(पृ. २९)
आहारं कुरुते	(**जेमेति**)	इट्ठा	(**पत्ति**)
आहित	(पृ. २८)	इत	(पृ. ३०)
आहितग्गि	(**बंभण**)	इत्थिया	(**पत्ति**)
आहुणिज्जमाणी	(पृ. २८)	इसि	(पृ. ३०)
आहेवच्च	(पृ. २८)	इसि	(**समण**)
इंखिणी	(पृ. २९)	इसि	(**ईसिपब्भारपुढवी**)
इंगालछारिगा	(पृ. २९)	इसु	(**दुमपुप्फिया**)
इंद	(पृ. २९)	इस्सर	(पृ. ३०)
इंदियत्थ	(**संग**)	इस्सरी	(**पत्ति**)
इंदीवर	(**पदुम**)	इस्सापंडक	(**णपुंसक**)
इच्छा	(पृ. २९)	ईप्सित	(**उद्दिष्ट**)

ईर्ष्या **(माण)**
ईश्वर **(पृ. ३०)**
ईसिपब्भार **(ईसिपब्भारपुढवी)**
ईसिपब्भारपुढवी **(पृ. ३०)**
ईहण **(वियालण)**
ईहा **(आभिणिबोहिय)**
ईहा **(आभोग)**
ईहा **(पृ. ३०)**
ईहामृग **(वृक)**
उउमास **(पृ. ३०)**
उंछ **(दुमपुप्फिया)**
उकरड **(शंकर)**
उक्कंचण **(पृ. ३०)**
उक्कंपित **(पृ. ३१)**
उक्कट्ठित **(दीण)**
उक्कड **(उज्जल)**
उक्कड्ढ **(पृ. ३१)**
उक्कड्ढति **(णिकड्ढति)**
उक्कड्ढिय **(णिच्छुद्ध)**
उक्कत्त **(कप्पिय)**
उक्कसण **(पृ. ३१)**
उक्किट्ठ **(पृ. ३१)**
उक्किरण **(साहरण)**
उक्कूइय **(रसिय)**
उक्कूजिय **(अक्कोस)**
उक्कूल **(अलिय)**
उक्कोडभंग **(खोडभंग)**
उक्कोस **(माण)**
उक्कोस **(मोहणिज्जकम्म)**
उक्कोसेज्ज **(पंतावेज्ज)**
उक्खड्डुमड्डु **(पृ. ३१)**
उक्खणाहि **(पहर)**
उक्खित्त **(ओसारित)**
उक्खित्त **(पूया)**
उक्खित्तभत्त **(पहेण)**
उक्खिन्न **(पृ. ३१)**
उक्ति **(पृ. ३१)**
उग्गम **(पृ. ३१)**
उग्गय **(पृ. ३१)**
उग्गविस **(पृ. ३२)**
उग्गह **(पृ. ३२)**
उग्गह **(उवहि)**
उग्गहित **(ओसारित)**
उग्गिण्हण **(उग्गह)**
उग्गोवणा **(एसणा)**
उग्घायण **(पृ. ३२)**
उचिय **(बहुजनाचीर्ण)**
उच्च **(दीह)**
उच्च **(उदग्र)**
उच्च **(ऊसढ)**
उच्चच्छंद **(पृ. ३२)**
उच्चयरक **(पृ. ३२)**
उच्चारित **(उल्लोइत)**
उच्चावच **(पृ. ३२)**
उच्छंदण **(उस्सिंघण)**
उच्छल्लिज्जति **(चालिज्जति)**
उच्छाडित **(उल्लोहित)**
उच्छायण **(घाय)**
उच्छाह **(जोग)**
उच्छाह **(पृ. ३२)**

उच्छाह	**(योग)**	उत्क्षिप्तभक्त	**(पूज्यभक्त)**
उच्छुद्ध	**(ओसारित)**	उत्क्षिप्यति	**(चालिज्जति)**
उच्छुद्ध	**(पहर)**	उत्तम	**(ओराल)**
उच्छोलेंति	**(पृ. ३२)**	उत्तम	**(मंदर)**
उज्जमति	**(पृ. ३२)**	उत्तर	**(वाम)**
उज्जल	**(पृ. ३२)**	उत्तर	**(मंदर)**
उज्जल	**(संख)**	उत्तरकरण	**(पृ. ३३)**
उज्जु	**(भिक्खु)**	उत्तरति	**(उवेति)**
उज्जु	**(पृ. ३३)**	उत्तरपगडि	**(अंस)**
उज्जुगत्तण	**(पृ. ३३)**	उत्तारिय	**(पृ. ३३)**
उज्जुय	**(पृ. ३३)**	उत्तास	**(नील)**
उज्जोएइ	**(ओभासेइ)**	उत्तासणग	**(महब्भय)**
उज्जोएइ	**(पभासति)**	उत्तासणय	**(लोमहरिसजणण)**
उज्जोग	**(उच्छाह)**	उत्तुदति	**(तुदति)**
उज्जोतित	**(सुद्ध)**	उत्थित	**(उल्लोइत)**
उज्झण	**(पडण)**	उत्पाटित	**(उद्धृत)**
उज्झणा	**(उस्सग्ग)**	उत्पादयति	**(पृ. ३३)**
उज्झित	**(मुक्त)**	उत्प्रेक्षते	**(उवेहति)**
उज्झित	**(छर्दित)**	उत्फुल्ल	**(फुल्ल)**
उज्झिय	**(भिण्ण)**	उत्सर्ग	**(ओघ)**
उज्झीयति	**(पृ. ३३)**	उत्सुक	**(माण)**
उट्टाण	**(पृ. ३३)**	उत्सृजति	**(निसृजति)**
उट्ठित	**(पृ. ३३)**	उदक	**(पयस्)**
उडुपति	**(चन्द्र)**	उदग्ग	**(पृ. ३३)**
उण्णत	**(माण)**	उदग्ग	**(ओराल)**
उण्णमणी	**(अणुण्णा)**	उदग्ग	**(वयत्थ)**
उण्णाम	**(माण)**	उदग्र	**(पृ. ३४)**
उण्णामित	**(उल्लोइत)**	उदत्त	**(मुदित)**
उण्ह	**(तेउ)**	उदत्त	**(ओराल)**
उत्कोच	**(लंचा)**	उदय	**(उग्गय)**

उदय	**(दुमपुप्फिया)**
उदसी	**(तक्क)**
उदार	**(पृ. ३४)**
उदार	**(ओराल)**
उदीरणा	**(एजणा)**
उदीरित	**(चालित)**
उद्घातित	**(लघुक)**
उद्दवण	**(पृ. ३४)**
उद्दवण	**(पाणवह)**
उद्दवणकरी	**(छेयणकरी)**
उद्दविज्जमाण	**(आउडिज्जमाण)**
उद्दवित्ता	**(हंता)**
उद्दवेज्ज	**(अक्कोसेज्ज)**
उद्दवेति	**(अभिहणति)**
उद्दवेयव्व	**(हंतव्व)**
उद्दामित	**(पृ. ३४)**
उद्दिट्ठ	**(पृ. ३४)**
उद्दिष्ट	**(पृ. ३४)**
उद्दिसणा	**(पृ. ३४)**
उद्दूढ	**(पृ. ३४)**
उद्धंसण	**(आओसण)**
उद्धरण	**(कढण)**
उद्धर्षणा	**(आक्रोश)**
उद्धार	**(हत्या)**
उद्धारणा	**(पृ. ३४)**
उद्धारणा	**(धारणववहार)**
उद्धिय	**(ओहय)**
उद्धियकंटय	**(ओहयकंटय)**
उद्धुय	**(उक्किट्ठ)**
उद्धृत	**(पृ. ३४)**
उद्बुद्ध	**(फुल्ल)**
उद्भिन्न	**(फुल्ल)**
उद्यतविहारिन्	**(संविग्न)**
उद्योतयति	**(पृ. ३४)**
उन्नय	**(मोहणिज्जकम्म)**
उन्नाम	**(मोहणिज्जकम्म)**
उन्निद्र	**(फुल्ल)**
उन्मिषित	**(फुल्ल)**
उन्मीलित	**(फुल्ल)**
उपक	**(पदपाश)**
उपकड्ढित	**(उल्लोइत)**
उपकार	**(गुण)**
उपघात	**(पृ. ३४)**
उपचार	**(आदेश)**
उपणत	**(उल्लोइत)**
उपणद्ध	**(उल्लोइत)**
उपदेश	**(प्रवचन)**
उपदेश	**(दर्शन)**
उपदेश	**(निमित्त)**
उपदेस	**(पृ. ३४)**
उपधि	**(माया)**
उपनीत	**(गमित)**
उपनीयते	**(पृ. ३५)**
उपपदरिसिते	**(उपनीयते)**
उपपद्यते	**(पयाति)**
उपयोग	**(भाव)**
उपयोग	**(पृ. ३५)**
उपयोग	**(पृ. ३५)**
उपयोग	**(ज्ञान)**
उपयोग	**(पृ. ३५)**

उपल	**(पासाण)**	उल्लोहित	**(पृ. ३६)**
उपलब्ध	**(विदित)**	उवउत्त	**(अतिवत्त)**
उपलभते	**(शृणोति)**	उवएस	**(सुत्त)**
उपलभते	**(गृह्णाति)**	उवकप्पति	**(पृ. ३६)**
उपलभते	**(पश्यति)**	उवकरण	**(परिग्गह)**
उपलोलित	**(उल्लोइत)**	उवगम	**(लाभ)**
उपवधू	**(पत्ति)**	उवगमण	**(लाभ)**
उपवप्पित	**(उल्लोइत)**	उवगरण	**(उवहि)**
उपशान्त	**(शान्त)**	उवग्गह	**(उवहि)**
उपश्रा	**(पृ. ३५)**	उवघाय	**(पडिसेवणा)**
उपसारित	**(उल्लोइत)**	उवचय	**(परिग्गह)**
उपात्त	**(बद्ध)**	उवचय	**(काय)**
उपादान	**(आय)**	उवचय	**(पिंड)**
उपाय	**(प्रयोग)**	उवचरित	**(पृ. ३६)**
उप्पज्जते	**(पृ. ३५)**	उवचार	**(पृ. ३६)**
उप्पल	**(पदुम)**	उवचित	**(थूल)**
उप्पल	**(पृ. ३५)**	उवचितदेह	**(परिवूढ)**
उप्पाडेहि	**(पहर)**	उवचिय	**(परिवुड्ढ)**
उप्पायण	**(पृ. ३५)**	उवट्ठावित्तए	**(मुंडावित्तए)**
उप्पिलावण	**(पृ. ३५)**	उवट्ठिय	**(पृ. ३६)**
उब्भिण्ण	**(पृ. ३५)**	उवट्ठिय	**(उवसंत)**
उभय	**(पृ. ३६)**	उवणय	**(णिदंसण)**
उम्मुअणा	**(उस्सग्ग)**	उवणामेति	**(आणेति)**
उम्मुक्ककम्मकवय	**(सिद्ध)**	उवणेइ	**(उवकप्पति)**
उम्मूलण	**(पाणवह)**	उवत्थड	**(आइण्ण)**
उराल	**(इट्ठ)**	उवदंसण	**(णिदंसण)**
उराल	**(ओराल)**	उवदंसिय	**(आघविय)**
उल्लुत्त	**(कस)**	उवदेस	**(आणा)**
उल्लोइत	**(पृ. ३६)**	उवधारण	**(उग्गह)**
उल्लोकित	**(णमोक्कत)**	उवधारिय	**(दिट्ठ)**

उवधि	**(पृ. ३६)**	उवहि	**(मोहणिज्जकम्म)**
उवधि	**(पणिधि)**	उवहि	**(पृ. ३७)**
उवम्म	**(पृ. ३६)**	उवहि-असुद्ध	**(अलिय)**
उवयंति	**(पृ. ३६)**	उवाय	**(हेतु)**
उवयत्ति	**(विसय)**	उवेइ	**(पृ. ३७)**
उवयोग	**(नाण)**	उवेति	**(पृ. ३८)**
उवयोग	**(चेयण्ण)**	उवेहति	**(पृ. ३८)**
उवरय	**(निद्विय)**	उव्वट्टण	**(उस्सिंघण)**
उवलंभणा	**(खिज्जणिया)**	उव्वत्तेइ	**(पृ. ३८)**
उववात	**(पृ. ३७)**	उव्वलित	**(उल्लोहित)**
उववाय	**(आणा)**	उव्विग्ग	**(तत्थ)**
उवविसणा	**(णिसियणा)**	उव्विग्ग	**(भीय)**
उववुत्त	**(महव्वय)**	उव्वियंति	**(तसंति)**
उववूह	**(पृ. ३७)**	उव्वेयणय	**(पाव)**
उवसंत	**(णिहय)**	उसभ	**(पृ. ३८)**
उवसंत	**(संत)**	उसभक	**(तिरीड)**
उवसंत	**(पृ. ३७)**	उसभपुर	**(पृ. ३८)**
उवसंत	**(निद्विय)**	उस्सग्ग	**(पृ. ३८)**
उवसंतकसाय	**(सीतीभूत)**	उस्सय	**(काय)**
उवसंधार	**(णिदंसण)**	उस्सय	**(अहिंसा)**
उवसंपया	**(निस्सा)**	उस्सय	**(पृ. ३८)**
उवसग	**(पृ. ३७)**	उस्सय	**(जण्ण)**
उवसम	**(संति)**	उस्सव	**(पृ. ३८)**
उवसम	**(पृ. ३७)**	उस्सारित	**(रहस्स)**
उवसमण	**(पृ. ३७)**	उस्सिंघण	**(पृ. ३८)**
उवसमप्पभव	**(उवसमसार)**	उस्सित	**(उल्लोइत)**
उवसममूल	**(उवसमसार)**	ऊसढ	**(पृ. ३८)**
उवसमसार	**(पृ. ३७)**	ऊसय	**(तुट्ठि)**
उवहाणव	**(पव्वइय)**	ऊहा	**(संशय)**
उवहि	**(माया)**	ऊहित	**(पृ. ३९)**

ऋजु	**(पृ. ३९)**
ऋजुक	**(ऋजु)**
ऋतुबद्ध	**(द्वितीय समवसरण)**
ऋतुसंवत्सर	**(पृ. ३९)**
ऋषि	**(पृ. ३९)**
एइज्जमाण	**(पृ. ३९)**
एकग्गहणगहिय	**(कसिण)**
एकांश	**(अणु)**
एग	**(संजय)**
एगंतपंडिय	**(केवल)**
एगणामभेद	**(एगपडिरय)**
एगपज्जाय	**(एगपडिरय)**
एगपडिरय	**(पृ. ३९)**
एजणा	**(पृ. ३९)**
एति	**(पृ. ३९)**
एरावणवाहण	**(सक्क)**
एसणा	**(पृ. ३९)**
एसणा	**(मग्गणा)**
एसणाअस्समिति	**(अधम्मत्थिकाय)**
एसणासमिति	**(धम्मत्थिकाय)**
एसणिज्ज	**(फासुय)**
ओकट्टित	**(ओसारित)**
ओकड्ढ	**(उक्कड्ढ)**
ओकड्ढित	**(ओसारित)**
ओगेण्हण	**(उग्गह)**
ओघ	**(पृ. ४०)**
ओच्छन्न	**(अलिय)**
ओछुद्ध	**(ओसारित)**
ओझीण	**(णिम्मंसक)**
ओणत	**(ओसारित)**
ओणामित	**(ओसारित)**
ओतारित	**(ओसारित)**
ओतारिय	**(ओसारित)**
ओतिण्ण	**(ओसारित)**
ओदीवसिहा	**(हुतासणसिहा)**
ओधावति	**(पृ. ४०)**
ओधुत	**(विचल)**
ओधुणण	**(पृ. ४०)**
ओपुप्फ	**(अतिवत्त)**
ओभासेइ	**(पृ. ४०)**
ओभासेज्ज	**(पंतावेज्ज)**
ओमत्थित	**(ओसारित)**
ओमथित	**(ओसारित)**
ओमुक्क	**(ओसारित)**
ओय	**(कंति)**
ओयंसि	**(पृ. ४०)**
ओयण	**(पृ. ४०)**
ओराल	**(पृ. ४०)**
ओलोकित	**(ओसारित)**
ओलोलित	**(ओसारित)**
ओवट्टित	**(ओसारित)**
ओवत्त	**(ओसारित)**
ओवम्म	**(णाय)**
ओवहिय	**(वंक)**
ओवात	**(सुक्किल)**
ओवास	**(पृ. ४०)**
ओवासंतर	**(आगासत्थिकाय)**
ओवील	**(अदिण्णादाण)**
ओवीलेमाण	**(पृ. ४०)**

ओवेढग	**(केज्जूर)**
ओसक्क	**(नयन)**
ओसरित	**(ओसारित)**
ओसा	**(सिण्हा)**
ओसारित	**(पृ. ४१)**
ओसारेति	**(पृ. ४१)**
ओह	**(पृ. ४१)**
ओह	**(संखेव)**
ओहबल	**(पृ. ४१)**
ओहय	**(पृ. ४१)**
ओहयकंटय	**(पृ. ४१)**
ओहसित	**(अतिवत्त)**
ओहाण	**(लोट्टण)**
ओहि	**(मज्जाया)**
ओहिज्जंत	**(अतिवत्त)**
कइयव	**(कवड)**
कंकण	**(हत्थभंडक)**
कंखइ	**(पृ. ४१)**
कंखा	**(लोभ)**
कंखा	**(परिज्झा)**
कंखा	**(अदिण्णादाण)**
कंखा	**(गेहि)**
कंखा	**(मोहणिज्जकम्म)**
कंखित	**(संकित)**
कंखिय	**(अत्थि)**
कंचिकलापक	**(कडीय)**
कंची	**(पृ. ४१)**
कंटका	**(कंची)**
कंड	**(णावा)**
कंत	**(पृ. ४२)**

कंत	**(अत्त)**
कंत	**(आप्त)**
कंत	**(इट्ठ)**
कंत	**(सुभ)**
कंतत्ता	**(इट्ठत्ता)**
कंता	**(पत्ति)**
कंति	**(अहिंसा)**
कंति	**(पृ. ४२)**
कंदंति	**(करुणंति)**
कंदण	**(पृ. ४२)**
कंदप्प	**(णंदी)**
कंदमाणी	**(रोयमाणी)**
कंदल	**(पदुम)**
कंदित	**(रुण्ण)**
कंदित	**(हक्कार)**
कंदूग	**(केज्जूर)**
कंपेति	**(अंचेति)**
कक्क	**(पृ. ४२)**
कक्क	**(पृ. ४२)**
कक्क	**(माया)**
कक्क	**(मोहणिज्जकम्म)**
कक्कणा	**(अलिय)**
कक्कब	**(गुलोवलद्धीय)**
कक्करण	**(कूजण)**
कक्कस	**(पृ. ४२)**
कक्कस	**(उज्जल)**
कक्कस	**(दारुण)**
कक्कससद्द	**(दारुणसद्द)**
कक्कुडिगा	**(लोमसिका)**
कक्कुस	**(तुस)**

कक्खड	(**उज्जल**)	कत	(**अतिवत्त**)
कक्खडी	(**पृ. ४२**)	कतकज्ज	(**कतत्थ**)
कक्खडीभूत	(**पुराण**)	कतत्थ	(**पृ. ४३**)
कच्छभ	(**राहु**)	कतपुव्व	(**णियत**)
कज्ज	(**पृ. ४२**)	कति	(**समण**)
कज्जोपक	(**दीव**)	कत्ता	(**जीवत्थिकाय**)
कटुक	(**ग्राम्यवचन**)	कत्ताहि	(**पहर**)
कट्ठ	(**णावा**)	कथयन्ति	(**बेंति**)
कठिन	(**कक्खडी**)	कथित	(**आहित**)
कडग	(**हत्थिक**)	कधेति	(**आचिक्खति**)
कडग	(**पृ. ४२**)	कनिष्ठ	(**पृ. ४३**)
कडग-मद्दण	(**पाणवह**)	कप्प	(**पृ. ४३**)
कडच्छकी	(**दव्वी**)	कप्प	(**पृ. ४३**)
कडपल्ल	(**पृ. ४२**)	कप्प	(**अणुण्णा**)
कडि-उपक	(**कडीय**)	कप्प	(**काल**)
कडीय	(**पृ. ४२**)	कप्प	(**ववहार**)
कडुय	(**उज्जल**)	कप्पण	(**परूवण**)
कडुय	(**कक्कस**)	कप्पणिज्ज	(**कप्प**)
कड्डिति	(**णिकड्डति**)	कप्पिय	(**पृ. ४३**)
कढण	(**पृ. ४३**)	कप्पिय	(**कप्प**)
कण्णकोवग	(**कुंडल**)	कप्पिय	(**अज्झत्थिय**)
कण्णखीलक	(**कुंडल**)	कम	(**विहि**)
कण्णधार	(**निज्जामय**)	कम	(**आणुपुव्वि**)
कण्णपील	(**कुंडल**)	कमढ	(**जल्ल**)
कण्णपूर	(**कुंडल**)	कमनीय	(**कान्त**)
कण्णलोडक	(**कुंडल**)	कमल	(**पृ. ४३**)
कण्णा	(**दारिया**)	कम्पन	(**एजन**)
कण्ह	(**पृ. ४३**)	कम्म	(**पृ. ४४**)
कण्हराति	(**पृ. ४३**)	कम्म	(**उट्ठाण**)
कण्हसप्प	(**राहु**)	कम्म	(**दुक्ख**)

कम्म	**(पाव)**
कम्म	**(वेर)**
कम्मकरी	**(दासी)**
कम्मक्खय	**(संति)**
कम्ममास	**(उउमास)**
कम्ममास	**(रिउ)**
कम्मारय	**(दास)**
कम्मोवसंति	**(परिण्णा)**
कयत्थ	**(धण्ण)**
कयार	**(पृ. ४४)**
करण	**(पृ. ४४)**
करण	**(उवहि)**
करण	**(जोग)**
करण	**(भवन)**
करण	**(संस्कृत)**
करणनिप्फण्ण	**(लिंगिय)**
करणिज्ज	**(जीय)**
करीस	**(गोब्बर)**
करीसण	**(धुणण)**
करुण	**(पृ. ४४)**
कृच्छ्रजीवन	**(आतंक)**
करेति	**(उवकप्पति)**
करोडक	**(पृ. ४४)**
कर्कश	**(ग्राम्यवचन)**
कर्दमरहित	**(निष्पंक)**
कर्पर	**(छेद)**
कर्बुर	**(बकुश)**
कर्म	**(क्रिया)**
कर्म	**(योग)**
कर्मन्	**(स्थान)**
कर्मबन्ध	**(क्रिया)**
कर्मानुभूति	**(स्थिति)**
कलंकरहित	**(निष्पंक)**
कलभ	**(बालक)**
कलश	**(घट)**
कलस	**(अरंजर)**
कलह	**(पृ. ४४)**
कलह	**(अधम्मत्थिकाय)**
कलह	**(अधिकरण)**
कलह	**(आयास)**
कलह	**(समर)**
कलह	**(कोह)**
कलह	**(डिम्ब)**
कलह	**(मोहणिज्जकम्म)**
कलह	**(विवाद)**
कलह	**(वुग्गह)**
कलहकर	**(झंझकर)**
कलहंसी	**(विल्लरी)**
कलहविवेग	**(धम्मत्थिकाय)**
कला	**(पृ. ४४)**
कलि	**(समर)**
कलिकरंड	**(परिग्गह)**
कलिका	**(मुकुल)**
कलुण	**(दीण)**
कलुष	**(कषाय)**
कलुषित	**(शंकित)**
कलुस	**(पृ. ४४)**
कलुस	**(कम्म)**
कलुस	**(किव्विस)**
कलुस	**(पाव)**

कलेवर	**(काय)**	काउस्सग्ग	**(पृ. ४५)**
कल्प	**(जीत)**	कांक्षा	**(लोभ)**
कल्प	**(पृ. ४५)**	कांक्षा	**(पृ. ४५)**
कल्मष	**(किव्विस)**	काण	**(पृ. ४५)**
कल्याण	**(पृ. ४५)**	कान्त	**(पृ. ४६)**
कल्याणोपचय	**(शुभवृद्धि)**	कापुरिस	**(कीव)**
कल्लसरीर	**(हट्ठ)**	काम	**(राग)**
कल्लाण	**(इट्ठ)**	कामगम	**(पृ. ४६)**
कल्लाण	**(पृ. ४५)**	कामगुण	**(अबंभ)**
कल्लाण	**(अहिंसा)**	कामज्झवसाय	**(संकप्प)**
कल्लाण	**(भद्दग)**	कामभोग–मार	**(अबंभ)**
कल्लाण	**(ओराल)**	कामयंति	**(अभिलसंति)**
कल्हार	**(उप्पल)**	कामासा	**(मोहणिज्जकम्म)**
कवचिय	**(सन्नद्ध)**	कामासा	**(लोभ)**
कवड	**(कूड)**	काय	**(पृ. ४६)**
कवड	**(अलिय)**	काय	**(गण)**
कवड	**(उक्कंचण)**	कायअगुत्ति	**(अधम्मत्थिकाय)**
कवड	**(पृ. ४५)**	कायगुत्ति	**(धम्मत्थिकाय)**
कवल्ली	**(दव्वी)**	कायर	**(कीव)**
कषाय	**(पृ. ४५)**	कायोत्सर्ग	**(व्युत्सर्ग)**
कस	**(पृ. ४५)**	कारंडय	**(मयूर)**
कसाय	**(पृ. ४५)**	कारग	**(कारण)**
कसिण	**(पृ. ४५)**	कारण	**(स्थान)**
कसिण	**(सव्व)**	कारण	**(नियाण)**
कसिण	**(अणंत)**	कारण	**(निमित्त)**
कसिण	**(निव्वाण)**	कारण	**(अत्थ)**
कसिण	**(अणुत्तर)**	कारण	**(लिंग)**
कहण	**(परूवण)**	कारण	**(कज्ज)**
कहेति	**(किट्टते)**	कारण	**(हेउ)**
कहेस्सामि	**(कित्तइस्सामि)**	कारण	**(व्यञ्जनावग्रह)**

कारण	**(पृ. ४६)**
कारणोवएस	**(हेउगोवएस)**
कारुण्य	**(कोलुण)**
कार्पटिक	**(धूर्त)**
कार्य	**(फल)**
काल	**(पृ. ४६)**
काल	**(अद्धा)**
कालक	**(कण्ह)**
कालक	**(गुरुक)**
काहापण	**(पृ. ४६)**
किइकम्म	**(सक्कार)**
किंचि	**(रहस्स)**
किट्टंति	**(रमंति)**
किट्टते	**(पृ. ४६)**
किट्टिय	**(फासिय)**
किट्टेइ	**(फासेइ)**
किट्टेमि	**(आइक्खामि)**
किडिकिडियाभूय	**(सुक्क)**
कितबुद्धि	**(सुबुद्धिक)**
कितिकम्म	**(वंदणग)**
कित्तइस्सामि	**(पृ. ४६)**
कित्तण	**(पृ. ४६)**
कित्ति	**(पृ. ४६)**
कित्ति	**(खात)**
कित्ति	**(अहिंसा)**
कित्तित	**(वण्णित)**
किब्बिस	**(अलिय)**
किब्बिस	**(माया)**
किब्बिसिय	**(मोहणिज्जकम्म)**
किरियंति	**(उत्पादयंति)**
किरीट	**(तिरीड)**
किलंत	**(दुब्बल)**
किलामिज्जमाण	**(आउडिज्जमाण)**
किलामेज्ज	**(अभिहणेज्ज)**
किलिट्ठ	**(कलुस)**
किलिम	**(णपुंसक)**
किलेस	**(कम्म)**
किव्विस	**(पृ. ४६)**
किस	**(कस)**
किस	**(सुक्क)**
किसिण	**(कण्ह)**
किस्सते	**(भग्ग)**
कीर्ति	**(श्लोक)**
कीलंति	**(रमंति)**
कीव	**(पृ. ४७)**
कुंजर	**(मातंग)**
कुंजित	**(रुण्ण)**
कुंडग	**(अरंजर)**
कुंडल	**(पृ. ४७)**
कुंभ	**(णावा)**
कुंभीकपंडक	**(णपुंसक)**
कुच्छति	**(पृ. ४७)**
कुच्छिधार	**(निज्जामय)**
कुट	**(घट)**
कुटिल	**(वक्र)**
कुटुंब	**(कुल)**
कुट्टण	**(पृ. ४७)**
कुट्टित	**(पिच्चिय)**
कुट्टित	**(छिन्न)**
कुड्मल	**(मुकुल)**

कुढारक	(अरंजर)
कुथित	(विश्र)
कुब्ज	(पृ. ४७)
कुब्ब	(पृ. ४७)
कुब्जिक	(कुब्ज)
कुमारी	(दारिया)
कुमुद	(पदुम)
कुमुय	(उप्पल)
कुम्भ	(घट)
कुरबक	(कुंडल)
कुरुय	(माया)
कुरुय	(कक्क)
कुरुय	(मोहणिज्जकम्म)
कुल	(संघ)
कुल	(पृ. ४७)
कुलमसि	(अदिण्णादाण)
कुवलय	(पदुम)
कुविय	(रुट्ठ)
कुविय	(आसुरत्त)
कुव्वइ	(आवहंति)
कुव्विज्ज	(पउंजेज्ज)
कुशल	(पृ. ४७)
कुसल	(देसकालण्ण)
कुसल	(छेय)
कुसीलसंसग्गि	(अणायतण)
कुसुम	(पुप्फ)
कुह	(दुम)
कुहित	(वावण्ण)
कुहिय	(दोसीण)
कूजण	(पृ. ४७)
कूट	(माया)
कूड	(पृ. ४७)
कूड	(अलिय)
कूड	(उक्कंचण)
कूड	(मोहणिज्जकम्म)
कूड	(पदपाश)
कूड	(अदिण्णादाण)
कूर	(ओयण)
कूरिकड	(अदिण्णादाण)
कूवित	(विकूणित)
कूविय	(रसिय)
कृत	(चेतित)
कृत	(निष्ठित)
कृत्स्न	(अशेष)
कृत्स्न	(सर्व)
कृश	(पृ. ४७)
केज्जूर	(पृ. ४८)
केतु	(पृ. ४८)
केवल	(पृ. ४८)
केवलणाण	(केवल)
केवलि	(अरह)
केवलि	(सिद्ध)
केवलिठाण	(अहिंसा)
कोंटक	(तुस)
कोकणय	(उप्पल)
कोज्जक	(पदुम)
कोट्टिंब	(णावा)
कोट्टिम	(डिप्फर)
कोट्ठ	(धारणा)
कोडि	(अस्सि)

कोप	**(क्रोध)**
कोप	**(पृ. ४८)**
कोमल	**(तरुणाय)**
कोरक	**(मुकुल)**
कोलाहलभूय	**(हाहाभूय)**
कोलुण	**(पृ. ४८)**
कोव	**(कोह)**
कोव	**(मोहणिज्जकम्म)**
कोह	**(पृ. ४८)**
कोह	**(अधम्मत्थिकाय)**
कोह	**(मोहणिज्जकम्म)**
कोहनिग्गह	**(खमा)**
कोहनिरोह	**(खमा)**
कोहविवेग	**(धम्मत्थिकाय)**
कौमुदी	**(चन्द्रिका)**
क्रम	**(पृ. ४८)**
क्रमति	**(पृ. ४८)**
क्रिया	**(एजन)**
क्रिया	**(पृ. ४८)**
क्रिया	**(योग)**
क्रीडन	**(विहरण)**
क्रोध	**(पृ. ४९)**
क्षपण	**(अनगार)**
क्षपणा	**(पृ. ४९)**
क्षपित	**(क्षामित)**
क्षाम	**(कुब्ब)**
क्षामित	**(पृ. ४९)**
क्षिप्त	**(विरल्लिय)**
क्षिप्त	**(मुक्त)**
क्षुद्र	**(पृ. ४९)**
खइय	**(अतिवत्त)**
खं	**(पृ. ४९)**
खंड	**(फुडित)**
खंड	**(असकल)**
खंड	**(अंग)**
खंड	**(विकल)**
खंडणा	**(विराहणा)**
खंडित	**(पृ. ४९)**
खंडित्तए	**(चालित्तए)**
खंत	**(पृ. ४९)**
खंत	**(भिक्खु)**
खंत	**(समण)**
खंति	**(अहिंसा)**
खंध	**(गण)**
खज्जमाण	**(नस्समाण)**
खट्टा	**(सेज्जा)**
खट्टिक	**(सौकरिक)**
खड्डुग	**(हत्थखड्डुक)**
खडुग	**(हत्थिक)**
खणता	**(रयणी)**
खण्ड	**(छेद)**
खतय	**(राहु)**
खत्तपक	**(काहापण)**
खत्तियधम्मक	**(गंडूपक)**
खत्तियधम्मका	**(खिंखिणिका)**
खद्ध	**(पृ. ४९)**
खम	**(हिय)**
खमइ	**(सहइ)**
खमग	**(भिक्खु)**
खमति	**(पृ. ४९)**

खमा **(पृ. ४९)**
खमिति **(पृ. ४९)**
खर **(पृ. ५०)**
खर **(उज्जल)**
खर **(निठ्ठुर)**
खरय **(राहु)**
खलक **(रस)**
खलणा **(पडिसेवणा)**
खलुंक **(पृ. ५०)**
खवण **(विगिंचण)**
खवण **(ओधुणण)**
खवण **(झोसण)**
खविय **(खीण)**
खवेइ **(विसंजोएइ)**
खह **(आगासत्थिकाय)**
खाइम **(असण)**
खाखट्टिका **(दीहसक्कुलिका)**
खात **(पृ. ५०)**
खाति **(जेमेति)**
खामिय **(पृ. ५०)**
खार **(डिम्ब)**
खिंखिणिका **(पृ. ५०)**
खिंखिणिका **(पामुद्दिका)**
खिंसइ **(पृ. ५०)**
खिंसण **(अक्कोस)**
खिंसणा **(हीलणा)**
खिंसणा **(इंखिणी)**
खिंसणिज्ज **(हीलणिज्ज)**
खिंसति **(हीलेति)**
खिंसिज्जमाणी **(हीलिज्जमाणी)**
खिंसिय **(रुसिय)**
खिज्जणिया **(पृ. ५०)**
खित्त **(उक्कंपित)**
खिल **(अंग)**
खिलीभूत **(गाढीकय)**
खीण **(पृ. ५०)**
खीणंतराय **(अणंतराय)**
खीणक्कोह **(अक्कोह)**
खीणगोय **(अगोय)**
खीणनाम **(अणाम)**
खीणमाण **(अमाण)**
खीणमाया **(अमाया)**
खीणमोह **(अमोह)**
खीणलोह **(अलोह)**
खीणवंस **(महव्वय)**
खीणवेयण **(अवेयण)**
खीणाउय **(अणाउय)**
खीणावरण **(अणावरण)**
खीर **(दुद्ध)**
खुडित **(रहस्स)**
खुड्डुतर **(पृ. ५०)**
खुड्डुलक **(पृ. ५०)**
खुद्द **(पाव)**
खुह **(कम्म)**
खुह **(पाव)**
खेत्तण्ण **(देसकालण्ण)**
खेम **(पृ. ५०)**
खेव **(अदिण्णादाण)**
खोडक **(दीहसक्कुलिका)**
खोडभंग **(पृ. ५१)**

खोभणा	**(एजणा)**	गण	**(संघ)**
खोभित्तए	**(चालित्तए)**	गणणमतिक्कंत	**(पृ. ५२)**
खोभिय	**(वहित)**	गणसमुदाय	**(पृ. ५२)**
खोभेइ	**(उव्वत्तेइ)**	गणिय	**(उद्दिट्ठ)**
खोरक	**(पृ. ५१)**	गणित	**(नात)**
गंड	**(पृ. ५१)**	गत	**(पृ. ५२)**
गंडसेल	**(पासाण)**	गत	**(अतिक्कंत)**
गंडि	**(पृ. ५१)**	गत	**(इत)**
गंडूपक	**(पृ. ५१)**	गत	**(ठित)**
गंडूपयक	**(पृ. ५१)**	गत	**(नात)**
गंथ	**(तंत)**	गत	**(अतिवत्त)**
गंथ	**(सुत्त)**	गतवय	**(महव्वय)**
गंभीर	**(पृ. ५१)**	गतविवेकचैतन्य	**(मूर्च्छित)**
गगण	**(आगासत्थिकाय)**	गति	**(अहिंसा)**
गच्छ	**(राशि)**	गति	**(चरण)**
गच्छ	**(संघ)**	गति	**(भव)**
गच्छइ	**(उवेइ)**	गद्दभग	**(पदुम)**
गच्छंति	**(वयंति)**	गन्तृ	**(प्रवहण)**
गच्छति	**(दूइज्जति)**	गब्भेल्लग	**(निज्जामय)**
गच्छति	**(अणुसंचरइ)**	गमन	**(अयन)**
गच्छति	**(कंखइ)**	गमन	**(अवन)**
गच्छति	**(चरति)**	गमन	**(एजन)**
गजदन्त	**(वक्षस्कार)**	गमन	**(चरण)**
गडूल	**(अलस)**	गमन	**(चार)**
गड्डिक	**(पृ. ५१)**	गमित	**(उवचरित)**
गढित	**(सत्त)**	गमित	**(पृ. ५२)**
गढिय	**(मुच्छिय)**	गमित	**(अर्पित)**
गढिय	**(लोलुय)**	गमित	**(मुणित)**
गण	**(पृ. ५१)**	गम्यते	**(अर्द्यते)**
गण	**(वंद)**	गम्यते	**(अर्यते)**

गम्यते	(**चर्यते**)	गवेसि	(**अत्थि**)
गम्यमान	(**पडुप्पन्न**)	गवेसिय	(**अन्विष्ट**)
गय	(**पृ. ५२**)	गव्व	(**माण**)
गय	(**विचल**)	गव्व	(**मोहणिज्जकम्म**)
गय	(**मातंग**)	गहण	(**पृ. ५२**)
गयतेय	(**हयतेय**)	गहण	(**अलिय**)
गरहणा	(**हीलणा**)	गहण	(**एसणा**)
गरहति	(**कुच्छति**)	गहण	(**माया**)
गरहिज्जमाणी	(**हीलिज्जमाणी**)	गहण	(**मोहणिज्जकम्म**)
गरहित	(**पृ. ५२**)	गहणपगार	(**माण**)
गरिहति	(**हीलेति**)	गहणा	(**गहण**)
गरिहा	(**आलोयणा**)	गहिय	(**बद्ध**)
गरिहा	(**पडिकमण**)	गहियट्ठ	(**लद्धट्ठ**)
गरिहिज्जइ	(**आलोइज्जइ**)	गाढ	(**लोलुग**)
गरुलक	(**तिरीड**)	गाढलीण	(**अणुपविट्ठ**)
गर्व	(**माण**)	गाढलीण	(**अतिगत**)
गर्हित	(**अवद्य**)	गाढीकय	(**पृ. ५२**)
गलइ	(**सडइ**)	गाढोपगूढ	(**अणुपविट्ठ**)
गलंत	(**चंचल**)	गाढोपगूढ	(**अतिगत**)
गलन	(**पृ. ५२**)	गामधम्मतत्ति	(**अबंभ**)
गलि	(**गंडि**)	गार्ध्य	(**राग**)
गलि	(**खलुंक**)	गार्ध्य	(**लोभ**)
गलि	(**तंडि**)	गाल	(**गलन**)
गलियकंटय	(**ओहयकंटय**)	गाह	(**चिट्ठ**)
गलिवद्द	(**दुग्गव**)	गाहा	(**पृ. ५२**)
गवेषणा	(**ईहा**)	गिज्झइ	(**सज्जइ**)
गवेसण	(**ईहा**)	गिज्झिय	(**सज्जिय**)
गवेसणा	(**आभिणिबोहिय**)	गिण्हाति	(**मिणति**)
गवेसणा	(**आभोग**)	गिद्ध	(**पृ. ५२**)
गवेसणा	(**एसणा**)	गिद्ध	(**मुच्छिय**)

गिद्ध **(लोलुय)**
गिद्ध **(सत्त)**
गिद्धि **(परिज्झा)**
गिद्धि **(मुच्छा)**
गिरा **(पृ. ५३)**
गिरा **(वक्क)**
गिरि **(णग)**
गिरिक **(पासाण)**
गिरिराय **(मंदर)**
गिलाण **(वाहिय)**
गिल्लिरी **(तिसरा)**
गिल्ली **(थिल्ली)**
गिह **(आगार)**
गिह **(गाहा)**
गिह **(लयण)**
गिह **(साला)**
गीतार्थ **(बुद्ध)**
गीय **(पृ. ५३)**
गुज्झ **(अबंभ)**
गुण **(पृ. ५३)**
गुण **(पृ. ५३)**
गुण **(पज्जव)**
गुण **(पर्याय)**
गुणकार **(जावंताव)**
गुणण **(परियट्टण)**
गुणमंत **(सीलमंत)**
गुणविराहणा **(पाणवह)**
गुणित **(ऊहित)**
गुणित **(नात)**
गुणिय **(आगत)**
गुणेति **(पृ. ५३)**
गुत्त **(दंतप्प)**
गुत्त **(पालित)**
गुत्त **(समण)**
गुत्तणाम **(धुवक)**
गुत्ति **(अहिंसा)**
गुरुक **(पृ. ५३)**
गुलमग **(अरंजर)**
गुलोवलद्धीय **(पृ. ५३)**
गुविल **(गंभीर)**
गूहण **(णिहण)**
गूहण **(पृ. ५३)**
गूहण **(मोहणिज्जकम्म)**
गूहण **(माया)**
गृद्ध **(सक्त)**
गृद्धि **(कांक्षा)**
गृद्धिमन्त **(मूर्च्छित)**
गृहिपर्याय **(पृ. ५३)**
गृहीत **(उद्धृत)**
गृहीत **(उवचार)**
गृहीत **(बद्ध)**
गृह्णाति **(पृ. ५३)**
गृह्णाति **(श्रृणोति)**
गृह्णाति **(पश्यति)**
गेण्हिति **(आदियति)**
गेहि **(पृ. ५३)**
गेहि **(छंद)**
गेहि **(तण्हा)**
गेहि **(मोहणिज्जकम्म)**
गेहि **(लोभ)**

गो	**(वक्क)**
गोउल	**(घोस)**
गोखीर	**(संख)**
गोचर	**(प्राप्ति)**
गोज्झग	**(पृ. ५४)**
गोज्झकपति	**(गोज्झक)**
गोण	**(अस्स)**
गोणस	**(पृ. ५४)**
गोधिका	**(पृ. ५४)**
गोब्बर	**(पृ. ५४)**
गोयर	**(पृ. ५४)**
गोयर	**(दुमपुप्फिया)**
गोल	**(दुमपुप्फिया)**
गोवण	**(गूहण)**
ग्रथित	**(पृ. ५४)**
ग्रथित	**(पृ. ५४)**
ग्रहगृहीत	**(अणप्पज्झ)**
ग्रहण	**(उवचार)**
ग्राम	**(नियोग)**
ग्राम्यवचन	**(पृ. ५४)**
घट	**(पृ. ५४)**
घटना	**(मेलना)**
घट्टण	**(संवर)**
घट्टण	**(पृ. ५४)**
घट्टणा	**(एजणा)**
घट्टेइ	**(उव्वत्तेइ)**
घट्ठ	**(अच्छ)**
घट्ठ	**(पृ. ५४)**
घडइ	**(आवहंति)**
घडइ	**(उज्जमति)**
घडक	**(अरंजर)**
घडति	**(क्रमति)**
घडिज्ज	**(परिक्कमिज्ज)**
घडितव्व	**(पृ. ५५)**
घण	**(पृ. ५५)**
घर	**(भवण)**
घर	**(गाहा)**
घाइय	**(हय)**
घाट	**(पृ. ५५)**
घाडियय	**(नायय)**
घात	**(पृ. ५५)**
घात	**(दण्ड)**
घाय	**(पृ. ५५)**
घायण	**(डंड)**
घायण	**(पाणवह)**
घायय	**(पृ. ५५)**
घायय	**(अरि)**
घिसरा	**(तिसरा)**
घुमति	**(अंदोलति)**
घोर	**(उज्जल)**
घोर	**(तिव्व)**
घोरविस	**(उग्गविस)**
घोस	**(पृ. ५५)**
चइय	**(ववगय)**
चए	**(छड्डे)**
चएज्ज	**(पृ. ५५)**
चंगेरिय	**(छज्जिय)**
चंचल	**(पृ. ५५)**
चंड	**(पाव)**
चंड	**(साहसिक)**

चंड **(उक्किट्ठ)**
चंड **(उज्जल)**
चंड **(सिग्घ)**
चंड **(तिव्व)**
चंडदंड **(पाव)**
चंडविस **(उग्गविस)**
चंडाल **(पृ. ५५)**
चंडिक्क **(कोह)**
चंडिक्क **(मोहणिज्जकम्म)**
चंडिक्किय **(रुट्ठ)**
चंडिक्किय **(आसुरत्त)**
चंद **(पृ. ५५)**
चंदलेस्सा **(दोसिणा)**
चक्ककमिहुणग **(हत्थिक)**
चक्खु **(मेढि)**
चञ्चूर्यते **(चरति)**
चतुवेद **(बंभण)**
चत्त **(ववगत)**
चत्तदेह **(पृ. ५६)**
चन्द्र **(पृ. ५६)**
चन्द्रातप **(चन्द्रिका)**
चन्द्रिका **(पृ. ५६)**
चम्मणद्ध **(णिम्मंसक)**
चय **(पिंड)**
चय **(परिग्गह)**
चय **(काय)**
चयंति **(वक्कमंति)**
चयण **(उस्सग्ग)**
चयावचइय **(भेउरधम्म)**
चयाहि **(पृ. ५६)**
चरंत **(अबंभ)**
चरक **(समण)**
चरण **(पृ. ५६)**
चरण **(पृ. ५६)**
चरण **(चार)**
चरण **(चार)**
चरण **(जीवाभिगम)**
चरणकरणपारविय **(समण)**
चरति **(पृ. ५६)**
चरति **(पृ. ५६)**
चरम **(पृ. ५६)**
चरय **(भिक्खु)**
चरित्तधम्म **(जीवाभिगम)**
चरित्तधम्म **(पच्चक्खाण)**
चरिया **(चार)**
चर्यते **(पृ. ५६)**
चल **(चलित)**
चल **(अनित्य)**
चलणा **(एजणा)**
चलन **(पृ. ५६)**
चलित **(पृ. ५६)**
चलिय **(चलित)**
चलिय **(वहित)**
चवल **(उक्किट्ठ)**
चवल **(खद्ध)**
चवल **(चंचल)**
चवल **(ससंभम)**
चवल **(सिग्घ)**
चहित **(पृ. ५७)**
चहिय **(पृ. ५७)**

चाउम्मासित	**(पृ. ५७)**
चाएति	**(पृ. ५७)**
चाण्डाल	**(सौकरिक)**
चाय	**(पव्वज्जा)**
चार	**(पृ. ५७)**
चार	**(पृ. ५७)**
चारु	**(सुभ)**
चालिज्जति	**(पृ. ५७)**
चालित	**(पृ. ५७)**
चालित्तए	**(पृ. ५७)**
चालेइ	**(उव्वत्तेइ)**
चाविय	**(ववगय)**
चाहित	**(चहित)**
चिंता	**(ईहा)**
चिंतापर	**(दीण)**
चिंतित	**(इच्छित)**
चिंतित	**(ऊहित)**
चिंतिय	**(अज्झत्थिय)**
चिंतेहिति	**(पृ. ५७)**
चिंध	**(लिंग)**
चिंधणिप्फण्ण	**(लिंगिय)**
चिकित्साशाला	**(तेगिच्छियसाला)**
चिक्कण	**(पृ. ५७)**
चिक्कण	**(पृ. ५८)**
चिक्कणीकय	**(गाढीकय)**
चिञ्चनिका	**(आम्रचिञ्चा)**
चिट्ठ	**(पृ. ५८)**
चिट्ठणा	**(अवत्था)**
चिट्ठणा	**(पतिट्ठा)**
चितक	**(दीव)**
चितिकम्म	**(वंदणग)**
चित्त	**(पृ. ५८)**
चित्त	**(अंतरप्प)**
चित्त	**(पणिहाण)**
चित्त	**(मधुर)**
चित्त	**(मणसंकप्प)**
चित्तल	**(सबल)**
चित्तविप्लुति	**(विचिकित्सा)**
चिन्तन	**(मनन)**
चिन्ता	**(उपयोग)**
चिन्ता	**(उपयोग)**
चिन्ता	**(संकण)**
चिर	**(पृ. ५८)**
चिरजुसिय	**(चिरसंसिट्ठ)**
चिरपरिचिय	**(चिरसंसिट्ठ)**
चिरसंथुय	**(चिरसंसिट्ठ)**
चिरसंसिट्ठ	**(पृ. ५८)**
चिराणुगय	**(चिरसंसिट्ठ)**
चिराणुवत्ति	**(चिरसंसिट्ठ)**
चिल्लल	**(सद्दूल)**
चिल्लिक	**(णपुंसक)**
चिह्न	**(केतु)**
चुडलि	**(दीव)**
चुडिलीसिहा	**(हुतासणसिहा)**
चुण्णिया	**(अंग)**
चुय	**(गय)**
चुय	**(ववगय)**
चुल्लक	**(दीव)**
चुल्लि	**(दीव)**
चूला	**(पृ. ५८)**

चेट्ठा **(योग)**
चेत **(अंतरप्प)**
चेतण **(णाण)**
चेतित **(पृ. ५८)**
चेपकतुल्य **(चिक्कण)**
चेय **(जीवत्थिकाय)**
चेयण्ण **(पृ. ५८)**
चेष्टा **(रयस्)**
चैत्य **(आयतन)**
चोक्ख **(आयंत)**
चोक्खा **(अहिंसा)**
चोक्ष **(पृ. ५८)**
चोण्ण **(वज्ज)**
चोदणा **(पुच्छा)**
चोदित **(पृ. ५८)**
चोयणा **(पृ. ५८)**
चोरिक्क **(अदिण्णादाण)**
छंद **(पृ. ५९)**
छंद **(पृ. ५९)**
छंद **(इच्छा)**
छंद **(संकप्प)**
छंदंत **(पडियाणिया)**
छंदक **(मणाम)**
छंदण **(पृ. ५९)**
छंदन **(निकाच)**
छगण **(गोब्बर)**
छज्जिय **(पृ. ५९)**
छड्डुण **(विउस्सग)**
छड्डुण **(उस्सग्ग)**
छड्डित **(फुलित)**
छड्डित **(पकिण्ण)**
छड्डिय **(पृ. ५९)**
छड्डे **(पृ. ५९)**
छड्डेंति **(वमेंति)**
छड्डेहि **(चयाहि)**
छण **(जण्ण)**
छण **(उस्सय)**
छण **(उस्सव)**
छन्द **(पृ. ५९)**
छन्न **(पृ. ५९)**
छर्दित **(पृ. ५९)**
छलिक **(मणाम)**
छविकर **(पावय)**
छविच्छेय **(पाणवह)**
छात **(पिवासित)**
छायण **(णिहण)**
छाया **(जुइ)**
छाया **(पृ. ५९)**
छाया **(कंति)**
छासि **(तक्क)**
छिंद **(पहर)**
छिंदंत **(पृ. ६०)**
छिंदति **(पृ. ६०)**
छिज्जमाण **(नस्समाण)**
छिड्डु **(पृ. ६०)**
छिड्डु **(आगासत्थिकाय)**
छिण्ण **(भग्ग)**
छिण्णण **(निव्वट्टन)**
छिण्णबंधण **(दविय)**
छिण्णसोय **(संत)**

छिद्द **(अन्तर)**
छिद्द **(पृ. ६०)**
छिद्र **(सन्धि)**
छिन्न **(कप्पिय)**
छिन्न **(पृ. ६०)**
छिन्नंति **(पृ. ६०)**
छिन्नसोय **(अणासव)**
छुद्ध **(णिच्छुद्ध)**
छुभति **(उवयंति)**
छेत्ता **(हंता)**
छेद **(पृ. ६०)**
छेदन **(आकुट्टि)**
छेय **(उक्किट्ठ)**
छेय **(पृ. ६०)**
छेयकर **(अण्हयकर)**
छेयण **(फुडण)**
छेयण **(ओधुणण)**
छेयणकरी **(पृ. ६०)**
जइ **(भिक्खु)**
जइण **(उक्किट्ठ)**
जइण **(सिग्घ)**
जंतु **(जीवत्थिकाय)**
जंपति **(आचिक्खति)**
जंबू **(पृ. ६०)**
जंबूका **(कंची)**
जंबूफलक **(करोडक)**
जग्गंतक **(पृ. ६०)**
जघन्य **(अधर)**
जघन्य **(हिड्डिम)**
जघन्य **(कनिष्ठ)**
जज्जर **(जुण्ण)**
जड **(मंद)**
जडिलय **(राहु)**
जड्डु **(पृ. ६१)**
जढ **(छड्डिय)**
जणकलकल **(जणसंमद्द)**
जणपद **(रज्ज)**
जणबोल **(जणसंमद्द)**
जणवूह **(जणसंमद्द)**
जणसंमद्द **(पृ. ६१)**
जणसण्णिवाय **(जणसंमद्द)**
जणुक्कलिया **(जणसंमद्द)**
जणुम्मि **(जणसंमद्द)**
जण्ण **(पृ. ६१)**
जण्ण **(उस्सय)**
जण्ण **(उस्सव)**
जण्णकत **(बंभण)**
जण्णकारि **(बंभण)**
जण्णमुंड **(बंभण)**
जत **(वीर)**
जति **(भिक्खु)**
जतितव्व **(घडितव्व)**
जन्म **(भव)**
जन्मपर्याय **(गृहिपर्याय)**
जय **(उवसंत)**
जय **(जीवत्थिकाय)**
जयणा **(अहिंसा)**
जरठ **(पुराण)**
जरती **(जरत्का)**
जरत्का **(पृ. ६१)**

जरातुर	**(महव्वय)**
जराविमुक्क	**(सिद्ध)**
जलण	**(अग्गि)**
जलन	**(नयन)**
जलपानस्थान	**(तीर्थ)**
जलरुह	**(कमल)**
जलहर	**(बलाहक)**
जलोदर	**(दउदर)**
जलोय	**(दुमपुप्फिया)**
जल्ल	**(पृ. ६१)**
जल्लिय	**(पृ. ६१)**
जवइत्तए	**(पृ. ६१)**
जवण	**(उक्किट्ठ)**
जवित्तए	**(पृ. ६१)**
जस	**(पृ. ६१)**
जस	**(खात)**
जसंस	**(सिद्धत्थ)**
जसंसि	**(ओयंसि)**
जसवती	**(सेसवती)**
जसोकामि	**(पूयणट्ठि)**
जसोधरा	**(जंबू)**
जहाभूत	**(पृ. ६१)**
जहाहि	**(चयाहि)**
जहेज्ज	**(चएज्ज)**
जाइविमुक्क	**(सिद्ध)**
जाणइ	**(पृ. ६१)**
जाणंति	**(मन्नंति)**
जाणितव्वग-सामत्थजुत्त	**(विन्नत्तिकारण)**
जाणित्तु	**(समिच्च)**

जाणुकोप्परमाय	**(वंझा)**
जात	**(पृ. ६२)**
जात	**(पृ. ६२)**
जाततेय	**(अग्गि)**
जाम	**(पृ. ६२)**
जाय	**(अरह)**
जायकोउहल्ल	**(जायसड्ढ)**
जायमेय	**(पुट्ठ)**
जायसंसय	**(जायसड्ढ)**
जायसड्ढ	**(पृ. ६२)**
जाल	**(मुम्मुर)**
जाल	**(तिसरा)**
जालक	**(मुकुल)**
जालन	**(नयन)**
जावंताव	**(पृ. ६२)**
जिइंदिय	**(खंत)**
जिण	**(अरह)**
जित	**(उद्दूढ)**
जितकरण	**(पृ. ६२)**
जिम्ह	**(माया)**
जिम्ह	**(मोहणिज्जकम्म)**
जिय	**(सिक्खिय)**
जिह्विका	**(पृ. ६२)**
जीत	**(पृ. ६२)**
जीत	**(बहुजनाचीर्ण)**
जीय	**(पृ. ६२)**
जीय	**(ववहार)**
जीर्णा	**(जरत्का)**
जीव	**(पृ. ६२)**
जीव	**(जीवत्थिकाय)**

जीव **(पाण)**
जीवत्थिकाय **(पृ. ६३)**
जीवन **(पृ. ६३)**
जीवन **(स्थिति)**
जीववुड्ढिपय **(अणुण्णा)**
जीवा **(पृ. ६३)**
जीवाभिगम **(पृ. ६३)**
जीवित **(पृ. ६३)**
जीवित **(जीवन)**
जीवियंतकरण **(पाणवह)**
जीवियासा **(लोभ)**
जीवियासा **(मोहणिज्जकम्म)**
जुइ **(पृ. ६३)**
जुंजिय **(दुब्बल)**
जुण्ण **(पृ. ६३)**
जुण्ण **(अतिवत्त)**
जुण्ण **(महव्वय)**
जुण्णवय **(महव्वय)**
जुत्तग्घ **(परग्घ)**
जुत्ति **(कंति)**
जुद्ध **(पृ. ६३)**
जुद्ध **(संगाम)**
जुम्म **(पिंड)**
जुवति **(पत्ति)**
जुवाण **(पृ. ६३)**
जुवाण **(जोव्वण)**
जूरइ **(दुक्खइ)**
जूरण **(दुक्खण)**
जूस **(रस)**
जूह **(पृ. ६३)**
जेट्ठ **(बंभण)**
जेट्ठा **(अणोज्जा)**
जेट्ठोग्गह **(पज्जोसवणा)**
जेमण **(भोयण)**
जेमेति **(पृ. ६४)**
जेया **(जीवत्थिकाय)**
जोग **(पृ. ६४)**
जोग **(पृ. ६४)**
जोग **(वक्क)**
जोगनिग्गह **(काउस्सग्ग)**
जोग्ग **(अरिह)**
जोग्ग **(पभु)**
जोणि **(जीवत्थिकाय)**
जोति **(अग्गि)**
जोतिस **(संवत्सर)**
जोत्तेज्ज **(परिक्कमिज्ज)**
जोव्वण **(पृ. ६४)**
जोव्वणक **(जोव्वण)**
जोव्वणत्थ **(जुवाण)**
जोव्वणत्थ **(जोव्वण)**
जोसिता **(पत्ति)**
ज्ञा **(ज्ञान)**
ज्ञान **(उपयोग)**
ज्ञान **(संविद्)**
ज्ञान **(पृ. ६४)**
ज्ञाप्यते **(साध्यते)**
ज्येष्ठ **(पर)**
ज्येष्ठावग्रह **(प्रथमसमवसरण)**
ज्योत्स्ना **(चन्द्रिका)**
ज्वलन्ति **(पृ. ६४)**

झंझक	**(हत्थिक)**
झंझकर	**(पृ. ६४)**
झपित	**(उक्कंपित)**
झवणा	**(अज्झयण)**
झवित	**(णिप्पीलित)**
झविय	**(खामिय)**
झाणपर	**(दीण)**
झिज्झा	**(लोभ)**
झिल्लिरी	**(तिसरा)**
झीण	**(पृ. ६५)**
झीण	**(णिप्पीलित)**
झीण	**(महव्वय)**
झीण	**(अतिवत्त)**
झुसिर	**(तुच्छ)**
झुसिर	**(आगासत्थिकाय)**
झूमित	**(भग्ग)**
झोस	**(पृ. ६५)**
झोसण	**(आभोगण)**
झोसण	**(पृ. ६५)**
टिट्टियावेइ	**(उव्वत्तेइ)**
ठप्प	**(पृ. ६५)**
ठवणा	**(धारणा)**
ठवणा	**(णिक्खेव)**
ठवणा	**(अणुण्णा)**
ठवणा	**(अवत्था)**
ठवणा	**(पज्जोसवणा)**
ठवणिज्ज	**(ठप्प)**
ठवणी	**(अवत्था)**
ठविय	**(णिक्खित्त)**
ठवेति	**(णिहित)**
ठाण	**(णिसीहिया)**
ठाण	**(पतिट्ठा)**
ठाण	**(पृ. ६५)**
ठाण	**(पृ. ६५)**
ठाण	**(अचल)**
ठाण	**(उवसग)**
ठाण	**(णाम)**
ठाणट्ठित	**(धुवक)**
ठावणा	**(पतिट्ठा)**
ठिइ	**(विहि)**
ठिइकरण	**(अणुण्णा)**
ठित	**(पृ. ६५)**
ठिति	**(अहिंसा)**
ठिति	**(पृ. ६५)**
ठिति	**(अवत्था)**
ठिति	**(पतिट्ठा)**
ठिय	**(सिक्खिय)**
डंड	**(पृ. ६५)**
डंभण	**(कक्क)**
डज्झति	**(रज्जति)**
डमर	**(समर)**
डमर	**(डिंब)**
डमर	**(कलह)**
डहण	**(ओधुणण)**
डहरक	**(खुड्डुलक)**
डिंब	**(पृ. ६५)**
डिप्फर	**(पृ. ६५)**
ढक्कण	**(संवर)**
णंगल	**(पृ. ६५)**
णंदि	**(पृ. ६६)**

णंदिय	**(हट्ठचित्त)**	णास	**(णिक्खेव)**
णग	**(पृ. ६६)**	णिइय	**(धुव)**
णट्ठ	**(पृ. ६६)**	णिउण	**(दक्ख)**
णट्ठ	**(णिहय)**	णिंदणा	**(इंखिणी)**
णत्थिभाव	**(असपज्जाय)**	णिकडि	**(उवधि)**
णपुंसक	**(पृ. ६६)**	णिकड्ढति	**(णीहारेति)**
णमंसइ	**(आढाइ)**	णिकड्ढति	**(पृ. ६७)**
णमणी	**(अणुण्णा)**	णिकम्मदरिसि	**(पृ. ६७)**
णमोक्कत	**(पृ. ६६)**	णिकाय	**(वंद)**
णरिंद	**(पृ. ६६)**	णिकायण	**(छंदण)**
णरेतर	**(णपुंसक)**	णिकुज्जित	**(णिस्सारित)**
णलिण	**(उप्पल)**	णिकुज्जित	**(णिम्मज्जित)**
णलिण	**(पदुम)**	णिक्कंखित	**(णिस्संकित)**
णाण	**(मइ)**	णिक्कंप	**(णिच्चल)**
णाण	**(पृ. ६६)**	णिक्कड्ढित	**(णिस्सारित)**
णाणि	**(मुणि)**	णिक्कड्ढित	**(णिम्मज्जित)**
णाणि	**(पृ. ६७)**	णिक्खंत	**(पृ. ६७)**
णाम	**(पृ. ६७)**	णिक्खणंत	**(छिंदंत)**
णाम	**(पृ. ६७)**	णिक्खण्ण	**(णिम्मज्जित)**
णामण	**(उवसमण)**	णिक्खिण्ण	**(विक्खिण्ण)**
णामणी	**(अणुण्णा)**	णिक्खित्त	**(णिस्सारित)**
णामत	**(पासाण)**	णिक्खित्त	**(पृ. ६७)**
णामधेज्ज	**(णाम)**	णिक्खुस्सति	**(णीहारेति)**
णामेति	**(अंचेति)**	णिक्खेव	**(पृ. ६७)**
णाय	**(पंथ)**	णिगलित	**(णिप्पीलित)**
णाय	**(अणुण्णा)**	णिग्गंथ	**(समण)**
णाय	**(पृ.६७)**	णिग्गंथ	**(माहण)**
णायय	**(मित्त)**	णिग्गत	**(उट्ठित)**
णारी	**(पत्ति)**	णिग्गत	**(णिच्छुद्ध)**
णावा	**(पृ. ६७)**	णिग्गलित	**(णिब्भामित)**

णिच्च **(धुव)**
णिच्चमंडिया **(जंबू)**
णिच्चल **(पृ. ६७)**
णिच्छय **(पृ. ६८)**
णिच्छयं णाहिति **(चिंतेहिति)**
णिच्छयत्थपडिवत्ति **(ववसाय)**
णिच्छालित **(णिस्सारित)**
णिच्छिड्डु **(घण)**
णिच्छिय **(णियय)**
णिच्छुद्ध **(पृ. ६८)**
णिच्छुद्ध **(णिस्सारित)**
णिच्छुद्ध **(णिम्मज्जित)**
णिच्छोडण **(पृ. ६८)**
णिच्छोलित **(णिस्सारित)**
णिच्छोलित **(णिम्मज्जित)**
णिजुद्ध **(जुद्ध)**
णिज्जरा **(अणुण्णा)**
णिज्जरा **(पृ. ६८)**
णिज्जवणा **(पुच्छणा)**
णिज्जाण **(मोत्ति)**
णिज्जूढ **(जवित्तए)**
णिज्झायति **(पेक्खते)**
णिट्ठित **(महव्वय)**
णिट्ठित **(अतिवत्त)**
णिट्ठियट्ठ **(पंडिय)**
णिट्ठुत **(णिम्मज्जित)**
णिट्ठुर **(फरुस)**
णिट्ठुर **(कक्कस)**
णिट्ठुर **(खर)**
निठुर **(उज्जल)**
णिडाल **(पृ. ६८)**
णिडालमासक **(पृ. ६८)**
णिड्डील **(णिस्सारित)**
णिण्णामित **(णिस्सारित)**
णिण्णीत **(णिम्मज्जित)**
णिण्णेहक **(पृ. ६८)**
णितिय **(धुव)**
णितिय **(पृ. ६८)**
णित्थणित **(णिम्मज्जित)**
णित्थुद्ध **(णिम्मज्जित)**
णिदंसण **(पृ. ६८)**
णिदंसिय **(आघविय)**
णिदरिसण **(णाय)**
णिद्दीण **(णिम्मज्जित)**
णिद्धाडित **(णिस्सारित)**
णिद्धाडित **(णिम्मज्जित)**
णिद्धावति **(पधावति)**
णिप्पकंप **(धुवक)**
णिप्पतित **(णिस्सारित)**
णिप्पयोग **(सिद्ध)**
णिप्पीलित **(पृ. ६८)**
णिप्फंद **(णिच्चल)**
णिप्फत्ति **(पृ. ६८)**
णिप्फत **(अतिवत्त)**
णिप्फाडित **(णिस्सारित)**
णिप्फावित **(णिम्मज्जित)**
णिप्फीलित **(णिस्सारित)**
णिप्फेडित **(णिम्मज्जित)**
णिब्भच्छिज्जमाण **(वुच्चमाण)**
णिब्भामित **(पृ. ६९)**
णिमंतण **(पृ. ६९)**
णिम्मंसक **(छंदण)**
णिम्मंसक **(पृ. ६९)**
णिम्मज्जित **(पृ. ६९)**
णिम्मट्ठ **(रहस्स)**
णिम्मम **(नीरागदोस)**

णिम्मम	**(निट्ठियट्ठ)**	णिवोल्लित	**(णिम्मज्जित)**
णिम्मल	**(अरय)**	णिव्वंजीयंति	**(पृ. ६९)**
णिम्मल	**(सेत)**	णिव्वट्टित	**(णिम्मज्जित)**
णियक्खेति	**(पेक्खते)**	णिव्वत	**(महव्वय)**
णियडि	**(उक्कंचण)**	णिव्वत्तण	**(उप्पायण)**
णियडिजोग	**(उवधि)**	णिव्वर	**(धुवक)**
णियत	**(पृ. ६९)**	णिव्वर	**(छिन्न)**
णियत	**(अचल)**	णिव्वलक	**(णिच्छोडण)**
णियत्ति	**(दुगुंछणा)**	णिव्वाघाय	**(अणुत्तर)**
णियय	**(पृ. ६९)**	णिव्वाडित	**(णिस्सारित)**
णियया	**(जंबू)**	णिव्वाणि	**(संधि)**
णिरणुकंप	**(पाव)**	णिव्वाणिकर	**(पृ. ६९)**
णिरत्ति	**(रयणी)**	णिव्वाधित	**(हट्ठ)**
णिराकत	**(णिस्सारित)**	णिव्वामित	**(णिस्सारित)**
णिराकार	**(अपमाण)**	णिव्वासित	**(णिम्मज्जित)**
णिरागत	**(दीण)**	णिव्विट्ठ	**(णिम्मज्जित)**
णिराणंद	**(णिम्मज्जित)**	णिव्वितिगिच्छित	**(णिस्संकित)**
णिराणत	**(णिस्सारित)**	णिव्वुत	**(सिद्ध)**
णिरिक्खति	**(पेक्खते)**	णिव्वुत	**(पृ. ६९)**
णिरोग	**(हट्ठ)**	णिव्वुतिकर	**(मधुर)**
णिलिक्खति	**(पेक्खते)**	णिव्वुयगत	**(सिद्धिगत)**
णिलुंचित	**(भग्ग)**	णिसरति	**(णीहारेति)**
णिलुलित	**(णिम्मज्जित)**	णिसा	**(रयणी)**
णिलूचित	**(णिस्सारित)**	णिसारेति	**(णीहारेति)**
णिल्लक्खित	**(णिम्मज्जित)**	णिसिट्ठ	**(दिट्ठ)**
णिल्लवेति	**(वोसिरति)**	णिसित्त	**(णिस्सारित)**
णिल्लालित	**(उट्ठित)**	णिसियणा	**(पृ. ६९)**
णिल्लिक्खण	**(णिच्छोडण)**	णिसीहिया	**(उवसग)**
णिल्लिखित	**(उट्ठित)**	णिसीहिया	**(पृ. ७०)**
णिल्लुवित	**(णिम्मज्जित)**	णिस्संकित	**(पृ. ७०)**
णिल्लोकित	**(उद्दित)**	णिस्संग	**(णीरागदोस)**
णिल्लोलित	**(णिस्सारित)**	णिस्सरित	**(णिस्सारित)**
णिवूढ	**(दिट्ठ)**	णिस्सरित	**(णिम्मज्जित)**

णिस्ससित	(**णिस्सारित**)
णिस्ससित	(**णिम्मज्जित**)
णिस्सारित	(**णिम्मज्जित**)
णिस्सारित	(**पृ. ७०**)
णिस्सावित	(**णिम्मज्जित**)
णिस्सिंघित	(**णिम्मज्जित**)
णिस्सित	(**णिम्मज्जित**)
णिस्सुक्क	(**णिम्मंसक**)
णिस्सेयस	(**हिय**)
णिहण	(**पृ. ७०**)
णिहय	(**पृ. ७०**)
णिहित	(**पृ. ७०**)
णिहेति	(**णिहित**)
णीत	(**तीरित**)
णीपुर	(**गंडूपयक**)
णीपुरग	(**गंडूपक**)
णीयतराय	(**खुड्डुतराय**)
णीरक्कय	(**णिम्मज्जित**)
णीरय	(**घट्ठ**)
णीरय	(**सुद्ध**)
णीरय	(**अरय**)
णीरय	(**सिद्ध**)
णीरागदोस	(**पृ. ७०**)
णीरेय	(**णिच्चल**)
णील	(**कण्ह**)
णीसल्ल	(**णीरागदोस**)
णीहरति	(**णीहारेति**)
णीहारेति	(**पृ. ७०**)
णूम	(**मोहणिज्जकम्म**)
णूम	(**माया**)
णूमण	(**गूहण**)
णूमेंति	(**हरंति**)
णेयाउय	(**केवल**)
णेव्वाण	(**संति**)
णोल्लति	(**ओधावति**)
णोल्लसति	(**अंचेति**)
णो सुह	(**अणिट्ठ**)
ण्हाण	(**सिणाण**)
ण्हात	(**पृ. ७०**)
ण्हाय	(**पृ. ७०**)
तंडी	(**पृ. ७१**)
तंत	(**पृ. ७१**)
तंत	(**सुत्त**)
तंत	(**संत**)
तक्क	(**पृ. ७१**)
तक्क	(**पृ. ७१**)
तक्करत्तण	(**अदिण्णादाण**)
तक्केइ	(**आसाएइ**)
तक्केइ	(**पृ. ७१**)
तच्च	(**संत**)
तच्चावाय	(**दिट्ठिवाय**)
तच्चित्त	(**पृ. ७१**)
तच्चित्त	(**अज्झोववण्ण**)
तच्छण	(**फुडण**)
तज्जण	(**हीलण**)
तज्जण	(**भेसण**)
तज्जण	(**अक्कोस**)
तज्जण	(**कुट्टण**)
तज्जिज्जमाण	(**आउडिज्जमाण**)
तज्जिज्जमाणी	(**हीलिज्जमाणी**)
तज्जित	(**चोदित**)
तज्जेंति	(**पृ. ७१**)
तज्जेज्ज	(**आओसेज्ज**)
तज्जेति	(**अभिहणति**)
तज्जेमाण	(**ओवीलेमाण**)
तट्टक	(**पृ. ७१**)
तण	(**काय**)
तणपल्ल	(**कडपल्ल**)

तणसोल्लिक (**पदुम**)
तणु (**ईसिपब्भारपुढवी**)
तणुतणू (**ईसिपब्भारपुढवी**)
तणुयतर (**ईसिपब्भारपुढवी**)
तणूयरी (**ईसिपब्भारपुढवी**)
तण्णक (**उसभ**)
तण्णक (**वच्छक**)
तण्णक (**बालक**)
तण्णिका (**दारिया**)
तण्हा (**मोहणिज्जकम्म**)
तण्हा (**लोभ**)
तण्हा (**परिग्गह**)
तण्हा (**पृ. ७१**)
तण्हाइत (**पिवासित**)
तण्हा–गेही (**अदिण्णादाण**)
तत्तिव्वज्झवसाण (**तच्चित्त**)
तत्त्व (**पृ. ७१**)
तत्थ (**पृ. ७२**)
तत्थ (**भीय**)
तत्थ (**वियंजित**)
तत्थ–तत्थ (**पृ. ७२**)
तदज्झवसिय (**तच्चित्त**)
तदट्ठोवउत्त (**तच्चित्त**)
तदप्पियकरण (**तच्चित्त**)
तदुभय (**अणुण्णा**)
तद्दिट्ठि (**पृ. ७२**)
तनु (**बोंदि**)
तनु (**कृश**)
तनु (**पृ. ७२**)
तनुतरशरीर (**पृ. ७२**)
तन्निवेसण (**तद्दिट्ठि**)
तपंति (**ज्वलंति**)
तप्पक (**णावा**)
तप्पण (**तुस**)
तप्पुरक्कार (**तद्दिट्ठि**)
तब्भावणाभाविय (**तच्चित्त**)
तम (**तमुक्काय**)
तमस् (**पृ. ७२**)
तमुक्काय (**पृ. ७२**)
तम्मण (**अज्झोववण्ण**)
तम्मण (**तच्चित्त**)
तम्मोत्ति (**तद्दिट्ठि**)
तरच्छ (**पृ. ७२**)
तरु (**दुम**)
तरुण (**जोव्वण**)
तरुणय (**पृ. ७२**)
तलपत्तक (**कुंडल**)
तलभ (**केज्जूर**)
तलिय (**डिप्फर**)
तल्लेस (**तच्चित्त**)
तल्लेस (**अज्झोववण्ण**)
तव (**परिहार**)
तव (**णिज्जरा**)
तवरत (**भिक्खु**)
तवस्सि (**पृ. ७३**)
तवस्सि (**पव्वइय**)
तवस्सि (**भिक्खु**)
तवेइ (**ओभासेइ**)
तसंति (**पृ. ७३**)
तसिय (**भीय**)

तस्सण्णि	**(तद्दिट्ठि)**
तह	**(पृ. ७३)**
तहिं-तहिं	**(तत्थ-तत्थ)**
तहिय	**(सच्च)**
तहिय	**(संत)**
ताडण	**(कुट्टण)**
ताडणा	**(हीलणा)**
ताडिज्जमाण	**(आउडिज्जमाण)**
ताण	**(अहिंसा)**
तापयति	**(उद्योतयति)**
तामरस	**(कमल)**
तामरस	**(पदुम)**
तामरस	**(उप्पल)**
तायी	**(भिक्खु)**
तायी	**(समण)**
तालण	**(भेसण)**
तालण	**(वध)**
तालणा	**(हीलणा)**
तालेंति	**(तज्जेंति)**
तालेज्ज	**(आओसेज्ज)**
तालेति	**(अभिहणति)**
तालेमाण	**(ओवीलेमाण)**
तावस	**(भिक्खु)**
तावस	**(समण)**
तासण	**(अक्कोस)**
तासणय	**(बीहणय)**
तासणय	**(पाव)**
तिउल	**(उज्जल)**
तिगिंच्छसरिस	**(पितवण्ण)**
तिण्ण	**(सिद्ध)**

तिण्ण	**(भिक्खु)**
तिण्ण	**(समण)**
तिण्ण	**(पृ. ७३)**
तिण्णगत	**(सिद्धिगत)**
तितिक्खति	**(पृ. ७३)**
तितिक्खा	**(खमा)**
तितिक्खा	**(दया)**
तितिक्खेइ	**(सहइ)**
तित्ति	**(अहिंसा)**
तित्थ	**(पवयण)**
तित्थ	**(गणसमुदाय)**
तिपएसियखंध	**(पोग्गलत्थिकाय)**
तिप्पइ	**(दुक्खइ)**
तिप्पण	**(दुक्खण)**
तिप्पण	**(कूजण)**
तिप्पण	**(कंदण)**
तिप्पमाणी	**(रोयमाणी)**
तिमि	**(पाठीण)**
तिमिंगिल	**(पाठीण)**
तिमिर	**(नील)**
तिमिर	**(तमस्)**
तिरीड	**(पृ. ७३)**
तिरोभाव	**(लय)**
तिलक	**(णिडालमासक)**
तिलक्खली	**(तिलोवलद्धीय)**
तिलोवलद्धीय	**(पृ. ७३)**
तिवायणा	**(पाणवह)**
तिव्व	**(उज्जल)**
तिव्व	**(पृ. ७३)**
तिसरा	**(पृ. ७४)**

तिसला **(पृ. ७४)**
तिहि **(उस्सव)**
तीतवय **(महव्वय)**
तीयपच्चुप्पन्नम-
णागयवियाणय **(अरह)**
तीरट्ठि **(पव्वइय)**
तीरट्ठि **(समण)**
तीरट्ठि **(भिक्खु)**
तीरित **(पृ. ७४)**
तीरिय **(फासिय)**
तीरेइ **(फासेइ)**
तीर्थ **(पृ. ७४)**
तुंब **(णावा)**
तुच्छ **(पृ. ७४)**
तुच्छ **(कृश)**
तुच्छाहार **(अंताहार)**
तुट्ठ **(मुदित)**
तुट्ठचित्त **(हट्ठचित्त)**
तुट्ठाएति **(चाएंति)**
तुट्ठि **(पृ. ७४)**
तुट्ठि **(णंदी)**
तुदति **(पृ. ७४)**
तुयट्टण **(त्वग्वर्तन)**
तुरिय **(ससंभम)**
तुरिय **(खद्ध)**
तुरिय **(सिग्घ)**
तुरिय **(उक्किट्ठ)**
तुलना **(पृ. ७४)**
तुस **(पृ. ७४)**
तेगिच्छियसाला **(पृ. ७४)**

तेणिक्का **(अदिण्णादाण)**
तेय **(जुइ)**
तेयंसि **(ओयंसि)**
तोड्डु **(भमर)**
त्यक्त **(मुक्त)**
त्यक्त **(छर्दित)**
त्यक्त्वा **(अपकृष्य)**
त्रिदशावास **(स्वर्)**
त्रिदिव **(स्वर्)**
त्रिविष्टप **(स्वर्)**
त्वग्वर्तन **(पृ. ७४)**
थंभ **(माण)**
थंभ **(मोहणिज्जकम्म)**
थाम **(वीरिय)**
थाम **(योग)**
थाम **(जोग)**
थाल **(तट्टक)**
थालक **(तट्टक)**
थावरक **(धुवक)**
थावरकाय **(पादव)**
थिग्गलय **(पडियाणिया)**
थित **(परिउसित)**
थित **(धुवक)**
थिर **(पृ. ७४)**
थिरसंघयण **(पृ. ७५)**
थिल्ली **(पृ. ७५)**
थुइ **(अणुसट्ठि)**
थुइ **(पृ. ७५)**
थुक्कारिज्जमाणी **(हीलिज्जमाणी)**
थुणण **(संथुणण)**

थुणण **(वंदण)**
थुणण **(थुइ)**
थुणणा **(कित्तण)**
थुत **(पृ. ७५)**
थूल **(पृ. ७५)**
थेज्ज **(पृ. ७५)**
थेर **(महव्वय)**
थेरकप्प **(पृ. ७५)**
थेरकाल **(थेरभूमि)**
थेरट्ठाण **(थेरभूमि)**
थेरभूमि **(पृ. ७५)**
थेरमज्जाता **(थेरकप्प)**
थेरसमायारि **(थेरकप्प)**
थोक **(खुड्डलक)**
थोव **(अणुमात्र)**
थोव **(रहस्स)**
दउदर **(पृ. ७५)**
दंड **(घात)**
दंत **(पृ. ७५)**
दंत **(समण)**
दंत **(खंत)**
दंत **(भिक्खु)**
दंभ **(मोहणिज्जकम्म)**
दंसिय **(आघविय)**
दंसिय **(उब्भिण्ण)**
दकोदर **(दउदर)**
दक्ख **(छेय)**
दक्ख **(पृ. ७६)**
दक्खाणक **(कुंडल)**
दक्खिण्णव **(दक्ख)**
दगतीर **(पृ. ७६)**
दगपरिगाल **(दगवीणिय)**
दगब्भास **(दगतीर)**
दगवाह **(दगवीणिय)**
दगवीणिय **(पृ. ७६)**
दगासण्ण **(दगतीर)**
दच्छ **(साहसिक)**
दढसंघयण **(थिरसंघयण)**
दण्ड **(पृ. ७६)**
दति **(णावा)**
दद्दुर **(राहु)**
दप्प **(मोहणिज्जकम्म)**
दप्प **(माण)**
दप्प **(अबंभ)**
दप्पणिज्ज **(दीवणिज्ज)**
दम्भ **(माया)**
दया **(पृ. ७६)**
दया **(अणुकंपण)**
दया **(अहिंसा)**
दयामो **(लज्जामो)**
दरिसण **(दिट्ठि)**
दरिसणिज्ज **(पासादिय)**
दर्दरिका **(गोधिका)**
दर्प **(माण)**
दर्शन **(पृ. ७६)**
दल **(भव्य)**
दलिक **(वस्तु)**
दलिय **(फुलित)**
दवरिका **(जीवा)**
दविय **(दंत)**

दविय	**(भिक्खु)**	दिट्ठंत	**(णिदंसण)**
दविय	**(पृ. ७६)**	दिट्ठंत	**(णाय)**
दविय	**(समण)**	दिट्ठि	**(पृ. ७७)**
दव्वसार	**(परिग्गह)**	दिट्ठिवाय	**(पृ. ७७)**
दव्वी	**(पृ. ७६)**	दित्ति	**(कंति)**
दव्वीकर	**(गोणस)**	दिनकर	**(आदित्य)**
दसा	**(अंग)**	दिप्पते	**(पृ. ७७)**
दसीरिका	**(दीहसक्कुलिका)**	दिवस	**(सुद्ध)**
दस्सुगायतण	**(पच्चंतिक)**	दिव्व	**(उक्किट्ठ)**
दहिघण	**(संख)**	दिसाइ	**(मंदर)**
दारक	**(बालक)**	दिसादि	**(मंदर)**
दारिया	**(पृ. ७६)**	दिस्सते	**(उप्पज्जते)**
दारु	**(जग्गंतक)**	दीण	**(पृ. ७८)**
दारुण	**(पृ. ७६)**	दीणस्सर	**(हीणस्सर)**
दारुण	**(चिक्कण)**	दीन	**(करुण)**
दारुण	**(उज्जल)**	दीपक	**(व्यञ्जक)**
दारुणसद्द	**(पृ. ७७)**	दीपकाण	**(काण)**
दालित	**(फुलित)**	दीर्घत्व	**(आरोह)**
दावणा	**(पुच्छणा)**	दीव	**(अहिंसा)**
दास	**(पृ. ७७)**	दीव	**(पृ. ७८)**
दासी	**(पृ. ७७)**	दीवक	**(दीव)**
दाहिणड्ढ–लोगाहिवइ	**(सक्क)**	दीवणिज्ज	**(पीणणिज्ज)**
		दीवसिहा	**(हुतासणसिहा)**
दिक्खा	**(पव्वज्जा)**	दीवालिका	**(दीहसक्कुलिका)**
दिग्घपस्सि	**(अलस)**	दीविका	**(दव्वी)**
दिजाईपवर	**(बंभण)**	दीविगासिहा	**(हुतासणसिहा)**
दिजाति	**(बंभण)**	दीविय	**(पृ. ७८)**
दिजातीवसभ	**(बंभण)**	दीविय	**(पृ. ७८)**
दिट्ठ	**(पृ. ७७)**	दीसति	**(लब्भति)**
दिट्ठ	**(नाय)**	दीह	**(पृ. ७८)**

दीह (चिर)
दीहसक्कुलिका (पृ. ७८)
दुःक्षपणीय (दुर्भेद)
दुःख (आतंक)
दुःस्थग (दुहट्ट)
दुक्कड (पृ. ७८)
दुक्ख (पृ. ७८)
दुक्ख (पृ. ७९)
दुक्ख (अणिट्ठ)
दुक्ख (असात)
दुक्ख (भय)
दुक्ख (उज्जल)
दुक्खइ (पृ. ७९)
दुक्खक्खय (पव्वइय)
दुक्खण (पृ. ७९)
दक्खाणक (कुंडल)
दुगुंछणा (पृ. ७९)
दुगुंछा (समण)
दुगुञ्छा (दया)
दुग्ग (उज्जल)
दुग्गत (भग्ग)
दुग्गत (अधण)
दुग्गतिप्पवाय (पाणवह)
दुग्गव (पृ. ७९)
दुघाण (पृ. ७९)
दुज्जण (असत)
दुज्झोसय (फुसित)
दुट्ठ (पृ. ७९)
दुट्ठगोण (दुग्गव)
दुण्णाम (माण)
दुद्ध (पृ. ७९)
दुपएसियखंध (पोग्गलत्थिकाय)
दुपरिचय (दुस्सील)
दुपाण (मातंग)
दुप्पक्ख (कम्म)
दुप्पण्णवणिज्ज (पच्चंतिक)
दुब्बल (पृ. ७९)
दुब्बल (कस)
दुभिक्ख (दुघाण)
दुम (पृ. ७९)
दुम (पादव)
दुमपुप्फिया (पृ. ८०)
दुम्मण (दीण)
दुम्मणिय (दोमणस्स)
दुरणुणेय (दुस्सील)
दुरहियास (उज्जल)
दुरुहइ (पृ. ८०)
दुर्घट (दुहट्ट)
दुर्भेद (पृ. ८०)
दुर्मोच (दुर्भेद)
दुव्वय (दुस्सील)
दुव्विघाय (वध)
दुस्सन्नप्प (पच्चंतिक)
दुस्सह (पृ. ८०)
दुस्सील (पृ. ८०)
दुह (पाव)
दुहय (उभय)
दुहट्ट (पृ. ८०)
दुहट्ट (अट्ट)
दूइज्जति (पृ. ८०)

दूभग (**अधण्ण**)
दूरत (**अतिगत**)
दूरातिसरित (**अतिगत**)
दूरोगाढ (**अतिगत**)
दूसित (**णट्ठ**)
दृष्ट (**चहित**)
दृष्टि (**दर्शन**)
देति (**आणेति**)
देति (**परिभाएति**)
देव (**पृ. ८०**)
देव (**तनुतरशरीर**)
देवंधगार (**तमुक्काय**)
देवतमस (**तमुक्काय**)
देवतमिस (**तमुक्काय**)
देवपडिक्खोभ (**तमुक्काय**)
देवपलिक्खोभा (**कण्हराति**)
देवफलिह (**तमुक्काय**)
देवफलिहा (**कण्हराति**)
देवरण्ण (**तमुक्काय**)
देवराय (**गोज्झग**)
देवराय (**सक्क**)
देववूह (**तमुक्काय**)
देवसेण (**महापउम**)
देविंद (**सक्क**)
देश (**दर्शन**)
देश (**पृ. ८०**)
देश (**देशन**)
देशन (**पृ. ८०**)
देस (**अंग**)
देस (**रज्ज**)
देसकालण्ण (**पृ. ८०**)
देसणी (**वक्क**)
देसिय (**वण्णिय**)
देसेक्कदेसविरति (**विरयाविरइ**)
देसे देसे (**तत्थ-तत्थ**)
देह (**काय**)
देहोवरय (**चत्तदेह**)
दोमणस्स (**पृ. ८१**)
दोष (**कोप**)
दोस (**कोह**)
दोस (**अधम्मत्थिकाय**)
दोस (**मोहणिज्जकम्म**)
दोसविवेग (**धम्मत्थिकाय**)
दोसिणा (**पृ. ८१**)
दोसीण (**पृ. ८१**)
द्रव्य (**पृ. ८१**)
द्रव्य (**वस्तु**)
द्रव्याक्षर (**व्यञ्जनाक्षर**)
द्विजातीपुंगव (**बंभण**)
द्वितीयसमवसरण (**पृ. ८१**)
द्वेष (**उपश्रा**)
धंत (**भग्ग**)
धंस (**सायण**)
धणिता (**पत्ति**)
धण्ण (**पृ. ८१**)
धण्ण (**इट्ठ**)
धण्ण (**सिद्धत्थ**)
धन्न (**ओराल**)
धन्नशाला (**कडपल्ल**)
धमणिसंतय (**सुक्क**)

धम्म	**(सोहि)**
धम्म	**(जीवाभिगम)**
धम्म	**(पृ. ८१)**
धम्म	**(कप्प)**
धम्म	**(धम्मत्थिकाय)**
धम्मक्खाइ	**(धम्मिय)**
धम्मचरण	**(पव्वज्जा)**
धम्मत्थिकाय	**(पृ. ८१)**
धम्मपण्णत्ति	**(जीवाभिगम)**
धम्मपलज्जण	**(धम्मिय)**
धम्मप्पलोइ	**(धम्मिय)**
धम्ममण	**(पृ. ८१)**
धम्मसमुदायार	**(धम्मिय)**
धम्माणुय	**(धम्मिय)**
धम्मावाय	**(दिट्ठिवाय)**
धम्मिट्ठ	**(धम्मिय)**
धम्मिय	**(पृ. ८२)**
धरण	**(पृ. ८२)**
धरणिखील	**(मंदर)**
धरणिसिंग	**(मंदर)**
धर्म	**(पृ. ८२)**
धर्म	**(पर्यव)**
धर्म	**(पर्याय)**
धर्म	**(शोधि)**
धर्म	**(पृ. ८२)**
धर्मदेशनाभिज्ञ	**(विद्वस्)**
धवलय	**(पंडुर)**
धाडेति	**(चाएति)**
धाय	**(पृ. ८२)**
धारणववहार	**(पृ. ८२)**
धारणा	**(धरण)**
धारणा	**(पृ. ८२)**
धारणिज्ज	**(थिर)**
धारयंति	**(पृ. ८२)**
धावति	**(अणुसंचरइ)**
धिक्कारिज्जमाणी	**(हीलिज्जमाणी)**
धिज्जा	**(दारिया)**
धिति	**(अहिंसा)**
धिति	**(पंथ)**
धी	**(पृ. ८२)**
धीर	**(पृ. ८२)**
धीर	**(अमूढ)**
धुणण	**(पृ. ८२)**
धुण्ण	**(पाव)**
धुण्ण	**(पृ. ८३)**
धुणण	**(ओधुणण)**
धुत	**(विचल)**
धुत्त	**(कम्म)**
धुव	**(पृ. ८३)**
धुव	**(अचल)**
धुव	**(थिर)**
धुवक	**(पृ. ८३)**
धुवकायव्व	**(आवस्सग)**
धुवण	**(ओधुणण)**
धुवनिग्गह	**(आवस्सय)**
धूत	**(पृ. ८३)**
धूमिका	**(पृ. ८३)**
धूम्रवर्ण	**(धूमिक)**
धूर्त	**(पृ. ८३)**
धूलि	**(कयार)**

धूसर	**(धूमिक)**	नापित	**(पृ. ८४)**
ध्रुव	**(पृ. ८३)**	नाम	**(संज्ञान)**
ध्वज	**(केतु)**	नाय	**(आवस्सय)**
नंदा	**(अहिंसा)**	नाय	**(ववहार)**
नंदिराग	**(लोभ)**	नाय	**(पृ. ८४)**
नंदी	**(मोहणिज्जकम्म)**	नाय	**(विहि)**
नखशोधक	**(नापित)**	नायय	**(जीवत्थिकाय)**
नट्ठतेय	**(हयतेय)**	नायय	**(पृ. ८४)**
नत्तिका	**(दासी)**	नासण	**(ओधुणण)**
नन्दन	**(पृ. ८३)**	निअच्छंति	**(पृ. ८४)**
नन्दि	**(पृ. ८३)**	निउणसिप्पोवगय	**(छेय)**
नभ	**(आगासत्थिकाय)**	निंदणा	**(हीलणा)**
नमंसण	**(वंदण)**	निंदणा	**(आलोयणा)**
नमंसण	**(थुइ)**	निंदति	**(खिंसइ)**
नमंसणा	**(सक्कार)**	निंदति	**(कुच्छति)**
नमंसित	**(महित)**	निंदा	**(पडिकमण)**
नमण	**(वंदण)**	निंदिज्जइ	**(आलोइज्जइ)**
नमस्कार	**(प्रणमन)**	निंदिज्जमाण	**(वुच्चमाण)**
नमस्यति	**(वन्दते)**	निंदिज्जमाणी	**(हीलिज्जमाणी)**
नयन	**(पृ. ८३)**	निंदिय	**(रुसिय)**
नर्कुटिक	**(नागदन्तक)**	निंदेति	**(हीलेति)**
नववधू	**(पृ. ८४)**	निकाच	**(पृ. ८४)**
नस्समाण	**(पृ. ८४)**	निकाय	**(पिंड)**
नाइ	**(मित्त)**	निकाय	**(छंद)**
नागदन्तक	**(पृ. ८४)**	निकाय	**(गण)**
नाण	**(पृ. ८४)**	निकृति	**(माया)**
नाण	**(सण्णा)**	निकृष्ट	**(हिड्डिम)**
नाण	**(आणा)**	निक्कलुण	**(पाव)**
नाणि	**(विदु)**	निक्कोह	**(अक्कोह)**
नात	**(पृ. ८४)**	निक्खमण	**(पव्वज्जा)**

निक्खिविय **(पणिहि)**
निक्षेप **(निधान)**
निक्षेप **(पृ. ८५)**
निक्षेप **(पृ. ८५)**
निगर **(गण)**
निगरित **(पृ. ८५)**
निगोय **(अगोय)**
निग्गंथ **(भिक्खु)**
निग्गच्छंति **(निअच्छंति)**
निग्गतवसण **(पृ. ८५)**
निग्गमण **(पृ. ८५)**
निग्गह **(आवस्सग)**
निग्गुण **(निस्सील)**
निग्घिण **(पाव)**
निग्घुट्ठ **(रुण्ण)**
निग्रह **(दण्ड)**
निचय **(पिंड)**
निचिय **(घण)**
निच्छोडेज्ज **(आओसेज्ज)**
निज्जवणा **(पाणवह)**
निज्जाणमग्ग **(सिद्धिमग्ग)**
निज्जामय **(पृ. ८५)**
निज्जित **(ओहय)**
निज्जूढ **(दिट्ठ)**
निट्ठिय **(खीण)**
निट्ठिय **(पृ. ८५)**
निट्ठियट्ठ **(पृ. ८५)**
निट्ठुर **(पृ. ८५)**
निट्ठुर **(उज्जल)**
निण्णाम **(अणाम)**
निदरिसण **(णाय)**
निदाण **(संताण)**
निद्देस **(आणा)**
द्दिस **(उववाय)**
निट्ठुर **(उज्जल)**
निण्णाम **(अणाम)**
निदरिसण **(णाय)**
निदाण **(संताण)**
निद्देस **(आणा)**
निद्देस **(उववाय)**
निद्धम्म **(पाव)**
निद्धम्म **(पाव)**
निधान **(पृ. ८५)**
निधि **(निधान)**
निधुवन **(रति)**
निन्नेहबंधण **(संजत)**
निह्नव **(आह्वान)**
निपुण **(कुशल)**
निप्पंक **(अच्छ)**
निप्पच्चक्खाण **(निस्सील)**
निप्परिग्गहरुइ **(संजत)**
निप्पिवास **(पाव)**
निप्पीलए **(आवीलए)**
निप्फण्ण **(जात)**
निब्भंच्छण **(आओसण)**
निब्भंछण **(अक्कोस)**
निब्भच्छेज्ज **(आओसेज्ज)**
निमंतण **(छंद)**
निमंत्रण **(निकाच)**
निमित्त **(पृ. ८५)**

निमित्त	**(मूल)**
निमित्त	**(लिंग)**
निमित्त	**(हेतु)**
निमित्तंति	**(धारयंति)**
निम्न	**(कुब्ब)**
निम्मंस	**(सुक्क)**
निम्मम	**(संजत)**
निम्मल	**(खीण)**
निम्मल	**(अच्छ)**
निम्मल	**(संख)**
निम्मलतर	**(अहिंसा)**
निम्माण	**(अमाण)**
निम्माया	**(अमाया)**
निम्मेर	**(निस्सील)**
निम्मोह	**(अमोह)**
नियग	**(मित्त)**
नियडि	**(पलिउंचण)**
नियडि	**(उक्कंचण)**
नियडि	**(मोहणिज्जकम्म)**
नियडि	**(माया)**
नियडि	**(कक्क)**
नियडिआयरण	**(कूड)**
नियडिकम्म	**(अदिण्णादाण)**
नियडिल्ल	**(वंक)**
नियत	**(ध्रुव)**
नियति	**(अलिय)**
नियत्ति	**(पडिकमण)**
नियम	**(पच्चक्खाण)**
नियर	**(गण)**
नियाग	**(पृ. ८६)**
नियाण	**(पृ. ८६)**
नियाण	**(बंध)**
नियुक्त	**(वावड)**
नियोग	**(अणुओग)**
नियोग	**(पृ. ८६)**
नियोजना	**(चोयणा)**
निरंतर	**(घण)**
निरंतराय	**(अणंतराय)**
निरंश	**(परमाणु)**
निरतिचार	**(अखंड)**
निरत्थय	**(अलिय)**
निरन्तर	**(अणुसमय)**
निरन्तर	**(लोलुग)**
निरय	**(खीण)**
निरय	**(कम्म)**
निरय	**(अच्छ)**
निरय-वास-गमण-निधण	**(पाव)**
निरवयक्ख	**(पाव)**
निरवयव	**(परमाणु)**
निरवशेष	**(सर्व)**
निरवसेस	**(पडिपुन्न)**
निरवसेस	**(कसिण)**
निरवसेस	**(सव्व)**
निरस्त	**(मुक्त)**
निरहंकार	**(निर्मम)**
निराउय	**(अणाउय)**
निराणंद	**(दीण)**
निरावरण	**(अणावरण)**
निरावरण	**(निव्वाण)**

निरावरण	(**अणुत्तर**)	निल्लक्खित	(**णिम्मज्जित**)
निरावरण	(**निष्कंटक**)	निल्लालिय	(**चंचल**)
निरावरण	(**अणंत**)	निल्लेव	(**खीण**)
निराश्रव	(**निर्मम**)	निल्लोह	(**अलोह**)
निरिक्खण	(**आभोग**)	निवसण	(**निग्गतवसण**)
निरीक्षित	(**प्रेक्षण**)	निवायण	(**वध**)
निरीक्षित	(**चहित**)	निवारण	(**वारण**)
निरुपघात	(**निष्कंटक**)	निवारित	(**संवरित**)
निरुपध	(**ऋजु**)	निविड	(**अपोल्ल**)
निरुवलेव	(**अणासव**)	निवित्ति	(**आसवदारनिरोह**)
निरुवलेव	(**संत**)	निविशति	(**विशति**)
निरेयण	(**निट्ठियट्ठ**)	निवित्ति	(**पच्चक्खाण**)
निर्गम	(**प्रभव**)	निवृत	(**संयत**)
निर्जरा	(**क्षपणा**)	निवृत्त	(**व्यावृत्त**)
निर्जीव	(**प्रासुक**)	निवृत्ति	(**विरति**)
निर्णय	(**अर्थाध्यवसाय**)	निव्वट्टन	(**पृ. ८६**)
निर्णय	(**निश्चय**)	निव्वय	(**निस्सील**)
निर्णय	(**व्यवसाय**)	निव्वाघाय	(**अणंत**)
निर्णीयते	(**विचीयते**)	निव्वाण	(**अहिंसा**)
निर्देश	(**देशन**)	निव्वाण	(**मोत्ति**)
निर्द्धर्म्म	(**पृ. ८६**)	निव्वाण	(**संति**)
निर्भर्त्सना	(**आक्रोश**)	निव्वाण	(**पंथ**)
निर्भेद	(**परमाणु**)	निव्वाण	(**८६**)
निर्भेद	(**अणु**)	निव्वाणमग्ग	(**सिद्धिमग्ग**)
निर्मम	(**पृ. ८६**)	निव्वाणसुह	(**पृ. ८६**)
निर्मल	(**विशुद्ध**)	निव्विण्ण	(**संत**)
निर्मल	(**अवदात**)	निव्विण्णाण	(**जड्ड**)
निर्मांस	(**कक्खडी**)	निव्वुइ	(**अहिंसा**)
निर्विचाल	(**सुसंहत**)	निव्वुइकर	(**मणुण्ण**)
निर्विवेक	(**बाल**)	निव्वुड	(**पृ. ८६**)

निव्वुति **(पंथ)**
निव्वेयण **(अवेयण)**
निशाकर **(चन्द्र)**
निशान्त **(शान्त)**
निशीथ **(आचारप्रकल्प)**
निश्चय **(पृ. ८६)**
निश्चय **(अर्थाध्यवसाय)**
निश्चय **(व्यवसाय)**
निषन्न **(पृ. ८६)**
निष्कंटक **(पृ. ८७)**
निष्कवच **(निष्कंटक)**
निष्कारण **(अनर्थ)**
निष्ठा **(फल)**
निष्ठित **(पृ. ८७)**
निष्ठुर **(ग्राम्यवचन)**
निष्पंक **(पृ. ८७)**
निष्पाद्यते **(साध्यते)**
निष्प्रदेश **(परमाणु)**
निसंग **(साधु)**
निसर्ग **(८७)**
निसीहिया **(ठाण)**
निसृजति **(पृ. ८७)**
निस्संग **(संजत)**
निस्संस **(पाव)**
निस्सरण **(निग्गमण)**
निस्सा **(पृ. ८७)**
निस्सील **(पृ. ८७)**
निस्सेसिय **(हियकामग)**
निहतकंटय **(ओहयकंटय)**
निहाण **(सण्णिहि)**
निहाण **(परिग्गह)**
निहि **(सण्णिहि)**
नीय **(पृ. ८७)**
नीय **(चंडाल)**
नीरय **(निट्ठियट्ठ)**
नील **(पृ. ८७)**
नीसेस **(हिय)**
नूम **(अलिय)**
नैकृतिक **(धूर्त)**
नैत्यिक **(ध्रुव)**
नैषेधिकी **(स्थान)**
न्यास **(निक्षेप)**
न्यास **(निधान)**
पइट्ठा **(धारणा)**
पइट्ठा **(अहिंसा)**
पइट्ठाण **(बीय)**
पइभय **(बीहणय)**
पइभय **(पाव)**
पउंजेज्जा **(पृ. ८७)**
पउम **(उप्पल)**
पउमकेसरवण्ण **(पितवण्ण)**
पएस **(अंग)**
पंक **(कम्म)**
पंक **(पाव)**
पंक **(पाव)**
पंकय **(पदुम)**
पंकज **(कमल)**
पंकिय **(जल्लिय)**
पंगुल **(अलस)**
पंडक **(णपुंसक)**

पंडर **(सुद्ध)**
पंडर **(सेत)**
पंडित **(विसारत)**
पंडित **(विद्वस्)**
पंडित **(देसकालण्ण)**
पंडित **(पृ. ८७)**
पंडित **(संपण्ण)**
पंडितवीरिय **(अकम्मवीरिय)**
पंडिय **(संबुद्ध)**
पंडुर **(पृ. ८८)**
पंतजीवि **(अंताहार)**
पंतावेज्ज **(पृ. ८८)**
पंताहार **(अंताहार)**
पंथ **(पृ. ८८)**
पंथ **(पृ. ८८)**
पंसुक **(कयार)**
पकंपमाण **(एइज्जमाण)**
पकप्प **(पृ. ८८)**
पकप्प **(पकप्पण)**
पकप्पण **(पृ. ८८)**
पकिण्ण **(पृ. ८८)**
पकिण्ण **(पम्हुट्ठ)**
पकिरण **(ववण)**
पक्खति **(उवयंति)**
पक्खापक्खि **(णपुंसक)**
पगडि **(पृ. ८८)**
पगत **(पृ. ८८)**
पगरणोवएस **(हेउगोवएस)**
पगाढ **(उज्जल)**
पगाढ **(तिव्व)**
पगार **(भेय)**
पगार **(संघाड)**
पगासकरण **(आलोयण)**
पगासिंति **(ओभासेइ)**
पगासित **(दीविय)**
पगासेति **(पृ. ८८)**
पग्गह **(उवहि)**
पग्गहिय **(ओराल)**
पच्चंतिक **(पृ. ८८)**
पच्चक्खाण **(पृ. ८९)**
पच्चक्खाण **(सामायिक)**
पच्चक्खायपाव–कम्म **(संजय)**
पच्चति **(रज्जति)**
पच्चाणेति **(पगासेति)**
पच्चामित्त **(अरि)**
पच्चावट्टण **(अवाय)**
पच्छित्त **(ववहार)**
पज्जयण **(पज्जवण)**
पज्जव **(पृ. ८९)**
पज्जव **(अंग)**
पज्जव **(गुण)**
पज्जवण **(पृ. ८९)**
पज्जाय **(पगडि)**
पज्जाय **(पज्जवण)**
पज्जाहार **(परिगम)**
पज्जाहार **(पृ. ८९)**
पज्जुसणा **(पज्जोसवणा)**
पज्जुसित **(परिउसित)**
पज्जोसमणा **(पज्जोसवणा)**

पज्जोसवणा	**(पृ. ८९)**
पझंझमाण	**(एइज्जमाण)**
पट्टकभत्त	**(पूज्यभक्त)**
पट्टग	**(पूया)**
पट्टगभत्त	**(पूया)**
पट्ठवण	**(पृ. ८९)**
पडइ	**(सडइ)**
पडण	**(पृ. ८९)**
पडण	**(सडण)**
पडल	**(अंग)**
पडलग	**(छज्जिय)**
पडिओधुत	**(पम्हुट्ठ)**
पडिकमण	**(पृ. ८९)**
पडिक्कमिज्जइ	**(आलोइज्जइ)**
पडिच्छिय	**(इच्छिय)**
पडिछुद्ध	**(पम्हुट्ठ)**
पडिणायित	**(पम्हुट्ठ)**
पडिणिव्वुड	**(संत)**
पडिणीय	**(घायय)**
पडिणीयय	**(अरि)**
पडित	**(खंडित)**
पडित	**(पम्हुट्ठ)**
पडिदिन्न	**(पम्हुट्ठ)**
पडिपुण्ण	**(अणंत)**
पडिपुण्ण	**(अणुत्तर)**
पडिपुण्ण	**(कसिण)**
पडिपुण्ण	**(केवल)**
पडिपुण्ण	**(निव्वाण)**
पडिपुण्ण	**(सव्व)**
पडिपुन्न	**(पृ. ८९)**
पडिबंध	**(आलंब)**
पडिबंध	**(परिग्गह)**
पडिमाचेलस्सेय	**(निग्गतवसण)**
पडियरणा	**(पडिकमण)**
पडियाणिया	**(पृ. ९०)**
पडिरूव	**(कंत)**
पडिरूव	**(पासादिय)**
पडिरूव	**(सुद्ध)**
पडिलेहा	**(आभोग)**
पडिलेहा	**(आणा)**
पडिलोलित	**(पम्हुट्ठ)**
पडिविरत	**(उवसंत)**
पडिसग	**(उवसग)**
पडिसरित	**(पम्हुट्ठ)**
पडिसिद्ध	**(पम्हुट्ठ)**
पडिसेवणा	**(पृ. ९०)**
पडिहत्थ	**(पृ. ९०)**
पडिहयपावकम्म	**(संजय)**
पडिहरित	**(पम्हुट्ठ)**
पडुच्च	**(पृ. ९०)**
पडुप्पन्न	**(पृ. ९०)**
पढमजण्ण	**(बंभण)**
पढमसमोसरण	**(पज्जोसवणा)**
पणग	**(कम्म)**
पणमण	**(पृ. ९०)**
पणमित	**(वंदित)**
पणय	**(पाव)**
पणयण	**(पाहुड)**
पणसक	**(तट्टक)**
पणाम	**(विणय)**

पणाम	(**पणमण**)
पणिधि	(**पृ. ९०**)
पणिय	(**साला**)
पणिहाण	(**पृ. ९०**)
पणिहाण	(**पणिहि**)
पणिहि	(**पृ. ९०**)
पण्णत्त	(**पृ. ९०**)
पण्णवग	(**भिक्खु**)
पण्णवण	(**उपदेस**)
पण्णवण	(**सुत्त**)
पण्णवण	(**पृ. ९०**)
पण्णवणा	(**आघवणा**)
पण्णवणी	(**वक्क**)
पण्णवित	(**पण्णत्त**)
पण्णवित	(**परूवित**)
पण्णविय	(**पृ. ९१**)
पण्णविय	(**आघविय**)
पण्णवेइ	(**आइक्खइ**)
पण्णा	(**आभिणिबोहिय**)
पण्णा	(**तक्क**)
पतंग	(**भमर**)
पति	(**पृ. ९१**)
पतिट्ठा	(**पृ. ९१**)
पतिट्ठा	(**अवत्था**)
पतिट्ठा	(**धारणा**)
पतित	(**वेवित**)
पतिभय	(**महब्भय**)
पत्त	(**अरिह**)
पत्त	(**लद्ध**)
पत्तट्ठ	(**छेय**)
पत्तभंड	(**अरंजर**)
पत्ति	(**पृ. ९१**)
पत्तियइ	(**सद्दहइ**)
पत्थ	(**पंथ**)
पत्थंति	(**कंखइ**)
पत्थकामग	(**हियकामग**)
पत्थण	(**लोभ**)
पत्थणा	(**परिज्झा**)
पत्थयंति	(**अभिलसंति**)
पत्थयति	(**अत्थयति**)
पत्थर	(**पासाण**)
पत्थरिय	(**वित्थिन्न**)
पत्थित	(**उट्ठित**)
पत्थिय	(**इच्छित**)
पत्थिय	(**अज्झत्थिय**)
पत्थेइ	(**आसाएइ**)
पत्थेइ	(**तक्केइ**)
पत्थेइ	(**कंखइ**)
पत्थेमाण	(**पृ. ९१**)
पद	(**पृ. ९१**)
पद	(**पाद**)
पदपवर	(**अणुण्णा**)
पदपाश	(**पृ. ९१**)
पदुम	(**पृ. ९१**)
पदेस	(**अंग**)
पद्म	(**कमल**)
पधान	(**उदग्ग**)
पधावति	(**पृ. ९२**)
पधोवेंति	(**उच्छोलेंति**)
पन्नवेस्सामि	(**परूवेस्सामि**)

पन्नागार **(पूया)**
पन्नायति **(लब्भति)**
पप्प **(पडुच्च)**
पप्फोडित **(पम्हुट्ठ)**
पब्भट्ठ **(पम्हुट्ठ)**
पभव **(अणुण्णा)**
पभा **(कंति)**
पभा **(जुइ)**
पभा **(सुद्ध)**
पभावणपयार **(अणुण्णा)**
पभासइ **(पृ. ९२)**
पभासा **(अहिंसा)**
पभासिय **(दीविय)**
पभासेइ **(ओभासेइ)**
पभु **(पृ. ९२)**
पभु **(इस्सर)**
पमत्त **(अलस)**
पमदा **(पत्ति)**
पमाण **(अग्ग)**
पमाण **(मेढि)**
पमिलायति **(पृ. ९२)**
पमुक्क **(पम्हुट्ठ)**
पमुच्छित **(पम्हुट्ठ)**
पमुदित **(मुदित)**
पमोद **(णंदी)**
पमोद **(मुदिता)**
पमोय **(अहिंसा)**
पम्हुट्ठ **(पृ. ९२)**
पम्हुट्ठ **(पृ. ९२)**
पय **(दुद्ध)**
पयंड **(उज्जल)**
पयत **(पृ. ९२)**
पयत्त **(ओराल)**
पयत्तकड **(आरंभकड)**
पयत्तवद् **(पयत)**
पयलाइत **(वेवित)**
पयस् **(पृ. ९२)**
पयाति **(पृ. ९२)**
पयावति **(पितामह)**
पर **(मुद्ध)**
पर **(पृ. ९२)**
पर **(वज्ज)**
परंपरगय **(सिद्ध)**
परक्कम **(योग)**
परक्कम **(वीरिय)**
परक्कम **(जोग)**
परक्कम **(उट्ठाण)**
परक्कमण्णु **(देसकालण्ण)**
परक्कमितव्व **(घडितव्व)**
परग्घ **(पृ. ९२)**
परग्घतरक **(उच्चयरक)**
परज्झ **(पृ. ९३)**
परिधणम्मि गेहि **(अदिण्णादाण)**
परनिमित्त–
निप्फण्ण **(लिंगिय)**
परपरिवाय **(अधम्मत्थिकाय)**
परपरिवाय **(माण)**
परपरिवाय **(मोहणिज्जकम्म)**
परपरिवायविवेग **(धम्मत्थिकाय)**
परभवसंकामकारय **(पाणवह)**

परम	**(पृ. ९३)**
परमसुइभूय	**(आयंत)**
परमसोमणस्सिय	**(हट्ठचित्त)**
परमाणु	**(पृ. ९३)**
परमाणु	**(अणु)**
परमाणुपोग्गल	**(पोग्गलत्थिकाय)**
परमार्थ	**(तत्त्व)**
परमासक	**(गंडूपक)**
परम्मुह	**(अवकड्ढित)**
परलाभ	**(अदिण्णादाण)**
परवस	**(परज्झ)**
परहड	**(अदिण्णादाण)**
पराजय	**(अपमाण)**
पराजय	**(विजय)**
पराजित	**(अवकड्ढित)**
पराजित	**(ओहय)**
पराजित	**(उद्दूढ)**
पराभव	**(विजय)**
परायित	**(दीण)**
परावत्त	**(पम्हुट्ठ)**
पराहूत	**(अवकड्ढित)**
परिउसित	**(पृ. ९३)**
परिकम्मण	**(पृ. ९३)**
परिकर्म	**(पृ. ९३)**
परिकर्मन्	**(तुलना)**
परिकस	**(कस)**
परिकुविय	**(रुट्ठ)**
परक्कमति	**(उज्जमति)**
परिक्कमिज्ज	**(पृ. ९३)**
परिक्खभासि	**(परिज्जभासि)**
परिक्खित्त	**(पृ. ९३)**
परिक्खीण	**(झीण)**
परिक्षिप्त	**(परिक्खित्त)**
परिगण्यमान	**(पृ. ९३)**
परिगम	**(पृ. ९३)**
परिग्गह	**(पृ. ९३)**
परिग्गह	**(अधम्मत्थिकाय)**
परिग्गहवेरमण	**(धम्मत्थिकाय)**
परिघुमति	**(अंदोलति)**
परिघेतव्व	**(हंतव्व)**
परिचय	**(संस्तव)**
परिचेट्ठति	**(पृ. ९४)**
परिच्चयंति	**(वमेंति)**
परिच्छिंदति	**(मिणति)**
परिच्छित्ति	**(लाभ)**
परिच्छेद	**(माण)**
परिच्छेद	**(अवाय)**
परिच्छेद	**(अयन)**
परिजाणेइ	**(आढाइ)**
परिजाणेज्ज	**(बुज्झेज्ज)**
परिजिय	**(सिक्खिय)**
परिज्जभासि	**(पृ. ९४)**
परिज्झा	**(पृ. ९४)**
परिठविय	**(पम्हुट्ठ)**
परिणत	**(महव्वय)**
परिणाम	**(निसर्ग)**
परिणामठाण	**(संजमठाण)**
परिणाह	**(आरोह)**
परिणिट्ठाण	**(सात)**
परिणिव्वाण	**(सात)**

परिणिव्वुड **(संत)**
परिण्णा **(पृ. ९४)**
परिण्णा **(सामायिक)**
परितंत **(दीण)**
परितंत **(संत)**
परितप्पइ **(दुक्खइ)**
परितप्पण **(दुक्खण)**
परितालेति **(अभिहणति)**
परितावण–
अण्हय **(पाणवह)**
परितावणकरी **(छेयणकरी)**
परिताविज्जमाण **(आउडिज्जमाण)**
परितावेति **(अभिहणति)**
परित्याग **(निक्षेप)**
परित्राण **(सन्त्राण)**
परिदेवण **(कंदण)**
परिदेवित **(वेवित)**
परिधावति **(पधावति)**
परिनिव्वाइ **(सिज्झइ)**
परिनिव्वुड **(संत)**
परिनिव्वुड **(सिद्ध)**
परिनिव्वुत **(सीतीभूत)**
परिपाटि **(पर्याय)**
परिपाटिन् **(आनुपूर्विन्)**
परिपाटिन् **(लता)**
परिपालइत्ता **(विपरिणामइत्ता)**
परिपूर्ण **(अलम्)**
परिपूर्ण **(सकल)**
परिब्भम **(अंदोलति)**
परिभवति **(खिंसइ)**
परिभवति **(परिभासति)**
परिभवति **(हीलेति)**
परिभाएति **(पृ. ९४)**
परिभासति **(पृ. ९४)**
परिभीत **(पृ. ९४)**
परिभोग **(भजना)**
परिभोग **(विज्ञापना)**
परिमज्जित **(विमल)**
परिमलित **(महव्वय)**
परिमाण **(अग्ग)**
परिमित **(मित)**
परियट्टण **(पृ. ९४)**
परियट्टति **(गुणेति)**
परियण **(मित्त)**
परियत्तेइ **(उव्वत्तेइ)**
परियाय **(कसाय)**
परियाय–
ववत्थवणा **(पज्जोसवणा)**
परियावेज्ज **(अभिहणेज्ज)**
परियावेयव्व **(हंतव्व)**
परिरय **(परिगम)**
परिरय **(पज्जाहार)**
परिवंदण **(पृ. ९४)**
परिवत्तते **(परिचेट्ठति)**
परिवड्ढित **(पम्हुट्ठ)**
परिवयण **(पृ. ९४)**
परिवहेंति **(तज्जेंति)**
परिवाडि **(आणुपुव्वि)**
परिवाडि **(विहि)**
परिवाडि **(क्रम)**

परिवात	**(परिवयण)**	परिहेरक	**(गंडूपयक)**
परिवायय	**(समण)**	परिहेरग	**(केज्जूर)**
परिविद्धंसइत्ता	**(विपरिणामइत्ता)**	परीक्ष्यमाण	**(परिगण्यमान)**
परिवुड्ढ	**(पृ. ९४)**	परूपित	**(पण्णत्त)**
परिवूढ	**(पृ. ९५)**	परूवण	**(पृ. ९५)**
परिवूढ	**(पुट्ठ)**	परूवण	**(उपदेस)**
परिवेसयति	**(परिभाएति)**	परूवणा	**(वण्णणा)**
परिव्वाय	**(भिक्खु)**	परूवण	**(पण्णवण)**
परिसडित	**(पम्हुट्ठ)**	परूवित	**(पृ. ९५)**
परिसडित	**(महव्वय)**	परूविय	**(आघविय)**
परिसवणा	**(पज्जोसवणा)**	परूविय	**(पण्णविय)**
परिसहण	**(पृ. ९५)**	परूवेइ	**(आइक्खइ)**
परिसाडइत्ता	**(विपरिणामइत्ता)**	परूवेस्सामि	**(कित्तइस्सामि)**
परिसाडण	**(ववण)**	पर्यन्तवर्ति	**(चरम)**
परिसाडणा	**(उस्सग्ग)**	पर्यय	**(पर्याय)**
परिसाडित	**(फुलित)**	पर्यव	**(पर्याय)**
परिसाडिय	**(पकिण्ण)**	पर्यव	**(पृ. ९५)**
परिसुक्ख	**(महव्वय)**	पर्याप्त	**(अलम्)**
परिसुद्धगत	**(सिद्धिगत)**	पर्याय	**(पृ. ९५)**
परिसोडित	**(पम्हुट्ठ)**	पर्याय	**(भवन)**
परिस्पन्द	**(क्रिया)**	पर्याय	**(देश)**
परिस्संत	**(पिवासित)**	पर्याय	**(पृ. ९५)**
परिहरण	**(समण)**	पर्यालोचन	**(मनन)**
परिहरणा	**(पडिकमण)**	पर्यालोचयति	**(संपेहेति)**
परिहरणीय	**(गरहित)**	पर्यालोचयन्ति	**(संचालयंति)**
परिहायंत	**(अधण)**	पर्यालोच्यते	**(विचीयते)**
परिहायति	**(उज्झीयति)**	पलल	**(तिलोवलद्धीय)**
परिहार	**(पृ. ९५)**	पलात	**(णट्ठ)**
परिहार	**(पृ. ९५)**	पलायण	**(निग्गमण)**
परिहीण	**(णिम्मंसक)**	पलिउंचग	**(वंक)**

पलिउंचण	**(पृ. ९५)**	पविसित	**(पम्हुट्ठ)**
पलिउंचण	**(माया)**	पवीलए	**(आवीलए)**
पलिकुंचण	**(मोहणिज्जकम्म)**	पवेइय	**(पृ. ९६)**
पलिच्छेद	**(भाग)**	पवेदेमि	**(आइक्खामि)**
पलिमंथ	**(पृ. ९५)**	पव्व	**(संताण)**
पलिमंथ	**(विक्षेप)**	पव्व	**(अंग)**
पलियंचण	**(गूहण)**	पव्वइज्जा	**(पृ. ९६)**
पलिहत	**(वगडा)**	पव्वइय	**(पृ. ९६)**
पलुक्कति	**(आलुक्कति)**	पव्वइय	**(णिक्खंत)**
पलोट्टण	**(लोट्टण)**	पव्वइय	**(समण)**
पलोयण	**(आभोग)**	पव्वज्जा	**(पृ. ९६)**
पलोलित	**(ण्हात)**	पव्वणी	**(उस्सव)**
पलोलित	**(पम्हुट्ठ)**	पव्वत	**(णग)**
पलोट्ठित	**(ण्हात)**	पव्वतक	**(पासाण)**
पल्लीण	**(अनुपविट्ठ)**	पव्वतिंद	**(मंदर)**
पल्हाय	**(सीतीभूत)**	पव्वयराय	**(मंदर)**
पवण	**(अग्गि)**	पव्वयिय	**(भिक्खु)**
पवत्त	**(वयत्थ)**	पव्वहिज्जमाणी	**(हीलिज्जमाणी)**
पवयण	**(पृ. ९६)**	पव्वहेंति	**(तज्जेंति)**
पवयण	**(सुत्त)**	पव्वाविय	**(पृ. ९६)**
पवयण	**(गणसमुदाय)**	पशु	**(शरभ)**
पविट्ठ	**(पृ. ९६)**	पश्यति	**(लभते)**
पविट्ठ	**(अतिगत)**	पश्यति	**(पृ. ९६)**
पवित्ता	**(अहिंसा)**	पसंग	**(अबंभ)**
पवित्थर	**(परिग्गह)**	पसंत	**(णिहय)**
पवित्र	**(चोक्ष)**	पसंत	**(संत)**
पवित्र	**(पुण्य)**	पसंतडमर	**(खेम)**
पविद्धंसति	**(पमिलायति)**	पसंतडिंब	**(खेम)**
पवियक्खण	**(संपण्ण)**	पसंसण	**(कित्तण)**
पवियक्खण	**(संबुद्ध)**	पसंसा	**(उववूह)**

पसण्णबुद्धि	**(सुबुद्धिक)**
पसत्थ	**(वण्णित)**
पसत्थ	**(सामायिक)**
पसव	**(उस्सव)**
पसव	**(पुप्फ)**
पसारित	**(णिस्सारित)**
पसिद्ध	**(पण्णविय)**
पसुत्त	**(वेवित)**
पहट्ठ	**(मुदित)**
पहर	**(पृ. ९६)**
पहाण	**(अग्ग)**
पहाण	**(परम)**
पहारेत्थ	**(पृ. ९६)**
पहिज्जते	**(अतिवत्त)**
पहिट्ठ	**(हसित)**
पहीण	**(अतिवत्त)**
पहेण	**(पृ. ९७)**
पहेण	**(पाहुड)**
पहेणग	**(पाहुड)**
पाअसूचिका	**(पामुद्दिका)**
पाकसासण	**(सक्क)**
पागइत	**(पज्जोसवणा)**
पागडिय	**(उब्भिण्ण)**
पागार	**(पृ. ९७)**
पाघट्टिका	**(पामुद्दिका)**
पाटयति	**(ओसारेति)**
पाठीण	**(पृ. ९७)**
पाडल	**(पदुम)**
पाढ	**(सुत्त)**
पाण	**(जीव)**
पाण	**(असण)**
पाण	**(जीवत्थिकाय)**
पाण	**(पृ. ९७)**
पाण	**(चंडाल)**
पाण	**(काय)**
पाणवह	**(पृ. ९७)**
पाणाइवाय	**(अधम्मत्थिकाय)**
पाणाइवायवेरमण	**(धम्मत्थिकाय)**
पाणातिपातविरइ	**(अहिंसा)**
पाणिय	**(रस)**
पात	**(वज्ज)**
पात्र	**(पृ. ९७)**
पात्र	**(भव्य)**
पाद	**(पृ. ९७)**
पादकलावग	**(गंडूपक)**
पादखडुयक	**(गंडूपक)**
पादफल	**(आसंदग)**
पादव	**(पृ. ९७)**
पादव	**(दुम)**
पादोपका	**(खिंखिणिका)**
पाप	**(अवद्य)**
पाप	**(किव्विस)**
पापढक	**(गंडूपक)**
पामुद्दिका	**(खिंखिणिका)**
पामुद्दिका	**(पृ. ९७)**
पायच्छित्तकरण	**(उत्तरकरण)**
पार	**(पृ. ९८)**
पारगमण	**(पारण)**
पारगय	**(सिद्ध)**
पारण	**(पृ. ९८)**

पालण **(पारण)**
पालित **(पृ. ९८)**
पालित्तु **(वसित्तु)**
पालिय **(फासिय)**
पाली **(पृ. ९८)**
पालु **(मेहण)**
पालेइ **(फासेइ)**
पाव **(पृ. ९८)**
पाव **(पृ. ९८)**
पाव **(कम्म)**
पाव **(धुण्ण)**
पाव **(मल)**
पावइ **(अभिगच्छति)**
पावंति **(निअच्छंति)**
पावकम्मकरण **(अदिण्णादाण)**
पावकम्मनिसेह-किरिया **(पृ. ९८)**
पावकम्ममा-सेवित **(दुक्कड)**
पावकोव **(पाणवह)**
पावण **(आय)**
पावय **(पृ. ९८)**
पावयण **(पवयण)**
पावलोभ **(पाणवह)**
पास **(पृ. ९८)**
पासइ **(जाणइ)**
पासंडि **(भिक्खु)**
पासंडि **(समण)**
पासाण **(पृ. ९९)**
पासादिय **(पृ. ९९)**
पाहुड **(पृ. ९९)**
पिअबंभण **(बंभण)**
पिंड **(पृ. ९९)**
पिंड **(ओह)**
पिंड **(गण)**
पिंड **(परिग्गह)**
पिंड **(संखेव)**
पिंडण **(पिंड)**
पिंडय **(गंड)**
पिंडार्थ **(समास)**
पिंडिका **(णावा)**
पिच्च **(पयस्)**
पिच्चिय **(पृ. ९९)**
पिच्छिल **(चिक्कण)**
पिज्ज **(पृ. ९९)**
पिट्टण **(कुट्टण)**
पिट्टण **(दुक्खण)**
पिट्ठय **(मग्गत)**
पिट्ठिमंस **(पृ. ९९)**
पिढरक **(अरंजर)**
पिण्ड **(संहर्ष)**
पित **(अतिवत्त)**
पितवण्ण **(पृ. ९९)**
पितामह **(पृ. ९९)**
पिथकरण **(मग्गण)**
पिय **(अत्त)**
पिय **(आप्त)**
पिय **(इट्ठ)**
पियकारिणी **(तिसला)**
पियति **(पृ. १००)**

पियति	**(पृ. १००)**
पियत्ता	**(इट्ठत्ता)**
पियदंसण	**(कंत)**
पियदंसण	**(मंदर)**
पियदंसण	**(मणाम)**
पियदंसण	**(सोम)**
पियदंसणा	**(अणोज्जा)**
पिया	**(पत्ति)**
पिलय	**(मयूर)**
पिल्लक	**(बालक)**
पिल्लक	**(वच्छक)**
पिल्लिका	**(दारिया)**
पिवासित	**(पृ. १००)**
पिवासिय	**(अत्थि)**
पिसुण	**(अधम्मत्थिकाय)**
पिसुण	**(पिट्ठिमंस)**
पिहण	**(संवर)**
पिहाण	**(संवर)**
पीइगम	**(कामगम)**
पीइमण	**(हट्ठचित्त)**
पीडइ	**(दुक्खइ)**
पीडा	**(उपघात)**
पीढफलक	**(डिप्फर)**
पीण	**(थूल)**
पीणक	**(खोरक)**
पीणणिज्ज	**(पृ. १००)**
पीणित	**(णिव्वुत)**
पीणितदेह	**(परिवूढ)**
पीणिय	**(परिवुड्ढ)**
पीतक	**(पितवण्ण)**
पीति	**(मुदिता)**
पीलित	**(रहस्स)**
पीलु	**(दुद्ध)**
पीवर	**(थूल)**
पीहन	**(पृ. १००)**
पीहेइ	**(आसाएइ)**
पीहेइ	**(कंखइ)**
पीहेइ	**(तक्केइ)**
पीहेमाण	**(पत्थेमाण)**
पुंज	**(गण)**
पुंडरीक	**(पदुम)**
पुक्खरपत्तग	**(तट्टक)**
पुक्खल	**(उप्पल)**
पुक्खलच्छिभग	**(उप्पल)**
पुच्छणा	**(पृ. १००)**
पुच्छणा	**(विप्फालण)**
पुच्छणा	**(विप्फालण)**
पुच्छा	**(पृ. १००)**
पुच्छा	**(घट्टण)**
पुच्छियट्ठ	**(लद्धट्ठ)**
पुज्ज	**(पृ. १००)**
पुट्ठ	**(पृ. १००)**
पुट्ठि	**(अहिंसा)**
पुणो पुणो	**(उक्खड्डमड्ड)**
पुण्ण	**(धण्ण)**
पुण्य	**(पृ. १००)**
पुत्त	**(दुमपुप्फिया)**
पुत्तक	**(वच्छक)**
पुत्थव्व	**(थूल)**
पुप्फ	**(पृ. १००)**

पुरंदर	**(इंद)**
पुरंदर	**(सक्क)**
पुराण	**(पृ. १००)**
पुराण	**(अतिवत्त)**
पुराण	**(काहापण)**
पुरिसक्कार	**(उट्ठाण)**
पुरोवर्तित्व	**(पोरेवच्च)**
पुव्वगत	**(दिट्ठिवाय)**
पूइय	**(असुइ)**
पूइय	**(अच्चिय)**
पूइय	**(दोसीण)**
पूइय	**(चहिय)**
पूइय	**(थुत)**
पूजा	**(सक्कार)**
पूजा	**(प्रणमन)**
पूजाकम्म	**(वंदणग)**
पूजित	**(वंदित)**
पूजित	**(महित)**
पूजित	**(आतिण्ण)**
पूज्यभक्त	**(पृ. १०१)**
पूति	**(वावण्ण)**
पूयण	**(अभिवायण)**
पूयण	**(वंदण)**
पूयण	**(परिवंदण)**
पूयणट्ठि	**(पृ. १०१)**
पूयणिज्ज	**(पुज्ज)**
पूया	**(पृ. १०१)**
पूया	**(पृ. १०१)**
पूया	**(अहिंसा)**
पूया	**(थुइ)**
पूया	**(पणमण)**
पूयित	**(णमोक्कत)**
पूरण	**(भृत)**
पूरेइ	**(फासेइ)**
पूर्ण	**(स्पृष्ट)**
पूर्व	**(पृ. १०१)**
पूसित	**(भग्ग)**
पृथग्	**(अण्ण)**
पृथग्भाव	**(विवेक)**
पृथु	**(पृ. १०१)**
पेंडित	**(रहस्स)**
पेक्खण	**(आभोग)**
पेक्खति	**(पेक्खते)**
पेक्खते	**(पृ. १०१)**
पेच्छति	**(पेहति)**
पेच्छते	**(पेक्खते)**
पेज्ज	**(इट्ठ)**
पेज्ज	**(प्रीति)**
पेढिका	**(सेज्जा)**
पेम	**(पृ. १०१)**
पेम	**(प्रीति)**
पेसी	**(दासी)**
पेसुणविवेग	**(धम्मत्थिकाय)**
पेस्स	**(दास)**
पेहति	**(पृ. १०१)**
पेहा	**(धी)**
पोअड	**(वयत्थ)**
पोअंड	**(जुवाण)**
पोंडरीय	**(उप्पल)**
पोग्गल	**(पोग्गलत्थिकाय)**

पोग्गल (**जीवत्थिकाय**)
पोग्गलत्थिकाय (**पृ. १०१**)
पोट्टह (**गड्डिक**)
पोण्ड (**मुकुल**)
पोत (**णावा**)
पोत (**पोत्थ**)
पोतक (**बालक**)
पोतक (**वच्छक**)
पोतिका (**दारिया**)
पोत्थ (**पृ. १०२**)
पोरेवच्च (**पृ. १०२**)
पोरेवच्च (**आहेवच्च**)
पोहट्टी (**पत्ति**)
प्रकटत्व (**प्रकाश**)
प्रकार (**जात**)
प्रकार (**विधि**)
प्रकार (**भंग**)
प्रकाश (**पृ. १०२**)
प्रकाशते (**प्रभाति**)
प्रकाशन (**आलोचन**)
प्रकृति (**अव्यक्त**)
प्रकृति (**पृ. १०२**)
प्रकृति (**पृ. १०२**)
प्रक्षीणदोष (**आप्त**)
प्रख्यात (**सिद्ध**)
प्रगतासु (**प्रासुक**)
प्रगाढ (**लोलुग**)
प्रगुण (**ऋजु**)
प्रचुर (**बहुल**)
प्रचोदयति (**तुदति**)
प्रज्ञापनीय (**पृ. १०२**)
प्रज्ञापयितुम् (**आख्यातुम्**)
प्रज्ञावद् (**मेधाविन्**)
प्रणमन (**पृ. १०२**)
प्रणाम (**प्रणमन**)
प्रणाला (**जिह्विका**)
प्रणिधान (**पृ. १०२**)
प्रणिधि (**माया**)
प्रतिगमन (**पृ. १०२**)
प्रतिज्ञा (**प्रतिमा**)
प्रतिबद्ध (**पृ. १०२**)
प्रतिभञ्जन (**प्रतिगमन**)
प्रतिभाग (**प्रदेश**)
प्रतिमा (**पृ. १०२**)
प्रतिलोम (**खलुंक**)
प्रतिष्ठा (**मूल**)
प्रतिष्ठान (**मूल**)
प्रतीप्सित (**प्रतीष्ट**)
प्रतीष्ट (**पृ. १०२**)
प्रत्यग्र (**बाल**)
प्रत्यञ्चा (**जीवा**)
प्रत्यय (**निमित्त**)
प्रत्यायति (**आग्राहयति**)
प्रत्येति (**पृ. १०३**)
प्रथम (**प्रशस्त**)
प्रथम (**पृ. १०३**)
प्रथम (**पूर्व**)
प्रथमसमवसरण (**पृ. १०३**)
प्रथित (**सिद्ध**)
प्रथित (**खात**)

प्रदर्शित	**(गमित)**
प्रदेश	**(पृ. १०३)**
प्रधान	**(प्रशस्त)**
प्रधान	**(मुद्ध)**
प्रधान	**(ओराल)**
प्रधान	**(प्रथम)**
प्रधान	**(पर)**
प्रधान	**(वर)**
प्रधान	**(प्रकृति)**
प्रधान	**(अग्र)**
प्रधानप्रज्ञ	**(महापण्ण)**
प्रपन्न	**(अवगाढ)**
प्रभव	**(आगम)**
प्रभव	**(पृ. १०३)**
प्रभव	**(णिप्फत्ति)**
प्रभाति	**(पृ. १०३)**
प्रभासयति	**(उद्योतयति)**
प्रभु	**(ईश्वर)**
प्रभु	**(पति)**
प्रमाण	**(निमित्त)**
प्रमाणयुक्त	**(आलीन)**
प्रमोद	**(हर्ष)**
प्रयत	**(यत)**
प्रयत्न	**(करण)**
प्रयत्नवद्	**(यत)**
प्रयोग	**(पृ. १०३)**
प्रयोजन	**(पगत)**
प्ररूपित	**(आख्यात)**
प्रलंबित	**(उद्दामित)**
प्रलोट्टन	**(लोट्टन)**
प्रल्हादकर	**(रुचिर)**
प्रवचन	**(पृ. १०३)**
प्रवर्तन	**(पट्ठवण)**
प्रवहण	**(पृ. १०३)**
प्रवारण	**(वारण)**
प्रवाह	**(प्रवृत्ति)**
प्रवाह	**(वंश)**
प्रविबुद्ध	**(मुकुल)**
प्रविशति	**(विशति)**
प्रवृत्ति	**(पृ. १०३)**
प्रवेशयति	**(आओडावेइ)**
प्रव्रजित	**(अनगार)**
प्रशस्त	**(पृ. १०३)**
प्रशान्त	**(शान्त)**
प्रसर	**(अनुकाश)**
प्रसारित	**(विरल्लिय)**
प्रसूति	**(आदान)**
प्रसूति	**(प्रवृत्ति)**
प्रसूति	**(आगम)**
प्रसूति	**(प्रभव)**
प्रसूति	**(णिप्फत्ति)**
प्रस्तार	**(निधान)**
प्रस्ताव	**(देश)**
प्रस्ताव	**(अवसर)**
प्रस्ताव	**(योग)**
प्राणधारण	**(जीवन)**
प्राणिन्	**(जीव)**
प्रादुष्करण	**(आलोचन)**
प्रान्त	**(चरम)**
प्राप्त	**(गत)**

प्राप्तनिष्ठ	**(सिद्ध)**
प्राप्तवयस्	**(युवा)**
प्राप्नोति	**(एति)**
प्राप्ति	**(आय)**
प्राप्ति	**(स्पर्शना)**
प्राप्ति	**(पृ. १०३)**
प्राप्ति	**(लाभ)**
प्राप्नोति	**(लभते)**
प्राप्यते	**(चर्यते)**
प्राभृत	**(अधिकरण)**
प्रायश्चित्त	**(विशोधि)**
प्रारंभ	**(पट्ठवण)**
प्रारब्ध	**(संतत)**
प्रार्थन	**(पीहन)**
प्रार्थना	**(छंद)**
प्रार्थना	**(भाव)**
प्रार्थना	**(अभिज्झा)**
प्रार्थयेत्	**(संधयेत्)**
प्रासुक	**(पृ. १०३)**
प्रीति	**(पृ. १०४)**
प्रेक्षण	**(पृ. १०४)**
प्रेक्षा	**(प्रेक्षण)**
प्रेक्षित	**(चहित)**
प्रेम	**(पिज्ज)**
प्रेरणा	**(चोयणा)**
प्रेरयन्ति	**(विनयन्ति)**
प्लव	**(णावा)**
प्लावण	**(उप्पिलावण)**
फंदणा	**(एजणा)**
फंदेइ	**(उव्वत्तेइ)**
फरल	**(काण)**
फरुस	**(पृ. १०४)**
फरुस	**(णिट्ठुर)**
फरुस	**(णिण्णेहक)**
फरुस	**(कक्कस)**
फरुस	**(उज्जल)**
फरुस	**(अक्कोस)**
फरुस	**(खर)**
फरुसेज्ज	**(पंतावेज्ज)**
फल	**(पृ. १०४)**
फल	**(रयस्)**
फलकी	**(सेज्जा)**
फलगोच्छ	**(फलपिंडी)**
फलपिंडी	**(पृ. १०४)**
फलमाला	**(फलपिंडी)**
फला	**(फलपिंडी)**
फलिका	**(फलपिंडी)**
फलिह	**(पागार)**
फलिह	**(आगासत्थिकाय)**
फाणित	**(गुलोवलद्धीय)**
फालिय	**(कप्पिय)**
फालेंत	**(छिंदंत)**
फासिय	**(पृ. १०४)**
फासुय	**(पृ. १०४)**
फासेइ	**(पृ. १०४)**
फुंफक	**(दीव)**
फुट्ट	**(णिण्णेहक)**
फुड	**(आइण्ण)**
फुडण	**(पृ. १०४)**
फुडित	**(पृ. १०४)**

फुडीकज्जंति	**(णिव्वंजीयंति)**	बक	**(कुंडल)**
फुरफुरेंत	**(चंचल)**	बकुश	**(पृ. १०६)**
फुलित	**(पृ. १०५)**	बज्झति	**(रज्जति)**
फुल्ल	**(पृ. १०५)**	बद्ध	**(पृ. १०६)**
फुल्ल	**(पुप्फ)**	बद्ध	**(ग्रथित)**
फुसित	**(पृ. १०५)**	बद्ध	**(सन्नद्ध)**
फेडण	**(ओधुणण)**	बल	**(उद्दाण)**
फेण	**(संख)**	बल	**(वीरिय)**
बंध	**(संदाण)**	बल	**(उज्जल)**
बंध	**(पृ. १०५)**	बलाहक	**(पृ. १०६)**
बंधण	**(विग्घ)**	बलितसरीर	**(थिरसंघयण)**
बंधण	**(पास)**	बलिय	**(हट्ठ)**
बंधण	**(संग)**	बलिवद्द	**(उसभ)**
बंधणविमुक्क	**(सिद्ध)**	बहल	**(कषाय)**
बंधणुम्मुक्क	**(दविय)**	बहल	**(थूल)**
बंधुविप्पहूण	**(अत्ताण)**	बहिद्ध	**(उब्भिण्ण)**
बंधेज्ज	**(आओसेज्ज)**	बहु	**(पृ. १०६)**
बंधेज्ज	**(अक्कोसेज्ज)**	बहुजणाचीर्ण	**(पृ. १०६)**
बंभ	**(पितामह)**	बहुमय	**(थेज्ज)**
बंभ	**(ईसिपब्भारपुढवी)**	बहुमाण	**(अबंभ)**
बंभ	**(बंभण)**	बहुमाण	**(भक्ति)**
बंभचेर	**(आचार)**	बहुल	**(पृ. १०६)**
बंभचेर-विग्घ	**(अबंभ)**	बहुसो	**(उक्खड्डुमड्डु)**
बंभण	**(पृ. १०५)**	बाधित	**(चोदित)**
बंभण	**(वुड्ढ)**	बाल	**(क्षुद्र)**
बंभण	**(भिक्खु)**	बाल	**(मूढ)**
बंभण्णु	**(बंभण)**	बाल	**(पृ. १०६)**
बंभरिसि	**(बंभण)**	बाल	**(पृ. १०६)**
बंभवडेंसय	**(ईसिपब्भारपुढवी)**	बालक	**(पृ. १०६)**
बंभवत्थ	**(बंभण)**	बालपंडिय	**(विरयाविरइ)**

बालवीरिय	**(सकर्मवीरिय)**	बुद्धिअज्झवसाय	**(ववसाय)**
बालिया	**(दारिया)**	बुद्धिमंत	**(विसारत)**
बाहणा पदाणं	**(अबंभ)**	बेंति	**(पृ. १०७)**
बाहिर	**(चंडाल)**	बोंदि	**(पृ. १०७)**
बाह्यवस्त्वा–		बोध	**(अवाय)**
लोचनप्रकार	**(पर्याय)**	बोल	**(डिंब)**
बिंहणिज्ज	**(पीणणिज्ज)**	बोहि	**(अहिंसा)**
बीभिंति	**(तसंति)**	बोहि	**(सम्मद्दिट्ठि)**
बीय	**(पृ. १०६)**	ब्रुवंति	**(बेति)**
बीहणग	**(उज्जल)**	भंग	**(पृ. १०७)**
बीहणय	**(पृ. १०७)**	भंग	**(पडिसेवणा)**
बीहणय	**(पाव)**	भंज	**(पहर)**
बुइय	**(वण्णित)**	भंजग	**(दुम)**
बुंदि	**(काय)**	भंजग	**(लूसग)**
बुज्झइ	**(जाणइ)**	भंजण	**(फुडण)**
बुज्झइ	**(सिज्झइ)**	भंजणा	**(विराहणा)**
बुज्झावेति	**(पगासेति)**	भंजित्तए	**(चालित्तए)**
बुज्झेज्ज	**(पृ. १०७)**	भंडग	**(उवहि)**
बुद्ध	**(नाय)**	भंडण	**(आयास)**
बुद्ध	**(सिद्ध)**	भंडण	**(कलह)**
बुद्ध	**(फुल्ल)**	भंडण	**(कोह)**
बुद्ध	**(पृ. १०७)**	भंडण	**(मोहणिज्जकम्म)**
बुद्ध	**(भिक्खु)**	भंडण	**(वुग्गह)**
बुद्धि	**(अवाय)**	भंत	**(पृ. १०७)**
बुद्धि	**(पृ. १०७)**	भंभब्भूय	**(हाहाभूय)**
बुद्धि	**(अभिप्पाय)**	भंभाभूय	**(हाहाभूय)**
बुद्धि	**(प्रणिधान)**	भक्खति	**(चरति)**
बुद्धि	**(सण्णा)**	भक्खते	**(जेमेति)**
बुद्धि	**(अहिंसा)**	भक्ति	**(पृ. १०७)**
बुद्धि	**(धी)**	भग्ग	**(पृ. १०७)**

भग्ग	(पृ. १०७)	भयय	(दास)
भग्ग	(छिन्न)	भयानक	(भीम)
भग्ग	(फुडित)	भयान्त	(भंत)
भग्ग	(फुलित)	भल्ल	(तरच्छ)
भजना	(पृ. १०८)	भव	(पृ. १०८)
भजना	(विकल्प)	भव	(धुवक)
भट्टित्त	(आहेवच्च)	भवंत	(भिक्खु)
भट्ठ	(णट्ठ)	भवण	(पृ. १०८)
भट्ठ	(णिहय)	भवति	(पृ. १०८)
भट्ठतेय	(हयतेय)	भवन	(पृ. १०८)
भणति	(आचिक्खति)	भवान्त	(भंत)
भणित	(वुत्त)	भविय	(पृ. १०८)
भणिय	(पृ. १०८)	भव्य	(पृ. १०९)
भणिय	(रसिय)	भव्य	(भविय)
भत्त	(ओयण)	भव्य	(द्रव्य)
भत्त	(पूया)	भस्स	(इंगालछारिगा)
भत्थ	(काय)	भाइल्ल	(दास)
भदंत	(भंत)	भाइल्लग	(दास)
भद्द	(पृ. १०८)	भाग	(पृ. १०९)
भद्दग	(पृ. १०८)	भाग	(अंग)
भद्दपीढ	(आसंदग)	भाग	(अंस)
भद्दय	(आइण्ण)	भाजन	(पात्र)
भद्दा	(अहिंसा)	भायण	(अरिह)
भमते	(अंदोलति)	भायण	(आगासत्थिकाय)
भमर	(पृ. १०८)	भार	(परिग्गह)
भय	(पृ. १०८)	भारती	(वक्क)
भय	(असात)	भाव	(पृ. १०९)
भयंकर	(पाणवह)	भाव	(पृ. १०९)
भयंकर	(महब्भय)	भाव	(भवन)
भयभैरव	(भीम)	भाव	(ज्ञान)

भाव **(णाण)** भिण्ण **(पृ. १०९)**
भाव **(विण्णाण)** भिण्ण **(खंडित)**
भाव **(संविद्)** भिण्ण **(अण्ण)**
भाव **(पर्याय)** भिण्ण **(भग्ग)**
भाव **(कसाय)** भिन्न **(छिन्न)**
भावणा **(अब्भास)** भिन्न **(शंकित)**
भावना **(अज्झोस)** भिल्लिरी **(तिसरा)**
भावना **(परिकर्म)** भिस **(उप्पल)**
भावना **(तुलना)** भिसकंटक **(दीहसक्कुलिका)**
भावस्सिय **(मणाम)** भिसमुणाल **(उप्पल)**
भाविन् **(भविय)** भिसरा **(तिसरा)**
भाषण **(देशन)** भिसी **(सेज्जा)**
भासते **(दिप्पते)** भीम **(पृ. १०९)**
भासा **(पृ. १०९)** भीम **(लोमहरिसजणण)**
भासा **(अणुओग)** भीय **(पृ. १०९)**
भासा **(वक्क)** भीरु **(अलस)**
भासाअस्समिति **(अधम्मत्थिकाय)** भुंजते **(जेमेति)**
भासाविजय **(दिट्ठिवाय)** भुत्त **(अतिवत्त)**
भासासमिति **(धम्मत्थिकाय)** भूत **(आपूरित)**
भासेइ **(आइक्खइ)** भूतपुव्व **(णियत)**
भास्कर **(आदित्य)** भूताधिकरण **(पद)**
भिंद **(पहर)** भूताभिसंकण **(पावय)**
भिंदंत **(छिंदंत)** भूति **(इंगालछारिगा)**
भिंदति **(छिंदति)** भूति **(भवन)**
भिक्खु **(पृ. १०९)** भूमि **(पृ. ११०)**
भिक्खु **(माहण)** भूय **(जीवत्थिकाय)**
भिक्खु **(समण)** भूय **(पाण)**
भिक्खु **(साधु)** भूयत्थ **(उज्जुय)**
भिज्जमाण **(नस्समाण)** भूयवाय **(दिट्ठिवाय)**
भिज्जा **(मोहणिज्जकम्म)** भूयो भूयो **(उक्खड्डमड्ड)**

भृत	**(पृ. ११०)**	भोज्ज	**(पृ. ११०)**
भृश	**(लोलुग)**	भोयण	**(पृ. ११०)**
भेउरधम्म	**(पृ. ११०)**	मइ	**(पृ. ११०)**
भेद	**(पृ. ११०)**	मइ	**(आभिणिबोहिय)**
भेत्ता	**(हंता)**	मइलणा	**(पडिसेवणा)**
भेद	**(पृ. ११०)**	मइल्ल	**(कम्म)**
भेद	**(पृ. ११०)**	मइल्लिय	**(जल्लिय)**
भेद	**(विधि)**	मउड	**(तिरीड)**
भेद	**(भंग)**	मउलि	**(गोणस)**
भेद	**(पकप्पण)**	मंगल	**(अहिंसा)**
भेद	**(विह)**	मंगल	**(पृ. १११)**
भेद	**(विधि)**	मंगलिज्ज	**(णिव्वाणिकर)**
भेद	**(ठाण)**	मंगल्ल	**(इट्ठ)**
भेद	**(प्रकृति)**	मंगल्ल	**(ओराल)**
भेद	**(अंग)**	मंचक	**(डिप्फर)**
भेद	**(प्रदेश)**	मंड	**(थूल)**
भेद	**(पज्जव)**	मंडलि	**(गोणस)**
भेद	**(पगडि)**	मंतुलित	**(खंडित)**
भेद	**(णाम)**	मंतेहिति	**(चिंतेहिति)**
भेद	**(पर्याय)**	मंथर	**(अलस)**
भेद	**(जात)**	मंद	**(पृ. १११)**
भेद	**(अंस)**	मंद	**(बाल)**
भेद	**(ठाण)**	मंदर	**(पृ. १११)**
भेदकर	**(अण्हयकर)**	मक्खण	**(उस्सिंघण)**
भेय	**(पृ. ११०)**	मगर	**(राहु)**
भेयणकरी	**(छेयणकरी)**	मगरक	**(तिरीड)**
भेसण	**(पृ. ११०)**	मग्ग	**(अणुण्णा)**
भोगपुरिस	**(दास)**	मग्ग	**(आगासत्थिकाय)**
भोगासा	**(मोहणिज्जकम्म)**	मग्ग	**(आवस्सय)**
भोगासा	**(लोभ)**	मग्ग	**(कप्प)**

मग्ग	**(पवयण)**	मज्जाया	**(अणुण्णा)**
मग्ग	**(परूवण)**	मज्जाया	**(कप्प)**
मग्ग	**(ववहार)**	मज्जाया	**(विहि)**
मग्ग	**(वीथि)**	मज्जाया	**(वेला)**
मग्ग	**(पंथ)**	मज्जिय	**(ण्हात)**
मग्गइ	**(अत्थयति)**	मज्झ	**(पृ. ११२)**
मग्गण	**(पृ. १११)**	मज्झ	**(मज्झ)**
मग्गण	**(पृ. १११)**	मज्झंतिक	**(मज्झ)**
मग्गण	**(आभोगण)**	मज्झट्ठिय	**(मज्झ)**
मग्गण	**(वियालण)**	मज्झण्ह	**(मज्झ)**
मग्गण	**(ईहा)**	मज्झत्थ	**(मज्झ)**
मग्गणा	**(आभिणिबोहिय)**	मज्झत्थ	**(अलस)**
मग्गणा	**(आभोग)**	मज्झत्थसील	**(अबालसील)**
मग्गणा	**(विजय)**	मज्झदेसक	**(मज्झ)**
मग्गणा	**(एसणा)**	मज्झिम	**(मज्झ)**
मग्गण्ण	**(देसकालण्ण)**	मट्ठ	**(अच्छ)**
मग्गत	**(पृ. १११)**	मट्ठ	**(घट्ठ)**
मग्गविदु	**(देसकालण्ण)**	मडहक	**(रहस्स)**
मग्गस्स गति		मडहकोट्ठा	**(वडभिका)**
आगतिण्ण	**(देसकालण्ण)**	मणअगुत्ति	**(अधम्मत्थिकाय)**
मघव	**(सक्क)**	मणगुत्ति	**(धम्मत्थिकाय)**
मघा	**(कण्हराति)**	मणसंकप्प	**(पृ. ११२)**
मच्चु	**(मरण)**	मणसंखोभ	**(अबंभ)**
मच्चु	**(पाणवह)**	मणहर	**(मणुण्ण)**
मच्छ	**(राहु)**	मणाभिराम	**(इट्ठ)**
मज्जगरस	**(सुरा)**	मणाम	**(पृ. ११२)**
मज्जणा	**(सिणाण)**	मणाम	**(इट्ठ)**
मज्जा	**(इज्जा)**	मणामत्ता	**(इट्ठत्ता)**
मज्जाता	**(पकप्प)**	मणामा	**(पत्ति)**
मज्जाया	**(पृ. १११)**	मणि	**(पासाण)**

मणुण्ण	**(अत्त)**
मणुण्ण	**(पृ. ११२)**
मणुण्ण	**(इट्ठ)**
मणुण्णत्ता	**(इट्ठत्ता)**
मणोगम	**(कामगम)**
मणोगयसंकप्प	**(अज्झत्थिय)**
मणोरम	**(कामगम)**
मणोरम	**(मंदर)**
मणोहर	**(मधुर)**
मण्डन	**(विभूषण)**
मत	**(दिट्ठि)**
मत	**(दर्शन)**
मति	**(धी)**
मति	**(बुद्धि)**
मतिअणुगय	**(मतिसहित)**
मतिंग	**(मातंग)**
मतिम	**(अमूढ)**
मतिविप्लुत	**(वितिगिच्छा)**
मतिसहित	**(पृ. ११२)**
मत्तपमत्त	**(पृ. ११२)**
मत्थक	**(णिडाल)**
मत्थक	**(सिखंड)**
मत्थककंटक	**(तिरीड)**
मत्थकत	**(दीहसक्कुलिका)**
मत्थग	**(कुंडल)**
मत्सर	**(माण)**
मद	**(माण)**
मद	**(मोहणिज्जकम्म)**
मधअग्गि	**(दीव)**
मधु	**(अरिट्ठ)**
मधुकर	**(भमर)**
मधुर	**(पृ. ११२)**
मध्यवर्ति	**(अचरम)**
मनन	**(पृ. ११२)**
मनस्	**(चित्त)**
मनोज्ञ	**(उदार)**
मन्नंति	**(पृ. ११२)**
ममत्व	**(राग)**
मम्मण	**(अलिय)**
मय	**(गय)**
मय	**(दिट्ठ)**
मयंग	**(चंडाल)**
मयणिज्ज	**(पीणणिज्ज)**
मयास	**(चंडाल)**
मयूर	**(पृ. ११२)**
मरण	**(पृ. ११२)**
मरण	**(भय)**
मरणविमुक्क	**(सिद्ध)**
मरणवेमणंस	**(पाव)**
मरणासा	**(लोभ)**
मरणासा	**(मोहणिज्जकम्म)**
मराल	**(खलुंक)**
मराली	**(गंडि)**
मराली	**(तंडी)**
मरिसेति	**(खमति)**
मरुभूतिक	**(पासाण)**
मर्यादा	**(अवधान)**
मर्यादा	**(चरण)**
मर्यादा	**(जीत)**
मर्यादा	**(धर्म)**

मर्यादा	**(वेला)**
मर्यादा	**(मेरा)**
मर्यादा	**(सीमा)**
मर्यादाव्यवस्थित	**(मेधाविन्)**
मल	**(पृ. ११३)**
मल	**(कम्म)**
मलित	**(अतिवत्त)**
मलित	**(णिम्मंसक)**
मलित	**(महव्वय)**
मलियकंटय	**(ओहयकंटय)**
मल्ल	**(जल्ल)**
मल्लकमूलक	**(करोडक)**
मल्लगभंड	**(अरंजर)**
मसूरक	**(डिप्फर)**
मसृण	**(श्लक्ष्ण)**
महंत	**(दीह)**
महंततर	**(विच्छिन्नतर)**
महंती	**(अहिंसा)**
महंधकार	**(तमुक्काय)**
महग्घ	**(महत्थ)**
महग्घ	**(परग्घ)**
महतरक	**(उच्चयरक)**
महत्तरगत्त	**(आहेवच्च)**
महत्थ	**(पृ. ११३)**
महद्दि	**(परिग्गह)**
महब्बल	**(अइबल)**
महब्बल	**(ओहबल)**
महब्भय	**(पृ. ११३)**
महब्भय	**(असात)**
महब्भय	**(पाव)**
महब्भय	**(तिव्व)**
महब्भय-पवड्ढय	**(पाव)**
महरिह	**(महत्थ)**
महर्षि	**(ऋषि)**
महव्वय	**(पृ. ११३)**
महाकम्मतर	**(पृ. ११३)**
महाकाय	**(परिवुड्ढ)**
महाकाय	**(शरभ)**
महाकाय	**(थूल)**
महाकिरियतर	**(महाकम्मतर)**
महाजण	**(वंद)**
महाणुभाग	**(ओराल)**
महानाणि	**(महामुणि)**
महापउम	**(पृ. ११३)**
महापण्ण	**(पृ. ११३)**
महापोंडरीय	**(उप्पल)**
महाभाग	**(बुद्ध)**
महामुणि	**(पृ. ११३)**
महाविस	**(उग्गविस)**
महावीर्य	**(तनुतरशरीर)**
महासवतर	**(महाकम्मतर)**
महासार	**(थूल)**
महिच्छ	**(परिग्गह)**
महित	**(पृ. ११३)**
महिय	**(चहिय)**
महिय	**(हय)**
महिला	**(पत्ति)**
महिसाहा	**(सेज्जा)**
महीरुह	**(दुम)**
महेज्ज	**(आओसेज्ज)**

महेश्वर	**(ईश्वर)**
महोदर	**(पुट्ट)**
माइ	**(कम्म)**
माइय	**(मिय)**
मांसल	**(थूल)**
माघवई	**(कण्हराति)**
माण	**(पृ. ११४)**
माण	**(पृ. ११४)**
माण	**(अधम्मत्थिकाय)**
माण	**(मोहणिज्जकम्म)**
माणक	**(अरंजर)**
माणकामय	**(पूयणट्ठि)**
माणण	**(उक्कसण)**
माणण	**(परिवंदण)**
माणण	**(वंदण)**
माणव	**(जीवत्थिकाय)**
माणविवेग	**(धम्मत्थिकाय)**
माणिय	**(अच्चिय)**
मात	**(णिम्मंसक)**
मातंग	**(पृ. ११४)**
माया	**(पृ. ११४)**
माया	**(कक्क)**
माया	**(कूड)**
माया	**(पणिधि)**
माया	**(मोहणिज्जकम्म)**
माया	**(अधम्मत्थिकाय)**
माया	**(इज्जा)**
माया	**(उक्कंचण)**
माया	**(पलिउंचण)**
मायामोस	**(अलिय)**
मायामोस	**(अधम्मत्थिकाय)**
मायामोसविवेग	**(धम्मत्थिकाय)**
मायाविवेग	**(धम्मत्थिकाय)**
मार	**(अबंभ)**
मार	**(मरण)**
मारण	**(घात)**
मारण	**(दंड)**
मारणा	**(पाणवह)**
मारय	**(घायय)**
मार्ग	**(पंथ)**
मार्ग	**(दर्शन)**
मार्गणा	**(ईहा)**
मालण	**(वध)**
माहण	**(समण)**
माहण	**(मुणि)**
माहण	**(पृ. ११४)**
मिच्छत्त	**(अवद्य)**
मिच्छा	**(पृ. ११४)**
मिच्छादंसणसल्ल	**(अधम्मत्थिकाय)**
मिच्छादंसणसल्ल–विवेग	**(धम्मत्थिकाय)**
मिच्छापच्छाकड	**(अलिय)**
मिणति	**(पियति)**
मिणति	**(पृ. ११४)**
मित	**(पृ. ११४)**
मित्त	**(पृ. ११५)**
मित्तसंगम	**(समागम)**
मित्ति	**(पृ. ११५)**
मित्ति	**(संधि)**
मिथ्या	**(पृ. ११५)**

मिय	**(पृ. ११५)**
मिय	**(सिक्खिय)**
मिलक्खु	**(पच्चंतिक)**
मिलाण	**(महव्वय)**
मिसीमिसीयमाण	**(आसुरत्त)**
मिसीमिसेमाण	**(आसुरत्त)**
मिहुणग	**(हत्थिक)**
मीमांसा	**(तक्क)**
मीमांसा	**(वितर्क)**
मीमांस्यमान	**(परिगण्यमान)**
मीलनक	**(समूह)**
मुंचण	**(झोसण)**
मुंडक	**(खोरक)**
मुंडग	**(तट्टक)**
मुंडावित्तए	**(पृ. ११५)**
मुंडाविय	**(पव्वाविय)**
मुकुट	**(तिरीड)**
मुकुल	**(पृ. ११५)**
मुक्क	**(पृ. ११५)**
मुक्क	**(अणाइल)**
मुक्क	**(उब्भिण्ण)**
मुक्कगत	**(सिद्धिगत)**
मुक्कहत्थ	**(साहसिक)**
मुक्त	**(पृ. ११५)**
मुक्तिगमनयोग्य	**(द्रव्य)**
मुख	**(पृ. ११५)**
मुखर	**(पृ. ११५)**
मुच्चइ	**(सिज्झइ)**
मुच्छा	**(पृ. ११६)**
मुच्छा	**(अदिण्णादाण)**
मुच्छा	**(मोहणिज्जकम्म)**
मुच्छा	**(लोभ)**
मुच्छित	**(सत्त)**
मुच्छिय	**(पृ. ११६)**
मुच्छिय	**(लोलुय)**
मुच्छिय	**(गिद्ध)**
मुज्झइ	**(सज्जइ)**
मुज्झिय	**(सज्जिय)**
मुञ्चति	**(निसृजति)**
मुणि	**(पृ. ११६)**
मुणि	**(उज्जु)**
मुणि	**(णाणि)**
मुणि	**(भिक्खु)**
मुणि	**(समण)**
मुणित	**(पृ. ११६)**
मुणित	**(गीय)**
मुणित	**(विदित)**
मुत्त	**(तिण्ण)**
मुत्त	**(भिक्खु)**
मुत्त	**(समण)**
मुत्त	**(सिद्ध)**
मुत्तालय	**(ईसिपब्भारपुढवी)**
मुत्ति	**(ईसिपब्भारपुढवी)**
मुत्ति	**(मइ)**
मुत्तिमग्ग	**(सिद्धिमग्ग)**
मुदित	**(पृ. ११६)**
मुदित	**(हसित)**
मुदिता	**(पृ. ११६)**
मुद्देयक	**(अंगुलेयक)**
मुद्ध	**(पृ. ११६)**

मुनि	**(पृ. ११६)**
मुनि	**(अनगार)**
मुनि	**(साधु)**
मुम्मुर	**(पृ. ११६)**
मुय	**(दिट्ठ)**
मुसावाय	**(अधम्मत्थिकाय)**
मुसावायवेरमण	**(धम्मत्थिकाय)**
मुहफलक	**(णिडालमासक)**
मूढ	**(मूर्च्छित)**
मूढ	**(पृ. ११६)**
मूढ	**(जड्ड)**
मूढ	**(दुट्ठ)**
मूढ	**(बाल)**
मूर्च्छा	**(लोभ)**
मूर्च्छा	**(राग)**
मूर्च्छित	**(पृ. ११६)**
मूर्ति	**(स्थापना)**
मूल	**(पृ. ११७)**
मूल	**(पृ. ११७)**
मूल	**(पृ. ११७)**
मूल	**(बीय)**
मूलगुणपडिवाय	**(मूलच्छेज्ज)**
मूलच्छेज्ज	**(पृ. ११७)**
मेखला	**(कंची)**
मेखलिका	**(कडीय)**
मेघ	**(बलाहक)**
मेढि	**(पृ. ११७)**
मेदित	**(थूल)**
मेधस्	**(बुद्धि)**
मेधाविन्	**(पृ. ११७)**
मेधाविन्	**(पंडित)**
मेधावि	**(देसकालण्ण)**
मेधावि	**(छेय)**
मेरक	**(अरिट्ठ)**
मेरग	**(सुरा)**
मेरा	**(पृ. ११७)**
मेरा	**(वेला)**
मेरा	**(पाली)**
मेरा	**(ठिति)**
मेरा	**(विहि)**
मेरा	**(कप्प)**
मेरा	**(मज्जाया)**
मेरा	**(सीमा)**
मेरु	**(मंदर)**
मेरुक	**(पासाण)**
मेरुवर	**(णग)**
मेलना	**(पृ. ११७)**
मेस	**(दुमपुप्फिया)**
मेहण	**(पृ. ११७)**
मेहन	**(सागारिक)**
मेहराति	**(कण्हराति)**
मेहा	**(उग्गह)**
मेहावि	**(साहसिक)**
मेहावि	**(पंडिय)**
मेहुण	**(अबंभ)**
मेहुण	**(अधम्मत्थिकाय)**
मेहुणवेरमण	**(धम्मत्थिकाय)**
मोक्ख	**(संति)**
मोक्ख	**(सिद्धउपपत्ति)**
मोक्खदरिसि	**(णिकम्मदरिसि)**

मोक्ष	**(धूत)**
मोक्ष	**(नियाग)**
मोक्षमार्गगामि	**(आप्त)**
मोक्षमार्गाभिज्ञ	**(कुशल)**
मोक्षाभिलाष	**(संवेजन)**
मोचन	**(निक्षेप)**
मोत्ति	**(पृ. ११७)**
मोह	**(अबंभ)**
मोहणिज्जकम्म	**(पृ. ११७)**
मोहपवड्ढय	**(पाव)**
मोहेंति	**(रमंति)**
मौनी	**(अनगार)**
मौनीन्द्राभिप्राय	**(तत्त्व)**
यजन	**(पृ. ११८)**
यत	**(पृ. ११८)**
यति	**(ऋषि)**
यति	**(अनगार)**
यथारुचि	**(छंद)**
याग	**(यजन)**
यान	**(प्रवहण)**
याचित	**(अनविष्ट)**
यातना	**(दण्ड)**
युक्त	**(प्रतिबद्ध)**
युज्यते	**(क्रमति)**
युवा	**(पृ. ११८)**
यूथ	**(कुल)**
योग	**(पृ. ११८)**
योग	**(पृ. ११८)**
योग्य	**(वस्तु)**
योग्य	**(भव्य)**

योजना	**(मेलना)**
यौवनस्थ	**(युवा)**
रइ-अरइ	**(अधम्मत्थिकाय)**
रइ-अरइविवेग	**(धम्मत्थिकाय)**
रइय	**(बद्ध)**
रइल्लिय	**(जल्लिय)**
रंगण	**(जीवत्थिकाय)**
रक्खा	**(अहिंसा)**
रक्खित	**(पालित)**
रक्षण	**(सन्त्राण)**
रचन	**(निक्षेप)**
रचित	**(ग्रथित)**
रजनिकर	**(चन्द्र)**
रज्ज	**(पृ. ११८)**
रज्जइ	**(सज्जइ)**
रज्जति	**(पृ. ११८)**
रज्जिय	**(सज्जिय)**
रत	**(रति)**
रति	**(पृ. ११८)**
रति	**(सात)**
रति	**(अबंभ)**
रति	**(अहिंसा)**
रत्त	**(कक्क)**
रत्त	**(सत्त)**
रत्ति	**(नील)**
रत्था	**(वीथि)**
रत्नाधिक	**(रात्निक)**
रन्न	**(गहण)**
रमंति	**(हसंति)**
रमंति	**(पृ. ११८)**

रमणिज्ज	**(सोभंत)**	राशि	**(वर्गणा)**
रमणिज्ज	**(कंत)**	राशि	**(समूह)**
रम्य	**(रुचिर)**	रासि	**(पिंड)**
रय	**(कयार)**	रासि	**(समुस्सय)**
रय	**(पाव)**	रासि	**(गण)**
रयणियरप्पयास	**(संख)**	राहु	**(पृ. ११९)**
रयणी	**(पृ. ११९)**	रिउ	**(पृ. १२०)**
रयणुच्चय	**(मंदर)**	रिण	**(अण)**
रयणोच्चय	**(मंदर)**	रित्तक	**(तुच्छ)**
रयस्	**(पृ. ११९)**	रिद्धि	**(अहिंसा)**
रयितपुव्व	**(णियत)**	रियाअस्समिति	**(अधम्मत्थिकाय)**
रस	**(पृ. ११९)**	रियासमिति	**(धम्मत्थिकाय)**
रसणा	**(कंची)**	रिसि	**(इसि)**
रसिय	**(पृ. ११९)**	रीत	**(पृ. १२०)**
रहस्स	**(पृ. ११९)**	रीति	**(रीत)**
रहस्स	**(अबंभ)**	रीयति	**(दूइज्जति)**
राइ	**(छिड्ड)**	रुइय	**(पृ. १२०)**
राग	**(अधम्मत्थिकाय)**	रुइल	**(कंत)**
राग	**(पृ. ११९)**	रुइल	**(सोभंत)**
राग	**(अबंभ)**	रुंटणा	**(खिज्जणिया)**
राग	**(मोहणिज्जकम्म)**	रुंभेज्ज	**(अक्कोसेज्ज)**
राग	**(लोभ)**	रुक्ख	**(दुम)**
राग	**(पेम)**	रुक्ख	**(पादव)**
राग	**(पिज्ज)**	रुचक	**(कडग)**
रागद्दोसवसग	**(परज्झ)**	रुचिर	**(पृ. १२०)**
रागविवेग	**(धम्मत्थिकाय)**	रुट्ठ	**(पृ. १२०)**
रात्रिक	**(पृ. ११९)**	रुट्ठ	**(आसुरत्त)**
रायगिह	**(उसभपुर)**	रुण्ण	**(विकूणित)**
रायहंसी	**(विल्लरी)**	रुण्ण	**(पृ. १२०)**
राशि	**(पृ. ११९)**	रुदित	**(हक्कार)**

रुद्द **(पाव)**
रुद्द **(रहस्स)**
रुद्धापित **(पृ. १२०)**
रूपाकड **(भग्ग)**
रूयकड **(भग्ग)**
रुसिय **(पृ. १२०)**
रूढि **(संज्ञान)**
रेणु **(कयार)**
रोएइ **(सद्दहइ)**
रोगिय **(वाहिय)**
रोयमाणी **(पृ. १२०)**
रोवग **(दुम)**
रोवण **(ववण)**
रोष **(क्रोध)**
रोष **(कोप)**
रोस **(कोह)**
रोस **(मोहणिज्जकम्म)**
लंगल **(णंगल)**
लंचा **(पृ. १२०)**
लंभ **(स्पर्शना)**
लक्खण **(धम्म)**
लघु **(कनिष्ठ)**
लघुक **(पृ. १२०)**
लज्जा **(ह्री)**
लज्जा **(दया)**
लज्जामो **(पृ. १२१)**
लज्जिय **(पृ. १२१)**
लण्ह **(अच्छ)**
लता **(पृ. १२१)**
लद्ध **(पृ. १२१)**
लद्धट्ठ **(पृ. १२१)**
लद्धमईय **(पृ. १२१)**
लद्धसण्ण **(लद्धमईय)**
लद्धसुईय **(लद्धमईय)**
लद्धि **(अहिंसा)**
लब्भति **(पृ. १२१)**
लभते **(पृ. १२१)**
लय **(संघाड)**
लय **(पृ. १२१)**
लयण **(पृ. १२१)**
ललंति **(हसंति)**
लहुक **(साहसिक)**
लहुभूय **(अप्पडिबद्ध)**
लाघविय **(पृ. १२१)**
लाढेत्तय **(जवइत्तय)**
लाभ **(आय)**
लाभ **(णिप्फत्ति)**
लाभ **(पृ. १२१)**
लालप्पण **(लोभ)**
लालप्पणपत्थणा **(अदिण्णादाण)**
लिंग **(पृ. १२२)**
लिंग **(सागारिक)**
लिंगिय **(पृ. १२२)**
लीण **(पविट्ठ)**
लीनता **(लय)**
लुंपणा **(पाणवह)**
लुंपणा धणाणं **(अदिण्णादाण)**
लुंपित्ता **(हंता)**
लुक्कति **(आलुक्कति)**
लुक्ख **(सुक्क)**

लुठण **(लोट्टण)**
लुत्ततेय **(हयतेय)**
लुद्धग **(अत्थि)**
लुप्पमाण **(नस्समाण)**
लुब्ध **(धूर्त)**
लुब्भिय **(सज्जिय)**
लूसग **(पृ. १२२)**
लूह **(समण)**
लूह **(भिक्खु)**
लूह **(पव्वइय)**
लूहाहार **(अंताहार)**
लेण **(भवण)**
लेसा **(जुइ)**
लेसा **(कंति)**
लेसा **(जुइ)**
लेसेज्ज **(अभिहणेज्ज)**
लोकपडिपूरण **(ईसिपब्भारपुढवी)**
लोगंधगार **(तमुक्काय)**
लोगग्गचूलिया **(ईसिपब्भारपुढवी)**
लोगतमस **(तमुक्काय)**
लोगतमिस **(तमुक्काय)**
लोगनाभि **(मंदर)**
लोगमज्झ **(मंदर)**
लोट्टण **(पृ. १२२)**
लोभ **(छंद)**
लोभ **(तण्हा)**
लोभ **(अभिज्झा)**
लोभ **(मोहणिज्जकम्म)**
लोभ **(पृ. १२२)**
लोमसिका **(पृ. १२२)**
लोमहरिसजणण **(पृ. १२२)**
लोयग्ग **(ईसिपब्भारपुढवी)**
लोयग्गथूभिगा **(ईसिपब्भारपुढवी)**
लोयग्गपडि-
बुज्झणा **(ईसिपब्भारपुढवी)**
लोलिक्का **(अदिण्णादाण)**
लोलुग **(पृ. १२२)**
लोलुय **(पृ. १२२)**
लोह **(अधम्मत्थिकाय)**
लोहप्प **(परिग्गह)**
लोहविवेग **(धम्मत्थिकाय)**
लोहिल्ल **(अविसुद्ध)**
ल्हाय **(सीतीभूत)**
वइअगुत्ति **(अधम्मत्थिकाय)**
वइगुत्ति **(धम्मत्थिकाय)**
वइजोग **(वक्क)**
वइर **(पासाण)**
वइर **(पृ. १२२)**
वंक **(पृ. १२३)**
वंकसमायार **(वंक)**
वंचण **(उक्कंचण)**
वंचण **(मोहणिज्जकम्म)**
वंचण **(कूड)**
वंचण **(माया)**
वंचण **(अलिय)**
वंझा **(पृ. १२३)**
वंटग **(वड)**
वंडूग **(वड)**
वंत **(भग्ग)**
वंद **(पृ. १२३)**

वंदइ (**आढाइ**)
वंदण (**प्रणमन**)
वंदण (**पृ. १२३**)
वंदण (**थुइ**)
वंदण (**अभिवायण**)
वंदणग (**पृ. १२३**)
वंदणग (**संथुणण**)
वंदन (**प्रणमन**)
वंदन (**सक्कार**)
वंदित (**णमोक्कत**)
वंदित (**पृ. १२३**)
वंदिय (**अच्चिय**)
वंश (**पृ. १२३**)
वक्क (**पृ. १२३**)
वक्कमंति (**पृ. १२३**)
वक्खाण (**परूवण**)
वक्खित्त (**मत्तपमत्त**)
वक्खेव (**पलिमंथ**)
वक्खोड (**पलिमंथ**)
वक्खोड (**संग**)
वक्खोड (**विग्घ**)
वक्त्र (**मुख**)
वक्रजंघ (**कुब्ज**)
वक्राध:काय (**वडभिका**)
वक्षस्कार (**पृ. १२३**)
वगडा (**पृ. १२४**)
वग्ग (**गण**)
वग्गु (**पृ. १२४**)
वग्घ (**संग**)
वचन (**पृ. १२४**)
वचन (**उक्ति**)
वच्चंसि (**ओयंसि**)
वच्छ (**दुम**)
वच्छक (**पृ. १२४**)
वच्छक (**उसभ**)
वच्छक (**बालक**)
वच्छिका (**दारिया**)
वज्ज (**पृ. १२४**)
वज्ज (**पृ. १२४**)
वज्ज (**वइर**)
वज्ज (**वेर**)
वज्ज (**कम्म**)
वज्ज (**पाव**)
वज्ज (**पाणवह**)
वज्जण (**उस्सग्ग**)
वज्जणा (**दुगुंछणा**)
वज्जपाणि (**सक्क**)
वज्जपाणि (**इंद**)
वज्जा (**इज्जा**)
वट्टक (**खोरक**)
वट्टपीढक (**आसंदग**)
वट्टमाणक (**करोडक**)
वड (**पृ. १२४**)
वडभिका (**पृ. १२४**)
वडेंस (**मंदर**)
वड्डु (**थूल**)
वण (**गहन**)
वण (**दुमपुप्फिया**)
वण्ण (**जस**)
वण्ण (**कित्ति**)

वण्णणा (पृ. १२४)
वण्णित (पृ. १२४)
वण्णिय (पृ. १२४)
वण्णिस्सामि (कित्तइस्सामि)
वति (भिक्खु)
वति (पागार)
वतिपरिक्खेव (वगडा)
वत्तिय (अणुओग)
वत्तुस्सय (महव्वय)
वत्तेज्ज (अभिहणेज्ज)
वत्थित (वित्थिन्न)
वध (पृ. १२४)
वधु (पत्ति)
वधू (पत्ति)
वन्दते (पृ. १२५)
वप्फति (जेमेति)
वमण (पृ. १२५)
वमेंति (पृ. १२५)
वम्मिका (पामुद्दिका)
वय (जाम)
वय (पच्चक्खाण)
वयंति (पृ. १२५)
वयंति (उवेइ)
वयंस (मित्त)
वयण (आणा)
वयण (मुख)
वयण (वक्क)
वयण (वग्गु)
वयण (गिरा)
वयत्थ (पृ. १२५)
वयमंत (सीलमंत)
वयर (पाव)
वर (पृ. १२५)
वर (अग्ग)
वरढ (थूल)
वर्ग (वर्गणा)
वर्ग (समूह)
वर्गणा (पृ. १२५)
वर्ण (अक्षर)
वर्णयति (वृणीते)
वर्तते (अस्ति)
वर्तन (भवन)
वर्त्तमान (पडुप्पन्न)
वर्द्धन (पृ. १२५)
वर्य (अग्र)
वर्षावास (प्रथमसमवसरण)
वलय (कडपल्ल)
वलय (माया)
वलय (मोहणिज्जकम्म)
वलय (अलिय)
वलयग (केज्जूर)
वल्लभ (इट्ठ)
वल्लभिका (पत्ति)
ववगत (पृ. १२५)
ववगय (पृ. १२५)
ववण (पृ. १२५)
ववत्था (पतिट्ठा)
ववसाय (पृ. १२६)
ववसाय (अहिंसा)
ववहार (पृ. १२६)

ववहार	(पृ. १२६)
वसट्ट	(**अट्ट**)
वसण	(**मेहण**)
वसति	(**वसुम**)
वसधि	(**उवसम**)
वसह	(**उसभ**)
वसित्तु	(पृ. १२६)
वसिम	(**वसुम**)
वसुम	(पृ. १२६)
वसुमंत	(**अड्ढ**)
वस्तु	(पृ. १२६)
वस्त्र	(**पोत्थ**)
वह	(**घाय**)
वहण	(**पाणवह**)
वहय	(**अरि**)
वहित	(पृ. १२६)
वाउल	(**मत्तपमत्त**)
वांति	(**वेरति**)
वाग्	(**वचन**)
वाग्योग	(**उक्ति**)
वाघात	(पृ. १२६)
वाचाल	(**मुखर**)
वाञ्छितस्या-धिगति	(**नन्दन**)
वाट	(पृ. १२६)
वाटक	(**वाट**)
वाणी	(**गिरा**)
वाणी	(**वक्क**)
वात	(**महव्वय**)
वातफलिह	(**तमुक्काय**)
वातफलिहखोभ	(**तमुक्काय**)
वातिक	(**णपुंसक**)
वान	(**वेच्च**)
वाम	(पृ. १२६)
वामत	(**वाम**)
वामदेस	(**वाम**)
वामपक्ख	(**वाम**)
वामभाग	(**वाम**)
वामसील	(**वाम**)
वामायार	(**वाम**)
वामावट्ट	(**वाम**)
वाय	(**वग्गु**)
वायण	(**उद्दिसणा**)
वायपलिक्खोभा	(**कण्हराति**)
वायफलिहा	(**कण्हराति**)
वारक	(**अरंजर**)
वारण	(पृ. १२७)
वारणा	(**पडिकमण**)
वारिक	(**नापित**)
वार्तिककर	(**व्यक्तिकर**)
वालु	(**दुद्ध**)
वावड	(पृ. १२७)
वावण्ण	(पृ. १२७)
वावण्ण	(**दोसीण**)
वावत्ति	(**अबंभ**)
वावार	(**जोग**)
वाविद्ध	(**णिस्सारित**)
वासारत्तिय	(**चाउम्मासित**)
वासावास	(**पज्जोसवणा**)
वासित	(**आपूरित**)

वासेहि	**(चाएति)**
वाहिय	**(पृ. १२७)**
विअत्त	**(देसकालण्ण)**
विउक्कमंति	**(वक्कमंति)**
विउट्टणा	**(आलोयणा)**
विउट्टणा	**(दुगुंछणा)**
विउट्टिज्जइ	**(आलोइज्जइ)**
विउल	**(उज्जल)**
विउल	**(विच्छिन्न)**
विउलतर	**(अब्भहियतर)**
विउस्सग्ग	**(काउस्सग्ग)**
विउस्सग्ग	**(पृ. १२७)**
विउस्सरण	**(उस्सग्ग)**
विकच	**(फुल्ल)**
विकटन	**(आलोचन)**
विकड्ढ	**(पहर)**
विकड्ढति	**(णिकड्ढंति)**
विकड्ढति	**(णीहारेंति)**
विकड्ढित	**(णिच्छुद्ध)**
विकत्ता	**(जीवत्थिकाय)**
विकत्ताहि	**(पहर)**
विकप्प	**(भेय)**
विकल	**(पृ. १२७)**
विकल्प	**(पृ. १२७)**
विकल्प	**(पृ. १२७)**
विकल्प	**(भेद)**
विकल्पितवद्	**(पहारेत्थ)**
विकसित	**(फुल्ल)**
विकहकर	**(झंझकर)**
विकहा	**(कलह)**
विकाश	**(फुल्ल)**
विकाश	**(अनुकाश)**
विकिरण	**(सडण)**
विकूणित	**(पृ. १२७)**
विकोच	**(फुल्ल)**
विक्कंत	**(सूर)**
विक्कंदित	**(विकूणित)**
विक्ख	**(णपुंसक)**
विक्खंभ	**(आयाम)**
विक्खिण्ण	**(पृ. १२८)**
विक्खिन्न	**(उक्खिन्न)**
विक्खिन्न	**(भग्ग)**
विक्खेव	**(अदिण्णादाण)**
विक्रान्त	**(वीर)**
विक्षेप	**(पृ. १२८)**
विगत	**(पृ. १२८)**
विगय	**(णट्ठ)**
विगिंचण	**(पृ. १२८)**
विगिंचण	**(वमण)**
विग्गह	**(विवाद)**
विग्घ	**(पृ. १२८)**
विग्घ	**(संग)**
विग्घ	**(पलिमंथ)**
विग्घित	**(पृ. १२८)**
विघाय	**(अबंभ)**
विघ्नकलापद्रावण	**(मंगल)**
विचल	**(पृ. १२८)**
विचलित	**(चलित)**
विचारणा	**(विजय)**
विचालण	**(घट्टण)**

विचिकित्सा	**(पृ. १२८)**
विचीयते	**(पृ. १२८)**
विच्छिण्ण	**(पृथु)**
विच्छिंदति	**(छिंदति)**
विच्छिण्णतर	**(पृ. १२८)**
विच्छिण्णदोहला	**(संपुण्णदोहला)**
विच्छिण्णसव्वदुक्ख	**(सिद्ध)**
विच्छित्त	**(भग्ग)**
विच्छिन्न	**(पृ. १२८)**
विच्छिन्न	**(भग्ग)**
विच्छुद्ध	**(णिम्मज्जित)**
विच्छुद्ध	**(भग्ग)**
विच्छुभ	**(पहर)**
विजय	**(पृ. १२८)**
विजय	**(पृ. १२९)**
विजय	**(मग्गण)**
विजृम्भित	**(फुल्ल)**
विज्जमाण	**(संत)**
विज्जमाणभाव	**(सपज्जाय)**
विज्जा	**(णाण)**
विज्जु	**(दीव)**
विज्जुता	**(दीव)**
विज्जुयारंति	**(ज्वलन्ति)**
विज्झवित	**(भग्ग)**
विज्झाय	**(निट्ठिय)**
विज्झीयति	**(उज्झीयति)**
विज्ञान	**(चित्त)**
विज्ञापना	**(पृ. १२९)**
विज्ञापयितुम्	**(आख्यातुम्)**
विडवि	**(पादव)**
विडिमी	**(दुम)**
विड्डु	**(लज्जिय)**
विणट्ठ	**(वावण्ण)**
विणट्ठ	**(भग्ग)**
विणट्ठ	**(खीण)**
विणट्ठ	**(झीण)**
विणट्ठ	**(णट्ठ)**
विणट्ठतेय	**(हयतेय)**
विणय	**(पृ. १२९)**
विणय	**(पूया)**
विणय	**(उववाय)**
विणय	**(आयार)**
विणयकम्म	**(वंदणग)**
विणस्समाण	**(नस्समाण)**
विणास	**(घाय)**
विणास	**(सायण)**
विणास	**(पलिमंथ)**
विणास	**(पाणवह)**
विणास	**(वाघात)**
विणासण	**(ओधुणण)**
विणासभाव	**(अभूतिभाव)**
विणासित	**(विक्खिण्ण)**
विणासित	**(भग्ग)**
विणासिय	**(खामिय)**
विणिग्गत	**(अतिवत्त)**
विणिच्छिय	**(पृ. १२९)**
विणिच्छियट्ठ	**(लद्धट्ठ)**
विणिज्जरा	**(पृ. १२९)**
विणियत्त	**(अतिवत्त)**
विणीय	**(आइण्ण)**

विणीयदोहला **(संपुण्णदोहला)**
विण्णवण **(पण्णवण)**
विण्णवणा **(आघवणा)**
विण्णाण **(पृ. १२९)**
विण्णाण **(सण्णा)**
विण्णाण **(अवाय)**
विण्णाय **(दिट्ठ)**
विण्णु **(जीवत्थिकाय)**
विण्णु **(पाण)**
वितड्ढमाइन्न **(दुक्कड)**
वितत **(वित्थिन्न)**
वितथ **(मिथ्या)**
वितर्क **(संशय)**
वितर्क **(पृ. १२९)**
वितह **(मिच्छा)**
वितिकिण्ण **(आइण्ण)**
वितिगिच्छा **(पृ. १२९)**
वितिगिच्छित **(संकित)**
वितिगिण्ण **(उक्खिन्न)**
वितिमिर **(निट्ठियट्ठ)**
वितिमिर **(निव्वुड)**
वितिमिर **(अरय)**
वितिमिर **(अणुत्तर)**
वितिमिर **(सेत)**
वितिमिरतर **(अब्भहियतर)**
वितोसिय **(खामिय)**
वित्थत **(वित्थिन्न)**
वित्थिन्न **(पृ. १२९)**
विदित **(पृ. १२९)**
विदु **(पृ. १२९)**
विदु **(समण)**
विदु **(भिक्खु)**
विदेहजंबू **(जंबू)**
विदेहदिण्णा **(तिसला)**
विद्देसगरहणिज्ज **(अलिय)**
विद्धंसण **(सडण)**
विद्धंसणधम्म **(भेउरधम्म)**
विद्धंसणधम्म **(सडण)**
विद्धंसति **(पमिलायति)**
विद्धत्थ **(खीण)**
विद्धि **(अहिंसा)**
विद्यते **(अस्ति)**
विद्वस् **(पृ. १२९)**
विध **(विहि)**
विधान **(विधि)**
विधावति **(पधावति)**
विधारण **(उद्धारणा)**
विधि **(पृ. १३०)**
विधि **(भजना)**
विधि **(कल्प)**
विधि **(पंथ)**
विनयन्ति **(पृ. १३०)**
विनष्ट **(व्यापन्न)**
विनष्ट **(विगत)**
विनाश **(विवेक)**
विनाश **(दण्ड)**
विनाश **(गलन)**
विनाशित **(क्षामित)**
विनाशिन् **(अशाश्वत)**
विनीत **(अविजात)**

विनीत	(**जितकरण**)
विन्नत्तिकारण	(**पृ. १३०**)
विन्नत्तिहेउभूय	(**विन्नत्तिकारण**)
विन्नव	(**अत्तव**)
विपण्ण	(**णट्ठ**)
विपन्न	(**व्यापन्न**)
विपरिणामइत्ता	(**पृ. १३०**)
विपरिणामधम्म	(**भेउरधम्म**)
विपरिणामित्तए	(**चालित्तए**)
विपरीतभाव	(**वैगुण्य**)
विपाडित	(**भग्ग**)
विपुल	(**ओराल**)
विपुलतर	(**विच्छिण्णतर**)
विप्प	(**बंभण**)
विप्पइण्ण	(**उक्खिन्न**)
विप्पकिण्ण	(**विक्खिण्ण**)
विप्पकिण्ण	(**पकिण्ण**)
विप्पगुणोवेय	(**बंभण**)
विप्पजढ	(**ववगत**)
विप्पपवर	(**बंभण**)
विप्पमुंचण	(**उट्ठित**)
विप्परिचेट्ठते	(**परिचेट्ठति**)
विप्परिवत्तते	(**परिचेट्ठति**)
विप्परिसि	(**बंभण**)
विप्पलोट्टित	(**वेवित**)
विप्पित	(**विग्घित**)
विप्पिय	(**पिच्चिय**)
विप्फालण	(**पृ. १३०**)
विप्फालण	(**घट्टण**)
विबुध	(**देव**)
विब्भम	(**अबंभ**)
विभंग	(**अबंभ**)
विभजन	(**पृ. १३०**)
विभयंति	(**हरंति**)
विभयामि	(**आइक्खामि**)
विभाग	(**अवसर**)
विभाग	(**वड**)
विभाग	(**विभजन**)
विभाग	(**अवसर**)
विभाग	(**देश**)
विभाविज्जंति	(**णिव्वंजीयंति**)
विभावेमि	(**आइक्खामि**)
विभासा	(**अणुओग**)
विभासा	(**भासा**)
विभूति	(**अहिंसा**)
विभूसण	(**चूला**)
विभूषण	(**पृ. १३०**)
विमंसा	(**आभिणिबोहिय**)
विभूषणा	(**विभूषण**)
विमर्श	(**तर्क्क**)
विमर्श	(**उपयोग**)
विमर्ष	(**ईहा**)
विमर्ष	(**वितिगिच्छा**)
विमल	(**ण्हाय**)
विमल	(**संख**)
विमल	(**सेत**)
विमल	(**सुद्ध**)
विमल	(**पृ. १३०**)
विमल-पभासा	(**अहिंसा**)
विमलवाहण	(**महापउम**)

विमाणित (**परिभीत**)
विमुत्त (**संजत**)
विमुत्ति (**अहिंसा**)
विमुह (**आगासत्थिकाय**)
विमोक्खित (**उत्तारिय**)
वियंजित (**पृ. १३०**)
वियंजिय (**उद्दिट्ठ**)
वियग्घ (**दीविय**)
वियट्ट (**आगासत्थिकाय**)
वियडणा (**आलोयणा**)
वियत्त (**पंडित**)
वियरत्ति (**रयणी**)
वियाणक (**वित्थिन्न**)
वियारण (**घट्टण**)
वियालण (**पृ. १३०**)
विरई (**पच्चक्खाण**)
विरचना (**निधान**)
विरत (**मुक्क**)
विरत (**संयत**)
विरत (**विद्वस्**)
विरत (**भिक्खु**)
विरत (**पृ. १३०**)
विरति (**पृ. १३०**)
विरति (**विरमण**)
विरति (**संति**)
विरति (**संजम**)
विरति (**अहिंसा**)
विरमण (**पृ. १३१**)
विरमण (**विरति**)
विरमण (**पच्चक्खाण**)
विरय (**तिण्ण**)
विरय (**संजय**)
विरय (**अरय**)
विरय (**समण**)
विरयाविरई (**पृ. १३१**)
विरल्लिय (**पृ. १३१**)
विरसाहार (**अंताहार**)
विरह (**अंतर**)
विरह (**छिद्द**)
विराहण (**उद्दवण**)
विराहणा (**पृ. १३१**)
विराहणा (**पडिसेवणा**)
विराहणा (**अबंभ**)
विरिय (**योग**)
विरिय (**जोग**)
विरिय (**पृ. १३१**)
विरेयण (**साहरण**)
विरेयण (**वमण**)
विलका (**पत्ति**)
विलग्गइ (**दुरुहइ**)
विलवण (**कूजण**)
विलवमाणी (**रोयमाणी**)
विलासिणी (**पत्ति**)
विलिय (**लज्जिय**)
विलुंचण (**फुडण**)
विलुंपित्ता (**हंता**)
विलुप्पमाण (**नस्समाण**)
विलोकन (**प्रेक्षण**)
विल्लरी (**पृ. १३१**)
विवक्ख (**अलिय**)

विवडिय **(हय)**
विवर **(छिड्डु)**
विवर **(सन्धि)**
विवर **(आगासत्थिकाय)**
विवाडेंत **(छिंदंत)**
विवाद **(वुग्गह)**
विवाद **(पृ. १३१)**
विवाद **(कोह)**
विवाय **(मोहणिज्जकम्म)**
विवेक **(पृ. १३१)**
विवेग **(विउस्सग्ग)**
विवेग **(उस्सग्ग)**
विवेग **(विगिंचण)**
विवेयण **(मग्गण)**
विशति **(पृ. १३१)**
विशालता **(आरोह)**
विशुद्ध **(पृ. १३१)**
विशेष **(पर्याय)**
विशेष **(गुण)**
विशेषयति **(उवेहंति)**
विशोधि **(पृ. १३१)**
विश्र **(पृ. १३१)**
विष्कंभ **(आरोह)**
विसंजोएइ **(पृ. १३१)**
विसंधित **(भग्ग)**
विसत **(गोयर)**
विसम **(आगासत्थिकाय)**
विसय **(पृ. १३२)**
विसरा **(तिसरा)**
विसल्लीकरण **(उत्तरकरण)**
विसारत **(पृ. १३२)**
विसाल **(ओराल)**
विसाला **(जंबू)**
विसिट्ठदिट्ठि **(अहिंसा)**
विसिण्ण **(अतिवत्त)**
विसुद्ध **(ण्हाय)**
विसुद्ध **(निट्ठियट्ठ)**
विसुद्ध **(खीण)**
विसुद्ध **(अरय)**
विसुद्ध **(अणुत्तर)**
विसुद्ध **(निव्वुड)**
विसुद्धतर **(अब्भहियतर)**
विसुद्धि **(अहिंसा)**
विसूरण **(आयास)**
विसेसक **(णिडालमासक)**
विसेसादिट्ठ **(अप्पियववहारिय)**
विसोधेति **(वोसिरति)**
विसोहण **(वमण)**
विसोहि **(आलोयण)**
विसोहि **(आवस्सय)**
विसोहिज्जइ **(आलोइज्जइ)**
विसोहीकरण **(उत्तरकरण)**
विस्तर **(विभजन)**
विस्तराल **(ओराल)**
विस्तार **(पृथु)**
विस्तारित **(परिक्खित्त)**
विस्तीर्णप्रज्ञ **(महापण्ण)**
विस्वर **(करुण)**
विह **(पृ. १३२)**
विह **(आगासत्थिकाय)**

विहण (पहर)
विहम्मेमाण (ओवीलेमाण)
विहरण (पृ. १३२)
विहल (उद्दूढ)
विहाण (विहि)
विहार (पंथ)
विहार (विहरण)
विहारग (लूसग)
विहारणा (धारणववहार)
विहि (पृ. १३२)
विहि (उस्सय)
वीतगेहि (खंत)
वीतराग (निर्मम)
वीतरागादेस (आणा)
वीथि (पृ. १३२)
वीभिंति (तसंति)
वीमंसा (आभिणिबोहिय)
वीमंसा (ईहा)
वीमंसा (संशय)
वीयि (आगासत्थिकाय)
वीर (पृ. १३२)
वीर (पृ. १३२)
वीर (बुद्ध)
वीर (सूर)
वीर (पंडिय)
वीरिय (जोग)
वीरिय (उट्ठाण)
वीरिय (पृ. १३२)
वीवाह (समागम)
वीसास (अहिंसा)
वुग्गह (अबंभ)
वुग्गह (पृ. १३२)
वुग्गाहित (दुट्ठ)
वुच्चमाण (पृ. १३३)
वुड्ढ (जुण्ण)
वुड्ढ (पृ. १३३)
वुड्ढ (महव्वय)
वुत्त (भणिय)
वुत्त (पृ. १३३)
वुसिम (वसुम)
वृक (पृ. १३३)
वृक्षसाला (साहा)
वृणीते (पृ. १३३)
वृणोति (वृणीते)
वृत्त (स्थान)
वृत्त (चरण)
वृद्ध (स्थविर)
वृद्धि (वर्द्धन)
वृन्त (मुकुल)
वेइज्जमाण (एइज्जमाण)
वेइय (सिग्घ)
वेइय (खद्ध)
वेंटक (अंगुलेयक)
वेग (रयस्)
वेच्च (पृ. १३३)
वेड्डु (लज्जिय)
वेढक (हत्थभंडक)
वेद (बंभण)
वेद (छन्द)
वेद (पाण)

वेदज्झाइ (**बंभण**)
वेदणा (**एजणा**)
वेदन (**अवन**)
वेदपारग (**बंभण**)
वेदित (**अपगत**)
वेय (**जीवत्थिकाय**)
वेयण (**णाण**)
वेयणा (**विण्णाण**)
वेर (**पृ. १३३**)
वेर (**वज्ज**)
वेर (**आयास**)
वेर (**कम्म**)
वेर (**डिंब**)
वेर (**कलह**)
वेर (**पाव**)
वेर (**अबंभ**)
वेरकर (**झंझकर**)
वेरग्ग (**पव्वज्जा**)
वेरति (**तितिक्खा**)
वेरति (**पृ. १३३**)
वेरमण (**वेरति**)
वेरिय (**अरि**)
वेला (**पृ. १३३**)
वेलु (**णावा**)
वेवित (**पृ. १३३**)
वेस्सासिय (**थेज्ज**)
वैगुण्य (**पृ. १३३**)
वैधर्मता (**वैगुण्य**)
वोगड (**दिट्ठ**)
वोच्छिण्ण (**दिट्ठ**)
वोण्ण (**कम्म**)
वोम (**आगासत्थिकाय**)
वोरमण (**पाणवह**)
वोसट्ठ (**पृ. १३३**)
वोसट्ठकाय (**दंत**)
वोसिरण (**विउस्सग्ग**)
वोसिरति (**पृ. १३४**)
वोसिरिय (**वोसट्ठ**)
वोसिरे (**छड्डे**)
व्यक्तिकर (**पृ. १३४**)
व्यञ्जक (**पृ. १३४**)
व्यञ्जन (**अक्षर**)
व्यञ्जनाक्षर (**पृ. १३४**)
व्यञ्जनावग्रह (**पृ. १३४**)
व्यञ्जनोपादान (**व्यञ्जनावग्रह**)
व्यपलाप (**आह्वान**)
व्यपशमित (**क्षामित**)
व्यवसाय (**पृ. १३४**)
व्यवस्था (**जीत**)
व्यवस्था (**धर्म**)
व्यवहार (**पृ. १३४**)
व्यवहार (**आदेश**)
व्यवहार (**कल्प**)
व्याकुल (**दुस्सह**)
व्याकोश (**फुल्ल**)
व्याख्या (**वर्द्धन**)
व्याघात (**विक्षेप**)
व्यापन्न (**पृ. १३४**)
व्यापादन (**उपघात**)
व्यापार (**योग**)

व्यापृत **(वावड)**
व्याप्त **(आस्पृष्ट)**
व्याप्त **(आपूरित)**
व्याप्त **(स्पृष्ट)**
व्याप्त **(संकीर्ण)**
व्याहृति **(विकल्प)**
व्युत्सर्ग **(पृ. १३४)**
व्यूत **(वेच्च)**
व्योम **(रवं)**
व्रतमोक्ष **(प्रतिगमन)**
व्रतिन् **(अनगार)**
शंकर **(पृ. १३४)**
शंकित **(पृ. १३४)**
शठ **(खलुंक)**
शठ **(धूर्त)**
शबल **(बकुश)**
शब्दित **(शापित)**
शयन **(त्वग्वर्तन)**
शरभ **(पृ. १३५)**
शरीर **(बोंदि)**
शरीर **(तनु)**
शरीरभृद् **(जीव)**
शशिन् **(चन्द्र)**
शांत **(पृ. १३५)**
शांति **(मंगल)**
शापित **(पृ. ३५)**
शास्त्र **(नन्दि)**
शिक्षित **(पृ. १३५)**
शिव **(कल्याण)**
शीलहीन **(क्षुद्र)**
शुक्ल **(लघुक)**
शुद्ध **(आदर्श)**
शुभ **(पुण्य)**
शुभवृद्धि **(पृ. १३५)**
श्रृणोति **(पृ. १३५)**
शेखरक **(आमेलक)**
शोधि **(पृ. १३५)**
शोधित **(निगरित)**
शोभते **(प्रभाति)**
शोभन **(उदार)**
शोभन **(उदग्ग)**
श्रद्दधाति **(प्रत्येति)**
श्रमण **(अनगार)**
श्रेणि **(लता)**
श्रेयस् **(कल्याण)**
श्रेष्ठ **(वर)**
श्लक्ष्ण **(पृ. १३५)**
श्लाघा **(श्लोक)**
श्लोक **(पृ. १३५)**
श्वपच **(सौकरिक)**
सअट्ठ **(पृ. १३५)**
सइ **(आभिणिबोहिय)**
सइ **(मइ)**
सउक्केस **(पावय)**
सउज्जोय **(सप्पभ)**
सउज्जोव **(सप्पभ)**
संकण **(पृ. १३५)**
संकप्प **(अबंभ)**
संकप्प **(पृ. १३५)**
संकर **(परिग्गह)**

संकर	(**णपुंसक**)
संका	(**संकण**)
संकित	(**पृ. १३६**)
संकीर्ण	(**पृ. १३६**)
संकुचितवृन्द	(**मुकुल**)
संकुयंति	(**तसंति**)
संकेत	(**समय**)
संक्षेप	(**ओघ**)
संक्षेप	(**ओह**)
संक्षेप	(**जूह**)
संख	(**पृ. १३६**)
संखडि	(**भोज्ज**)
संखित्त	(**रहस्स**)
संखेव	(**पृ. १३६**)
संखेव	(**सामायिक**)
संखेव	(**समास**)
संखेव	(**ओह.**)
संखोभिज्जमाणी	(**आहुणिज्जमाणी**)
संग	(**राग**)
संग	(**पाव**)
संग	(**पृ. १३६**)
संग	(**पृ. १३६**)
संग	(**पृ. १३६**)
संग	(**कम्म**)
संग	(**लोभ**)
संगइय	(**मित्त**)
संगतपास	(**सन्नतपास**)
संगलिका	(**लोमसिका**)
संगह	(**अणुण्णा**)
संगह	(**उवहि**)
संगाम	(**पृ. १३६**)
संगाम	(**जुद्ध**)
संगाम	(**समर**)
संगोवेमाण	(**सारक्खेमाण**)
संघ	(**वंद**)
संघ	(**गणसमुदाय**)
संघ	(**पृ. १३६**)
संघट्टेज्ज	(**अभिहणेज्ज**)
संघाट	(**घाट**)
संघाड	(**णावा**)
संघाड	(**पृ. १३६**)
संघात	(**समूह**)
संघात	(**पृ. १३६**)
संघाय	(**गण**)
संघाय	(**काय**)
संचय	(**परिग्गह**)
संचारयंति	(**संचालयंति**)
संचालयंति	(**पृ. १३७**)
संचालिज्जमाणी	(**आहुणिज्जमाणी**)
संचिट्ठते	(**संजायते**)
संजत	(**पृ. १३७**)
संजत	(**साधु**)
संजत	(**भिक्खु**)
संजम	(**अहिंसा**)
संजम	(**फासुय**)
संजम	(**दया**)
संजम	(**जस**)
संजम	(**आचार**)
संजम	(**पृ. १३७**)
संजमठाण	(**पृ. १३७**)

संजमणा (**दुगुंछणा**)
संजमतवड्डय (**पृ. १३७**)
संजमति (**धारयंति**)
संजमबहुल (**पव्वइय**)
संजमबहुल (**पृ. १३७**)
संजमरत (**भिक्खु**)
संजमेज्जा (**पव्वइज्जा**)
संजय (**समण**)
संजय (**पृ. १३७**)
संजलण (**कोह**)
संजलण (**मोहणिज्जकम्म**)
संजातदेह (**परिवूढ**)
संजाय (**परिवुड्ढ**)
संजायते (**पृ. १३७**)
संजायभय (**तत्थ**)
संजूह (**जूह**)
संज्ञा (**संज्ञान**)
संज्ञान (**पृ. १३७**)
संज्ञापयितुम् (**आख्यातुम्**)
संठाण (**आगार**)
संठाण (**पृ. १३७**)
संठिति (**पतिट्ठा**)
संठिति (**अवत्था**)
संढ (**णपुंसक**)
संत (**पृ. १३८**)
संत (**पृ. १३८**)
संत (**पृ. १३८**)
संत (**पृ. १३८**)
संत (**सीतीभूत**)
संतत (**पृ. १३८**)
संतप्पमाण (**रुद्धापित**)
संतापित (**रुद्धापित**)
संतास (**आयास**)
संति (**पृ. १३८**)
संति (**उवसम**)
संति (**सामायिक**)
संति (**समण**)
संथव (**संथुणण**)
संथव (**परिग्गह**)
संथड (**साहारण**)
संथड (**आइण्ण**)
संथार (**सेज्जा**)
संथुणण (**पृ. १३८**)
संथुत (**वंदित**)
संदमाणिका (**थिल्ली**)
संदाण (**पृ. १३८**)
संदीपण (**जग्गंतक**)
संदेह (**संशय**)
संदेह (**वितिगिच्छा**)
संद्रवण (**पृ. १३८**)
संधयेत् (**पृ. १३८**)
संधान (**पृ. १३९**)
संधंसेज्ज (**अभिहणेज्ज**)
संधारणा (**धारणववहार**)
संधारणा (**उद्धारणा**)
संधावति (**पधावति**)
संधि (**संधान**)
संधि (**पृ. १३९**)
संधुत (**विचल**)
संपओगबहुल (**उक्कंचण**)

संपडिका **(कंची)**
संपण्ण **(पृ. १३९)**
संपण्णदोहला **(संपुण्णदोहला)**
संपत्तमणोरध **(कयत्थ)**
संपत्ति **(आय)**
संपधारणा **(उद्धारणा)**
संपधूमिय **(घट्ट)**
संपराग **(जुद्ध)**
संपराय **(कम्म)**
संपहारणा **(धारणववहार)**
संपायुप्पायक **(परिग्गह)**
संपायण **(उप्पायण)**
संपिंडण **(पिंड)**
संपिंडित **(रहस्स)**
संपिहणा **(णिसियणा)**
संपीइ **(संधि)**
संपीति **(समागम)**
संपीति **(मित्ति)**
संपीलित **(रहस्स)**
संपुण्णदोहला **(पृ. १३९)**
संपूयणा **(कित्तण)**
संपूर्ण **(सर्व)**
संपेहेति **(पृ. १३९)**
संप्रधारितवद् **(पहारेत्थ)**
संप्रेक्षते **(संपेहेति)**
संबंधि **(मित्त)**
संबद्ध **(ग्रथित)**
संबुद्ध **(पृ. १३९)**
संभव **(आययण)**
संभव **(विसय)**
संभवट्ठाण **(आययण)**
संभवति **(संजायते)**
संभार **(परिग्गह)**
संमट्ठ **(घट्ट)**
संमय **(पृ. १३९)**
संमाणियदोहला **(संपुण्णदोहला)**
संयत **(मुनि)**
संयत **(पृ. १३९)**
संयम **(धूत)**
संयम **(निक्षेप)**
संयम **(सर्वज्ञु)**
संयम **(ह्री)**
संरंभ **(पृ. १३९)**
संरक्खणा **(परिग्गह)**
संराग **(संगाम)**
संलुक्कई **(आलुक्कंति)**
संवच्छरिय **(चाउम्मासित)**
संवर **(अणुण्णा)**
संवर **(पृ. १३९)**
संवर **(अहिंसा)**
संवर **(आचार)**
संवरण **(संवर)**
संवरबहुल **(पव्वइय)**
संवरबहुल **(संजमबहुल)**
संवरित **(पृ. १३९)**
संवरेज्जा **(पव्वइज्जा)**
संविग्न **(पृ. १४०)**
संविचरित **(संविचिण्ण)**
संविचिण्ण **(पृ. १४०)**
संवित्ति **(ज्ञान)**

संविद् **(पृ. १४०)**
संवुड **(संजय)**
संवुडबहुल **(संजमबहुल)**
संवुडमसंवुड **(विरयाविरइ)**
संवेदण **(णाण)**
संवेग **(संवेजण)**
संवेल्लित **(रहस्स)**
संवेजन **(पृ. १४०)**
संशय **(पृ. १४०)**
संवेदन **(उपयोग)**
संशज्ञान **(विचिकित्सा)**
संश्लिष्ट **(प्रतिबद्ध)**
संसग्गि **(अबंभ)**
संसार **(संधान)**
संसारविप्पमोक्ख **(सिद्धउपपत्ति)**
संसारेइ **(उव्वत्तेइ)**
संसुद्ध **(केवल)**
संस्कृत **(पृ. १४०)**
संस्तव **(पृ. १४०)**
संस्पर्शन **(आमर्षण)**
संहर्ष **(पृ. १४०)**
संहित **(रहस्स)**
सकर्मवीरिय **(पृ. १४०)**
सकल **(केवल)**
सकल **(पृ. १४०)**
सकारण **(सअट्ठ)**
सकिरिय **(पावय)**
सक्क **(इंद)**
सक्क **(पृ. १४०)**
सक्क **(पृ. १४०)**
सक्कत **(वंदित)**
सक्कार **(वंदण)**
सक्कार **(पृ. १४१)**
सक्कारिय **(अच्चिय)**
सक्कारेइ **(आढाइ)**
सक्केइ **(चाएति)**
सक्त **(पृ. १४१)**
सग्गुण **(सुसील)**
सचित्त **(अणाइलभाव)**
सचित्त **(पृ. १४१)**
सचेतन **(अणंतरिय)**
सच्च **(पृ. १४१)**
सज्जइ **(पृ. १४१)**
सज्जिय **(पृ. १४१)**
सडइ **(पृ. १४१)**
सडण **(पृ. १४१)**
सढ **(अलिय)**
सढया **(कवड)**
सण्णवणा **(आघवणा)**
सण्णा **(अभिणिबोहिय)**
सण्णा **(मइ)**
सण्णा **(तक्क)**
सण्णा **(पृ. १४१)**
सण्णिचय **(सण्णिहि)**
सण्णिरुद्ध **(रहस्स)**
सण्णिहि **(पृ. १४२)**
सण्ह **(अच्छ)**
सतपत्त **(पदुम)**
सतेरक **(काहापण)**
सत्त **(पाण)**

सत्त (जीवत्थिकाय)
सत्त (गिद्ध)
सत्त (जीवत्थिकाय)
सत्ति (योग)
सत्ति (वीरिय)
सत्ति (जोग)
सत्ति (अहिंसा)
सत्तिय (सूर)
सत्थ (सुत्त)
सत्थिय (डिप्फर)
सत्त्व (जीव)
सत्संयमवद् (यत)
सदसद्विवेक-
विकल (बाल)
सद्द (कित्ति)
सद्दहइ (पृ. १४२)
सद्दूल (तरच्छ)
सद्दूल (दीविय)
सद्दूल (पृ. १४२)
सद्ध (साहसिक)
सद्धम्म (नियाग)
सद्धर्म (सर्वर्जु)
सद्धाजणण (उववूह)
सनिमित्त (सअट्ठ)
सन्त्राण (पृ. १४२)
सन्द्राव (सन्द्रवण)
सन्धि (पृ. १४२)
सन्नतपास (पृ. १४२)
सन्नद्ध (रहस्स)
सन्नद्ध (पृ. १४२)
सन्नाह (संगाम)
सन्निकासिय (रहस्स)
सपज्झाय (पृ. १४२)
सप्प (दुमपुप्फिया)
सप्पभ (सुक्किल)
सप्पभ (पृ. १४२)
सप्पभ (सेत)
सप्फ (पदुम)
सबल (पृ. १४२)
सबलीकरण (पडिसेवणा)
सब्भाव (धम्म)
सब्भाव (णिच्छय)
सब्भावदंसण (सम्मद्दिट्ठि)
सब्भावदायणा (आलोयणा)
सब्भूय (संत)
सब्भूय (सच्च)
सभाव (धम्म)
सभिन्न (संकीर्ण)
सम (आगासत्थिकाय)
समइय (सामायिक)
सम (ऋजु)
समंत (सव्वओ)
समकरण (झोस)
समजोगि (समण)
समण (पृ. १४२)
समण (पृ. १४३)
समण (भिक्खु)
समण (उवसम)
समण (माहण)
समण (मुणि)

समतिच्छिय (**अतिवत्त**)
समत्त (**समण**)
समत्ताराहण (**अहिंसा**)
समत्थ (**हट्ठ**)
समय (**पृ. १४३**)
समय (**धर्म**)
समय (**काल**)
समया (**सामायिक**)
समया (**पव्वज्जा**)
समर (**पृ. १४३**)
समरवहिय (**रुट्ठ**)
समवतरन्ति (**समवयन्ति**)
समवयन्ति (**पृ. १४३**)
समवाय (**पिंड**)
समागम (**संघात**)
समागम (**पृ. १४३**)
समाणधम्मिय (**पृ. १४३**)
समायारी (**पकप्प**)
समारंभ (**संरंभ**)
समारभइ (**आरभइ**)
समारम्भ (**पाणवह**)
समास (**संखेव**)
समास (**उस्सय**)
समास (**सामायिक**)
समास (**जूह**)
समास (**पृ. १४३**)
समास (**ओह**)
समास (**ओघ**)
समाहि (**अहिंसा**)
समाहिबहुल (**पव्वइय**)
समाहिबहुल (**संजमबहुल**)
समाहिमण (**धम्ममण**)
समाहिय (**समण**)
समिइ (**अहिंसा**)
समिच्च (**पृ. १४३**)
समित (**पृ. १४३**)
समित (**वीर**)
समिति (**संघात**)
समिद्धि (**अहिंसा**)
समिध (**जग्गंतक**)
समिय (**उवसंत**)
समिय (**विरत**)
समिय (**दंतप्प**)
समिरीय (**सप्पभ**)
समीव (**अंतिग**)
समीरिइय (**सप्पभ**)
समुच्चय (**संखेव**)
समुच्छ्रित (**उदग्र**)
समुदाण (**कम्म**)
समुदाय (**समूह**)
समुदाय (**गण**)
समुदाय (**संहर्ष**)
समुदाय (**संद्रवण**)
समुसरण (**पिंड**)
समुस्सय (**काय**)
समुस्सय (**पृ. १४४**)
समूह (**पृ. १४४**)
समूह (**पिंड**)
समूह (**गण**)
समृद्ध (**खात**)

समृद्धीभवन (**नन्दन**)
समेर (**सुसील**)
समोसरण (**पिंड**)
सम्पूर्ण (**अशेष**)
सम्मज्जित (**ण्हात**)
सम्मत्त (**सामायिक**)
सम्मद्दिट्ठि (**पृ. १४४**)
सम्मद्दित (**अतिवत्त**)
सम्मय (**थेज्ज**)
सम्माण (**सक्कार**)
सम्माणकामय (**पूयणट्ठि**)
सम्माणिय (**अच्चिय**)
सम्माणेइ (**आढाइ**)
सम्मावाय (**दिट्ठिवाय**)
सम्मावाय (**सामायिक**)
सम्मिलन्ति (**समवयन्ति**)
सम्मोइ (**मित्ति**)
सम्मोइ (**समागम**)
सम्मोइ (**संधि**)
सम्यग्दर्शन (**धर्म**)
सयंपभ (**मंदर**)
सयंभु (**जीवत्थिकाय**)
सयंभु (**पितामह**)
सयक्कतु (**सक्क**)
सयण (**मित्त**)
सयपत्त (**उप्पल**)
सयय (**पृ. १४४**)
सया जय (**विरत**)
सरक (**तट्टक**)
सरग (**तट्टक**)
सरण (**भवण**)
सरण (**अहिंसा**)
सरस्सती (**वक्क**)
सरिस (**उवम्म**)
सरीर (**काय**)
सरोज (**कमल**)
सर्व (**अशेष**)
सर्व (**पृ. १४४**)
सर्वज्ञ (**आप्त**)
सर्वर्जु (**पृ. १४४**)
सलाघण (**उववूह**)
सलोल (**चंचल**)
सल्ल (**कम्म**)
सल्लुद्धरण (**आलोयणा**)
सवण (**उग्गह**)
सवितृ (**आदित्य**)
सव्व (**पृ. १४४**)
सव्वओ (**पृ. १४४**)
सव्वकाल (**सयय**)
सव्वजीव-
सुहावह (**दिट्ठिवाय**)
सव्वजीव-
सुहावहा (**ईसिपब्भारपुढवी**)
सव्वण्णु (**अरह**)
सव्वदरिसि (**अरह**)
सव्वदुक्खप्पहीण (**सिद्ध**)
सव्वदुक्खप्पहीण-
मग्ग (**सिद्धिमग्ग**)
सव्वपाणसुहावह (**दिट्ठिवाय**)
सव्वपाणसुहावहा (**ईसिपब्भारपुढवी**)

सव्वभावदरिसि (**अरह**)
सव्वभूतसुहावह (**दिट्ठिवाय**)
सव्वभूयसुहावहा (**ईसिपब्भारपुढवी**)
सव्वरी (**रयणी**)
सव्वसत्तसुहावह (**दिट्ठिवाय**)
सव्वसत्तसुहावहा (**ईसिपब्भारपुढवी**)
ससंभम (**पृ. १४४**)
ससरीरि (**जीवत्थिकाय**)
ससि (**चंद**)
सस्सत (**चिर**)
सस्सत (**अचल**)
सस्सवापत्ति (**अपातय**)
सस्सिरीय (**ओराल**)
सहइ (**पृ. १४४**)
सहति (**खमिति**)
सहति (**तितिक्खति**)
सहति (**खमति**)
सह्य (**सक्क**)
सहस्सक्ख (**सक्क**)
सहस्सक्ख (**इंद**)
सहस्सपत्त (**उप्पल**)
सहस्सपत्त (**पदुम**)
सहा (**नायय**)
सहा (**मित्त**)
सहाव (**धम्म**)
सहित (**उवसंत**)
सहित (**वीर**)
सहित (**वीर**)
सहिय (**विरत**)
सही (**मित्त**)
सहेउ (**सअट्ठ**)
साइ (**उक्कंचण**)
साइम (**असण**)
सागय (**पृ. १४५**)
सागारिक (**पृ. १४५**)
सागारिय (**पृ. १४५**)
साठ्य (**माया**)
साडणा (**उस्सग्ग**)
साणधण (**चंडाल**)
सात (**पृ. १४५**)
साति (**अलिय**)
सातिजोग (**माया**)
सातिजोग (**मोहणिज्जकम्म**)
सातिजोगकरण (**उवधि**)
साधन (**गुण**)
साधु (**पृ. १४५**)
साधु (**अनगार**)
साधु (**संयत**)
साध्यते (**१४५**)
साध्यते (**अर्यते**)
साम (**आगासत्थिकाय**)
सामत्थ (**जोग**)
सामत्थ (**वीरिय**)
सामत्थ (**योग**)
सामन्न (**साहारण**)
सामाइय (**संजम**)
सामाचारी (**मेरा**)
सामान्य (**ओघ**)
सामायिक (**पृ. १४५**)
सामि (**इस्सर**)

सामिक	**(णरिंद)**	साहसिक	**(पृ. १४६)**
सामिणी	**(पत्ति)**	साहसिय	**(पाव)**
सामित्त	**(आहेवच्च)**	साहा	**(पृ. १४६)**
साय	**(निव्वाणसुह)**	साहा	**(अंग)**
सायण	**(पृ. १४५)**	साहा	**(साला)**
सार	**(कयार)**	साहारण	**(पृ. १४६)**
सारक्खेमाण	**(पृ. १४६)**	साहु	**(तवस्सि)**
सारभइ	**(आरभइ)**	साहु	**(भिक्खु)**
सारीकृत	**(निगरित)**	साहुकड	**(सुकड)**
साला	**(पृ. १४६)**	साहुली	**(साहा)**
साला	**(पृ. १४६)**	सिंगक	**(वच्छक)**
सालिका	**(णावा)**	सिंगक	**(बालक)**
सावग	**(वुड्ढ)**	सिंगबेर	**(पृ. १४६)**
सावज्ज	**(पावय)**	सिंगिका	**(दारिया)**
सावज्ज	**(अणायतण)**	सिंचंति	**(उच्छोलेंति)**
सावज्ज	**(कलुस)**	सिंवितालित	**(भग्ग)**
सावज्जकड	**(आरंभकड)**	सिक्खय	**(पृ. १४६)**
सावज्जमणुट्ठित	**(दुक्कड)**	सिक्खावित्तए	**(मुंडावित्तए)**
सावणमास	**(उउमास)**	सिक्खाविय	**(पव्वाविय)**
सावद्ययोगनिवृत्ति	**(विरमण)**	सिक्खिय	**(पृ. १४६)**
सावनसंवत्सर	**(ऋतुसंवत्सर)**	सिखंड	**(पृ. १४६)**
सावित	**(आरित)**	सिग्घ	**(पृ. १४६)**
सासण	**(सुत्त)**	सिग्घ	**(उक्किट्ठ)**
सासत	**(णितिय)**	सिंघाडय	**(राहु)**
सासय	**(धुव)**	सिज्झइ	**(पृ. १४७)**
साहण	**(कारण)**	सिणाण	**(पृ. १४७)**
साहति	**(चाएति)**	सिणावेंति	**(उच्छोलेंति)**
साहम्मिय	**(समाणधम्मिय)**	सिण्हा	**(पृ. १४७)**
साहरण	**(पृ. १४६)**	सिद्ध	**(पृ. १४७)**
साहस	**(खद्ध)**	सिद्ध	**(पृ. १४७)**

सिद्धउपपत्ति **(पृ. १४७)**
सिद्धंत **(सुत्त)**
सिद्धत्थ **(पृ. १४७)**
सिद्धत्थ **(पृ. १४८)**
सिद्धदरिसि **(णिकम्मदरिसि)**
सिद्धान्त **(दर्शन)**
सिद्धालय **(ईसिपब्भारपुढवी)**
सिद्धावास **(अहिंसा)**
सिद्धि **(ईसिपब्भारपुढवी)**
सिद्धिगत **(पृ. १४८)**
सिद्धिमग्ग **(पृ. १४८)**
सिव **(खेम)**
सिबिका **(थिल्ली)**
सिरिकंठ **(मयूर)**
सिरिकंसग **(तट्टक)**
सिरिकुंड **(तट्टक)**
सिला **(सेज्जा)**
सिलातल **(डिप्फर)**
सिलापट्ट **(पासाण)**
सिलिट्ठीकय **(गाढीकय)**
सिलुच्चय **(मंदर)**
सिलोग **(कित्ति)**
सिलोच्चय **(णग)**
सिलोच्चय **(मंदर)**
सिव **(सामायिक)**
सिव **(ओराल)**
सिव **(इट्ठ)**
सिव **(अहिंसा)**
सिवकर **(पंथ)**
सिवणाम **(धुवक)**
सिव्वण **(परिकम्मण)**
सिस्स **(दास)**
सिहर **(चूला)**
सिहरि **(णग)**
सीतीभूत **(निव्वाणसुह)**
सीउक **(तिरीड)**
सीत **(पृ. १४८)**
सीतल **(णपुंसक)**
सीतल **(सीत)**
सीतीभूत **(पृ. १४८)**
सीमंतक **(सिखंड)**
सीमंतिका **(पाली)**
सीमा **(पृ. १४८)**
सीमा **(वेला)**
सीमा **(विही)**
सील **(अहिंसा)**
सीलपरिघर **(अहिंसा)**
सीलमंत **(पृ. १४८)**
सीस **(णिडाल)**
सीस **(सिखंड)**
सीस **(सिक्ख)**
सीह **(तरच्छ)**
सीह **(उक्किट्ठ)**
सीह **(दीविय)**
सीह **(सुद्दूल)**
सीहभंडक **(तिरीड)**
सुंठी **(सिंगबेर)**
सुंदर **(भद्द)**
सुंदरपास **(सन्नतपास)**
सुकड **(पृ. १४८)**

सुकहिय	**(सुभासिय)**
सुक्क	**(कयार)**
सुक्क	**(पृ. १४८)**
सुक्कल	**(णिम्मंसक)**
सुक्किल	**(पृ. १४८)**
सुक्ख	**(अतिवत्त)**
सुक्ख	**(गोब्बर)**
सुख	**(सात)**
सुखवर्धन	**(शुभवृद्धि)**
सुगंधिय	**(उप्पल)**
सुचिम	**(सेत)**
सुजातपास	**(सन्नतपास)**
सुजाया	**(जंबू)**
सुट्ठुकड	**(सुकड)**
सुणिक्खंत	**(सुविवेग)**
सुत	**(अत्तय)**
सुत	**(आणा)**
सुति	**(अहिंसा)**
सुत्त	**(पृ. १४९)**
सुत्त	**(तंत)**
सुत्त	**(ववहार)**
सुत्त	**(पवयण)**
सुत्तकड	**(सूतगड)**
सुत्थित	**(धुवक)**
सुदंसण	**(मंदर)**
सुदंसणा	**(जंबू)**
सुदर्शन	**(मंदर)**
सुदिट्ठ	**(सुभासिय)**
सुदिट्ठि	**(सम्मद्दिट्ठि)**
सुद्ध	**(पृ. १४९)**
सुद्ध	**(केवल)**
सुद्ध	**(आणासव)**
सुद्ध	**(विमल)**
सुद्ध	**(सेत)**
सुद्धभावि	**(सिद्धत्थ)**
सुपतिट्ठक	**(तट्टक)**
सुपन्नत्त	**(पवेइय)**
सुपव्वज्जा	**(सुविवेग)**
सुपुरिस	**(णरिंद)**
सुप्पबुद्धा	**(जंबू)**
सुबुद्धिक	**(पृ. १४९)**
सुबुद्धिमंत	**(सुबुद्धिक)**
सुभ	**(इट्ठ)**
सुभ	**(पृ. १४९)**
सुभग	**(सिद्धत्थ)**
सुभग	**(सोम)**
सुभग	**(गड्डिक)**
सुभग	**(उप्पल)**
सुभत्ता	**(इट्ठत्ता)**
सुभद्दा	**(जंबू)**
सुभासिय	**(पृ. १४९)**
सुभिक्ख	**(धाय)**
सुभिक्ख	**(खेम)**
सुमण	**(पुप्फ)**
सुमण	**(मुदित)**
सुमण	**(समण)**
सुमणा	**(जंबू)**
सुयंग	**(अहिंसा)**
सुयक्खाय	**(पवेइय)**
सुयधम्म	**(पवयण)**

सुर	**(देव)**	सुय	**(दिट्ठ)**
सुरगिरि	**(मंदर)**	सुय	**(सुत्त)**
सुरसद्म	**(स्वर्)**	सुहि	**(नायय)**
सुरा	**(पृ. १४९)**	सुहित	**(णिव्वुत)**
सुरिंद	**(सक्क)**	सुहिय	**(मित्त)**
सुरूव	**(कंत)**	सुहुम	**(खुड्डलक)**
सुरूव	**(सोम)**	सुहुम	**(पुप्फ)**
सुविवेग	**(पृ. १४९)**	सुइभूय	**(अप्पडिबद्ध)**
सुविहिय	**(सामायिक)**	सूचीका	**(कडग)**
सुव्वत्त	**(उब्भिण्ण)**	सूतगड	**(पृ. १४९)**
सुव्वय	**(सुभासिय)**	सूयगड	**(सूतगड)**
सुव्वय	**(सुसील)**	सूयते	**(उप्पज्जते)**
सुश्लिष्ट	**(आलीन)**	सूर	**(वीर)**
सुश्लिष्ट	**(सुसंहत)**	सूर	**(पृ. १५०)**
सुसंहत	**(पृ. १४९)**	सूर	**(साहसिक)**
सुसमाहित	**(संयत)**	सूर	**(धीर)**
सुसागय	**(सागय)**	सूरलेस्सा	**(पृ. १५०)**
सुसाणवित्ति	**(चंडाल)**	सूरियावत्त	**(मंदर)**
सुसील	**(पृ. १४९)**	सूरियावरण	**(मंदर)**
सुसीइभूय	**(ण्हाय)**	सेज्जंस	**(सिद्धत्थ)**
सुसुणाग	**(अलस)**	सेज्जा	**(पृ. १५०)**
सुह	**(सामायिक)**	सेज्जा	**(उवसग)**
सुह	**(पंथ)**	सेज्जातर	**(सागारिय)**
सुह	**(हिय)**	सेज्जादाता	**(सागारिय)**
सुह	**(सात)**	सेज्जाधर	**(सागारिय)**
सुहकामग	**(हियकामग)**	सेज्जायर	**(सागारिय)**
सुहत	**(धुवक)**	सेत	**(पृ. १५०)**
सुहभागि	**(अड्ढ)**	सेतु	**(वेला)**
सुहभागि	**(सिद्धत्थ)**	सेय	**(पंडुर)**
सुहमण	**(धम्ममण)**	सेय	**(पंथ)**

सेय	**(रुइय)**	सोयण	**(कंदण)**
सेल	**(णग)**	सोयण	**(दुक्खण)**
सेल	**(पासाण)**	सोयमाणी	**(रोयमाणी)**
सेवणाधिकार	**(अबंभ)**	सोवाग	**(चंडाल)**
सेवना	**(भजना)**	सोहण	**(कल्लाण)**
सेवा	**(भक्ति)**	सोहण	**(विणिज्जरा)**
सेवित	**(समित)**	सोहि	**(पृ. १५०)**
सेसवती	**(पृ. १५०)**	सोधि	**(पडिकमण)**
सेह	**(सिक्ख)**	सोहि	**(ववहार)**
सेहाविय	**(पव्वाविय)**	सोहि	**(आलोयणा)**
सोऊण	**(पृ. १५०)**	सोहिकर	**(ओधुणण)**
सोकत्त	**(दीण)**	सोहिय	**(फासिय)**
सोगंधिय	**(उप्पल)**	सौकरिक	**(पृ. १५१)**
सोगपाग	**(अरति)**	सौहार्द	**(घाट)**
सोग्गति	**(पंथ)**	स्तब्ध	**(धूर्त)**
सोच्चाण	**(सोऊण)**	स्तम्भ	**(माण)**
सोधि	**(सम्मद्दिट्ठि)**	स्तोक	**(मित)**
सोभंत	**(पृ. १५०)**	स्तोक	**(ओह)**
सोभंत	**(कंत)**	स्तौति	**(वन्दते)**
सोभण	**(भद्दग)**	स्थगित	**(संवरित)**
सोभते	**(दिप्पते)**	स्थविर	**(पृ. १५१)**
सोभेइ	**(फासेइ)**	स्थान	**(पृ. १५१)**
सोम	**(बंभण)**	स्थान	**(पृ. १५१)**
सोम	**(चंद)**	स्थान	**(पृ. १५१)**
सोम	**(पृ. १५०)**	स्थान	**(परिहार)**
सोमणसा	**(जंबू)**	स्थान	**(भूमि)**
सोमपा	**(बंभण)**	स्थान	**(ओवास)**
सोमपाइ	**(बंभण)**	स्थान	**(आयतन)**
सोयइ	**(दुक्खइ)**	स्थान	**(आयतन)**
सोयंति	**(करुणंति)**	स्थापना	**(पृ. १५१)**

स्थापना	**(निधान)**
स्थित	**(निषन्न)**
स्थित	**(इत)**
स्थित	**(गत)**
स्थिति	**(पृ. १५१)**
स्थिति	**(जीत)**
स्थिति	**(धर्म)**
स्नातक	**(विशुद्ध)**
स्निग्ध	**(अवदात)**
स्निग्ध	**(श्लक्ष्ण)**
स्नेह	**(राग)**
स्नेह	**(लोभ)**
स्पंदन	**(चलन)**
स्पृशति	**(प्रत्येति)**
स्पर्शना	**(पृ. १५१)**
स्पृष्ट	**(पृ. १५१)**
स्फटिक	**(आदर्श)**
स्फाटयति	**(ओसारेति)**
स्मय	**(माण)**
स्वच्छंद	**(निर्द्धम्म)**
स्वप्रवचन-प्रतिपन्न	**(समाणधम्मिय)**
स्वभाव	**(धर्म)**
स्वभाव	**(निसर्ग)**
स्वभाव	**(रीत)**
स्वभाव	**(भेद)**
स्वर	**(अक्षर)**
स्वर्	**(पृ. १५१)**
स्वरूप	**(णिच्छय)**
स्वर्ग	**(स्वर्)**
स्वामिन्	**(पति)**
हंतव्व	**(पृ. १५१)**
हंता	**(पृ. १५१)**
हंदोलक	**(अंदोलति)**
हक्कार	**(पृ. १५२)**
हट्ठ	**(पृ. १५२)**
हट्ठ	**(मुदित)**
हट्ठचित्त	**(पृ. १५२)**
हण	**(पहर)**
हणंति	**(छिन्नंति)**
हणण	**(पद)**
हणेज्ज	**(आओसेज्ज)**
हत्थकलावग	**(केज्जूर)**
हत्थखड्डुग	**(पृ. १५२)**
हत्थभंडक	**(पृ. १५२)**
हत्थलहुत्तण	**(अदिण्णादाण)**
हत्थिक	**(पृ. १५२)**
हत्या	**(पृ. १५२)**
हनन	**(हत्या)**
हम्ममाण	**(आउडिज्जमाण)**
हय	**(पृ. १५२)**
हयतेय	**(पृ. १५२)**
हरंति	**(पृ. १५२)**
हरण	**(हार)**
हरण-विप्पणास	**(अदिण्णादाण)**
हरिएस	**(चंडाल)**
हरित	**(कण्ह)**
हरिस	**(णंदी)**
हरिस	**(तुट्ठि)**
हरिसवस-विसप्पमाणहियय	**(हट्ठचित्त)**
हर्ष	**(पृ. १५२)**

हल **(लंगल)**
हवइ **(भवति)**
हसंति **(पृ. १५३)**
हसित **(फुल्ल)**
हसित **(पृ. १५३)**
हस्सतराय **(खुड्डुतराय)**
हायति **(उज्झीयति)**
हार **(पृ. १५३)**
हास **(मुदित)**
हाहाभूय **(पृ. १५३)**
हिंदुय **(जीवत्थिकाय)**
हिंसति **(आहणइ)**
हिंसविहिंसा **(पाणवह)**
हिंसा **(आकुट्टि)**
हिंसा **(घात)**
हिट्ठिम **(पृ. १५३)**
हित **(सामायिक)**
हित **(णट्ठ)**
हित **(पंथ)**
हितइच्छिता **(पत्ति)**
हिम **(सीत)**
हिमकूट **(हिमानि)**
हिमपटल **(हिमानि)**
हिमपुञ्ज **(हिमानि)**
हिमानि **(पृ. १५३)**
हिय **(पृ. १५३)**
हिय **(अणुण्णा)**
हियकामग **(पृ. १५३)**
हिययगमणिज्ज **(इट्ठ)**
हिरी **(दया)**
हिल्लिरी **(तिसरा)**
हीणस्सर **(पृ. १५३)**
हीरते **(हार)**
हीलणा **(पृ. १५३)**
हीलणा **(इंखिणी)**
हीलिज्जमाणी **(पृ. १५४)**
हीलिय **(रुसिय)**
हीलेति **(पृ. १५४)**
हुतवह **(अग्गि)**
हुतासणसिहा **(पृ. १५४)**
हेउ **(अत्थ)**
हेउगोवएस **(पृ. १५४)**
हेउवाय **(दिट्ठिवाय)**
हेतु **(मूल)**
हेतु **(णिदंसण)**
हेतु **(आय)**
हेतु **(निमित्त)**
हेतु **(नियाण)**
हेतु **(पृ. १५४)**
हेतु **(आगम)**
ह्रियते **(हार)**
ह्री **(पृ. १५४)**

विशेष शब्द-विवरण

(प्रस्तुत परिशिष्ट में जिन शब्दों के एकार्थक दिए गए हैं, उनको अनुक्रम से गहरे अक्षरों में दिया है तथा ब्रेकेट में उन शब्दों का संस्कृत रूप दिया गया है, फिर एकार्थक अभिवचनों की व्याख्या की गई है व्याख्या में कहीं टीका एवं चूर्णि का सहारा लिया है तो कहीं स्वोपज्ञ बुद्धि का प्रयोग किया है।)

अंग (अङ्ग)

यहां 'अंग' शब्द के १५ पर्यायवाची शब्दों का उल्लेख हुआ है।[१] ये सभी पर्याय समग्र वस्तु के छोटे-बड़े अवयव हैं। कुछ शब्दों का विश्लेषण इस प्रकार है—

दसा—वस्त्र का किनारा।

प्रदेश—स्कन्ध का एक भाग।

शाखा—वृक्ष का अवयव।

पर्व—इक्षु का खण्ड।

पटल—कमल की पांखुड़ी।

अंताहार (अन्ताहार)

जैन परम्परा में भोजन-ग्रहण के आधार पर भिक्षुओं के अनेक प्रकार किये गये हैं। इनमें अर्थगत भेद होते हुए भी भोजन की सामान्य विवक्षा के आधार पर उनको एकार्थक माना गया है[२]—

अंताहार—वल्ल, चने आदि सामान्य धान खाने वाला।

पंताहार—बचा-खुचा अथवा बासी भोजन करने वाला।

रूक्षाहार—रूक्षभोजी।

तुच्छाहार—तुच्छ, अल्प या असारभोजी।

अरसाहार—रसविहीन भोजन करने वाला।

विरसाहार—विरस आहार करने वाला।

अकम्मवीरिय (अकर्मवीर्य)

जैन दर्शन में वीर्य/शक्ति के तीन प्रकार स्वीकृत हैं—बालवीर्य,

---

१. उशांटी प. १४४; पर्यायाभिधानं च नानादेशविनेयानुग्रहार्थम्।

२. औपटी. पृ. ७५।

पंडितवीर्य, बालपंडितवीर्य। सूत्रकृतांग चूर्णि में अकर्मवीर्य और पंडितवीर्य को एकार्थक माना है। जो शक्ति कषाय और प्रमाद से संवलित नहीं होती, उससे कर्मबन्ध नहीं होता। वह अकर्मवीर्य/पंडितवीर्य कहलाती है।

अकुसल (अकुशल)

प्रश्नव्याकरण सूत्र में 'अकुशल' शब्द के पर्याय में चार शब्दों का उल्लेख है। यहां ये शब्द भाषा-विवेक से विकल व्यक्ति के लिए प्रयुक्त हुए हैं[१]—

अकुशल—कथ्य और अकथ्य का विवेक न करने वाला।

अनार्य—पापकारी भाषा बोलने वाला।

अलीकाज्ञा—पापकारी प्रवृत्तियों की आज्ञा देने वाला।

अलीकधर्मनिरत—असत्य कथन में संलग्न रहने वाला।

अक्कोस (आक्रोश)

आक्रोश आदि शब्द क्रोध की विभिन्न अवस्थाओं के अर्थ में समानार्थक हैं। इनका अर्थभेद इस प्रकार है[२]—

आक्रोश—कुपित होकर 'तू मर जा' ऐसे वचन बोलना।

परुष—कठोर वचन कहना।

खिंसन—'तू चरित्रहीन है' ऐसे निंदावचन कहना।

अपमान—नीच सम्बोधन से पुकारना।

तर्जन—तर्जनी अंगुली दिखाते हुए फटकारना।

निर्भर्त्सन—'मेरी दृष्टि से दूर हो जा' इस प्रकार कहकर अपमान करना।

त्रासन—पीड़ादायक और भयोत्पादक शब्दोच्चारण करना।

उत्कूजित—अव्यक्त ध्वनि करना, क्रोध में बड़बड़ाना।

अक्कोह (अक्रोध)

ये तीनों शब्द क्रोधाभाव के द्योतक हैं—

१. अक्रोध—प्रतिकूल परिस्थिति में क्रोध आ जाने पर भी सन्तुलन न खोना।

२. निक्रोध—किसी भी स्थिति में क्रोध न करना।

३. क्षीणक्रोध—क्रोध मोहनीय कर्म का क्षय हो जाना।

वृत्तिकार ने इनको एकार्थक माना है।[३]

---

१. प्रटी प. ४०।

२. प्रटी प. १६०।

३. औपटी पृ. २०२ ; एकार्था वैते शब्दाः।

अग्गि (अग्नि)

'अग्गि' शब्द के सभी पर्याय अग्नि के स्पष्ट वाचक हैं। सभी नाम उसकी भिन्न-भिन्न विशेषताओं के द्योतक हैं। कुछ शब्दों का वाच्यार्थ इस प्रकार है—

अग्नि—जो ऊर्ध्व गति करती है।[१]

जाततेज—जो प्रारम्भ से ही तेजस्वी हो।

हुतवह—हुत/हवन द्रव्य को वहन करने वाली।

ज्वलन—सबको जलाने वाली, ज्वलनशील।

पवन—पवित्र करने वाली।

अच्चिय (अर्चित)

'अच्चिय' आदि शब्द सम्मान व्यक्त करने के अर्थ में समानार्थक हैं। इनका अर्थबोध इस प्रकार है—

अर्चना—चंदन, गंध आदि द्रव्यों का लेप करना।

वंदना—स्तुति करना।

पूजा—अक्षत आदि से पूजा करना।

मान—उचित सम्मान देना।

सत्कार—वस्त्र आदि देकर आदर करना।

सम्मान—बहुमान देना, हार्दिक अनुराग व्यक्त करना।

अच्छ (अच्छ)

अच्छ आदि आठों शब्द सफाई की विविध अवस्थाओं के द्योतक हैं पर व्याख्याकारों ने इन्हें एकार्थक के रूप में ग्रहण किया है।

अज्झत्थिय (आध्यात्मिक)

ये सभी शब्द चिन्तन की क्रमिक अवस्थाओं के द्योतक हैं—

आध्यात्मिक—अध्यवसायगत चिंतन।

चिंतित—विकल्पात्मक चिंतन।

कल्पित—उभयरूप चिन्तन।

प्रार्थित—अभिलाषात्मक चिन्तन।

मनोगतसंकल्प—वस्तु को प्राप्त करने का मानसिक संकल्प।

---

१. अचि पृ. २४५ : अगत्यूर्ध्वं याति अग्निः।

इनमें अर्थ भेद होते हुए भी टीकाकार ने इनको एकार्थक माना है।[१]

अणासव (अनास्रव)

'अणासव' आदि शब्द मुनि के विशेषण के रूप में प्रयुक्त हैं। इनकी अर्थ-परम्परा इस प्रकार है[२]—

अनाश्रव—नवीन कर्मों के आस्रव से रहित।

अकलुष—पाप रहित।

अछिद्र, अपरिस्रावी—कर्म जल आने वाले छिद्रों को रोकने वाला।

असंक्लिष्ट—चैतसिक क्लेश से मुक्त।

शुद्ध—निर्दोष।

इस प्रकार ये सभी शब्द विशुद्ध चेतना की क्रमिक अवस्थाओं के वाचक हैं।

देखें—**'संत'** शब्द का टिप्पण।

अणुओग (अनुयोग)

अनुयोग का अर्थ है—व्याख्या-पद्धति। किसी भी पदार्थ के सभी धर्मों पर विचार व व्याख्या करना अनुयोग है। इनके एकार्थक शब्दों का आशय इस प्रकार है—

१. अनुयोग—सूत्र के साथ अर्थ का अनुकूल एवं अनुरूप योग करना।

२. नियोग—शब्द और अर्थ का नियत और निश्चित योग नियोग है, जैसे—
घट शब्द से घट का ज्ञान होता है, पट का नहीं।

३. भाषा—शब्द का व्युत्पत्तिमूलक अर्थमात्र कहना।

४. विभाषा—शब्द की विभिन्न पर्यायों के आधार पर अर्थ निरूपित करना।

५. वार्तिक—शब्द की समस्त पर्यायों के आधार पर अर्थ निरूपित करना।[३]

विशेषावश्यक भाष्य में भाषा, विभाषा और वार्तिक को एक उदाहरण द्वारा समझाया गया है। वस्तुतः ये सभी शब्द व्याख्या की उत्तरोत्तर अवस्था के द्योतक हैं। जैसे—एक व्यक्ति इतना मात्र जानता है कि रत्न हैं। दूसरा व्यक्ति उन रत्नों की जाति व मूल्य का ज्ञाता है और तीसरा व्यक्ति इसके साथ-साथ

---

१. विपाटी प ३८ : एतान्यप्येकार्थानि।

२. प्रटी प ११३।

३. आवहाटी १ पृ. ५८।

उन रत्नों के गुण-दोष को भी जानता है। इस प्रकार भाषक प्रारम्भिक अवबोध देता है, विभाषक उसकी विशेष व्याख्या करता है और वार्तिककर उसकी सर्वांग व्याख्या प्रस्तुत करता है।[१]

अणुण्णा (अनुज्ञा)

अनुज्ञा का अर्थ है—आचार्य द्वारा अपने उत्तराधिकारी को गण का उत्तरदायित्व सौपना। आचार्य कहते हैं—"वत्स! मैं आज तुम्हें यह गण, शिष्य, वस्त्र, पात्र आदि सारी वस्तुएं समर्पित करता हूं। आज से तुम इनके स्वामी हो। गुरु का यह वचन-विशेष अनुज्ञा कहलाता है। अनुज्ञा के छह प्रकार निर्दिष्ट हैं—नाम अनुज्ञा, स्थापना अनुज्ञा, द्रव्य अनुज्ञा, क्षेत्र अनुज्ञा, काल अनुज्ञा और भाव अनुज्ञा।

अनुज्ञा के बीस एकार्थक/अभिवचन यहां संगृहीत हैं। व्याख्याकार स्वयं इनके स्पष्टीकरण में संदिग्ध हैं। उनका कहना है कि परम्परा के अभाव में इन एकार्थ अभिवचनों का स्पष्ट अर्थ नहीं बताया जा सकता।[२]

अणुत्तर (अनुत्तर)

अणुत्तर से विशुद्ध तक के सभी शब्द केवलज्ञान के विशेषण के रूप में प्रयुक्त हैं। केवलज्ञान संपूर्ण ज्ञान है। वह विशुद्ध और अनन्त है। ये सभी शब्द उसकी विशेषताओं के द्योतक हैं।

अनुत्तर—सर्वोत्तम।

निर्व्याघात—बाधाओं से अप्रतिहत।

निरावरण—क्षायिक होने से आवरण रहित।

कृत्स्न—सकल ज्ञेय पदार्थों को जानने वाला।

प्रतिपूर्ण—जो अपने आप में पूर्ण है।

वितिमिर—प्रकाश से युक्त।

विशुद्ध—निर्मल।[३]

इस प्रकार भावार्थ में सभी शब्द उत्कृष्ट अर्थ को व्यक्त करने वाले हैं।

अणुपविट्ठ (अनुप्रविष्ट)

'अणुपविट्ठ' के अन्तर्गत ९ पर्यायवाची शब्दों का उल्लेख हुआ है।

---

१. विभा १४२५।

२. अनुनंदीटी पृ. १७९ : एतेषां च पदानामर्थः सम्प्रदायाभावान्नोच्यते।

३. औपटी पृ. १९५।

लगभग सभी शब्द आत्मलीन व्यक्ति के विशेषण के रूप में प्रयुक्त हैं। कुछ विशिष्ट शब्दों का अर्थबोध इस प्रकार है—

१. आलीन—कछुए की भांति सब ओर से संवृत, काय-चेष्टा का निरोध करने वाला।

२. प्रलीन—विशेष रूप से संवृत अथवा आवश्यकता उपस्थित होने पर यतनापूर्वक शारीरिक प्रवृत्ति करने वाला।

३. आभ्यन्तरक—भीतर झांकने वाला।

अतिवत्त (अतिवर्त)

'अतिवर्त्त' शब्द के पर्याय में २७ शब्द और १ धातु का उल्लेख है। अतिवत्त शब्द का अर्थ है—बीत जाना, पुराना होना और व्यर्थ होना। इसमें कुछ शब्द पुरानेपन के वाचक हैं, जैसे—पुराण, मलित, जीर्ण इत्यादि। निष्फल, ओपुप्फ आदि शब्द व्यर्थता के बोधक हैं। कुछ शब्द समाप्ति के वाचक हैं, जैसे—निष्ठित, कृत, क्षीण, प्रहीण, अतीत इत्यादि। इस प्रकार ये सारे शब्द क्षीणता की विभिन्न पर्यायों के वाचक हैं।

अदिण्णादाण (अदत्तादान)

प्रश्नव्याकरण सूत्र में अदत्तादान के तीस पर्याय शब्दों का उल्लेख हुआ है। अदत्त का अर्थ है—चोरी। प्रस्तुत नामों की सूची में चौरिक्य, परहृत, अदत्त, तस्करत्व, अपहार आदि शब्द अदिण्णादाण के स्पष्ट वाचक हैं।

अदत्त ग्रहण में मानव की आकांक्षा, गृद्धि आदि वृत्तियां कार्य करती हैं अत: कारण में कार्य का उपचार कर अदत्तादान की प्रेरक वृत्तियों को भी अदत्तादान मान लिया गया है। जैसे—परलाभ, लौल्य, कांक्षा, लालपन, प्रार्थना, इच्छा, मूर्च्छा, तृष्णा, गृद्धि, आदियणा आदि।

असंयम, अप्रत्यय व अवपीड भी चोरी की ही फलश्रुति है क्योंकि असंयमी व्यक्ति पदार्थ-प्रतिबद्धता के कारण चोरी करता है। जो चोरी करता है, वह अप्रत्यय—अविश्वास का कारण बनता है तथा जिसका धन चुराया जाता है, उसको पीड़ा होती है। इसलिए अप्रत्यय व अवपीड शब्द भी सार्थक हैं। आक्षेप, क्षेप और विक्षेप भी चोरी के ही वाचक हैं क्योंकि इनमें दूसरों के धन का प्रक्षेप होता है।

चोरी माया के बिना नहीं हो सकती अत: कूट, हस्तलघुत्व, निकृतिकर्म आदि शब्द भी इसके पर्याय हैं।

अधम्मत्थिकाय (अधर्मास्तिकाय)

यह लोकव्यापी अजीव द्रव्य है। अधर्म द्रव्य स्थिति/अवस्थिति का माध्यम है। यहां उल्लिखित दो अभिवचनों (अधर्म और अधर्मास्तिकाय) के अतिरिक्त शेष—प्राणातिपात अविरमण से काय-अगुप्ति तक के सारे शब्द अधर्म के द्योतक हैं। अधर्मास्तिकाय के अधर्म शब्द की सदृशता के कारण यहां इनको पर्यायवाची मान लिया गया है।

अबंभ (अब्रह्म)

प्रश्नव्याकरण सूत्र में अब्रह्मचर्य के तीस एकार्थक बताए हैं। इनमें कुछ शब्द अब्रह्म की उत्पत्ति के साधन तथा कुछ शब्द उसकी परिणति के द्योतक हैं। मैथुन, संसर्गि, रति, कामगुण आदि शब्द उसके स्वरूप के वाचक हैं। इन शब्दों का अर्थबोध इस प्रकार है—

१. अब्रह्म—असत् प्रवृत्ति।
२. मैथुन—स्त्री पुरुष का संयोग।
३. चरंत—सभी प्राणियों द्वारा अनुसृत।
४. संसर्गि—स्त्री-पुरुष के संसर्ग से होने वाली प्रवृत्ति।
५. सेवनाधिकार—अनेक अनर्थों में प्रवृत्त करने वाला।
६. संकल्प—विकल्प से उत्पन्न होने वाला।
७. बाधन—संयम में अवरोध उत्पन्न करने वाला।
८. दर्प—शरीर की दृप्तता से उत्पन्न होने वाला।
९. मोह—मूढ़ता उत्पन्न करने वाला। वेदमोहनीय के उदय से होने वाला।
१०. मन:संक्षोभ—मानसिक क्षुब्धता पैदा करने वाला।
११. अनिग्रह—मन को उच्छृंखल करने वाला।
१२. व्युद्ग्रह—दृष्टिकोण का विपर्यास करने वाला।
१३. विघात—गुणों का घातक।
१४. विभंग—व्रतों को भंग करने वाला।
१५. विभ्रम—भ्रान्ति पैदा करने वाला।
१६. अधर्म विपरीत आचरण।
१७. अशीलता—चरित्र के विपरीत प्रस्थान कराने वाला।
१८. ग्राम्यधर्मतप्ति—इन्द्रिय विषयों के उपभोग तथा रक्षण में सदा आकुल-व्याकुल रहने के लिए बाध्य करने वाला।

१९. रति—कामक्रीड़ा का प्रेरक।
२०. राग—अनुरक्ति बढ़ाने वाला।
२१. कामभोगमार—कामभोगों के आसेवन से मृत्यु तक पहुंचाने वाला।
२२. वैर—शत्रुता का हेतु।
२३. रहस्य—एकान्त में आचरणीय।
२४. गुह्य—गोपनीय।
२५. बहुमान—अधिक व्यक्तियों द्वारा अनुमत।
२६. ब्रह्मचर्यविघ्न—अब्रह्म-विरति में बाधा उपस्थित करने वाला।
२७. व्यापत्ति—गुणों का नाशक।
२८. विराधना—सद्‌गुणों का नाशक।
२९. प्रसंग—आसक्ति का उत्पादक।
३०. कामगुण—कामदेव की प्रवृत्ति का बोधक।[१]

अब्भहियतर (अभ्यधिकतर)

इनमें प्रथम दो 'अभ्यधिकतर' और 'विपुलतर' ये वस्तु की लंबाई और गहराई की दृष्टि से परिपूर्णता/अत्यधिकता के द्योतक हैं। शेष दो शब्द 'विशुद्धतर' और 'वितिमिरतर'—ये भाव-विशुद्धि की दृष्टि से परिपूर्णता के द्योतक हैं। भिन्न-भिन्न अर्थ के वाचक होने पर भी ये एकार्थक हैं।[२]

अरंजर (अलंजर)

'अरंजर' शब्द के पर्याय में १२ शब्दों का उल्लेख है। ये सभी शब्द विभिन्न आकृति वाले घड़ों की भिन्न-भिन्न जातियों के वाचक हैं। ये सभी मिट्टी से निर्मित होने के कारण उपादान की समानता से एकार्थक माने गए हैं। कुछेक शब्दों की पहचान इस प्रकार है—

कुंडग—कुंडे के आकार का घड़ा।
घटक—छोटा घड़ा।
कलश—बड़ा घड़ा।
वारक—लघु कलश, सुराही।
अरंजर—पानी भरने का बड़ा बर्तन।

---

१. प्रटी प ४३, ४४।

२. नंदीटी पृ. ३६ : अथवैकार्थिका एवैते शब्दाः नानादेशजानां विनेयानां कस्यचित् कश्चित् प्रसिद्धो भवतीत्युपन्यस्ताः।

उपासक दशा ७/७ में करक, वारक, घट, अलिंजर आदि अनेक प्रकार के मिट्टी के बर्तनों का उल्लेख मिलता है।

अरह (अर्हत्)

आगमों में अनेक स्थलों पर 'अरह' शब्द के साथ प्रसंगोपात्त उसके पर्यायवाची शब्दों का उल्लेख मिलता है। पंच परमेष्ठी में अर्हतों का प्रथम स्थान है। यद्यपि ये सभी शब्द अर्हद्/केवली के द्योतक हैं, लेकिन समभिरूढ़ नय की दृष्टि से इनकी व्याख्या अलग-अलग की जा सकती है—

अर्हत्—अध्यात्म की उच्च भूमिका को प्राप्त।

जिन—कर्म शत्रु को जीतने वाले।

केवली—केवल/सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने वाले।

सर्वज्ञ—भूत, भविष्य और वर्तमान के सभी विषयों के ज्ञाता, त्रिकालज्ञ।

सर्वदर्शी—त्रिकालदर्शी अथवा सब प्राणियों को आत्मवत् देखने वाले।

जात—निसर्गतः शुद्ध।[1]

अरि (अरिन्)

अरि का अर्थ है—शत्रु। कार्यभेद से इन सभी शब्दों का अर्थ-भेद इस प्रकार है[2]—

अरि—शत्रु।

वैरी—जातिगत वैरी, जैसे—सर्प और नकुल।

घातक—किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा अपने शत्रु को मरवाने वाला।

वधक—स्वयं मारने वाला।

प्रत्यमित्र—जो पहले मित्र होकर कारणवश फिर अमित्र/शत्रु बन जाये।

इस प्रकार ये सभी शब्द शत्रुता की उत्पत्ति में साधक अथवा शत्रु के प्रकारों के द्योतक हैं।

अलिय (अलीक)

अलीक का अर्थ है—असत्य। यहां इसके तीस अभिवचन दिये गये हैं। ये असत्य की विभिन्न अवस्थाओं और फलश्रुतियों के द्योतक हैं। अनेक शब्द असत्य के हेतु बनते हैं, जैसे नूम (माया) आदि। यहां कारण में कार्य का

---

१. अनुद्वामटी प १०७।

२. जंबूटी प १२३।

उपचार कर इन्हें भी अलीकवाची शब्द मान लिया गया है। इनके अर्थबोध से यह सब स्पष्ट हो जाता है—

१. शठ—मायावी व्यक्ति का कार्य।
२. अनार्य—अनार्य वचन।
३. मायामृषा—माया और मृषा से अनुगत असत्य वचन।
४. असत्क—अयथार्थ का वाचक।
५. कूट-कपट-अवस्तु—असत्य वचन में सत्य का अपलाप, भाषा का विपर्यय और अभिधेय का अप्रतिपादन।
६. निरर्थक-अपार्थ—अर्थहीन वचन।
७. विद्वेषगर्हणीय—सज्जन व्यक्तियों द्वारा गर्हणीय।
८. अनृजुक—वक्र वचन।
९. कल्कना—ठगना।
१०. वञ्चना—माया युक्त व पापकारी वचन।
११. मिथ्यापश्चात् कृत—मिथ्या होने के कारण अनाश्रयणीय।
१२. साति—असत्य वचन अविश्वास का कारण।
१३. अपछन्न—अपने दोषों तथा दूसरों के गुणों को ढकना।
१४. उत्कूल—सन्मार्ग से च्युत करने वाला (उन्मार्ग की ओर ले जाने वाला)।
१५. आर्त्त—पीड़ित व्यक्ति द्वारा आश्रित।
१६. अभ्याख्यान—झूठा आरोप।
१७. किल्विष—पाप का हेतु।
१८. वलय—वक्रता का उत्पादक।
१९. गहन—सघन वचन जाल।
२०. मन्मन—मेंमने की भांति अस्पष्ट भाषण।
२१. नूम—माया युक्त वचन।
२२. निकृति—माया को छिपाना।
२३. अप्रत्यय—अविश्वसनीय भाषण।
२४. असमय—असम्यक् आचरण।
२५. असत्यसंधान—असत्य की परम्परा को चलाना।
२६. विपक्ष—सत्य और सुकृत का विपक्षी।
२७. अपधीक—निंद्य बुद्धि से उत्पन्न।

२८. उपधि-अशुद्ध—माया से सावद्य भाषण।
२९. अपलोप—यथार्थ को छिपाने वाली वाणी।

इस प्रकार ये सारे अभिवचन असत्य के उत्पादक, पोषक और असद् मार्ग के प्रतिष्ठापक हैं।

अवाय (अवाय)

'अवाय' जैन ज्ञानमीमांसा का पारिभाषिक शब्द है। मतिज्ञान के चार भेदों में इसका तीसरा स्थान है। किसी भी पदार्थ के बारे में निश्चयात्मक ज्ञान अवाय है।

नंदीसूत्र में प्रयुक्त 'आवट्टण' आदि शब्द अवाय के एकार्थक माने गए हैं। अभिधान की भिन्नता से वे भिन्न-भिन्न अर्थ के वाचक हैं[१], जैसे—

१. आवर्तन—निश्चित किये हुए अर्थ का आवर्तन करना।
२. प्रत्यावर्त्तन—उसका बार बार प्रत्यावर्त्तन करना, पुनरावृत्ति करना।
३. अवाय—उस अर्थ को भलीभांति जानना।
४. बुद्धि—उसी अर्थ को और अधिक स्पष्टता से जानना।
५. विज्ञान—उस अर्थ को दृढ़ता से जानना।

उमास्वाति ने इसके निम्न पर्याय शब्दों का उल्लेख किया है—अपगम, अपनोद, अपव्याध, अपेत, अपगत, अपविद्ध, अपनुत इत्यादि।[२] ये शब्द निषेधात्मक हैं।

अविराय (अविलीन)

'अविराय' का संस्कृत रूप अविलीन होता है। वि पूर्वक लीङ्च—श्लेषणे धातु को विरा आदेश होता है। हेमचन्द का प्राकृत व्याकरण (४/५६) में पविराय और पविलीण—इन दोनों को एकार्थक माना है। अविध्वस्त इस अर्थ में स्पष्ट ही है।

असण (अशन)

अशन, पान, खादिम, स्वादिम आदि शब्द स्पष्ट रूप से अलग-अलग

---

१. नंदीचू पृ. ३६ : अवायसामण्णतो णियमा एगट्ठिता चेव, अभिधानभिण्णत्तणतो पुण भिण्णत्था।
२. त. भा. १/१५।

अर्थ के वाचक हैं किन्तु आहार से सम्बन्धित होने के कारण टीकाकार ने इनको एकार्थक माना है।[1]

अहासुत्त (यथासूत्र)

यथासूत्र आदि सभी शब्द व्रत-पालन की विशिष्ट अवस्था के द्योतक हैं। व्रत-पालन में भावों की निर्मलता, विधि का अनुसरण तथा काल-मर्यादा का परिपालन आवश्यक होता है। ये शब्द इसी की ओर संकेत करते हैं। इनका अर्थबोध इस प्रकार है—

१. यथासूत्र—सूत्र के अनुसार।

२. यथाकल्प—प्रतिमा आदि व्रत की आचार-संहिता के अनुसार।

३. यथामार्ग—ज्ञानादि मोक्ष-मार्ग का अतिक्रमण न करना अथवा क्षायोपशमिक आदि भावों का अतिक्रमण न करना।

४. यथातथ्य—स्वीकृत व्रत का व्रत-भावना के अनुसार पालन करना।

५. यथासम्यक्— अतिचार रहित समभावना से व्रत का पालन।[2]

अहिंसा (अहिंसा)

अहिंसा के साठ नामों का उल्लेख प्रश्नव्याकरण सूत्र में मिलता है। अहिंसा मूल धर्म है। उसके अंगभूत अनेक गुण हैं, जैसे—विरति, दया, विमुक्ति, क्षान्ति, समता, धृति, स्थिति, नन्दा, भद्रा, कल्याण, मंगल, रक्षा, अनाश्रव, समिति, शील, संयम, संवर, गुप्ति, यतना, विश्वास, अभय आदि। ये सारे शब्द अहिंसा के वाचक हैं। अहिंसा के अभाव में इनका कोई मूल्य नहीं है। अहिंसा है तो ये हैं, अहिंसा नहीं है तो इनके अस्तित्व का आभास मात्र है। इसी प्रकार अन्यान्य पर्याय भी अहिंसा के ही संपोषक या संरक्षक तत्त्व हैं। कुछेक शब्दों की व्याख्या इस प्रकार है—

१. गति—अहिंसा सम्पदाओं की जननी है। कल्याण के इच्छुक व्यक्ति इसका आश्रय लेते हैं इसलिए यह गति है।

२. प्रतिष्ठा—यह समस्त गुणों की प्रतिष्ठा—आधारभूमि है।

३. निर्वाण—यह मोक्ष की हेतु है।

४. निर्वृति—यह स्वास्थ्य की हेतुभूत है।

---

१. प्रसाटी प ५१ : परमार्थत एकार्थिका एवैते शब्दा इति भेदकल्पनमयुक्तं, एवं समयभणित-निरुक्तविधिनाऽप्येकार्थत्वमेवैषामिति।

२. उपाटी पृ. ७३।

५. शक्ति—यह अन्यान्य शक्तियों की प्राण-प्रतिष्ठा करती है।
६. श्रुतांग—श्रुतज्ञान से निष्पन्न होने से श्रुतांग है।
७. क्षान्ति—क्षान्ति की उत्पत्ति में हेतुभूत।
८. सम्यक्त्वाराधना—जो सम्यक्त्व में प्रतिष्ठित है।
९. बृहती—सभी धर्मानुष्ठानों में प्रधान।
१०. बोधि—बोधि का अर्थ है—सर्वज्ञ धर्म की प्राप्ति। सर्वज्ञ धर्म अहिंसा प्रधान होता है।
११. बुद्धि—अहिंसा बुद्धि को निर्मल बनाती है, सफल बनाती है इसलिए अहिंसा बुद्धि है।
१२. धृति—चित्त की स्थिरता पैदा करने के कारण धृति।
१३. स्थिति—मुक्त स्थिति की प्रापक होने से स्थिति।
१४. पुष्टि—पुण्य का उपचय करने वाली।
१५. नन्दा—समृद्धि की ओर ले जाने वाली।
१६. भद्रा—कल्याणकारी।
१७. विशिष्टदृष्टि—जैनधर्म के विशिष्ट दर्शन की जननी।
१८. प्रमोद—प्रमोद भावना को बढ़ाने वाली।
१९. समिति—सम्यक् प्रवृत्ति होने से समिति।
२०. शीलपरिगृह—चारित्र का स्थान।
२१. व्यवसाय—विशिष्ट अध्यवसाय की कारणभूत।
२२. यज्ञ—अहिंसा भाव देवपूजा है।
२३. यजन—अभयदान की प्रेरक।
२४. आश्वास—प्राणियों में विश्वास उत्पन्न करने वाली।
२५. अमाघात—किसी भी प्राणी को न मारने का संकल्प।
२६. विमल—पवित्रता की प्रेरक।
२७. प्रभासा—दीप्ति की जननी।
२८. निर्मलतर—प्राणी को विशेष रूप से निर्मल बनाने वाली, स्वयं अत्यन्त निर्मल।

आइण्ण (आकीर्ण)

'आइण्ण' आदि शब्द जन-समवसरण के बोधक हैं। ये शब्द एकत्रित होने वाले देव या मनुष्यों की विभिन्न अवस्थाओं के वाचक हैं—

१. आकीर्ण—एकत्रित होकर फैल जाना।
२. विकीर्ण—अपनी सीमा से बाहर जाकर एकत्रित होना।
३. उपस्तीर्ण—क्रीड़ा करते हुए एक दूसरे को आच्छादित कर रहना।
४. संस्तीर्ण—परस्पर संश्लेष करना।
५. स्पृष्ट—आसन, शयन, रमण, परिभोग के द्वारा संश्लिष्ट होना।

यद्यपि ये शब्द देवक्रीड़ा के प्रसंग में आये हैं और देव-समूह के विभिन्न अंगों के अभिवाचक हैं फिर भी समूहगत मन: स्थिति के द्योतक हैं।[१]

आउडिज्जमाण (आकुट्यमान)

'आउडिज्जमाण' आदि सभी शब्द पीड़ा देने की विभिन्न अवस्थाओं के द्योतक हैं। कुछ शब्द वाचिक रूप से पीड़ा देने का बोध कराते हैं, जैसे—तर्जना, ताड़ना आदि। कुछ शब्द शारीरिक रूप से दु:ख देने के वाचक हैं, जैसे—परितापन, अपद्रवण इत्यादि।

आओसणा (आक्रोशना)

'आओसण' आदि शब्द आक्रोश व्यक्त करने की विभिन्न अवस्थाओं के द्योतक हैं[२]—

आक्रोश—क्रोध करना।
निर्भर्त्सन—भर्त्सना करना।
उद्धंसण—अपमानित करना।

आगासत्थिकाय (आकाशास्तिकाय)

आकाश के अभिवचन/पर्यायवाची नाम २७ हैं। व्युत्पत्तिगत भिन्नता भगवती टीका में उल्लिखित है—

१. आकाश—जिसमें सभी पदार्थ अपने-अपने स्वरूप में प्रकाशित होते हैं।
२. गगन—अबाधित गमन का कारण।
३. नभ—शून्य होने से जो दीप्त नहीं होता।
४. सम—जो एकाकार है, विषम नहीं है।
५. विषम—जिसका पार पाना दुष्कर है।
६. खह—भूमि को खोदने से अस्तित्व में आने वाला।

---

१. भटी प १५५ : आइन्नमित्यादय : एकार्था अत्यन्तव्याप्तिदर्शनाय।
२. निरटी पृ. १२ : एते समानार्था:।

७. विध—जिसमें विविध क्रियाएं की जाती हैं।
८. वीचि—विविक्त स्वभाव वाला।
९. विवर—आवरण न होने के कारण विवर।
१०. अम्बर—माता की भांति जनन सामर्थ्य से युक्त पानी का दान करने वाला।
११. अंबरस—जल को धारण करने वाला।
१२. छिद्र—छेदन से उत्पन्न होने वाला।
१३. झुषिर—रिक्तता को प्रस्तुत करने वाला।
१४. मार्ग—गमन करने का मार्ग।
१५. विमुख—प्रारम्भिक बिन्दु के अभाव के कारण विमुख।
१६. अर्द—जिससे गति की जाती है।
१७. आधार—आधार देने वाला।
१८. व्योम—जिसमें विशेष रूप से गमन किया जाता है।
१९. भाजन—समस्त विश्व का आश्रयभूत।
२०. अंतरिक्ष—जिसके बीच (नक्षत्र आदि) देखे जाते हैं।
२१. श्याम—नीला होने के कारण श्याम।
२२. अवकाशान्तर—दो अवकाशों के बीच होने वाला।
२३. अगम—जो स्थिर है, गमन क्रिया से रहित है।
२४. स्फटिक—स्फटिक की भांति स्वच्छ।
२५. अनन्त—अन्त रहित।[१]

आघविय (आख्यापित)

'आघविय' आदि शब्द कथन की विभिन्न अवस्थाओं के द्योतक हैं। इनका विशेष अर्थ इस प्रकार है—

१. आख्यापित—सामान्य कथन।
२. प्रज्ञापित—भेद-प्रभेद सहित कथन।
३. प्ररूपित—संदर्भ सहित कथन।
४. दर्शित—उपमा सहित व्याख्यान।
५. निदर्शित—हेतु, दृष्टान्त आदि के माध्यम से कथन।
६. उपदर्शित—उपनय, निगमन पूर्वक कथन, मतान्तर का कथन।

---

१. भटी पृ. १४३१।

आणा (आज्ञा)

आज्ञा शब्द कई अर्थों में प्रयुक्त होता है, जैसे—आदेश देना, उपदेश देना इत्यादि। इसके अतिरिक्त जैन आगमों में वीतराग व्यक्ति के उपदेश के अर्थ में भी आज्ञा शब्द का प्रयोग हुआ है। इसी दृष्टि से आज्ञा को ज्ञान और श्रुत भी कहा जा सकता है। जिसके द्वारा जाना जाता है, वह आगम भी आज्ञा का पर्याय है।

आभिणिबोहिय (आभिनिबोधिक)

आभिनिबोधिक शब्द मतिज्ञान का पर्याय है। इसके पर्याय शब्दों में कुछ-कुछ भेद है, लेकिन समष्टि रूप में सभी मतिज्ञान के वाचक हैं[१]—

१. ईहा—अन्वय-व्यतिरेक धर्मों से पदार्थ का पर्यालोचन।
२. अपोह—ज्ञान का निश्चय।
३. विमर्श—चिन्तन करना। यह ईहा और अवाय की मध्यवर्ती अवस्था है।
४. मार्गणा—अन्वय धर्म की खोज करना।
५. गवेषणा—व्यतिरेक धर्म की गवेषणा।
६. संज्ञा—व्यञ्जनावग्रह के पश्चात् होने वाली बुद्धि।
७. स्मृति—पूर्वानुभूत पदार्थों के आलम्बन से होने वाला ज्ञान।
८. मति—सूक्ष्म धर्मों को जानने वाली बुद्धि।
९. प्रज्ञा—विशिष्ट क्षयोपशम जन्य वस्तु को यथार्थ रूप में जानने वाला ज्ञान।

इस प्रकार ये सभी शब्द मतिज्ञान की विविध अवस्थाओं के वाचक हैं।[२]

आभोग (आभोग)

प्रतिलेखना का अर्थ है—निरीक्षण। जैन पारिभाषिक शब्दावलि में 'प्रतिलेखना' मुनि की एक चर्या है, जिसमें मुनि अपने उपयोग में आने वाली समस्त वस्तुओं का निरीक्षण करता है। यह शब्द उसी अर्थ में रूढ़ है। यहां उसकी विभिन्न अवस्थाओं के द्योतक दस पर्याय शब्दों का उल्लेख है—

१. आभोग—विधिपूर्वक निरीक्षण।
२. मार्गणा—किसी को पीड़ा पहुंचाए बिना निरीक्षण।
३. गवेषणा—दोष रहित शुद्ध वस्तु की याचना।

---

१. नंदीटी पृ. ५८ : किञ्चिद् भेदाद् भेद: प्रदर्शित:, तत्त्वतस्तु मतिवाचका: सर्व एते पर्यायशब्दा:।
२. आवहाटी १ पृ. १२।

४. ईहा—शुद्ध वस्तु की अन्वेषणा।

५. अपोह—मुनि द्वारा उपयोग में लाए जाने वाले पदार्थों में संसक्त जीव आदि को यतनापूर्वक अलग करना।

६. प्रतिलेखना—आगमानुसार उसका निरूपण करना, आचरण करना।

७. प्रेक्षण—सावधानीपूर्वक निरीक्षण करना।

८. निरीक्षण—सूक्ष्मता से देखना।

९. आलोचन—मर्यादा पूर्वक निरीक्षण करना।

१०. प्रलोकन—सघनता से निरीक्षण करना।[१]

आयट्ठि (आत्मार्थिन्)

'आयट्ठि' शब्द के पर्याय में ८ शब्दों का उल्लेख है। आत्मार्थी का तात्पर्य है मोक्षार्थी। आत्मा की रक्षा करने वाला ही मोक्षार्थी हो सकता है। इस प्रकार सभी शब्द आत्मार्थी शब्द के स्पष्ट वाचक हैं।

आयाम (आयाम)

यद्यपि आयाम और विष्कम्भ ये दोनों शब्द अलग-अलग अर्थ के द्योतक हैं। आयाम का अर्थ है लम्बाई और विष्कम्भ का अर्थ है चौड़ाई लेकिन ये दोनों माप के प्रकार हैं अतः नंदी चूर्णिकार ने इनको एकार्थक माना है।[२]

आयार (आचार)

'आयार' शब्द के दस पर्याय यहां संगृहीत हैं। यद्यपि सभी शब्द भिन्न-भिन्न अर्थ के वाचक हैं लेकिन तात्पर्य में सभी आचार अर्थ के वाचक हैं अतः टीकाकार ने इनको एकार्थक माना है। इनका वाच्यार्थ इस प्रकार है[३]—

१. आयार—जिसका आचरण किया जाता है।

२. आचाल—जिससे सघन कर्मों को प्रकम्पित किया जाता है।

३. आगाल—आत्म-प्रदेशों को समस्थिति में स्थित करने वाला।

४. आगर—जो ज्ञान आदि का आकर/खजाना है।

५. आश्वास—जहां व्यक्ति आश्वस्त होता है अथवा सुख की सांस लेता है।

---

१. ओनिटी प १२, १३।

२. नंदीचू पृ. २५।

३. आटी प ५ : एते किञ्चिद् विशेषादेकमेवार्थं विशिंषन्तः प्रवर्त्तन्ते इत्येकार्थिकानि, शक्रपुरन्दरादिवत्।

६. आदर्श—जिसमें व्यक्ति स्वयं को देखता है।
७. अंग—जिसमें भाव आचार की अभिव्यक्ति की जाती है।
८. आचीर्ण—जो आचरित होता है।
९. आजाति—जिसमें ज्ञान आदि उत्पन्न होते हैं।
१०. आमोक्ष—कर्म-बन्धन से सर्वथा मुक्त करने वाला।

आलोयणा (आलोचना)

आलोचना का शाब्दिक अर्थ है—चारों ओर से देखना। साधक अपनी भूलों को विशेष रूप से देखता है, वह आलोचना है। आलोचना के विविध रूप प्रस्तुत पर्याय-शब्दों में उल्लिखित हैं। उनका आशय इस प्रकार है—

१. आलोचना—विधिपूर्वक अपनी भूल को गुरु के सामने निवेदन करना।
२. विकटना—अपनी भूल को स्पष्टता व सरलता से स्वीकारना।
३. शोधि—अतिचार मल को धोना।
४. सद्भावदायना—यथार्थ का अभिव्यक्तीकरण।
५. निंदा—आत्मसाक्षी से अपने दोषों की आलोचना करना।
६. गर्हा—गुरुसाक्षी से अपने दोषों की निंदा करना।
७. विकुट्टन—अतिचार या गलती के अनुबंध का छेद करना।
८. शल्योद्धार—मिथ्यादर्शन आदि शल्यों का निवारण करना।

आवस्सय (आवश्यक)

जो साधु एवं श्रावकों द्वारा अवश्यकरणीय है, वह आवश्यक है। इसका अपर नाम प्रतिक्रमण है। इसके लगभग सभी पर्याय गुणनिष्पन्न हैं।

१. आवश्यक—ज्ञानादि गुणों को अथवा मोक्ष को चारों ओर से वश में करने वाला अथवा इन्द्रिय, कषाय आदि शत्रुओं को वश में करने वाला।
२. आवासक—गुणों से आत्मा को भावित करने वाला।
३. ध्रुवनिग्रह—अनादि संसार का निग्रह करने वाला।
४. विशोधि—कर्म-मलिन आत्मा को विशुद्ध करने वाला।
५. अध्ययनषट्वर्ग—सामायिक, चतुर्विंशतिस्तव, वंदना, प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग और प्रत्याख्यान—इन छह अध्ययनों से युक्त।
६. न्याय—अभीष्टार्थ की सिद्धि में सहायक।

७. आराधना—मोक्ष की आराधना का हेतु।
८. मार्ग—मोक्ष तक पहुंचाने का मार्ग।

आसंदग (आसंदक)

पादपीठ के अर्थ में 'आसंदग' शब्द के पर्याय में चार शब्दों का उल्लेख है। यद्यपि इन चारों में आकार-प्रत्याकार कृत भिन्नता है लेकिन सभी आसन विशेष का अर्थ व्यक्त करते हैं अत: ये एकार्थक हैं। निशीथचूर्णि में काष्ठमय आसन्दक का उल्लेख मिलता है।

आसुरत्त (आसुरत्व)

कोपातिशय को प्रकट करने के लिए आसुरत्त आदि शब्द एकार्थक हैं।[१] लेकिन इनका अवस्था कृत भेद इस प्रकार है—

आसुरत्व—शीघ्र कुपित होना, असुर की भांति कोप करना। भगवती के टीकाकार ने इसका अर्थ क्रोध से विमूढ मति वाला किया है।
रुष्ट—रोष युक्त रहना।
कुपित—मानसिक क्रोध।
चांडिक्य—चेहरे पर कठोरता के भाव प्रकट होना।
मिसिमिसेमाण—क्रोधाग्नि से जलना। इस अवस्था में व्यक्ति की आंखें व मुंह लाल हो जाते हैं।

आहाकम्म (आधाकर्मन्)

साधुओं को लक्ष्य कर की जाने वाली पचन-पाचन की प्रवृत्ति आधाकर्म कहलाती है। यह भिक्षा के ४२ दोषों में प्रथम दोष है। आत्मा का हनन करने से आयाहम्म (आत्मघ्न), साधुओं के लिए दोष पूर्ण होने से अध:कर्म तथा संयमी के निमित्त से बनाये जाने के कारण आत्मकर्म आदि इसके पर्यायवाची नाम हैं।

आहेवच्च (आधिपत्य)

नेतृत्व के द्योतक 'आहेवच्च' शब्द के पर्याय में ५ शब्द प्रयुक्त हैं। इनका अर्थ-भेद इस प्रकार है—

१. आधिपत्य—अनुशासन।
२. पौरपत्य—अग्रगामिता।

---

१. उपाटी पृ. १०५ : एकार्था: शब्दा: कोपातिशयप्रदर्शनार्था:।

३. भर्तृत्व—संरक्षण व पोषण।
४. स्वामित्व—स्वामिभाव।
५. महत्तरकत्व—श्रेष्ठीभाव।

इंद (इन्द्र)

देखें—सक्क।

इज्जा (दे)

माता के अर्थ में 'इज्जा' देशी शब्द है। उस समय वज्रा आदि विविध प्रकार की देवियां माता के रूप में प्रसिद्ध थीं। चूर्णिकार ने इसका एक अर्थ यज्ञ भी किया है।[1]

गर्भ-निर्गमन के समय बच्चे का जो आकार होता है, वह आकार देवपूजा में होना चाहिए। अनुयोगद्वार सूत्र में इज्याञ्जलि शब्द का प्रयोग उसी रूप में हुआ। प्राचीन काल में हर पूजा के साथ विशेष प्रकार की देवियां सम्बन्धित रहती थीं इसलिए संभव है कि ये चारों शब्द किसी एक देवी विशेष के लिए प्रयुक्त हों।

इट्ठ (इष्ट)

इट्ठ के पर्यायवाची शब्दों का अनेक स्थलों से संग्रहण है। ये पर्यायवाची शब्द भिन्न-भिन्न स्थलों पर भिन्न-भिन्न वस्तु के विशेषण के रूप में प्रयुक्त हैं। औपपातिक सूत्र में 'इट्ठ' से लेकर 'हिययपल्हायणिज्ज' तक के शब्द वाणी के विशेषण के रूप में एकार्थक हैं।[2] इनका अर्थ-बोध इस प्रकार है—

१. इष्ट—मन को प्रीतिकर।
२. कान्त—कमनीय, सहज सुन्दर।
३. प्रिय—प्रियता पैदा करने वाली।
४. मनोज्ञ—मनोहर, भावों से सुन्दर।
५. मणाम—मन को भाने वाली।
६. मनोभिराम—चिरकाल तक मन को प्रसन्न करने वाली।
७. उदार—महान् शब्द और अर्थ वाली।
८. कल्याण—शुभप्राप्ति की सूचना देने वाली।

---

१. अनुद्वाचू पृ. १३।
२. औपटी प १३८, १३९ : एकार्थिकानि वा प्राय: इष्टादीनि वाग्विशेषणानीति।

९. शिव—उपद्रव रहित, शब्द और अर्थ के दोषों से रहित।
१०. धन्य—धन्यता प्राप्त कराने वाली।
११. मंगल—अनर्थ का प्रतिघात करने वाली।
१२. हृदयगमनीय—सुबोध, शीघ्र समझ में आने वाली।
१३. हृदयप्रल्हादनीय—हृदयगत क्रोध, शोक आदि की ग्रंथि को नष्ट करने वाली।

ईसिपब्भारपुढवी (ईषत्प्राग्भारापृथ्वी)

ईषत्प्राग्भारापृथ्वी समय क्षेत्र के बराबर लम्बी-चौड़ी है। उसके मध्य भाग की लम्बाई आठ योजन की है और उसका अन्तिम भाग मक्खी के पंख से भी अधिक पतला है। इसका आकार सीधे छत्ते जैसा है तथा यह श्वेत स्वर्णमयी है। वहां सिद्ध/मुक्त जीव निवास करते हैं अतः सिद्धालय, सिद्धि, मुक्तालय, मुक्ति आदि इसके पर्याय हैं। यह अन्य पृथ्वियों से छोटी है अतः तनु, तनुतरी आदि नाम हैं। लोकाग्र में स्थित होने से लोकाग्र, लोकाग्रचूलिका भी इसके पर्याय हैं। यह समस्त देवलोकों से ऊपर है इसलिए इसका एक नाम ब्रह्मावतंसक भी है। यह ईषत्/कुछ झुकी हुई है अतः ईषत् प्राग्भारा कहलाती है।[१]

ईहा (ईहा)

'अमुकेन भाव्यमिति प्रत्यय ईहा' 'यह ही होना चाहिए' इस प्रकार निश्चयात्मक ज्ञान ईहा है। तत्त्वार्थसूत्र में ऊह, तर्क, परीक्षा, विचारणा, जिज्ञासा ईहा के पर्यायवाची हैं।[२] प्रस्तुत एकार्थक सामान्य रूप से ईहा के पर्याय हैं, लेकिन अर्थ के विकल्प से इनमें भिन्नता भी है[३]—
१. आभोगण—अर्थाभिमुख आलोचना।
२. मार्गणा—अन्वय-व्यतिरेक पूर्वक समालोचन।
३. गवेषणा—व्यतिरेक धर्म को छोड़कर अन्वय धर्म के आधार पर समालोचन।
४. चिंता—पुनः पुनः समालोचन।
५. विमर्श—पदार्थ के अनित्य आदि धर्मों का विमर्श।

इस प्रकार ये सभी शब्द ईहा के अन्तर्गत क्रमिक भूमिकाओं के द्योतक हैं। इन भूमिकाओं को पार करने में अन्तर्मुहूर्त्त का समय लगता है।

---

१. निपीचू पृ. ३२।
२. त. भा. १/१५।
३. नंदीचू पृ. ३६ : ईहा सामण्णतो एगट्ठिता चेव, अत्थविकप्पणतो पुण भिण्णत्था।

उउमास (ऋतुमास)

प्रत्येक ऋतुमास ३० दिन का होता है अत: एक युग के (१८३०÷३०) इकसठ ऋतुमास होते हैं। इसके दो नाम हैं—सावन-संवत्सर और कर्म-संवत्सर। स्थानांग सूत्र में कर्म-संवत्सर की व्याख्या इस प्रकार है—

जिस संवत्सर में वृक्ष असमय में अंकुरित हो जाते हैं, असमय में फूल तथा फल आ जाते हैं, वर्षा उचित मात्रा में नहीं होती, उसे कर्म-संवत्सर कहते हैं।

उक्कंचण (उत्कञ्चन)

'उक्कंचण' से 'साइसंपयोग' तक के शब्द माया के एकार्थवाची हैं। टीकाकार ने इन शब्दों का सूक्ष्म विश्लेषण किया है।

१. उत्कञ्चन—गुणहीन पदार्थों के गुणों का उत्कर्ष प्रतिपादन करना जिससे ज्यादा मूल्य प्राप्त किया जा सके।
२. वञ्चन—दूसरों को ठगना।
३. माया—छलने की बुद्धि।
४. निकृति—बकवृत्ति से जेबकतरे की तरह व्यवहार करना।
५. कूट—तोल-माप सम्बन्धी न्यूनाधिकता।
६. कपट—वेश बदलकर अथवा भाषाविपर्यय से किसी को ठगना।
७. सातिसंप्रयोग—बहुलता से वक्रता का प्रयोग अथवा सातिशय द्रव्य कस्तूरी आदि में अन्य द्रव्यों की मिलावट।

'सो होइ साइजोगो, दव्वं जं छुहिय अन्नदव्वेसु।
दोसगुणा वयणेसु य, अत्थविसंवायणं कुणइ॥[1]

उक्किट्ठ (उत्कृष्ट)

उक्किट्ठ आदि शब्द गति के विशेषण के रूप में प्रयुक्त हैं। ये सभी शब्द गति-त्वरा के अर्थ में एकार्थक हैं।[2]

कुछ शब्दों की अर्थवत्ता इस प्रकार है—

१. उत्कृष्ट—उत्कृष्ट गति से चलना।
२. त्वरित—शरीर को हिलाते हुए चलना।

---

१. ज्ञाटी पृ. ८६।
२. भटी प १७८ : एकार्था वैते शब्दा: प्रकर्षवृत्तिप्रतिपादनाय।

३. चंड—आकुल-व्याकुल होकर गति करना।

४. छेक—कुशलता पूर्वक चलना।

५. सिंह—सिंह के समान बिना आयास के चलना।

उक्खड्डुमड्डु (दे)

कुछ शब्द ध्वनि से अपना अर्थ अभिव्यक्त करते हैं। इसे अंग्रेजी में 'ओनोमोटोपिया' कहते हैं, जैसे—चमचमाना इत्यादि। उक्खड्डुमड्डु शब्द बार बार के अर्थ में देशी है। उच्चारणमात्र से यह शब्द अपना अर्थ अभिव्यक्त करता है।

उग्गविस (उग्रविष)

'उग्गविस' आदि चारों शब्द विष की उत्तरोत्तर भयंकरता को द्योतित करते हैं—

१. उग्रविष—दुर्जर विष।

२. चण्डविष—शरीर में शीघ्र ही व्याप्त होने वाला विष।

३. घोरविष—आगे से आगे हजारों पुरुषों तक फैलने वाला विष।

४. महाविष—शीघ्र मारने वाला विष।[१]

उग्गह (अवग्रह)

इन्द्रियार्थयोगे दर्शनानन्तरं सामान्यग्रहणमवग्रहः—इन्द्रिय और अर्थ का सम्बन्ध होने पर नाम आदि की विशेष कल्पना से रहित सामान्य ज्ञान को अवग्रह कहते हैं। यह मतिज्ञान का भेद है तथा इस अवस्था में निश्चयात्मक ज्ञान नहीं होता। तत्त्वार्थभाष्य में अवग्रह, ग्रह, ग्रहण, आलोचन और अवधारण को एकार्थक माना है।[२]

'उग्गह' के सभी शब्द सामान्य रूप से एकार्थक होने पर भी अवग्रह के विभाग करने पर भिन्न-भिन्न अर्थों के वाचक बनते हैं।[३]

अवग्रह के दो भेद हैं—व्यंजनावग्रह और अर्थावग्रह। प्रस्तुत एकार्थकों में प्रथम दो व्यञ्जनावग्रह से और तीसरा, चौथा भेद अर्थावग्रह से सम्बन्धित है। पांचवां भेद 'मेधा' उत्तरोत्तर विशेष-सामान्य अर्थावग्रह से सम्बन्धित है। विशेष व्याख्या के लिए देखें—नंदीचू. पृ. ३५।

---

१. भटी पृ. १२३५।

२. तत्त्वार्थ भाष्य १/१५।

३. नंदी चू पृ. ३५ : ओग्गहसामण्णतो पंच वि णियमा एगट्ठिता। उग्गहविभागे पुण कज्जमाणे उग्गहविभागंसेण भिण्णत्था भवंति।

उच्चच्छंद (उच्चच्छंद)

यहां संगृहीत तीनों शब्द स्वच्छंद व्यक्ति के अर्थ में एकार्थक हैं। जैसे—

१. उच्चच्छंद—आत्म-श्लाघा में प्रवण।

२. अनिग्रह—स्वच्छंदचारी।

३. अनियत—अव्यवस्थित।[१]

उज्जल (उज्ज्वल)

'उज्जल' आदि शब्द वेदना के विशेषण के रूप में प्रयुक्त हैं। समवेत रूप में एकार्थक होते हुए भी इन शब्दों में अवस्थाकृत भेद है।[२] कुछ शब्दों की अर्थवत्ता इस प्रकार है—

उज्ज्वल—वह वेदना, जिसमें सुख का अंश भी नहीं हो।

विपुल—सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त।

त्रितुल—मन, वचन और काया तीनों की कसौटी करने वाली।

प्रगाढ़—मर्म प्रदेशों में व्याप्त होने वाली।

कर्कश—कर्कश पत्थर के स्पर्श की तरह आत्मप्रदेशों को प्रभावित करने वाली।

कटुक—कटुक द्रव्य की भांति व्याकुल करने वाली।

निष्ठुर—प्रतीकार करने में अशक्य।

चण्ड, प्रचण्ड—रौद्र, शीघ्र ही सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त होने वाली।

तीव्र—अतिशय वेदना।

दु:ख—दु:ख देने वाली।

बीहणग—भयोत्पादक।

दुरहियास—असह्य वेदना।

उज्जुय (ऋजुक)

ऋजु, अकुटिल और भूतार्थ—ये तीनों एकार्थक हैं। भूतार्थ का अर्थ है—यथार्थ। यथार्थ ऋजु ही होता है। बौद्धसूत्रों में ऋजुता के पर्याय में उजुता, उजुकता, अजिम्हता, अवङ्कता, अकुटिलता आदि शब्दों का उल्लेख हुआ है।[३]

उट्ठाण (उत्थान)

'उट्ठाण' आदि पांचों शब्द विभिन्न प्रकार के पुरुषार्थ के द्योतक हैं, जैसे—

---

१. प्रटी प ३१।

२. विपाटी प ४१ : उज्जला……दुरहियास त्ति एकार्था एव।

३. धसं पृ. ७८।

१. उत्थान—उठना, चेष्टा करना आदि।
२. कर्म—प्रवृत्ति।
३. बल—शारीरिक-सामर्थ्य।
४. वीर्य—जीवनी-शक्ति, आन्तरिक सामर्थ्य।
५. पराक्रम—कार्य-निष्पत्ति में प्रबल प्रयत्न।
६. पुरुषकार—अभिमान से उत्पन्न पुरुषार्थ।

उत्तरकरण (उत्तरकरण)

'उत्तरकरण' आदि चारों शब्द भिन्न-भिन्न अर्थ के द्योतक होते हुए भी समवेत रूप से सभी विशुद्धीकरण के अर्थ को व्यक्त करते हैं अत: चूर्णिकार ने इनको एकार्थक माना है।[1] इनका अर्थ-बोध इस प्रकार है—
१. उत्तरकरण—व्रत आदि को और अधिक उत्कृष्ट बनाना।
२. प्रायश्चित्तकरण—अतिचार लगने पर उसकी आलोचना करना।
३. विशोधीकरण—अतिचार आदि दोषों को विशुद्ध करना।
४. विशल्यीकरण—तीनों शल्यों से आत्मा को मुक्त करना।

उद्दिट्ठ (उद्दिष्ट)

'उद्दिट्ठ' आदि शब्द वर्णन की विविध पद्धतियों के वाचक हैं—
१. उद्दिष्ट—सामान्य रूप से कथन करना।
२. गणित—संख्या द्वारा वर्ण्य विषय को निर्दिष्ट करना।
३. व्यञ्जित—नामोल्लेखपूर्वक कथन करना।

उप्पल (उत्पल)

'उत्पल' शब्द के पर्याय में जिन शब्दों का उल्लेख हुआ है, वे द्रव्यास्तिक नय से सभी पर्यायवाची हैं, लेकिन पर्यायास्तिक नय की अपेक्षा से सभी शब्द कमल की भिन्न-भिन्न जाति और वर्ण के आधार पर व्यवहृत हैं[2], जैसे—
१. उत्पल—नीलकमल।
२. पद्म—सूर्यविकासी रक्त कमल।
३. कुमुद—चन्द्रविकासी कमल।
४. नलिन—कुछ लाल कमल।
५. सुभग—कमल का प्रकार।

---

१. आवचू २ पृ. २५१।
२. औपटी पृ. १९४ : उप्पलादीनां चार्थभेदो वर्णादिभि:।

६. सौगंधिक—शरद् ऋतु में होने वाला सुगन्धित कमल।
७. पुण्डरीक—श्वेत कमल।
८. महापुण्डरीक—बड़ा श्वेत कमल।
९. शतपत्र—सौ पत्तों वाला कमल।
१०. सहस्रपत्र—हजार पत्तों वाला कमल।
११. कोकनद—रक्त कमल।
१२. अरविंद—पंखुड़ियों के द्वारा जाना जाने वाला।
१३. तामरस—पानी में उत्पन्न होने वाला कमल।[1]
१४. भिस—कमलनाल।
१५. पुष्कल—श्रेष्ठ कमल।

उप्पायण (उत्पादन)

भोजन के ४२ दोषों में उत्पादन के दस दोष हैं। भोजन की उत्पत्ति में जो दूषण होते हैं, वे उत्पादन दोष कहलाते हैं। ये तीनों शब्द इसी अर्थ के वाचक हैं।

उवसग (उपाश्रय)

'उवसग' आदि सभी शब्द स्थानवाचक हैं। इनकी अभिव्यञ्जना भिन्न-भिन्न होने पर भी आश्रय देने के आधार पर ये सभी एकार्थक हैं।[2]

उवहि (उपधि)

उपधि शब्द के पर्याय में आठ शब्दों का उल्लेख है। सभी शब्द उपधि के विशेष गुणों को व्यक्त करते हैं[3]—

१. उपधि—जो धारण करता है, पुष्ट करता है।
२. उपग्रह—जो समीप से धारण किया जाता है।
३. संग्रह—जिसका संग्रह किया जाता है।
४. प्रग्रह—जिसका विशेष रूप से संग्रह किया जाता है।

---

१. देसी पृ. ३५७ : 'तामरसं' जलोद्भवं पुष्पम्। 'तामरस' शब्दः म्लेच्छभाषासंबन्धी, न तु आर्यभाषासंबन्धी—इत्येवं मीमांसासूत्रभाष्यकारो जैमिनिमुनिः प्राह स्वभाष्ये (अ १ पा ३ सू १० अधि ५)।

२. बृकटी पृ. ९२५ : एतान्येकार्थानि नानाव्यञ्जनानि पृथगक्षराण्युपाश्रयस्य नामानि।

३. ओनिटी प. २०७ : 'तत्त्वभेदपर्यायैर्व्याख्ये' इति न्यायात्·····।

५. अवग्रह—जिसको बार-बार ग्रहण किया जाता है।
६. भण्डक—पात्र विशेष।
७. उपकरण—जो उपकार करता है।
८. करण—जो संयम-यात्रा में सहायक बनता है।

ऋतुसंवत्सर (ऋतुसंवत्सर)

देखें—'उउमास'।

एजणा (एजन)

कंपन के अर्थ में 'एजण' आदि सात शब्दों का उल्लेख है। ये सभी शब्द हलन-चलन की उत्तरोत्तर अवस्थाओं के द्योतक हैं—
१. एजन—सामान्य कंपन।
२. व्यंजन—विशेष कंपन।
३. क्षोभण—तीव्रता से क्षुब्ध करना अथवा किसी वस्तु में प्रवेश करना।
४. घट्टन—सब दिशाओं में चलना अथवा दो वस्तुओं का आपस में संघर्षण।
५. स्पंदना—किंचित् चलन।
६. चालन—इधर-उधर थोड़ा हिलाना।
७. उदीरण—प्रबलता से इधर-उधर करना या गति कराना।

ओयंसि (ओजस्विन्)

महानता एक और अखण्ड होती है। उसके अनेक कोण हैं। वे कोण अखण्ड महानता को ही परिपुष्ट करने वाले होते हैं। यहां चार कोण ये हैं—
१. ओजस्वी—मानसिक अवष्टम्भ वाला।
२. तेजस्वी—शारीरिक कांति से युक्त।
३. वर्चस्वी, वचस्वी—प्रभावशाली अथवा वचनातिशय से युक्त।
४. यशस्वी—ख्याति वाला।

ओराल (उदार)

'ओराल' शब्द के पर्याय में तेरह शब्दों का उल्लेख है। ये सभी शब्द विपुलता और प्रशस्तता का बोध कराते हैं। अन्तकृद्दशा की टीका में ये सभी शब्द तप के विशेषण के रूप में एकार्थक माने गये हैं।[1] इनकी अर्थपरम्परा इस प्रकार है—

१. अंतटी प २६ : एते तपोविशेषणशब्दा एकार्थाः, अर्थभेदविवक्षायां तु प्रथमशतकविवरणाणुसारेण ज्ञेयाः।

१. उदार—आकांक्षा/आशंसा रहित तप।
२. विपुल—दीर्घकालीन तप।
३. प्रयत—प्रमाद रहित होकर किया जाने वाला तप।
४. प्रगृहीत—विशिष्ट व्यक्तियों के द्वारा आचीर्ण।
५. कल्याण—निरोगकर।
६. शिव—कल्याणकारी।
७. धन्य—धार्मिक अनुष्ठान के कारण धन्यता से युक्त।
८. मंगल—पाप को शमित करने वाला।
९. सश्रीक—सत् परिणाम देने वाला।
१०. उदग्र—उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त।
११. उदात्त—निस्पृह तप।
१२. उत्तम—सर्वश्रेष्ठ।
१३. महानुभाग—महाप्रभावशाली।

ओवीलेमाण (अवपीडयत्)

'ओवीलेमाण' आदि शब्द पीड़ा देने की विभिन्न अवस्थाओं के वाचक हैं। देखें—'आउडिज्जमाण'।

कंची (काञ्ची)

ये सभी शब्द विभिन्न प्रकार की करधनी (कटि के आभूषण) के वाचक हैं। प्राचीन काल में करधनी पहनने की परम्परा अनेक जातियों में थी और आज भी यह परम्परा प्रचलित है।
देखें—'कडीय'।

कंति (कान्ति)

कान्ति, दीप्ति आदि शब्द अवस्था भेद से प्रकाश के वाचक हैं।
देखें—'जुइ'।

कंदण (क्रन्दन)

देखें—'रोयमाणी'।

कक्क (कर्क)

कक्क और रत्न—ये दोनों शब्द इन्द्रनील आदि सर्वोत्तम रत्न के लिए प्रयुक्त होते हैं।

कक्क (कल्क)

देखें—'माया'।

कण्हराति (कृष्णराजि)

कृष्ण का अर्थ है—काली और राजि का अर्थ है—रेखा। काले रंग की पुद्गल रेखा को कृष्णराजि कहते हैं। भिन्न-भिन्न स्थितियों के आधार पर इसके आठ नाम हैं। इन नामों की सार्थकता इस प्रकार है[१]—

मेघराजि—यह काले मेघ के समान कृष्ण वर्ण वाली।

मघा, माघवती—छठी और सातवीं नरक की भांति सघन अंधकारमय।

वातपरिघ—वायु के लिए अर्गला के समान। इसमें से वायु भी प्रवेश नहीं कर सकती।

वातपरिक्षोभ—प्रवेश न देने के कारण वायु को क्षुब्ध करने वाली।

देवपरिघ—देवताओं के लिए अर्गला के समान।

देवपरिक्षोभ—देवताओं के क्षोभ का हेतु।

कमल (कमल)

देखें—'उप्पल'।

कम्म (कर्मन्)

कर्म आत्मा को मलिन करते हैं। इस आधार पर कर्म के कुछ नाम मलिनता के वाचक हैं जैसे—पणग, पंक, मइल्ल, कलुष, मल इत्यादि। कर्म दुःख परम्परा का मूल है अतः कारण में कार्य का उपचार कर खुह, असात, क्लेश, दुप्पक्ख आदि शब्द कर्म के वाचक हैं। संपराय का अर्थ है—संसार। कर्म संसार का कारण है। इसे प्रकम्पित किया जाता है इसलिए धुत्त भी इसका पर्याय है। मइल्ल, वोण्ण आदि शब्द इसी अर्थ में देशी हैं।

करोडक (दे)

करोडग आदि शब्द विभिन्न प्रकार के छोटे-बड़े कटोरे के वाचक हैं। जैसे—गोल, चपटा, चतुष्कोण कटोरा इत्यादि।

कसाय (कषाय)

कषाय का अर्थ है—आत्मा का रागद्वेषात्मक उत्ताप, परिणति। भाव और पर्याय भी आत्म-परिणाम के वाचक हैं।

१. भटी प २६१।

कसिण (कृत्स्न)

'कसिण' आदि चारों शब्द परिपूर्णता के द्योतक हैं—

१. कृत्स्न—सभी दृष्टियों से पूर्ण।

२. प्रतिपूर्ण—आत्म-स्वरूप से परिपूर्ण।

३. निरवशेष—स्व स्वभाव से अन्यून।

४. एकग्रहणगृहीत—एक शब्द से अभिधेय।[1]

काण (दे)

काने व्यक्ति के लिए प्रयुक्त ये तीनों शब्द देशी हैं।

काय (काय)

'काय' शब्द के पर्याय में तेरह शब्दों का उल्लेख है। काय का अर्थ है—शरीर। शरीर की विभिन्न अवस्थाओं के आधार पर ये पर्याय शब्द बने हैं। जैसे—शरीर पुष्ट होता है इसलिए काय, उपचय, संघात, उच्छ्रय, समुच्छ्रय, देह आदि शब्द इसके पर्याय हैं। यह जीर्ण-शीर्ण होता है, इसलिए शरीर कहलाता है। शरीर प्राण ग्रहण करता है इसलिए प्राणु तथा धोंकनी की तरह श्वास लेता है इसलिए भस्त्र (भस्त्रा) कहलाता है। बुंदी आदि शब्द इसी अर्थ में देशी हैं।

काल (काल)

काल, अद्धा और समय—ये तीनों शब्द पारिभाषिक दृष्टि से भिन्नार्थवाची हैं। समय काल का ही एक सूक्ष्मतम भेद है। व्यावहारिक नय से तीनों शब्द एक ही अर्थ के वाचक हैं। अद्धा शब्द इसी अर्थ में देशी है।

काहापण (कार्षापण)

'काहापण' शब्द के पर्याय में चार शब्दों का उल्लेख है। कार्षापण भारत वर्ष का अत्यधिक प्रचलित सिक्का था। मनुस्मृति में इसे पुराण भी कहा है। चांदी के कार्षापण या पुराण का वजन ३२ रत्ती था।[2] खत्तपक (क्षत्रपक) राजाओं का प्रसिद्ध सिक्का होता था।[3]

कित्ति (कीर्ति)

'कित्ति' आदि शब्द प्रशंसा के अर्थ में एकार्थक हैं। इनका अर्थ-भेद इस प्रकार है—

---

१. भटी प १४९ : एकार्थाः वैते शब्दाः।

२. मनु ८/१३५, १३६।

३. अंवि प्रस्तावना पृ. १३।

१. कीर्ति—दूसरों के द्वारा गुणकीर्तन, दान, पुण्य आदि से होने वाली प्रसिद्धि।
२. वर्ण—लोकव्यापी यश।
३. शब्द—लोक-प्रसिद्धि।
४. श्लोक—ख्याति।

दशवैकालिक सूत्र के टीकाकार हरिभद्र ने क्षेत्र के आधार पर इनका अर्थ-भेद किया है, जैसे—सर्व दिग्व्यापी प्रशंसा कीर्ति, एक दिग्व्यापी प्रसिद्धि वर्ण, अर्धदिग्व्यापी प्रशंसा 'शब्द' तथा स्थानीय प्रशंसा श्लोक है।[१]

कुंडल (कुण्डल)

'कुंडल' शब्द के पर्याय में ११ शब्दों का उल्लेख है। लगभग सभी शब्द कर्ण से प्रारम्भ हैं। बक, तलपत्तक, दक्खाणक, मत्थग आदि शब्द आज अप्रचलित हैं। कुछ शब्दों का आशय इस प्रकार है—

१. कर्णकोपक—भारी होने से कान को लम्बा करने वाला कुंडल।
२. कर्णपीड—कान को पीड़ा पहुंचाने वाला।
३. कर्णपूर—पूरे कान को ढंकने वाला।
४. कर्णकीलक—कील के माध्यम से कान में पहनी जाने वाली बाली।
५. कर्णलोटक—कान के नीचे लटकने वाले लम्बे झूमके।

कुल (कुल)

देखें—'संघ'।

केज्जूर (केयूर)

'केज्जूर' शब्द के पर्याय में ७ शब्दों का उल्लेख है। बाजूबंध के अर्थ में इन शब्दों का प्रयोग हुआ है। लेकिन इनमें आकृतिगत भिन्नता अवश्य है। 'तलभ' कंदूग, परिहेरग आदि शब्द इसी अर्थ में देशी हैं।

केवल (केवल)

यहां 'केवल' शब्द केवलज्ञान के अर्थ में प्रयुक्त है। इस ज्ञान में सतत उपयोग रहता है इसलिए इसे अनिवारितव्यापार व अविरहितोपयोग कहते हैं। यह अपने आप में परिपूर्ण है इसलिए एक तथा इसका कभी अंत नहीं होता अतः अनन्त है। विकल्पों से रहित होने से अविकल्पित तथा मोक्ष प्राप्त कराने का साधन होने से नैर्यात्रिक आदि इसके पर्याय नाम हैं।

---

१. दशहाटी पृ. ४७१।

कोह (क्रोध)

क्रोध शब्द के प्रसंग में दस पर्याय शब्दों का उल्लेख भगवती सूत्र में हुआ है। कलह से विवाद तक के शब्द क्रोध के कार्य हैं। लेकिन कारण में कार्य का उपचार करके इनको टीकाकार ने एकार्थक माना है[१]—

१. क्रोध—सामान्य अवस्था।
२. कोप—क्रोध आने पर स्वभाव से चलित होना।
३. रोष—क्रोध की परम्परा, लम्बे समय तक क्रोध का अनुबंध मन में रखना।
४. दोष—स्वयं को अथवा दूसरों को किसी घटना के लिए दोषी ठहराना अथवा अप्रीति मात्र द्वेष।
५. अक्षमा—दूसरों के अपराध को सहन न करना।
६. संज्वलन—क्रोध से निरन्तर मन ही मन जलते रहना।
७. कलह—जोर-जोर से शब्द करते हुए परस्पर अनुचित शब्द बोलना।
८. चांडिक्य—रौद्र रूप धारण करना। जैसे—नसों का फड़कना, आंख व मुंह का लाल होना आदि।
९. भंडण—लकड़ी आदि से लड़ना।
१०. विवाद—परस्पर एक दूसरे के लिए निरन्तर आक्षेपात्मक शब्द बोलना।[२]

दोष तक क्रोध मानसिक रूप में रहता है। कलह तक वाचिक तथा चांडिक्य से विवाद तक के शब्दों में क्रोध शारीरिक स्तर पर उतरने लगता है।

पाली साहित्य में आघात, पटिघात, पटिघ, पटिविरोध, कोप, पकोप, सम्पकोप, दोस, पदोस, चित्तस्स व्यापत्ति, मनोपदोस, क्रोध, कुज्झना, कुज्झितत्त, दुस्सना, दुस्सितत्त, विरोध, पटिविरोध, चण्डिक्क, असुरोप आदि शब्द क्रोध के वाचक माने हैं।[३]

खंत (क्षान्त)

जो विषय और कषायों से शान्त रहता है, वह क्षान्त कहलाता है। यहां ये पांचों शब्द इसी भावना के द्योतक हैं—

१. क्षान्त—क्रोध-निग्रह करने वाला।
२. अभिनिर्वृत—सभी तरह से प्रशान्त।

---

१. भटी प १०५१ : क्रोधैकार्था वैते शब्दाः।
२. भटी १०५१।
३. धसं पृ. २७१।

३. दान्त—इन्द्रिय-संयम करने वाला।
४. जितेन्द्रिय—विषयों में अनासक्त।
५. वीतगृद्धि—जो आसक्तियों से दूर है।

खद्ध (दे)

ये पांचों शब्द भोजन के प्रसंग में प्रयुक्त हैं। शीघ्रता के अर्थ में ये सभी एकार्थक हैं। इनका अर्थबोध इस प्रकार है[१]—

खद्ध—जल्दी जल्दी भोजन करना।
वेगित—ग्रास को शीघ्रता से निगलना।
त्वरित—कवल को शीघ्रता से मुंह में डालना।
चपल—शरीर को हिलाते हुए भोजन करना।
साहस—बिना विमर्श किये भोजन करना।

खलुंक (दे)

दुष्ट, वक्र आदि के अर्थ में 'खलुंक' शब्द का प्रयोग होता है। जब यह पशु या मनुष्य के विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है तब इसका अर्थ होता है—दुष्ट मनुष्य या पशु, अविनीत मनुष्य या पशु। जब यह लता, गुल्म, वृक्ष आदि के विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है, तब इसका अर्थ वक्र लता या वृक्ष, ठूंठ, गांठों वाली लकड़ी या वृक्ष होता है।[२]

देखें—'गंडि'।

खिज्जणिया (खेदनिका)

'खिज्जणिया' आदि तीनों शब्द प्रताड़ना की ही विभिन्न अवस्थाओं के द्योतक हैं, जैसे—

खेदनिका—तिरस्कृत करना।
रुंटणिया—रुलाना। यह देशी शब्द है।
उपलम्भना—उपालम्भ देना, बुरा-भला कहना।

खीण (क्षीण)

जैन आगमों में पल्योपम को उपमा से समझाया गया है। पल्य/कोठे के खाली होने के प्रसंग में क्षीण आदि शब्दों का उल्लेख हुआ है। हरिभद्र ने

---

१. प्रटी पृ. १२९।
२. उटि पृ. १९९।

क्षीण, नीरज, निर्मल, निष्ठित आदि सभी शब्दों को एकार्थक माना है।[१]

खेम (क्षेम)

खेम आदि शब्द तीनों एकार्थक के रूप में प्रयुक्त होते हैं किन्तु इनकी अर्थ-परम्परा इस प्रकार है—खेम-डमर आदि से रहित।
शिव—व्याधि से रहित।
सुभिक्ष—प्रचुर अन्न-पान से युक्त।

खोडभंग (दे)

खोडभंग आदि तीनों शब्द देशी हैं। राजकुल के लिए जो स्वर्ण-मुद्राएं या द्रव्य कर के रूप में देय होता है, उसे खोड कहा जाता है। वह देय द्रव्य तथा देना खोडभंग है। राजाओं के युग में 'वेढ' (बेगार) देने की परम्परा थी। वह प्रत्येक परिवार के लिए अनिवार्य देनी होती थी। इसी प्रकार राजा के वीर पुरुषों को भोजन आदि देना भी अनिवार्य माना जाता था। ये तीनों शब्द इसी अर्थ के द्योतक हैं।[२]

खोरक (दे)

खोरक आदि सभी शब्द विभिन्न आकृति वाले कटोरे—खप्पर के द्योतक हैं।[३] दशवैकालिक की जिनदासकृत चूर्णि के एक कथनाक के प्रसंग में 'खोरय' खोरक शब्द का प्रयोग हुआ है। वह इस प्रकार है—एगम्मि नगरे एगो परिव्वायओ सोवण्णेण खोरएण गहिएणं हिंडति—एक नगर में एक परिव्राजक स्वर्णमय खोरक को लेकर घूम रहा था।[४] यहां खोरक का अर्थ कटोरा या खप्पर ही होना चाहिए।

गंडि (गण्डि)

अविनीत बैल के अर्थ में ये तीनों शब्द प्रयुक्त हैं। गलि शब्द गंडि से बना प्रतीत होता है। जो हांकने पर उल्टे मार्ग से जाता है और उछलता कूदता

---

१. अनुद्वाहाटी पृ. ८५ : एकार्थिकानि वैतानि पदानि।

२. निचूभा ४ पृ. २८० : खोडं णाम जं रायकुलस्स हिरण्णादिदव्वं दायव्वं वेट्ठिकरणं परं परिणयणं चोरभडादियाण य चोल्लगादिप्पदाणं तस्स भंगो खोडभंगो।

३. दशजिचू पृ. ५५।

४. आप्टे पृ. ६४३ :

गुणानामेव दौरात्म्याद्धुरि धुर्यो नियुज्यते।
असंजातकिणस्कंधः सुखं स्वपिति गौर्गडिः।

है, वह गंडि है।[१] जो केवल खाता है, न भार ढोता है, न चलता है, वह गलि—दुष्ट बैल होता है।[२] 'मराली' शब्द इसी अर्थ में देशी है।

गंडूपक (दे)

'गंडूपक' शब्द के पर्याय में ८ शब्दों का उल्लेख है। ये सभी शब्द पैरों के विविध आभूषणों के बोधक हैं।

गड्डिक (दे)

भाग्यशाली व्यक्ति के अर्थ में 'गड्डिक' शब्द के पर्याय में चार शब्दों का उल्लेख है। आढ्यक और सुभग—ये दोनों शब्द इस अर्थ को स्पष्ट रूप से व्यक्त करते हैं। 'गड्डिक' और 'पोट्टह'—दोनों शब्द इसी अर्थ में देशी हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन काल में जिसके पास गाड़ी होती थी, वह भाग्यशाली माना जाता था। 'गड्डिक' शब्द उसी अर्थ का संवाहक प्रतीत होता है।

'पोट्ट' शब्द पेट के अर्थ में देशी है। संभव है जिसे पेट भर भोजन प्राप्त होता था, वह भाग्यशाली होता था। 'पोट्टह' शब्द संभवतः इसी अर्थ की सूचना देता है।

गण (गण)

प्रस्तुत गाथा में स्कन्ध के बारह पर्यायवाची नाम बतलाए गए हैं। समभिरूढ़ नय के अनुसार एक अर्थ के वाचक दो शब्द नहीं हो सकते। प्रत्येक शब्द भिन्न अर्थ का वाचक होता है। ये सभी शब्द भिन्न भिन्न वर्गों के समूह के द्योतक हैं। हरिभद्रसूरि ने प्रत्येक शब्द में विद्यमान अर्थभेद को स्पष्ट किया है—

१. गण—गण शब्द का प्रयोग मल्ल आदि गणों के लिए किया जाता है।

२. काय—काय शब्द का प्रयोग एक बिन्दु पर घनीभूत अनेक व्यक्तियों के लिए किया जाता है, जैसे—पृथ्वीकाय।

३. निकाय—निकाय शब्द का प्रयोग पृथक्-पृथक् व्यक्तियों के लिए किया जाता है, जैसे—षड्जीवनिकाय, नगरनिगमनिकाय आदि।

---

१. उशांटी प ४९ : गच्छति प्रेरितः प्रतिपथादिना डीयते च कूर्दमानो विहायोगमनमनेनेति गण्डिः।

२. वही प ४९ : गिलत्येव केवलं न तु वहति गच्छति वेति गलिः।

४. स्कन्ध—स्कन्ध शब्द का प्रयोग परमाणु निर्मित समूह के लिए किया जाता है, जैसे—त्रिप्रदेशी स्कन्ध।

५. वर्ग—वर्ग का प्रयोग समान जाति वाले समूह के लिए किया जाता है, जैसे—गौवर्ग।

६. राशि—राशि का प्रयोग ढेर के लिए किया जाता है, जैसे—अन्नराशि।

७. पुञ्ज—पुञ्ज शब्द का प्रयोग बिखरी हुई वस्तु को एकत्रित करने के लिए किया जाता है, जैसे—धान्यपुञ्ज।

८. पिण्ड—पिण्ड का प्रयोग पृथक् वस्तु को एकत्रित करने के लिए किया जाता है, जैसे—गुड का पिण्ड।

९. निकर—निकर का प्रयोग एक पात्र में डाली हुई वस्तुओं के समूह के लिए किया जाता है, जैसे—पात्र में डाले गए सिक्कों का निकर।

१०. संघात—संघात का प्रयोग मिलन के लिए किया जाता है, जैसे—तीर्थस्थानों में जनसंघात।

११. आकुल—आकुल का प्रयोग संकीर्ण स्थान में बहुत लोगों के इक्कट्ठे होने के लिए किया जाता है, जैसे—जनाकुल राजमार्ग।

१२. समूह—समूह का प्रयोग समुदाय के लिए किया जाता है, जैसे—नगरनिवासी जनसमूह।[१]

गहण (गहन)

गहन, वन, अरण्य और अटवी—इन चारों शब्दों को कोशकारों ने एकार्थक माना है। लेकिन क्षेत्र, अवस्था व अवस्थिति से इनका अर्थ-भेद ज्ञातव्य है—

गहन—वह वन जो अत्यन्त सघन हो तथा जिसमें प्रवेश पाना अत्यन्त दुष्कर हो।

वन—नगर से दूर स्थित तथा जहां एक ही जाति के वृक्ष हों।

अरण्य—वैसा जंगल जहां तापस आदि रहते हैं तथा उपासक अपने अंतिम वय में वहां जाकर शेष जीवन व्यतीत करते हैं।[२]

अटवी—वह जंगल जहां शिकारी शिकार की खोज में घूमते हैं।[३]

---

१. अनुद्वाहाटी पृ. २५।

२. आप्टे, पृ. २१४ : अर्यते गम्यते शेषे वयसि·····इति अरण्यम्।

३. आप्टे, पृ. ३६ : अटन्ति·····मृगयाविहाराद्यर्थे वा यत्र।

गुण (गुण)

गुण और पर्याय दोनों द्रव्य में रहते हैं। जो धर्म द्रव्य का सहभावी होता है उसे गुण और जो धर्म क्रमभावी—बदलता रहता है, उसे पर्याय कहते हैं। एक दृष्टि से गुण भी पर्याय ही है।

गुरुक (गुरुक)

प्रायश्चित्त के दो प्रकार हैं—उद्घातिक और अनुद्घातिक। उद्घातिक लघु प्रायश्चित्त है और अनुद्घातिक गुरु प्रायश्चित्त है। मासगुरुक, चतुर्गुरुक आदि अनुद्घातिक प्रायश्चित्त होते हैं। इसके तीन पर्याय नाम हैं—

१. गुरुक—यह लघु प्रायश्चित्त की अपेक्षा गुरु होता है, बड़ा होता है।

२. अनुद्घातिक—इसको वहन करना ही होता है, इसका उद्घात नहीं होता।

३. कालक—काल की अपेक्षा से उद्घातिक सान्तर और अनुद्घातिक निरंतर होता है। इसलिए इसे 'कालक' कहा गया है।[1]

गोणस (गोनस)

'गोणस' आदि शब्द सर्प की विभिन्न जातियों के वाचक हैं। उनकी विभिन्न आकृतियों के आधार पर ये शब्द प्रचलित हुए हैं। जैसे—

गोनस—गाय जैसी नासिका वाला सर्प।

मंडली—मण्डलाकृति वाला सर्प।

दर्वीकर—प्रहार आदि के लिए फण का प्रयोग करने वाला सर्प।

घट (घट)

घट, कुट, कुम्भ आदि शब्दों को कोशकारों ने एकार्थक माना है, लेकिन समभिरूढ़ नय की दृष्टि से इनमें व्युत्पत्तिकृत भेद है[2]—

घट—जो चेष्टा द्वारा घड़ा जाता है।

कुट—जो टुकड़े-टुकड़े हो जाता है अथवा जो विभिन्न आकारों में मोड़ा जाता है।[3]

कुम्भ—जो कु/पृथ्वी पर सुशोभित होता है।[4] अथवा जिसे पृथ्वी पर स्थित करके भरा जाता है।[5]

---

१. बृकटी पृ. १३१०, १३११।

२. सूटी २ प. ४२७ : पर्यायाणां नानार्थतया समभिरोहणात् 'समभिरूढो, नह्यं' घटादिपर्यायाणा-मेकार्थतामिच्छति तथाहि घटनाद् घटः·········।

३. अनुद्वामटी प १२५।

४. वही प १२५ : कौ भातीति कुम्भः।

५. नंटि पृ. १६०।

कलश—बड़े पेट वाला घड़ा।
देखें—'अरंजर'।

घट्ट (घृष्ट)

'घट्ट' आदि शब्द परिकर्म के विभिन्न प्रकार हैं। इनका अर्थबोध इस प्रकार है—

१. घृष्ट—गोबर आदि से लीपना।
२. मृष्ट—खड़िया से पोतना।
३. नीरज—रज रहित करना।
४. संमृष्ट—ऊबड़-खाबड़ भूमि को समान करना।
५. संप्रघूपित—दुर्गन्ध आदि दूर करने के लिए धूप खेना।

घाय (घात)

इसके अन्तर्गत सभी शब्द मारने की विभिन्न अवस्थाओं के द्योतक हैं—

१. घात—चोट पहुंचाना।
२. वध—लकड़ी आदि से मारना।
३. उच्छादन—निर्मूल नाश।

चएज्ज (त्यजेत्)

त्यज् धातु को जह और चय—ये दोनों आदेश होते हैं अतः इन दोनों को एकार्थक के रूप में स्वीकार किया है।

चंडाल (चण्डाल)

प्रस्तुत शब्द कार्य के आधार पर विभाजित चंडाल की विभिन्न जातियों के द्योतक हैं—

हरिकेश—चण्डाल की जाति।
चाण्डाल—फांसी और शूली देने के लिए नियुक्त।
श्वपाक—कुत्ते का मांस पकाकर खाने वाला।
मातंग—निषिद्ध कार्य करने वाला।
बाहिर—गांव के प्रान्तभाग में रहने वाला।
पाण—चंडाल के अर्थ में देशी शब्द।
श्वानधन—कुत्तों को पालने वाला।
मृताशा—मृत व्यक्तियों से श्मशान घाट पर प्राप्त होने वाली वस्तुओं पर जीने वाला।
श्मशानवृत्ति—श्मशानघाट पर कार्य करने वाला।
नीच—अन्यान्य नीच कार्य करने वाला।

इस प्रकार कार्यगत विभिन्नता होने पर भी जातिगत एकता के आधार पर ये सभी शब्द एकार्थक हैं।[१]

चाउम्मासित (चातुर्मासिक)

सामान्यतः चातुर्मास चार मास का होता है अतः उसे चातुर्मासिक कहा जाता है। प्राचीन काल में साल का प्रारम्भ चातुर्मास से होता था अतः वर्षावास का एक नाम सांवत्सरिक भी है।

चालित्तए (चालयितुम्)

एक प्रकार से ये सारे शब्द मूलस्थान से च्युत करने की विभिन्न अवस्थाओं के द्योतक हैं। इनका अर्थभेद इस प्रकार है—

चालित—स्वीकृत व्रत के प्रति अन्यथा भाव पैदा करना।

क्षुभित—कृत संकल्प के प्रति संशय पैदा करना।

खंडित—व्रत को आंशिक रूप से खंडित करना।

भंजित—व्रत को सम्पूर्ण रूप से तोड़ देना।

विपरिणामित—संकल्प के विपरीत अध्यवसाय करना।

चित्त (चित्त)

चित्त, मन और विज्ञान—ये तीनों शब्द सामान्य रूप से पर्यायवाची हैं, लेकिन इनमें कुछ अर्थभेद भी है—

चित्त—चेतना का अंश।

मन—मनोवर्गणा के पुद्गलों से उपरंजित पौद्गलिक द्रव्य।[२]

विज्ञान—विवेक-चेतना या विशिष्ट चेतना।

बौद्ध साहित्य में भी चित्त शब्द के पर्याय में चित्त, मन, मानस, हृदय, पण्डर, मनायतन, मनिन्द्रिय, विञ्ञाण आदि शब्दों का उल्लेख हुआ है।[३]

चेयण्ण (चैतन्य)

जैन दर्शन के अनुसार सभी जीवों में अक्षर (चेतना) का अनन्तवां भाग नित्य उद्घाटित रहता है। यह जीवत्व का नियामक तत्त्व है। यदि यह न हो तो जीव और अजीव में कोई अन्तर नहीं रह पाता। प्रस्तुत प्रसंग में अक्षर का

---

१. उशांटी प ३२४।

२. (क) अनुद्वाचू पृ. १३ : चित्त इत्यात्मा।

(ख) अनुद्वाचू पृ. १३ : तदेव मनोद्रव्योपरञ्जितं मनः।

३. धसं पृ. ३६।

अर्थ है—चैतन्य। उपयोग चैतन्य की प्रवृत्ति है। इस प्रकार ये तीनों शब्द एकार्थक हैं।[1]

छज्जिय (दे)

छज्जिय आदि तीनों शब्द टोकरी के अर्थ में प्रयुक्त देशी शब्द हैं। आजकल प्रसिद्ध 'छावड़ी' शब्द छज्जिय का ही अपभ्रंश लगता है।

छन्द (छन्द)

छन्द, वेद और आगम भिन्नार्थवाची होने पर भी भावार्थ में एकार्थक हैं। धर्मशास्त्र के छः अंग हैं, उनमें छंद का चौथा स्थान है। जिससे धर्म जाना जाता है, वह वेद है तथा जो आप्त पुरुषों से प्राप्त होता है, वह आगम है। इस प्रकार तीनों ही शब्द आगम/धर्मशास्त्र के बोधक हैं।

छिद्द (छिद्र)

छिद्र का सामान्य अर्थ है—छेद, विवर। छिद्र का एक अर्थ अवसर भी होता है। छिद्रान्वेषी या घात करने वाला व्यक्ति अनेक प्रकार से छिद्रों (अवसरों) का अन्वेषण करता है। छिद्र आदि शब्द उसी के द्योतक हैं—

छिद्र—अकेलापन।

अन्तर—अवसर।

विरह—एकान्त, विजनस्थान।

उपासकदशा ८/१९ में रेवती के प्रसंग में ये तीनों शब्द व्यवहृत हैं। रेवती अपनी सौतों की घात के लिए अन्तर, छिद्र और विरह की अन्वेषणा करती है। ये तीनों शब्द 'अवसर' के वाचक हैं।

छेय (छेक)

कुशल व्यक्ति के लिए यहां छेक आदि शब्दों का उल्लेख हुआ है। भिन्न-भिन्न क्षेत्र की कुशलता की दृष्टि से सभी शब्द विमर्शनीय हैं, जैसे—

१. छेक—७२ कलाओं में पंडित, प्रयोग को जानने वाला।

२. दक्ष—शीघ्र कार्य संपादित करने वाला।

३. प्रष्ठ—वाग्मी, कुशल वक्ता।

४. कुशल—सभी क्रियाओं का सम्यक् ज्ञाता, चिंतनपूर्वक कार्य करने वाला।

५. मेधावी—आपस में अविरोधी तथा पूर्वापर का अनुसंधाता।

---

१. दशजिचू पृ. ४६।

६. निपुण—शिल्प आदि क्रियाओं में कुशल, उपायपूर्वक क्रिया का प्रारम्भ करने वाला।[1]

जंबू (जम्बू)

जम्बूद्वीप के नामकरण का एक आधार है—जम्बूवृक्ष। इस वृक्ष के बारह पर्यायवाची नाम मिलते हैं। उनकी अभिधा एक है किन्तु व्यञ्जना से उनकी पर्यायगत भिन्नता भी है—

१. सुदर्शन—आंखों के लिए मनोहारी।
२. अमोघ—फलवान्।
३. सुप्रबुद्ध—सदा पुष्पित व फलित।
४. यशोधर—जम्बूद्वीप के नाम का आधारभूत वृक्ष होने के कारण यशस्वी।
५. सुभद्र—सदा कल्याणकारी।
६. विशाल—विस्तीर्ण।
७. सुजात—शुद्ध उत्पत्ति से युक्त।
८. सुमन—अति रमणीय होने के कारण मन को प्रसन्न करने वाला।
९. विदेहजंबू—स्थानगत नाम।
१०. सौमनस्य—मन को भाने वाला।
११. नियत—शाश्वत रहने वाला।
१२. नित्यमंडित—सदा अलंकृत दीखने वाला।[2]

जणसंमद्द (जनसम्मर्द)

ये सभी शब्द विभिन्न प्रकार के जन समुदाय और उससे होने वाले कोलाहल के प्रतीक हैं। जनव्यूह, जनसंमर्द, जनोर्मि, जनोत्कलिका आदि शब्द सामान्यत: जनसमुदाय को अभिव्यक्त करते हैं। भिन्न-भिन्न स्थानों से आए लोगों का एक स्थान पर मिलन जन-सन्निपात है। कोलाहल के आधार पर जनसमुदाय का बोध होता है, इसलिए जनबोल व जनकलकल आदि शब्द भी इसी के अन्तर्गत पर्याय शब्दों में लिए गए हैं।

जण्ण (यज्ञ)

'जण्ण' आदि तीनों शब्द विभिन्न प्रकार के उत्सवों के वाचक हैं। इनका अर्थभेद इस प्रकार है—

---

१. राजटी पृ. ६३।
२. जीवटी प. २९९, ३००।

यज्ञ—नागादि की पूजा का उत्सव।

क्षण—जिस उत्सव में अनेक लोगों को भोजन कराया जाता है तथा दान दिया जाता है।

उत्सव—इन्द्र, कार्तिकेय आदि का महोत्सव।

जल्ल (दे)

ये तीनों शब्द मैल के लिए प्रयुक्त होने वाले देश्य शब्द हैं।

जल्ल—जो आकर पसीने के साथ चिपक जाता है।

मल्ल—स्वल्प प्रयत्न से दूर किया जाने वाला मैल।

कमढ—चिकना मैल।[१]

जवइत्तए (यापयितुम्)

जवइत्तए और लाढत्तए—ये दोनों शब्द एकार्थक हैं। लाढेत्तए शब्द 'लाढ' शब्द से बना प्रतीत होता है। भगवान् महावीर ने लाढ देश में विहार कर अनेक कष्ट सहे थे अत: आगे चलकर यह शब्द कष्ट-सहने वालों के लिए श्लाघा-सूचक बन गया।[२]

उत्तराध्ययन की बृहद्वृत्ति में 'लाढे' का अर्थ सद् अनुष्ठान से प्रधान किया है।[३]

जस (यशस्)

यश का सामान्य अर्थ है—कीर्ति। वर्ण का तात्पर्य है—प्रशंसा तथा संयम का अर्थ है—नियंत्रण। व्यवहार टीका में भगवती सूत्र (४१/१६) में आए आयजसे का अर्थ आत्मसंयम किया गया है तथा यश, संयम और वर्ण को एकार्थक माना है।[४] हरिभद्र ने भी 'यश' शब्द का अर्थ संयम किया है।[५]

जावंताव (यावत्तावत्)

स्थानांग सूत्र में दस प्रकार के संख्यान/गणित का वर्णन है। इसमें जावंताव (यावत्तावत्) छठा संख्यान है। गुणकार इसका पर्याय नाम है। पहले

---

१. राजटी पृ. ३१।
२. उटि पृ. १८।
३. उशांटी पृ. ४१४।
४. व्यभा ६ टी प. ५६।
५. दशहाटी प. १८८ : यश: शब्देन संयमोऽभिधीयते।

जो संख्या सोची जाती है, उसे गच्छ कहते हैं। इच्छानुसार गुणन करने वाली संख्या को वाञ्छा या इष्ट संख्या कहते हैं। गच्छ संख्या को इष्ट संख्या से गुणन करते हैं। उसमें फिर इष्ट संख्या मिलाते हैं। उस संख्या को पुनः गच्छ से गुणन करते हैं। तदनन्तर गुणनफल में इष्ट के दुगुने का भाग देने पर गच्छ का योग आता है। इस प्रक्रिया को यावत्तावत् कहते हैं। उदाहरणार्थ—

कल्पना करें कि गच्छ १६ है, इसको इष्ट १० से गुणा किया—१६×१०=१६० इसमें पुनः इष्ट १० मिलाया १६०+१०=१७० इसको गच्छ से गुणा किया १७०×१६=२७२० इसमें इष्ट की दुगुनी संख्या से भाग दिया २७२०÷.२०=१३६, इस वर्ग को पाटी गणित भी कहा जाता है।[1]

जीवत्थिकाय (जीवास्तिकाय)

जीव के अभिवचन/पर्याय २३ हैं। ये जीव की विभिन्न क्रियाओं, अवस्थाओं के आधार पर उल्लिखित हैं, जैसे—

विज्ञ—जो सब कुछ जानता है।
वेद—जो सुख-दुःख का संवेदन करता है।
चेता—कर्म-पुद्गलों का चय/उपचय करने वाला।
जेता—कर्म रिपु को जीतने वाला।
रंगण—राग-आसक्ति से युक्त।
हिंडुक—एक गति से दूसरी गति में जाने वाला।
पुद्गल—शरीर आदि पुद्गलों का चय-उपचय करने वाला।
मानव—अनादि होने से जो नया नहीं है।
कर्त्ता—कर्मों को करने वाला।
विकर्त्ता—कर्मों का छेदन करने वाला।
जगत्—निरन्तर गतिशील।
जंतु—जननशील।
योनि—दूसरों को उत्पन्न करने वाला।
स्वयंभू—स्वयं पैदा होने वाला।
सशरीरी—शरीर के साथ रहने वाला।
अंतरात्मा—जो चेतनामय है, पुद्गलमय नहीं।

---

१. स्थाटी प. ४७१।

इस प्रकार ये सभी अभिवचन जीव की विभिन्न अवस्थाओं को परिभाषित करते हैं।[1] जीव आदि के लिए देखें—'पाण'।

जीवाभिगम (जीवाभिगम)

यह दशवैकालिक के चतुर्थ अध्ययन का नाम है। निर्युक्तिकार ने इसके सात पर्यायवाची नाम गिनाते हुए उनकी सार्थकता का प्रतिपादन किया है—

१. जीवाभिगम, २. अजीवाभिगम—इस अध्ययन में जीव और अजीव के लक्षणों का सुन्दर निरूपण है।

३. आचार—षड्जीवनिकाय के प्रति मुनि के आचार का निरूपक।

४. धर्मप्रज्ञप्ति—भगवान् महावीर की धर्म प्रज्ञापना का मूल।

५. चारित्र-धर्म—चारित्रधर्म—महाव्रतों का सांगोपांग वर्णन।

६. चरण—मुनि के मूल नियमों का प्रतिपादक।

७. धर्म—श्रुतधर्म का सारभूत अध्ययन।

इस प्रकार ये एकार्थक शब्द अध्ययन में प्रतिपाद्य विभिन्न विषयों का अवबोध देते हैं।[2] दशवैकालिक के चतुर्थ अध्ययन में सूत्र और पद्य दोनों हैं। उसमें प्रथम नौ सूत्र तक जीव और अजीव का अभिगम है। दसवें से सत्रहवें सूत्र तक चारित्र धर्म के स्वीकार की पद्धति का निरूपण है। अठारहवें से तेइसवें सूत्र तक यतना का वर्णन है। पहले से ग्यारहवें श्लोक तक बन्ध और अबन्ध की प्रक्रिया का उपदेश है। बारहवें श्लोक से पच्चीसवें श्लोक तक धर्मफल की चर्चा है।

जुइ (द्युति/युति)

जुइ आदि शब्द व्यक्ति की समृद्धि व तेजस्विता के द्योतक हैं। ये व्यक्ति की विशिष्ट अवस्था की विभिन्न पर्यायों को अभिव्यक्त करते हुए भी एकार्थक हैं[3]—

१. द्युति/युति—कांति, इष्ट पदार्थों का संयोग।

२. प्रभा—यान-वाहन की समृद्धि।

३. छाया—शोभा।

---

१. भटी पृ. १४३२।

२. दशहाटी प. १६० : एकार्थिका एते शब्दाः।

३. भटी प. १३२ : एकार्था वैते शब्दाः।

४. अर्चि—शरीर पर पहने हुए आभूषणों की दीप्ति।

५. तेज—शरीर की तेजस्विता।

६. लेश्या—शरीर का वर्ण।

जोग (योग)

जीव और शरीर के साहचर्य से होने वाली प्रवृत्ति 'योग' है। यहां योग शब्द शक्ति/सामर्थ्य के अर्थ में प्रयुक्त है। इनमें कुछ शब्दों का आशय इस प्रकार है—

वीर्य—मानसिक शक्ति।

स्थाम—शारीरिक सामर्थ्य।

पराक्रम—स्वाभिमान से युक्त सामर्थ्य।

सामर्थ्य—क्षमता।

उत्साह—मानसिक संकल्प।

पालि में विरियारम्भ, निक्कम्म, परक्कम, उय्याम, वायाम, उस्साह, उस्सोलही, थाम, धिति, असिथिलपरक्कमता, अनिक्खित्तछन्दता, अनिक्खित्त धुरता, धुरसम्मपग्गह, विरिय आदि शब्द एक ही अर्थ में प्रयुक्त हैं।[१] इसमें अनेक शब्द प्रस्तुत एकार्थक 'जोग' के संवादी हैं।

झोस (दे)

झोस का अर्थ है—वह राशि जिससे समीकरण हो जाता है। इस प्रकार समीकरण के अर्थ में यह गणित का देशी पद है।

डिंब (डिम्ब)

'डिम्ब' आदि शब्द उपद्रव के अर्थ में एकार्थक हैं—

डिम्ब—विघ्न, दंगा।

डमर—राजकुमार आदि द्वारा उत्पन्न उपद्रव।

कलह—वाचिक लड़ाई।

बोल—जोर-जोर से बोलकर लड़ना।

क्षार—परस्पर ईर्ष्याभाव से कलह करना।

वैर—शत्रुता रखना।

आप्टे के अनुसार डिम्ब का अर्थ है—कलह, छोटा युद्ध तथा शस्त्रास्त्रों

---

१. धसं पृ. ७८।

के बिना होने वाला युद्ध है। डमर का अर्थ गांवों के बीच होने वाला कलह, शत्रु को भयभीत करने के लिए किया जाने वाला शब्द है।

डिप्फर (दे)

'डिप्फर' आदि शब्द बैठने व सोने के लिए काम में आने वाले आसन विशेष के नाम हैं। यद्यपि इनमें आकार-प्रत्याकार की भिन्नता है, लेकिन आसन की समानता से इनको एकार्थक माना है। इनमें कुछ विशिष्ट शब्दों का अर्थ इस प्रकार है—

१. डिप्फर—बैठने के आसन के लिए प्रयुक्त देशी शब्द।
२. पीढफलक—पलाल अथवा बेंत से निर्मित बैठने का आसन।
३. सत्थिय—स्वस्तिक के आकार का आसन।
४. तलिक (म)—सोने का बिछौना।
५. मसूरक—वस्त्र या चर्म का वृत्ताकार आसन।
६. आशालक—अवष्टम्भ वाला—जिसके पीछे सहारा हो वह आसन।
७. मंचक—दो लट्ठों को बांधकर बैठने के लिए बनाया जाने वाला आसन।

णंदी (नन्दि)

प्रमोद व प्रसन्नता के अर्थ में नंदी शब्द के पर्याय प्रयुक्त हैं। कंदर्प प्रमोद का कारण है अत: कारण में कार्य के उपचार से यह नंदी का एकार्थक है।

णग (नग)

'णग' शब्द के पर्याय में प्रयुक्त सभी शब्द सामान्यत: पर्वत के एकार्थक हैं। भगवती सूत्र में पर्वत, गिरि, डुंगर, उच्छल (उत्स्थल) भट्टि (दे) आदि को एकार्थक मानते हुए भी इनमें भेद स्वीकार किया है[1], जैसे—

पर्वत—जहां उत्सव मनाये जाते हैं। जैसे वैजयन्त, वैभारगिरि पर्वत आदि।
गिरि—लोगों के निवास के कारण जहां कोलाहल रहता है। जैसे गोपालगिरि, चित्रकूट आदि।
डुंगर—शिला समूह से निर्मित अथवा जहां चोर निवास करते हैं।
उत्स्थल—रेतीला टीला, जो पर्वत के आकार का प्रतीत होता है।
भट्टि—धूल से रहित पर्वत।[2]

---

१. भटी पृ. ३०६ : पर्वतादयोऽन्यत्रैकार्थतया रूढास्तथापीह विशेषो दृश्य:।
२. भटी प. ३०६, ३०७।

णपुंसक (नपुंसक)

निशीथ भाष्य में नपुंसक के १६ भेद प्राप्त हैं—

१. पंडक	६. शकुनि	११. बद्धित
२. वातिक	७. तत्कर्मसेवी	१२. चिप्पित
३. क्लीब	८. पक्ष-अपक्ष	१३. मंत्र से वेदोपहत
४. कुंभी	९. सौगन्धिक	१४. औषधि से वेदोपहत
५. ईर्ष्यालुक	१०. आसक्त	१५. ऋषि द्वारा शप्त
		१६. देव द्वारा शप्त।

इन सबकी व्याख्या निशीथ भाष्य में प्राप्त है। प्रस्तुत कोश में 'णपुंसक' के एकार्थ नामों में अनेक नाम संवादी है। कुछेक शब्दों की व्याख्या इस प्रकार है—

१. चिल्लिक—(चिप्पित) जिसके जन्म से ही अंगुष्ठ व अंगुलियां चढी रहती हैं।
२. पंडक—महिला स्वभाव वाला, मृदु वाणी वाला, सशब्द मूत्र करने वाला आदि आदि।
३. वातिक—जिसकी जननेन्द्रिय वायु के कारण स्तब्ध रहती है।
४. क्लीब—जो शीघ्र स्खलित हो जाता है।
५. कुंभी—जिसकी जननेन्द्रिय सूजन से युक्त होती है।
६. ईर्ष्यालुक—बलात् ब्रह्मचर्य का पालन करने के कारण जो नपुंसक हो जाता है।
७. पाक्षिक-अपाक्षिक—शुक्ल या कृष्णपक्ष में जिसके मोह उदय अति तीव्र होता है और अपाक्षिक में कम होता है। निरोध करने के कारण कालान्तर में वह नपुंसक हो जाता है।

इस प्रकार अन्यान्य शब्द भी विभिन्न प्रकार के नपुंसकों के वाचक हैं। कुछ नाम उनके स्वभाव की सूचना देते हैं और कुछ उनकी शरीरगत अवस्थाओं के द्योतक हैं।

विशेष विवरण के लिए देखें—निभा ३५६१-३६००।

णमोक्कत (नमस्कृत)

देखें—'अच्चिय'।

णाण (ज्ञान)

ज्ञान, संवेदन, अधिगम, चेतना और भाव—ये पांचों शब्द ज्ञान के वाचक है। जानना, संवेदन करना, सूक्ष्म अध्यवसायों का उत्पन्न होना—ये सारे

ज्ञान के ही विविध पर्याय हैं। जीव का लक्षण है—ज्ञान। ज्ञान से व्यतिरिक्त जीव नहीं होता। ये सारी अवस्थाएं जीव—चेतन तत्त्व में ही पायी जाती हैं।

णावा (नौ)

णावा शब्द के पर्याय में १४ शब्दों का उल्लेख है। कुछ शब्द विभिन्न प्रकार की नावों के वाचक हैं। जैसे—नाव, पोत, तप्रक आदि। नाव तैरने में सहयोगी है, इसी प्रकार नाव के अतिरिक्त अन्य साधन जो तैरने में सहयोगी हैं उनको 'णावा' शब्द के पर्याय के अन्तर्गत लिया गया है। जैसे बेलु (बांस), कुंभ (घड़ा), दृति (चमड़े की मशक) आदि। ये सभी तैरने में सहयोगी होने से णावा के पर्याय हैं। कोट्टिंब, सालिका आदि शब्द इसी अर्थ में देशी हैं।

णिडालमासक (ललाटमाशक)

'णिडालमासक' का अर्थ है—ललाट पर किया जाने वाला तिलक। सभी शब्द इसके स्पष्ट वाचक हैं। 'अवंग' शब्द संभवतः इसी अर्थ में देशी होना चाहिए।

णिम्मंसक (निर्मांसक)

'णिम्मंसक' शब्द के पर्याय में अनेक शब्दों का उल्लेख है। जिसका शरीर तपस्या या किसी कारण से सूख कर कांटा हो जाता है, हड्डियों का ढांचा मात्र रह जाता है, वह निर्मांसक होता है। अस्थिकलेवर आदि शब्द उसी के वाचक हैं। शुष्क, निःशुष्क, परिहीन, अवक्षीण आदि शब्द शरीर की इसी अवस्था के बोधक हैं।

णिसीहिया (निषीधिका)

स्वाध्याय-भूमि प्रायः उपाश्रय से भिन्न होती थी। वृक्षमूल आदि एकान्त स्थान को स्वाध्याय के लिए चुना जाता था। वहां जनता के आवागमन का निषेध रहता था। 'निषेध' शब्द से ही नैषेधिकी शब्द बना है, ऐसा प्रतीत होता है। दिगम्बरों में प्रचलित 'नसिया' शब्द इसी का वाचक है।

णिस्संकित (निःशंकित)

शंका रहित चेतना के विशेषण के रूप में इन तीनों शब्दों का उल्लेख है। देखें—'संकित'।

तंडि (दे)

देखें—'गंडि'।

तक्क (तक्र)

छाछ के अर्थ में 'तक्क' शब्द के पर्याय में तीन शब्दों का उल्लेख है। छाछ पानी की भांति पतली होती है अत: उपचार से इनका एक नाम उदग माना है। भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से 'छाछ' शब्द छासि का ही बना हुआ प्रतीत होता है। छासि-छास-छाछ। खानदेश में बोली जाने वाली अहिराणी भाषा में छाछ को आज भी 'छास' कहते हैं।

तक्क (तर्क)

तर्क, संज्ञा, प्रज्ञा, विमर्श आदि शब्द ज्ञान की विविध पर्यायों के द्योतक हैं—

१. तर्क—ईहा से पहले तथा अवाय से पूर्व होने वाला ज्ञान अथवा अन्वय-व्यतिरेक पूर्वक होने वाला बोध।
२. संज्ञा—वस्तु को जानने का सम्यक् बोध।
३. प्रज्ञा—हेयोपादेय का निश्चय करने वाली बुद्धि।
४. मीमांसा—वस्तु के सूक्ष्म धर्म का पर्यालोचन करने वाली बुद्धि।

बौद्ध साहित्य में भी तक्क, वितक्क, संकप्प, अप्पना, व्यप्पना आदि शब्द एक ही अर्थ में प्रयुक्त हैं।[1]

तक्केइ (तर्कयति)

टीकाकार नेमिचन्द्र के अनुसार तर्क, स्पृहा आदि शब्दों का अर्थभेद सूक्ष्म बुद्धि से ही जाना जा सकता है। वैसे अनेक देश के शिष्यों को ज्ञान कराने हेतु इन एकार्थक शब्दों का प्रयोग किया गया है।[2]

तच्चित्त (तच्चित्त)

तच्चित्त आदि शब्द भावक्रिया/तन्मयता के अर्थ को अभिव्यक्त करते हैं। यद्यपि चित्त, मन, लेश्या, अध्यवसाय, करण और भावना—ये सभी शब्द अलग अलग अर्थों के द्योतक हैं, लेकिन यहां सभी शब्द समस्त पद होने से तन्मयता/एकाग्रता के अर्थ में एकार्थक हैं।[3]

---

१. धसं पृ. १९।
२. उसुटी प. ३३३ : तर्कयतीत्यादीन्येकार्थिकानि नानादेशविनेयानुग्रहाय उपात्तानि भेदो वा सूक्ष्मधियाऽभ्यूह्यः।
३. अनुद्वामटी प. २७ : एकार्थिकानि वा विशेषणान्येतानि प्रस्तुतोपयोगप्रकर्षप्रतिपादनपराणि।

तट्टक (दे)

'तट्टक' शब्द के पर्याय में 'अंगविज्जा' में बारह शब्दों का उल्लेख हुआ है। ये शब्द भिन्न-भिन्न आकृति वाले थालों के वाचक हैं। आज लगभग सभी शब्द अप्रचलित हैं। संभव है ये शब्द विभिन्न देशों में विभिन्न प्रकार के थालों के लिए प्रयुक्त रहे हों। कन्नड़ भाषा में आज भी थाल को तट्टे तथा तमिल में तट्टक कहते हैं।

तत्थ-तत्थ (तत्र-तत्र)

यहां तीन शब्द हैं—तत्र-तत्र, देशे-देशे, तस्मिन्-तस्मिन्। यद्यपि इन तीनों का अर्थ भिन्न हैं, फिर भी विस्तार की विभिन्न अवस्थाओं के द्योतक होने के कारण इन्हें एकार्थक माना है।[१] ये तीनों शब्द पुष्करिणी में अवस्थित कमलों की व्यापकता के बोधक हैं—

१. तत्र-तत्र—यहां वहां वे कमल व्याप्त थे।
२. देशे-देशे—कहीं-कहीं वे अधिक व्याप्त थे।
३. तस्मिन्-तस्मिन्—उस पुष्करिणी का एक भी भाग ऐसा नहीं था जो कमलों से व्याप्त न हो।

तमुक्काय (तमस्काय)

अरुणवरद्वीप जम्बूद्वीप से असंख्यातवां द्वीप है। उसकी बाहरी वेदिका के अन्त से अरुणवर समुद्र में ४२ हजार योजन जाने पर एक प्रदेश (तुल्य अवगाहन) वाली श्रेणी उठती है और वह १७२१ योजन ऊंची जाने के पश्चात् विस्तृत होती है। वह सौधर्म आदि चारों देवलोकों को घेरकर पांचवें देवलोक (ब्रह्मलोक) के रिष्ट नामक विमान-प्रस्तट तक चली गई है। यह जलीय पदार्थ है। उसके पुद्‌गल अंधकारमय हैं, इसलिए उसे तमस्काय कहा जाता है। लोक में उसके समान कोई दूसरा अंधकार नहीं हैं, इसलिए इसे लोकांधकार कहा जाता है। देवों का प्रकाश भी उस क्षेत्र में हत-प्रभ हो जाता है, इसलिए उसे देवांधकार कहा जाता है। उसमें वायु प्रवेश नहीं पा सकती, इसलिए उसे वातपरिघ और वातपरिघक्षोभ कहा जाता है। यह देवों के लिए भी दुर्गम है,

---

१. सूटी प. २७२ : अत्यादरख्यापनायैकार्थान्येवैतानि त्रीण्यपि पदानि।

इसलिए उसे देव-आरण्य और देवव्यूह कहा जाता है।[१]

तरच्छ (तरक्ष)

'तरच्छ' आदि शब्द वर्ण, आकार आदि के आधार पर व्याघ्र की भिन्न-भिन्न जातियों के बोधक हैं।

तिरीड (किरीट)

प्रस्तुत एकार्थक में मस्तक पर पहने जाने वाले विभिन्न आकृति के मुकुटों का उल्लेख है। कुछ शब्द विभिन्न देशों में प्रसिद्ध मुकुटों के वाचक हैं। सामान्यतः मुकुट और किरीट एकार्थक हैं लेकिन इनमें कुछ अन्तर है। जिसमें तीन शिखर हो वह किरीट तथा चार शिखर वाले को मुकुट कहते हैं।

तिलोवलद्धीय (तिलोपलब्धिक)

'तिलोवलद्धीय' आदि तीनों शब्द तिल से निष्पन्न खाद्य पदार्थ के वाचक हैं। वर्तमान में इसे तिलपपड़ी कहा जाता है।

तिसरा (दे)

'तिसरा' के पर्याय में यहां नौ शब्दों का उल्लेख है। ये सारे शब्द मछली पकड़ने के जाल विशेष के लिए प्रयुक्त होने वाले देश्य शब्द हैं। आज इनकी पहचान दुर्लभ है।

तिसला (त्रिशला)

महावीर की माता के लिए आचारचूला में तीन पर्याय शब्दों का उल्लेख है। त्रिशला उनका सर्वप्रसिद्ध नाम है। वे विदेह-जनपद से सम्बन्धित थीं इसलिए विदेहदत्ता तथा सबका प्रिय करने से उनका एक नाम प्रियकारिणी भी हो गया।

तुलना (तुलना)

जिससे आत्मा तोली जाये, वह तुलना है। यहां तुलना, भावना और परिकर्म को एकार्थक माना है। विशिष्ट साधक (जिनकल्पी) की सहिष्णुता की कसौटी के लिए पांच तुलाएं मान्य हैं। जब साधक उन तुलाओं में उत्तीर्ण हो जाता है तब वह विशिष्ट साधना की ओर अग्रसर होता है। वे पांच तुलाएं ये हैं—तप, सत्त्व, सूत्र, एकत्व और बल।

---

१. ठाणं पृ. ५१०।

तप भावना से साधक क्षुधा पर विजय पा लेता है। सत्त्व भावना से भय और निद्रा को पराजित करता है। सूत्र भावना के अभ्यास से साधक श्रुत को अपने नाम की तरह परिचित कर लेता है और सूत्र परावर्तन के द्वारा कालज्ञान कर लेता है। एकत्व भावना से वह ममत्व का मूलत: नाश कर देता है और बल भावना से शारीरिक बल, मनोबल और धृतिबल का पूर्णत: विकास कर लेता है। इस प्रकार ये पांच भावनाएं साधक को जिनकल्प साधना के लिए सक्षम बनाती हैं।[1]

थिल्ली (दे)

ये चारों शब्द भिन्न-भिन्न आकार वाली पालकी के लिए प्रयुक्त हैं। लेकिन वाहन अर्थ की अभिव्यक्ति करने के कारण ये एकार्थक हैं—

१. थिल्ली—दो खच्चरों से वाहित यान विशेष, दो घोड़ों की बग्घी।[2]

२. गिल्ली—दो पुरुषों द्वारा उठाई जाने वाली झोलिका अथवा अम्बाबाड़ी सहित हाथी का हौंदा।

३. सिबिका—कूटाकार तथा चारों ओर से आच्छादित पालकी। प्रश्नव्याकरण की टीका के अनुसार हजार पुरुषों द्वारा उठायी जाने वाली पालकी सिबिका है।

४. स्यंदमानिका—पुरुषप्रमाण पालकी। यह बड़े व्यक्तियों के आवागमन में काम में ली जाती थी।[3]

थुइ (स्तुति)

स्तुति, स्तवन, वंदन, अर्चना आदि सारे शब्द गुणानुवाद के अभिव्यंजक हैं। कुछेक आचार्यों ने स्तुति और स्तव में आकारगत भेद किया है। उनके अनुसार एक श्लोक से सात श्लोक अथवा तीन श्लोक पर्यन्त जो गुणगाथा की जाती है, वह 'स्तुति' और आठवें श्लोक से आगे गुणगाथा को 'स्तव' कहा जाता है।[4] सभी व्याख्याकार इसमें एकमत नहीं हैं।

चूर्णिकार ने स्तुति, स्तवन आदि शब्दों को एकार्थक माना है।[5]

---

१. प्रसाटी पृ. १२६, १२७।

२. पास पृ. ४४९।

३. भटी ३/१६४।

४. (क) व्यभा ७/१८३ टी : एकश्लोकादिसप्तश्लोकपर्यन्ता: स्तुति:।
   (ख) व्यभा ७/१८३ टी : तत: परमष्टश्लोकादिका: स्तवा:।

५. नंदीचू पृ. ४९ : अन्योन्यविषयप्रसिद्धा ह्येते एकार्थवचना:।

थूल (स्थूल)

मोटे व्यक्ति के लिए स्थूल शब्द के पर्याय में १५ शब्दों का उल्लेख है। शरीर की स्थूलता, दीर्घता और पुष्टता के आधार पर इन शब्दों का चयन किया गया है। इन शब्दों में 'वड्डु' और 'वरढ' दोनों शब्द देशी हैं।

थेज्ज (स्थैर्य)

विश्वसनीय व्यक्ति के ये पांच गुण हैं। ये सभी शब्द समवेत रूप में एक अर्थ के अवबोधक होने से एकार्थक हैं—

स्थैर्य—जो अपनी वाणी पर स्थिर रहता है।

वैश्वासिक—जिस पर विश्वास किया जा सके।

सम्मत—जिसकी बात सबके द्वारा मननीय होती है।

बहुमत—लोगों के द्वारा बहुमान प्राप्त।

अनुमत—सबके द्वारा समर्थित।

थेरभूमि (स्थविरभूमि)

स्थविर की तीन भूमिकाएं हैं—जातिस्थविर, श्रुतस्थविर, पर्यायस्थविर। ६० वर्ष की आयु वाला जातिस्थविर, स्थानांग व समवायांग को धारण करने वाला श्रुतस्थविर तथा २० वर्ष मुनि पर्याय पालने वाला पर्यायस्थविर कहलाता है। यहां भूमि का अर्थ है भूमिका। वह जन्म, ज्ञान और दीक्षा पर्याय से अभिव्यक्त होती है।

दया (दया)

संयम के अर्थ में प्रयुक्त दया के पर्याय में आठ एकार्थक शब्दों का उल्लेख हुआ है। दया, संयम आदि संयम के स्पष्ट वाचक हैं। दुगुंछा का अर्थ है—पाप के प्रति घृणा तथा अछलना का अर्थ है—सरलता। इस प्रकार ये दोनों शब्द भी संयम का अर्थबोध कराते हैं। तितिक्षा, अहिंसा और ह्री भी संयम के ही वाचक हैं। टीकाकार ने इन एकार्थकों की व्याख्या में यह स्पष्ट किया है कि ये सभी शब्द नाना देश के विद्यार्थियों को अर्थबोध कराने के लिए प्रयुक्त हैं।[१]

दव्वी (दर्वी)

दर्वी का अर्थ है—कड़छी। इसके पर्याय में चार शब्दों का उल्लेख है।

---

१. उशांटी प. १४४।

इसमें 'कडच्छी' और 'कवल्ली' दोनों देशीपद हैं। आजकल व्यवहार में प्रयुक्त 'कडछी' शब्द इसी का रूपान्तरण प्रतीत होता है। 'कवल्ली' शब्द कड़ाही के लिए भी प्रसिद्ध है।

दारिया (दारिका)

देखें—'दारय'।

दास (दास)

नौकरों के अनेक प्रकार रहे हैं। उनमें दास, किंकर आदि प्रमुख हैं। इन सबकी अलग-अलग पहचान है, जैसे—

१. दास—खरीदा हुआ नौकर, घर की दासी का पुत्र।
२. प्रेष्य—काम के लिए बाहर गांव भेजा जाने वाला नौकर।
३. भृतक—दैनिक वेतन पर कार्य करने वाला अथवा वह नौकर जो बचपन से ही घर पर पला-पुसा हो।
४. भागी—आय और हानि का हिस्सेदार।
५. किंकर—जो काम के विषय में निरन्तर पूछता रहे 'अब क्या करूं? अब क्या करूं?'।
६. कर्मकर—नियत काल में आदेश पालन करने वाला।[१]

इस आधार पर प्रस्तुत पर्याय में प्रयुक्त सभी शब्द दास/नौकर के पर्याय के रूप में संगृहीत हैं।

दिट्ठ (दृष्ट)

दृष्ट, श्रुत, ज्ञात आदि शब्द ज्ञान प्राप्त करने की विविध अवस्थाओं के वाचक हैं। दृष्ट पहली अवस्था है तथा उसकी अन्तिम अवस्था है—उपधारण। आचारांग चूर्णि में इनको एकार्थक माना है।

दिट्ठिवाय (दृष्टिवाद)

श्रुत के दो विभाग हैं—अंग और अंगबाह्य। अंग बारह हैं। उनमें बारहवां अंग है—दृष्टिवाद। आज यह अप्राप्त है। स्थानांग सूत्र में इसके दस नाम उल्लिखित हैं। वे सारे नाम उसमें प्रतिपादित विषयवस्तु के आधार पर दिये गये हैं। टीकाकार ने उनकी व्याख्या इस प्रकार की है—

---

१. सूटी २ प. ३३१।

१. दृष्टिवाद—समस्त दर्शनों के मत को प्रकट करने वाला तथा सभी नयों से वस्तु-बोध कराने वाला।
२. हेतुवाद—जिज्ञासाओं का सहेतुक समाधान देने वाला।
३. भूतवाद—यथार्थ तत्त्वों का व्याख्याता।
४. तत्त्ववाद—तत्त्वों का निरूपण करने वाला।
५. सम्यग्वाद—सम्यग् कथन करने वाला।
६. धर्मवाद—द्रव्य की विभिन्न पर्यायों अथवा चारित्र धर्म की व्याख्या करने वाला।
७. भाषाविजय (विचय)—भाषा का विवेक देने वाला।
८. पूर्वगत—चौदह पूर्वों का प्रतिपादक।
९. अनुयोगगत—प्रथमानुयोग तथा गंडिकानुयोग का प्रतिपादक।
१०. सर्व प्राणभूतजीवसत्त्वसुखावह—संयम का प्रतिपादक होने से सभी प्राणियों के लिए सुखकर।

दीण (दीन)

ये सभी शब्द दीन/दुःखी व्यक्ति की विविध अवस्थाओं के वाचक हैं, जैसे—

१. परितन्त—मानसिक व शारीरिक रूप से दुःखी।
२. उत्कर्षित—दूसरों के द्वारा तिरस्कृत।
३. चिन्ताध्यानपर—आर्त्त-रौद्र ध्यान में मग्न।
४. अकृतार्थ—जिसका प्रयोजन सिद्ध नहीं होता।
५. शोकार्त्त—जो शोक से सदा दुःखी रहता है।

दीव (दीप)

'दीव' शब्द के पर्याय में १३ शब्दों का उल्लेख है। सभी शब्द विविध प्रकार की अग्नियों तथा उसके स्थान के वाचक हैं। कुछ शब्दों का अर्थबोध इस प्रकार है—

१. दीपक—दीया।
२. चुडली—उल्का, जलती हुई लकड़ी (दे)।
३. चुल्लक—बड़ा चूल्हा (दे)।
४. विद्युत्—बिजली, अग्नि।

५. आतप—प्रकाश (प्रकाश अग्नि से पैदा होता है अत: कारण में कार्य के उपचार से यह 'दीव' शब्द का एकार्थक है।)

६. चुल्लि—छोटा चूल्हा (दे)।

७. फुंफक—करीषाग्नि (दे)।

दीविय (द्वीपिन्)

'दीविय' आदि सभी शब्द व्याघ्र की विभिन्न जातियों के वाचक हैं। वर्ण, आकार आदि के आधार पर इनका भेद किया गया है।

दीहसक्कुलिका (दीर्घशष्कुलिका)

'दीहसक्कुलिका' आदि शब्द दिवाली और होली आदि पर्वों के अवसर पर बनायी जाने वाली मिठाई के वाचक हैं। यह गुड़ से बनायी जाती थी। आज भी राजस्थान में इन पर्वों पर खजली बनाने का रिवाज है। मीठी खाद्य वस्तु के अर्थ में प्रज्ञापना में 'भिसकंदय' शब्द का उल्लेख है।[१] जो भिसखंटक का संवादी प्रतीत होता है। खाखट्टिका, खोरक, दीवालिका, दसीरिका, मत्थकत आदि शब्द इसी अर्थ में देशीपद हैं।

दुक्ख (दु:ख)

कर्म दु:ख का कारण है अत: कारण में कार्य का उपचार कर दु:ख और कर्म—इन दोनों को एकार्थक माना है।[२]

दुक्खण (दु:खन)

पीड़ा अनेक रूपों में अभिव्यक्त होती है। यहां 'दुक्खण' आदि शब्द पीड़ा की विभिन्न भूमिकाओं के द्योतक हैं[३]—

दु:ख—इष्ट के वियोग से उत्पन्न दु:ख।

जूरण—झूरना, शारीरिक कमजोरी से समुद्‌भूत पीड़ा।

शोचन—शोक व दीनता से उत्पन्न दु:ख।

तेपन—अश्रुविमोचन।

पिट्टण—लकड़ी आदि से पीटना।

परितापन—शारीरिक, मानसिक पीड़ा देना।

---

१. प्रज्ञाटी प. ५३३।

२. दश्रुचू पृ. २८।

३. भटी प. २७४।

दुट्ठ (दुष्ट)

दुर्बोध्य व्यक्ति के पर्याय में तीन शब्दों का उल्लेख है। इनकी अर्थ-परम्परा इस प्रकार है—

दुष्ट—जो दुष्टता करता रहता है।

मूढ—गुण-दोष के विवेक से विकल।

व्युद्ग्राहित—कदाग्रही द्वारा भिड़काया हुआ।

दुद्ध (दुग्ध)

दुद्ध शब्द के पर्याय में पांच शब्दों का उल्लेख है। इनमें कुछ शब्द दूध के लिए प्रयुक्त प्रसिद्ध शब्द हैं। लेकिन 'पीलु' और 'वालु' शब्द दूध के लिए प्रयुक्त देशी शब्द हैं। पीलु और वालु—ये दोनों शब्द प्रान्तीय भाषा से आये प्रतीत होते हैं। कन्नड़ में दूध को 'हालु' कहते हैं। तमिल में दूध को 'पाल' कहते हैं अतः पीलु और वालु शब्द संभवतः इन्हीं शब्दों के कोई रूप होने चाहिए।

दुम (द्रुम)

'दुम' शब्द के प्रायः सभी पर्याय वृक्ष के स्पष्ट वाचक हैं लेकिन चूर्णिकार ने व्युत्पत्तिकृत भेद इस प्रकार किया है—

द्रुम—जो धरती और आकाश के बीच में समाता है।

पादप—जो पैरों (जड़ों) से पीता है।

रुक्ख—जो पृथ्वी से आहार ग्रहण करता है।[१]

विटपी—जो शाखाओं से सुशोभित होता है।

अग—जो गति नहीं करता।

तरु—जिससे नदी में तैरा जाता है।

कुह—जो भूमि के द्वारा धारण किया जाता है।

महीरुह—जो पृथ्वी पर उगता है।

वच्छ—जो पुत्र की भांति स्नेह से पाला जाता है।

रोपक—जिसे पृथ्वी पर रोपा जाता है।

भञ्जक—जो काटा जाता है।[२]

---

१. निचू २ पृ. ३०६ : रुक् पृथिवी तं खातीति रुक्खो।

२. दशअचू पृ. ७, दशजिचू पृ. ११।

दुमपुप्फिया (द्रुमपुष्पिका)

दशवैकालिक सूत्र के वृत्तिकार हरिभद्रसूरि (वि. आठवीं शताब्दी) ने द्रुमपुष्पिका के १४ पर्याय गिनाये हैं—

१. द्रुमपुष्पिका	६. मेष	११. इषु
२. आहारएषणा	७. जलूक	१२. गोलक
३. गोचर	८. सर्प	१३. पुत्रमांस
४. त्वक्	९. व्रण	१४. पूति-उदक।
५. उंछ	१०. अक्ष	

द्रुमपुष्पिका—यह दशवैकालिक सूत्र का पहला अध्ययन है। इसमें मुनि की भिक्षाचर्या सम्बन्धी सूत्र हैं। उन सूत्रों की भावना के अनुरूप इन शब्दों का चयन किया गया है।

ये सभी शब्द भोजन की गवेषणा, ग्रहणैषणा और परिभोगैषणा अर्थात् भोजन के ग्रहण और उपभोग से सम्बन्धित हैं इसलिए इन्हें द्रुमपुष्पिका शब्द के अन्तर्गत गृहीत कर लिया गया है। गोचर शब्द माधुकरी वृत्ति का द्योतक है। मुनि गाय की तरह अनेक घरों से थोड़ा-थोड़ा ले। वह त्वक् की तरह असार भोजन ले। वह उंछ—अज्ञातपिण्ड ले। जो स्वामी अशुद्ध भोजन देना चाहे, उसे मृदुता से समझाए। वह सर्प की भांति एक दृष्टि वाला हो। जैसे व्रण पर बिना किसी राग-द्वेष से लेप किया जाता है वैसे ही मुनि भी बिना राग-द्वेष के भोजन करे। जैसे बाण (इषु) लक्ष्य को वेध डालता है, वैसे ही भिक्षु लक्ष्य-प्राप्ति के लिए भोजन करे। जैसे लाख के गोले का निर्माण अग्नि से न अति दूर और न अति निकट रखकर ही किया जाता है वैसे ही मुनि गृहस्थ सहवास से न अति दूर रहे और न अति निकट रहे। मुनि भोजन का स्वाद न लेते हुए निरपेक्ष भाव से 'पुत्र मांस भक्षण' की भांति खाए। मुनि संयम-निर्वहण के लिए जैसा मिले वैसा खा ले।[१]

इन उपमाओं से मुनि की माधुकरी वृत्ति को उपमित किया जाता है। इस दृष्टि से ये दशवैकालिक के प्रथम अध्ययन के नाम हैं।

देव (देव)

'देव' आदि शब्द देवता के स्पष्ट वाचक होने पर भी इनका निरुक्त कृत अर्थ इस प्रकार है—

---

१. दशअचू पृ. ११, १२ : एतेहिं उवम्मं कीरइ त्ति काउं ताणि भण्णंति नामाणि तस्स अज्झयणस्स।

देव—जो क्रीड़ा करते हैं अथवा जो दिव/आकाश में रहते हैं।[१]

अमर—जो कभी मरते नहीं हैं। (चिरकाल तक स्थायी रहने के कारण अमर शब्द देव के लिए रूढ है)।

सुर—जो अत्यन्त सुशोभित होते हैं अथवा समुद्र-मंथन के समय जिन्होंने सुरा का पान किया था।

विबुध—जो अवधिज्ञान से विशेष रूप से जानते हैं।[२]

देसकालण्ण (देशकालज्ञ)

'देसकालण्ण' आदि सभी शब्द साधु के विशेषण के रूप में प्रयुक्त हैं। भावार्थ में एक ही व्यञ्जना होने पर भी इनका अर्थभेद इस प्रकार है[३]—

देशकालज्ञ—देश और काल को जानने वाला।

क्षेत्रज्ञ—आत्मा को जानने वाला।

कुशल—हित की प्रवृत्ति और अहित की निवृत्ति में निपुण।

पंडित—पाप से घृणा करने वाला।

व्यक्त—प्रौढ बुद्धि वाला।

मेधावी—उपायों को जानने वाला अथवा मर्यादा तथा मेधा से सम्पन्न।

अबाल—मध्यम वय वाला।

मार्गज्ञ—सत् मार्ग को जानने वाला।

पराक्रमज्ञ—यथार्थ स्थान को प्राप्त करने की कला जानने वाला अथवा अपनी शक्ति को जानने वाला।[४]

द्वितीयसमवसरण

चातुर्मास के अतिरिक्त शेष आठ मास का काल द्वितीयसमवसरण कहलाता है।

दोसीण (दे)

'दोसीण' बासी अन्न के लिए प्रयुक्त होने वाला देशी शब्द है। बासी अन्न वर्ण, गंध, रस और स्पर्श की दृष्टि से विद्रूप हो जाता है अतः व्यापन्न, कुथित आदि सभी शब्द पर्यायार्थिक नय की दृष्टि से एकार्थक हैं।

---

१. दशजिचू पृ. १५ : दीवं आगासं तम्मि आगासे जे वसंति ते देवा।

२. अचि पृ. १७, १८।

३. सूचू २ पृ. ३१२ : एगट्ठिताइं वा सव्वाइं एयाइं।

४. सूटी प. २७२।

धम्मत्थिकाय (धर्मास्तिकाय)

यह लोकव्यवस्था के अन्तर्गत लोकव्यापी अजीव द्रव्य है। यह सभी प्रकार की गति और प्रकंपन का माध्यम है। प्रस्तुत प्रसंग में इसके जो अभिवचन गिनाये हैं, इनमें दो अभिवचन (धर्म, धर्मास्तिकाय) स्वाभाविक हैं। शेष सारे अभिवचन नामसाम्य के कारण निर्धारित प्रतीत होते हैं। जैसे शब्दकोश में स्वर्ण और धतूरे के सदृश नामों का विधान है, वैसे ही धर्म के नामसाम्य से ये अभिवचन उल्लिखित हैं। वास्तव में प्राणातिपात विरमण से कायगुप्ति तक के सारे शब्द धर्म के विभिन्न अंग हैं। धर्म शब्द की सदृशता के कारण इन्हें धर्मास्तिकाय के पर्याय शब्द मान लिये हैं। इसके अतिरिक्त चारित्र धर्म के वाचक सामान्य या विशेष सभी शब्द धर्मास्तिकाय के अभिवचन हो सकते हैं।[1]

धम्ममण (धर्ममनस्)

'धम्ममण' के पर्याय के रूप में पांच शब्दों का उल्लेख है। पांचों शब्द धार्मिक चेतना से युक्त व्यक्ति के विशेषण के रूप में प्रयुक्त हैं। इनका अर्थबोध इस प्रकार है—

१. धर्ममन—धर्म में अनुरक्त।
२. अविमन—अशून्य चित्त, भावक्रिया से युक्त।
३. शुभमन—असंक्लिष्ट चित्त वाला।
४. अविग्रहमन—विकल्प शून्य चेतना वाला।
५. समाधिमन—रागद्वेष रहित अथवा उपशम प्रधान स्वस्थ मन वाला।[2]

धम्मिय (धार्मिक)

धम्मिय शब्द के पर्याय में छह शब्दों का उल्लेख है। धर्म का अनुसरण करने वाला, उससे प्रेम करने वाला, धर्म कहने वाला, प्रतिक्षण धर्म को ही देखने वाला, धार्मिक आचरण करने वाला व्यक्ति धार्मिक होता है अत: ये सभी एकार्थक हैं।

धरणा (धरणा)

ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया के चार घटक हैं—अवग्रह, ईहा, अवाय

---

१. भटी पृ. १४३१ : ततश्च धर्मशब्दसाधर्म्यादस्तिकायरूपस्यापि धर्मस्य प्राणातिपातविरमणादय: पर्यायतया प्रवर्तन्त इति, ये चान्येऽपि तथा प्रकारा: चारित्रधर्माभिधायका: सामान्यतो विशेषतो वा शब्दास्ते सर्वेऽपि धर्मास्तिकायस्याभिवचनानीति।

२. प्रटी प. १११।

और धारणा। किसी भी ज्ञान की चिरकाल तक स्मृति बनाये रखना धारणा है। सामान्यत: ये सभी शब्द एकार्थक होते हुए भी धारण करने की अनेक अवस्थाओं के वाचक हैं[१]—

धरणा—ज्ञात अर्थ को कुछ समय तक स्मृति में रखना।

धारणा—विस्मृत अर्थ को पुन: स्मृत करना।

स्थापना—ज्ञात अर्थ की समीक्षा कर हृदय में स्थापित करना।

प्रतिष्ठा—ज्ञात अर्थ को उसके भेद-प्रभेद पूर्वक धारण करना।

कोष्ठ—सूत्र और अर्थ को चिरकाल तक धारण करना, वह विस्मृत न हो, उस रूप में धारण करना (कोठे में रखे धान की भांति उपदिष्ट अर्थ को सकल रूप में चिरकाल तक धारण करना।) उमास्वाति ने प्रतिपत्ति, अवधारणा, अवस्थान, निश्चय, अवगम और अवबोध आदि शब्दों को धारणा के पर्याय माने हैं।[२]

धर्म (धर्म)

धार्मिक की प्रथम पहचान है—दृष्टि की समीचीनता। आत्मधर्म और आत्मस्वभाव—ये दोनों सम्यग्दर्शन के वाचक हैं। यहां 'धर्म' शब्द सम्यग्दर्शन के लिए प्रयुक्त है।

धारणववहार (धारणाव्यवहार)

किसी गीतार्थ आचार्य ने किसी समय किसी शिष्य की अपराध-शुद्धि के लिए जो प्रायश्चित्त दिया हो, उसे याद रखकर वैसी ही परिस्थिति में उसी प्रायश्चित्त विधि का उपयोग करना 'धारणाव्यवहार' है। इसके पर्याय शब्दों का आशय इस प्रकार है—

१. उद्धारणा—छेदसूत्रों से उद्धृत अर्थपदों को निपुणता से जानना।
२. विधारणा—विशिष्ट अर्थपदों को स्मृति में धारण करना।
३. संधारणा—धारण किये हुए अर्थपदों को आत्मसात् करना।
४. संप्रधारणा—पूर्ण रूप से अर्थपदों को धारण कर प्रायश्चित्त का विधान करना।[३]

धुण्ण (दे)

'धुण्ण' शब्द पाप के अर्थ में प्रयुक्त होने वाला देशी शब्द है।

---

१. नंदी चू पृ. ३७ : सामण्णधारणं पडुच्च णियमा एगट्ठिया, धारणत्थविकप्पणताए भिण्णत्था।
२. तभा १/१५।
३. व्यभा १० टी प. ३०२।

ध्रुव (ध्रुव)

ध्रुव आदि छहों शब्द ध्रुवता के ही बोधक हैं। उनका शब्दगत अर्थभेद इस प्रकार है—

१. ध्रुव—अचल।

२. नित्य—सदा एक रूप रहने वाला।

३. शाश्वत—प्रतिक्षण अस्तित्व में रहने वाला।

४. अक्षय—अविनाशी।

५. अव्यय—एक भी आत्म प्रदेश का जिसमें व्यय नहीं होता।

६. अवस्थित—अनन्त पर्यायों की अवस्थिति।[१]

ध्रुवक (ध्रुवक)

'ध्रुवक' का अर्थ है—ध्रुव, निष्प्रकंप, शाश्वत। इसमें शिव, गुत्त (गोत्र) भव और अभव ये पर्याय भी हैं। इनमें शिव मोक्ष का, गोत्र संयम का, भव आत्मा का और अभव सिद्धालय का वाचक हैं। ये सभी शाश्वत हैं अतः इनका समावेश यहां कर लिया गया है।

धूत (धूत)

इसमें 'धुत' और 'धूत'—ये दोनों रूप प्रचलित हैं। 'धुत' साधना की विशेष पद्धति रही है। आचारांग के छठे अध्ययन का नाम 'धुत' है। बौद्ध परंपरा में अनेक धुतांगों की चर्चा है।

'धूत' का अर्थ है—वह प्रक्रिया जिससे कर्मों का धुनन किया जाता है। सूत्रकृतांग के चूर्णिकार ने 'धूत (धुत)' के अनेक अर्थ किए हैं—वैराग्य, चारित्र, उपशम, संयम, ज्ञान आदि।[२] ये सारे अर्थ साधना से संबंधित हैं।

धूर्त्त (धूर्त्त)

धूर्त्त शब्द के पर्याय में ६ शब्दों का उल्लेख है। सभी शब्द धूर्त्त/शठ के विभिन्न प्रकारों के वाचक हैं—

१. धूर्त्त—जो हिंसा करके ठगता है।[३]

२. नैकृतिक—माया करके ठगने वाला।

---

१. भटी प. ११९।

२. सूचू १ पृ. १६२ : धुअं वैराग्यं चारित्रं उपशमो वा संजमो णाणादि वा।

३. अचि पृ. ८८ : धूर्वति हिनस्ति धूर्तः।

३. स्तब्ध—आश्चर्य में डालकर धोखा देने वाला।
४. लुब्ध—लोभ दिखाकर ठगने वाला।
५. कार्पटिक—साधु के वेश में ठग।
६. शठ—वेश बदलकर लोगों को धोखा देने वाला।

नन्दि (नन्दि)

नन्दी और शास्त्र—इन दोनों शब्दों को बृहत्कल्प में एकार्थक माना है।[1] प्रत्यक्षत: ये दोनों शब्द भिन्न-भिन्न अर्थों के वाचक हैं। नन्दी का अर्थ है—मंगल। शास्त्र अर्थात् ग्रन्थ। ग्रंथ/शास्त्र मंगलकर होते हैं अत: इनको एकार्थक माना है अथवा नन्दी सूत्र में लगभग सभी शास्त्रों का उल्लेख है इसलिए भी इन दोनों शब्दों को एकार्थक माना जा सकता है।

नववधू (नववधू)

नववधू शब्द के पर्याय में तीन शब्दों का उल्लेख है। जिसने प्रसव नहीं किया है अथवा गर्भधारण नहीं किया है, वह भी नववधू ही है।

नस्समाण (नश्यत्)

'नस्समाण' शब्द के पर्याय में सात शब्दों का उल्लेख है। लगभग सभी शब्द समवेत रूप में नष्ट होने के अर्थ में प्रयुक्त हैं।

नायय (ज्ञातक)

देखें—'मित्त'।

निग्गमण (निर्गमन)

'निग्गमण' आदि चारों शब्द गण से बहिर्भूत होने के अर्थ में पर्यायवाची हैं।[2]

निज्जामय (निर्यामक)

निर्यामक—नौका-चालक।
कुक्षिधार—नौका के विभिन्न कार्यों में नियुक्त नौकर।
गब्भेल्लय—नौका में छोटे-बड़े कार्य करने वाला। (दे)

इस प्रकार ये सभी शब्द नौका-संचालक के वाचक होने से एकार्थक हैं।[3]

---

१. बृकटी पृ. ११।
२. व्यभा टी प. १२४।
३. ज्ञाटी प. १४३।

निट्ठियट्ठ (निष्ठितार्थ)

'निट्ठियट्ठ' आदि शब्द सिद्ध अवस्था प्राप्त व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त हैं। सभी शब्द उनकी विभिन्न विशेषताओं को व्यक्त करते हैं, जैसे—

निष्ठितार्थ—अपने लक्ष्य को प्राप्त।

निरेजन—निश्चल।

नीरज—कर्म-रज से मुक्त।

निर्मल—पवित्र।

वितिमिर—केवल ज्ञान से आलोकित।

विशुद्ध—कर्मों की विशुद्धि से प्रकर्ष स्थिति को प्राप्त।[१]

नियाग (नियाग)

नियाग का अर्थ है—मोक्ष। सद्धर्म मोक्ष का साधन है। अन्तिम अवस्था में साधन ही साध्य के रूप में परिणत हो जाता है अत: ये तीनों शब्द एकार्थक हैं।

निव्वाण (निर्वाण)

देखें—'अणुत्तर'।

निव्वाण सुह (निर्वाण सुख)

'णिव्वाण' शब्द के पर्याय में पांच शब्दों का उल्लेख है। टीकाकार ने इनको 'निर्वाणसुख' का एकार्थक माना है।[२] मोक्ष का सुख बाधा रहित होता है, इसलिए अनाबाध तथा वहां कषायाग्नि शान्त हो जाती है इसलिए शीतीभूतपद भी इसका एक पर्याय है।

निस्सील (निश्शील)

'निस्सील' आदि शब्द व्रत-संवर रहित (असंयमी) व्यक्ति के लिए प्रयुक्त हैं। चारों शब्दों की क्षेत्र सीमा भिन्न होते हुए भी ये समान अर्थ को व्यक्त करते हैं—

निश्शील—ब्रह्मचर्य आदि व्रत से रहित।

निर्व्रत—अहिंसा व्रत अथवा अणुव्रतों से रहित।

निर्गुण—क्षान्ति आदि दस श्रमण गुणों से विकल।

निर्मर्याद—आचार सम्बन्धी मर्यादा से रहित।

---

१. औपटी पृ. २१७।

२. आटी प. १५०।

नील (नील)

नील के दो अर्थ हैं—काला और नीला। यहां नील शब्द काले रंग का प्रतीक है। अंधकार और रात्रि का रंग काला है अत: गुण के साधर्म्य से इन दोनों शब्दों को काले रंग का पर्याय माना है।

भय का एक बड़ा कारण है—अंधकार और कालिमा अत: उत्त्रास को भी उपचार से इसका पर्याय मान लिया है।

पंडिय (पंडित)

'पंडिय' आदि चारों शब्द आचारांग में मुनि/ज्ञानी के विशेषण के रूप में प्रयुक्त हैं। वाच्यार्थ अलग होने पर भी भावार्थ में सभी एक ही अर्थ को व्यक्त करते हैं—

१. पंडित—ज्ञेय को जानने वाला।
२. मेधावी—मर्यादावान् तथा मेधा/बुद्धि से सुशोभित।
३. निष्ठितार्थ—अर्थ के अन्तिम छोर तक पहुंचने में समर्थ।
४. वीर—कर्म-विदारण करने में कुशल।

पच्चंतिक (प्रात्यन्तिक)

प्रस्तुत एकार्थक में ग्राम के अन्तराल-बाहर रहने वाले अनेक प्रकार के व्यक्तियों तथा जातियों का उल्लेख है। प्राय: नीच कर्म करने वाले होने के कारण उनकी परिगणना म्लेच्छ के अंतर्गत की गयी है। इनकी अर्थ- परम्परा इस प्रकार है—

१. प्रात्यन्तिक—गांव के बाह्य भाग में रहने वाले मातंग, चांडाल आदि।
२. दस्यु-आयतन—चोरों की पल्लियां।
३. म्लेच्छ—बर्बर, शबर, पुलिन्द्र आदि म्लेच्छ जातियों की बस्तियां।
४. अनार्य—साढ़े पच्चीस आर्य देशों के अतिरिक्त देशों वाले व्यक्तियों के निवासस्थान।
५. दु:संज्ञाप्य—मंद बुद्धि वाले व्यक्ति।
६. दु:प्रज्ञाप्य—ऐसे व्यक्ति, जिनको समझाना अत्यन्त दुष्कर होता है।

ये सारे स्थल तथा व्यक्ति म्लेच्छवत् हैं इसलिए इन्हें म्लेच्छ के अन्तर्गत माना है।[१]

---

१. आटी प. २५२ : ········न तेषु म्लेच्छस्थानेषु······।

पज्जोसवणा (पर्युपशमन)

मुनि आठ महीनों तक एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते हैं और वर्षाकाल में चार महीनों तक एक स्थान पर अवस्थित हो जाते हैं। यह अवस्थान-काल पर्युषणा कहलाता है। इसके आठ पर्याय नाम हैं। इनका अर्थ-बोध इस प्रकार है—

१. पर्यायव्यवस्थापन—पर्युषणा के दिन मुनि अपनी दीक्षा-पर्याय का व्यवस्थापन करता है। जैसे—मुझे प्रव्रज्या ग्रहण किये इतने वर्ष हो गये।
२. पर्युपशमन—ऋतुबद्ध काल के द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव आदि पर्याय होते हैं। मुनि वर्षावास में इन सबका त्याग करता है और वर्षावास के योग्य पदार्थों को ग्रहण करता है।
३. परिवसना—एक स्थान पर चार मास तक वास करना।
४. पर्युषणा—ऋतुबद्ध विहार से निवृत्त होकर वर्षाकाल को अत्यन्त निकट जानकर एक स्थान पर वास करना।
५. वर्षावास—वर्षाकाल के लिए एकत्र वास करना।
६. प्रथमसमवसरण—वर्ष का प्रथम दिन होने, अनेक मुनियों के एक साथ रहने तथा धर्म परिषद् के जुड़ने का प्रथम दिन होने से भी इसे प्रथमसमवसरण कहते हैं।
७. स्थापना—वर्षाकाल के कल्प की स्थापना करना।
८. ज्येष्ठावग्रह—ऋतुबद्ध काल में एक स्थान पर एक मास का निवास उत्कृष्ट काल होता है किन्तु वर्षाकाल का ज्येष्ठ—बड़ा काल चार मास का होता है।

पडिक्कमण (प्रतिक्रमण)

प्रतिक्रमण—पीछे लौटना।

प्रतिचरणा—अकार्य का परिहार और कार्य में प्रवृत्ति।

प्रतिहरणा—चारित्र सम्बन्धी प्रमाद के दोषों का परिहार।

वारणा—गलती से आत्मा को हटाना।

निवृत्ति—अशुभ भावों से निवृत्त होना।

निंदा—गलती के प्रति आत्मसंताप प्रकट करना।

गर्हा—दूसरों के सामने या गुरु के समक्ष दोष प्रकट करना।

शोधि—आत्मविशुद्धि करना। चूर्णि में विशोधि शब्द का प्रयोग हुआ है।[१]

---

१. आवचू. २ पृ. ५३।

पडिसेवणा (प्रतिसेवना)

प्रतिसेवना जैन दर्शन का पारिभाषिक शब्द है। इसका अर्थ है—अतिचार का सेवन, व्रतों में दोष लगाना।

विराधना, स्खलना, उपघात, अशोधि आदि शब्द इसके स्पष्ट वाचक हैं। शबलीकरण का तात्पर्य है—व्रतों को दोषों से चितकबरा करना।

पत्ति (पत्नी)

'पत्ति' शब्द के पर्याय में कुछ शब्द पत्नी शब्द के वाचक तथा कुछ शब्द स्त्रीवाचक हैं। पत्नी, वधू, उपवधू प्रिया आदि शब्द पत्नी के बोधक हैं। स्त्री, पद्मा, अंगना, महिला, नारी आदि शब्द सामान्यत: स्त्रियों के बोधक हैं। ईश्वरी, स्वामिनी—ये शब्द स्त्री की आढ्यता के द्योतक हैं। इसी प्रकार इष्टा, कान्ता, प्रिया आदि उसकी प्रियता की ओर संकेत करते हैं। स्त्री स्वभावत: लज्जालु होती है अत: 'विलिका' भी उसका एक पर्याय है। 'मणामा' और 'पोहट्टी' शब्द प्रिय स्त्री के अर्थ में देशी हैं।

पदुम (पद्म)

'पदुम' के पर्याय के अन्तर्गत १७ शब्दों का उल्लेख है। सामान्यत: एकार्थक होते हुए भी इनमें जाति एवं वर्णगत भेद है। 'सप्फ', 'तणसोल्लिक', 'कोज्जक' आदि शब्द पद्म के लिए प्रयुक्त होने वाले देशी शब्द हैं। इनमें 'इंदीवर' नील कमल का और 'पाटल' रक्त कमल का द्योतक है।

देखें—'उप्पल' ।

परिग्गह (परिग्रह)

परिग्रह का अर्थ है—स्वीकरण। सैद्धान्तिक दृष्टि से परिग्रह का अर्थ है—मूर्च्छा, आसक्ति। लौकिक भाषा में परिग्रह से तात्पर्य है—पदार्थों का संचय। सूत्रकार ने इसके तीस नाम गिनाये हैं जिनमें परिग्रह, संचय, चय, उपचय, निधान, संभार, आकर, संकर, पिंड, संरक्षण आदि शब्द संग्रह और उपचय के वाचक हैं क्योंकि धन का ही संग्रहण, उपचय और संरक्षण किया जाता है। इस आधार पर इन सबको परिग्रह माना गया है।

महेच्छा, प्रतिबंध, लोभात्मा, आसक्ति, अमुक्ति, तृष्णा, असंतोष आदि शब्द परिग्रह को पुष्ट करने वाली अथवा आदमी में परिग्रह बुद्धि उत्पन्न करने वाली वृत्तियां हैं अत: कारण में कार्य के उपचार से ये शब्द परिग्रह के वाचक हैं। कुछ शब्द परिग्रह से उत्पन्न विषम स्थितियों के वाचक हैं, जैसे—परिग्रह

कलह का भाजन होने से कलिकरंड कहलाता है। परिग्रही व्यक्ति हमेशा खेदखिन्न रहता है इसलिए परिग्रह का एक नाम आयास भी है। परिग्रह परिचय बढ़ाता है अतः संस्तव, धन-धान्य का विस्तार करने से प्रविस्तार तथा अत्यागभाव होने से परिग्रह को अवियोग भी कहते हैं। इस प्रकार ये तीस नाम परिग्रह, परिग्रह वृत्ति और परिग्रह-परिणाम के द्योतक हैं।

पवयण (प्रवचन)

वस्तु में दो धर्म होते हैं—सामान्य और विशेष। सामान्य अभेद का और विशेष भेद का प्रतिपादक है। टीकाकारों ने सामान्य धर्मों के आधार पर भी शब्दों को एकार्थक माना है।[1]

आवश्यक निर्युक्ति में सूत्र, अर्थ और प्रवचन—तीनों को एकार्थक मानते हुए भी भिन्न-भिन्न रूप से इनके पांच-पांच एकार्थक दिये हैं।[2] सूत्र व्याख्येय और अर्थ व्याख्यान होने से दोनों भिन्नार्थक हैं किन्तु प्रवचन के अंग होने से एकार्थक भी हैं। भाष्यकार ने इसी बात को फूल और कली के माध्यम से समझाया है। अर्थ और अनुयोग—ये दोनों एकार्थक शब्द हैं।[3] विशेष व्याख्या के लिए देखें—विभामहेटी पृ. ५०४-५०७।

देखें—'सुत्त', 'अणुओग'।

पवेइय (प्रवेदित)

पवेइय आदि तीनों शब्द सम्यक् प्ररूपण के अर्थ में प्रयुक्त किये गये हैं। इनका सूक्ष्म अर्थ-भेद इस प्रकार है—

प्रवेदित—अच्छी तरह ज्ञात, विविध रूप से कथित।

सुआख्यात—भली-भांति विवेचित।

सुप्रज्ञप्त—अनुभव के आधार पर कथित।[4]

पव्वइय (प्रव्रजित)

प्रव्रजित का अर्थ है—दीक्षित अर्थात् मुनि। जो मुनि होता है वह संयम, संवर तथा समाधि से युक्त होता ही है। मुनि का शरीर कठोर और

---

१. विभामहेटी पृ. ५०६।
२. आवनि ११४-११६।
३. विभामहेटी पृ. ५०९ : अर्थः व्याख्यानमनुयोग इत्यनर्थान्तरम्।
४. दशजिचू पृ. १३२।

स्निग्धता से शून्य होता है तथा मन भी स्नेह-शून्य होता है अत: वह रुक्ष कहलाता है अथवा जो कर्ममल का अपनयन करता है, वह लूष या रुक्ष है। वह संसार का पार पाने के कारण तीरार्थी कहलाता है। मुनि श्रुताध्ययन के साथ तपस्या करता है इसलिए उपधानवान्, विभिन्न तपस्याओं में रत रहने के कारण तपस्वी और कर्मक्षय के लिए उद्यत रहने के कारण दु:खक्षपक कहलाता है।[1]

पव्वज्जा (प्रव्रज्या)

प्रव्रज्या—दीक्षा।

निष्क्रमण—गृहत्याग।

समता—सुख-दु:ख में समत्व।

त्याग—बाह्य और आभ्यंतर परिग्रह का त्याग।

वैराग्य—विषय-विरक्ति।

धर्मचरण—क्षांति आदि धर्मों का सेवन।

अहिंसा—प्राणियों की हिंसा से उपरत होना।

दीक्षा—सब प्राणियों को अभय प्रदान करना।

शब्दनय की अपेक्षा से ये सभी प्रव्रज्या के एकार्थक हैं किन्तु समभिरूढ़ नय की अपेक्षा से भिन्न-भिन्न अर्थ के द्योतक हैं क्योंकि सभी शब्द भिन्न-भिन्न प्रवृत्ति से सम्बंधित हैं।[2]

पव्वाविय (प्रव्राजित)

'पव्वाविय' आदि चारों शब्द प्रव्रज्या की उत्तरोत्तर अवस्था के द्योतक हैं। इनका अर्थबोध इस प्रकार है—

प्रव्राजित—शिष्य के रूप में स्वीकार करना।

मुण्डापित—शिष्य बनाना, दीक्षित करना।

सेधित—व्रतों का आरोपण करना।

शिक्षापित—सूत्र और अर्थ की वाचना देना।

पाण (प्राण)

प्राण आदि शब्द जीव तत्त्व के वाचक होने पर भी इनमें जातिगत भेद हैं। जैसे—

---

१. स्थाटी प. १७४।

२. पंवटी पृ. ४।

प्राण—द्वीन्द्रिय आदि।
भूत—वनस्पति।
सत्त्व—पृथ्वी, अप् आदि।
जीव—पञ्चेन्द्रिय प्राणी।

प्राणा द्वित्रिचतुः प्रोक्ता, भूताश्च तरवः स्मृताः।
जीवाः पञ्चेन्द्रिया ज्ञेयाः, शेषाः सत्वा उदीरिताः॥

देखें—'जीवत्थिकाय'।

पाणवह (प्राणवध)

प्रस्तुत प्रकरण में प्राणवध के लगभग सभी नाम गुण निष्पन्न हैं। ये सभी नाम प्राणवध की भावना के निकट तथा उसकी विभिन्न अवस्थाओं के द्योतक हैं। प्रत्यक्षतः जीवहिंसा के द्योतक न होने पर भी उसकी ओर अभिमुख करने वाली प्रवृत्तियों के वाचक होने से एकार्थक हैं। जैसे—जीवितान्तकरण व्युपरमण उन्मूलना परितापनआस्नव, निर्यापना, घातना, मारणा, उपद्रवण, विच्छेद, आरंभ, समारंभ 'कटकमर्दन' आदि शब्दों को कार्य में कारण का उपचार मानकर एकार्थक मान लिया है। प्रस्तुत नामों की सूची में तीसरा नाम है—अवीसंभ (अविश्रम्भ) अर्थात् अविश्वास। प्राणवध में प्रवृत्त व्यक्ति जीवों के लिए अविश्वसनीय बन जाता है अतः अविश्वसनीयता भी एक दृष्टि से हिंसा ही है। पांचवां नाम है—अकृत्य। जितने भी अकृत्य—अकरणीय कार्य हैं वे हिंसा के द्योतक हैं, क्योंकि उनमें मानसिक, वाचिक या शारीरिक हिंसा रहती है। दुर्गति का कारण होने से दुर्गति-प्रपात, वज्र की भांति कठोर व अधोगमन का हेतु होने से वज्ज (वज्र) नाम भी सार्थक है। इसे वर्ज्य भी कहा जाता है, क्योंकि हिंसा विवेकी व्यक्तियों के द्वारा वर्जनीय है। हिंसा गुणों की विराधक होने से 'गुणानां विराधना' कहलाती है।

अपुण्य प्रकृतियों की वृद्धि के कारण पापकोप और उन प्रकृतियों के प्रति लोभ बढ़ाने से पापलोभ भी इसके पर्याय है। प्रस्तुत प्रकरण में इसका एक नाम है—मच्चु (मृत्यु)। आचारांग में भी हिंसा को मृत्यु कहा है क्योंकि हिंसा आयुष्य कर्म को प्रभावित करती है अतः प्राणवध के 'आयुष्यकर्मस्य भेद' आदि नाम भी गुण-निष्पन्न हैं।

पादव (पादप)

देखें—'दुम'।

पामुद्दिका (पादमुद्रिका)

'अंगविज्जा' में 'पामुद्दिका' शब्द के पर्याय में पांच शब्दों का उल्लेख है। ये पांचों शब्द पैरों के आभूषण के वाचक हैं। इन शब्दों का आशय इस प्रकार है—

१. पादमुद्रिका—पैरों में पहनी जाने वाली अंगूठी या बिछुवे।
२. वर्मिका—जालीदार आभूषण।
३. खिंखिणिका—चलते समय आवाज करने वाला आभूषण पायजेब आदि।

इसी प्रकार 'पादसूचिका', 'पादघट्टिका' आदि शब्द भी पैरों के भिन्न-भिन्न आभूषणों के नाम हैं।

पाव (पाप)

'पाव' शब्द के पर्याय प्राणवध के विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुए हैं तथा उपचार से रौद्र कार्य करने वाले पापी के लिए भी इन शब्दों का प्रयोग किया जा सकता है। इनमें अर्थभेद होते हुए भी क्रूरता व हिंसक वृत्ति की सर्वत्र समानता है—

पाप—पाप प्रकृति के बन्धन का हेतु होने से पाप तथा पाप प्रकृति का सेवन करने से पापी।
चंड—कषाय की उत्कटता से चंड।
रौद्र—क्रूर कार्य करने वाला।
क्षुद्र—अधम व द्रोही।
साहसिक—बिना विचारे कार्य करने वाला।
अनार्य—जो आर्य/श्रेष्ठ कर्मों से दूर है।
निर्घृण—जिसमें पाप के प्रति घृणा नहीं है।
नृशंस—दयाहीन।
महाभय—जिससे प्रतिपल भय बना रहे।
प्रतिभय—प्रत्येक प्राणी जिससे भयभीत रहे।
बीहणक—दूसरों को भयभीत करने वाला (दे)।
त्रासनक—आकस्मिक भय पैदा करने वाला जिससे शरीर व मन में कंपन पैदा हो जाये।
निरपेक्ष—दूसरों के प्रति उदासीन।
निर्द्धर्म—श्रुत, चारित्र आदि धर्म से रहित।

निष्करुण—करुणा रहित, कठोर हृदय वाला।[१]

पावय (पापक)

प्रस्तुत प्रसंग में संगृहीत सभी शब्द अप्रशस्त मनोविनय के वाचक हैं—

१. पापक—अशुभ चिन्तन करने वाला।

२. सावद्य—गर्हित कार्य में प्रवृत्त।

३. सक्रिय—मानसिक संताप पैदा करने वाली क्रियाओं में प्रवृत्त।

४. सोत्क्लेश—शोक आदि से अनुगत।

५. आस्नवकर—आस्रवों से संवलित।

६. छविकर—प्राणियों को पीड़ा पहुंचाने की प्रवृत्ति से युक्त।

७. भूताभिशंकन—प्राणियों के लिए भयावह।

पासाण (पाषाण)

'पासाण' शब्द के पर्याय में तेरह शब्दों का उल्लेख है। कुछ शब्द पत्थर के स्पष्ट वाचक हैं। मणि, वज्र आदि शब्द पत्थर के रूपान्तरण हैं। पर्वतक, गिरिक, मेरुक आदि शब्द शिलाखण्ड के वाचक हैं। मरुभूमि की कठोर मिट्टी पत्थर के समान कठोर होती हैं, उसे मरुभूतिक कहा जा सकता है। इस प्रकार सभी शब्द पाषाण के विभिन्न रूपान्तरण हैं।

पासादिय (प्रासादीय)

'पासादिय' शब्द के पर्याय के रूप में चार शब्दों का उल्लेख है। ये चारों ही शब्द अत्यधिक सुन्दरता को व्यक्त करने वाले विशेषण हैं[२], जैसे—

१. प्रासादीय—मन को प्रसन्न करने वाला।

२. दर्शनीय—चक्षु को आनन्द देने वाला।

३. अभिरूप—सदा मनोज्ञ रहने वाला।

४. प्रतिरूप—असाधारण रूप।[३]

पिंड (पिण्ड)

'पिण्ड' शब्द के एकार्थक में बारह शब्दों का उल्लेख है। यद्यपि ये सभी शब्द प्रतिनियत व भिन्न-भिन्न समूहों के वाचक हैं लेकिन सामान्य रूप

---

१. प्रटी प. ५।

२. सूटी प. १८२ : चत्वारोऽप्यतिशयरमणीयत्वख्यापनार्थमुपात्ताः।

३. राजटी पृ. ९।

से समूह अर्थ के वाचक होने से इन सभी को एकार्थक माना है[१]—

१. पिण्ड—बहुत चीजों को मिलाकर एक पिण्ड बनाना।
२. निकाय—भिक्षुओं का समूह।
३. समूह—मनुष्यों का समुदाय।
४. सपिण्डन—तिलपपड़ी में तिलों का परस्पर सम्यक् संयोग।
५. पिण्डन—वस्तु का संयोग।
६. समवाय—वणिकों का समूह।
७. समवसरण—तीर्थंकरों की परिषद्, अनेक वादियों का मिलन-स्थल।
८. निचय—सूअर आदि पशुओं का संघात।
९. उपचय—पूर्व समूह में वृद्धि होना।
१०. चय—ईटों की रचना, दीवार आदि बनाना।
११. युग्म—दो पदार्थों का मिलना।
१२. राशि—मूंगफली आदि का ढेर।

पितवण्ण (पीतवर्ण)

पितवण्ण और पीतक—ये दोनों शब्द पीले रंग के स्पष्ट पर्याय हैं। पद्मकेशर व तिगिंच्छ (पराग) का रंग पीला होता है अतः उपचार से इनको भी पीतवर्ण का पर्याय माना है। संभवतः छंद की दृष्टि से यहां पीत के स्थान पर पित हुआ है।

पितामह (पितामह)

'पितामह' शब्द के पर्याय में तीन शब्दों का उल्लेख है। ये सारे शब्द ब्रह्मा के द्योतक हैं। इनका आशय इस प्रकार है—

ब्रह्मा—जिसमें सारी सृष्टि वृद्धिंगत होती है।[२]

स्वयंभू—जो स्वयं पैदा होता है।

प्रजापति—समस्त सृष्टि का स्वामी तथा उसका पालनकर्त्ता।

पीणणिज्ज (प्रीणनीय)

आहार का एक कार्य है—शरीर को पुष्ट करना। विभिन्न प्रकार के आहार शरीर के रस, धातु, मांस आदि को पुष्ट करते हैं, इसलिए समवेत रूप में

१. यद्यपि पिंडादयः शब्दाः लोके प्रतिनियत एव संघात विशेषे रूढाः, तथापि सामान्यतो यद् व्युत्पत्तिनिमित्तं संघातत्वमात्रलक्षणं तत् सर्वेषामप्यविशिष्टमिति कृत्वा सामान्यतः सर्वेऽपि पिण्डादयः शब्दा एकार्थिका उक्ताः न कश्चिद्दोषः।

२. अचि पृ. ५२ : बृहन्ति वर्धन्ते चराचराणि भूतान्यत्र ब्रह्मा।

इन्हें एकार्थक माना है—
१. प्रीणनीय—सप्त धातुओं को सम करने वाला।
२. दीपनीय—दृप्त करने वाला, जठराग्नि को प्रदीप्त करने वाला।
३. दर्पनीय—बलवर्धक।
४. मदनीय—कामोत्तेजक।
५. बृंहणीय—शरीर को उपचित करने वाला।

पूयणट्ठि (पूजनार्थिन्)

पूजा, यश, मान और सम्मान—इन चारों शब्दों में शब्दगत अर्थभेद होने पर भी सामान्यत: ये एकार्थक हैं। अक्षत आदि से अर्चना करना पूजा है। वाचिक स्तुति करना यश है। वंदना करना, आने पर खड़ा होना, मान तथा वस्त्र आदि देना सम्मान है। इस प्रकार सम्मान व्यक्त करने के अर्थ में चारों शब्द एकार्थक हैं।

पोग्गलत्थिकाय (पुद्गलास्तिकाय)

भगवती सूत्र में षड्द्रव्य के अभिवचन के प्रसंग में पुद्गलास्तिकाय के अभिवचनों का उल्लेख है। इसमें प्रारम्भ के दो शब्द—पुद्गल और पुद्गलास्तिकाय—ये इसके वास्तविक पर्याय हैं। शेष द्विप्रदेशीस्कन्ध से लेकर अनन्तप्रदेशीस्कन्ध तक के सारे शब्द पुद्गल की विभिन्न अवस्थाओं के वाचक हैं।

प्रकृति (प्रकृति)

प्रकृति, प्रधान और अव्यक्त—ये तीनों शब्द एकार्थक माने गए हैं। सांख्य के २४ तत्त्वों में प्रधान तत्त्व को प्रकृति एवं अव्यक्त भी कहा है। मूल तत्त्व होने से सांख्य दर्शन में प्रकृति को प्रधान तत्त्व माना है। इसे अव्यक्त भी कहा जाता है क्योंकि महान् आदि व्यक्त तत्त्वों की तुलना में यह अव्यक्त है। महान् आदि विकृतियों की तुलना में प्रकृति शब्द व्यवहृत होता है। इस प्रकार तीनों शब्दों के अभिवचन सार्थक हैं।

प्रथमसमवसरण (प्रथमसमवसरण)

चातुर्मास का प्रथम दिन सावन बदी एकम होता है। यह धर्म-परिषद् के एकत्रित होने का प्रथम दिन है तथा इसी दिन से जैन संवत् शुरू होता है अत: वर्षावास को प्रथमसमवसरण कहते हैं। अवग्रह का अर्थ है—स्थान। ज्येष्ठ अर्थात् प्रधान। चातुर्मास साधुओं के लिए एक स्थान पर रहने का सबसे बड़ा

काल होता है अतः इसे ज्येष्ठावग्रह कहते हैं। चातुर्मास में मुनि एक स्थान पर चार महीने रहता है और शेष आठ महीने वह कहीं पांच दिन, कहीं दस दिन और कहीं एक मास रह सकता है। चार मास वह कहीं नहीं रह सकता।

फासिय (स्पृष्ट)

'फासिय' आदि सातों शब्द व्रत-पालन की उत्तरोत्तर अवस्थाएं हैं, किन्तु एक दूसरे से सम्बद्ध होने से ये समानार्थक हैं। इनका क्रमिक अर्थबोध इस प्रकार है—

१. स्पृष्ट—उचित समय में व्रत का सम्यक् स्वीकरण।
२. पालित—सतत सम्यक् उपयोग से उसका पालन।
३. शोधित—अतिचार वर्जन तथा अन्य क्रियाओं से शोधन करना।
४. तीरित—व्रत पालन की उत्कृष्ट अवस्था प्राप्त करना।
५. कीर्तित—उसके बारे में दूसरों को कहना।
६. आराधित—उक्त प्रकारों से व्रत की सम्यक् आराधना करना।[१]

फुडण (स्फुटन)

१. स्फुटन—स्वतः ही वस्तु का दो भागों में विभक्त होना।
२. भञ्जन—टुकड़ों में विभक्त करना।
३. छेदन—छेदना।
४. तक्षण—कुल्हाडी आदि से काटना।
५. विलुञ्चन—शरीर के रोम आदि खींचना।

बंभण (ब्राह्मण)

इसमें संगृहीत ब्राह्मणवाची शब्द गुणों से, ज्ञान से और क्रियाओं से सम्बन्धित हैं, जैसे—कृतयज्ञ, यज्ञकारी, प्रथमयज्ञ, यज्ञमुंड, अग्निहोत्र, आहिताग्नि, अग्निहोत्ररति आदि शब्द क्रिया से संबंधित हैं। वेद, वेदाध्यायी, वेदाभ्यासी, वेदपारग आदि शब्द ज्ञान से सम्बन्धित हैं। ब्रह्मऋषि, ब्रह्मज्ञ, प्रियब्रह्म आदि शब्द गुणवाची हैं।

कुछ शब्द पेय-पदार्थ के आधार पर भी निर्मित हैं। ब्राह्मण को सोमरस पीने वाला माना जाता है अतः सोमपा, सोमपाइ, सोमनाम आदि शब्द भी ब्राह्मण के लिए प्रयुक्त हैं।

---

१. प्रटी प. ११३।

सामान्यत: विप्र और द्विज ब्राह्मण के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। लेकिन ब्राह्मणजाति में पैदा होने वाले वे विप्र तथा उस जाति में उत्पन्न होकर योग्य वय में यज्ञोपवीत धारण करने वाले द्विज कहलाते हैं।

बहुजनाचीर्ण (बहुजनाचीर्ण)

ये तीनों शब्द 'जीतव्यवहार' के द्योतक हैं। अनेक गीतार्थ आचार्यों द्वारा आचीर्ण विधि को 'जीत' कहा जाता है। उसी विधि को परम्परा से व्यवहृत करना अथवा अपनी बहुश्रुतता से उस विधि के आधार पर अन्य विधि प्रवर्तित करना 'जीत' व्यवहार कहलाता है। ये तीनों शब्द इसी भावना के प्रतीक हैं। यह शब्द युगानुकूल परिवर्तन की प्रामाणिकता की ओर संकेत करता है।

बालक (बालक)

बालक शब्द के पर्याय में आठ शब्दों का उल्लेख है। इनमें कुछ शब्द अन्य जाति (पशुजाति) के बच्चों के वाचक हैं, जैसे—

पिल्लक—कुत्ते का बच्चा (दे)

तर्णक, वत्सक—गाय का बछड़ा।

कलभ—हाथी का बच्चा।

इन सभी शब्दों को अवस्थागत समानता से बालक के पर्याय में माना है।

भंत (भदन्त)

'भंत' आदि शब्द ईश्वर तुल्य व्यक्ति के अर्थ में प्रयुक्त हैं। इनका आशय इस प्रकार है—

भदन्त—जो भद्र/कल्याण और सुख से युक्त है।

भयान्त—जिसने भय/त्रास का अन्त कर दिया है।

भवान्त—जिसने संसार का अन्त कर दिया है।

('भंत' शब्द के संस्कृत में भदन्त, भयान्त और भवान्त आदि रूप बन जाते हैं।)

भय (भय)

दु:ख, मृत्यु, अशांति और अनर्थ का कारण है—भय, इसलिए कारण में कार्य का उपचार करके इन शब्दों को भी भय का पर्याय माना है। यद्यपि संस्कृत के कोशकारों ने भय के पर्याय में इन शब्दों का उल्लेख नहीं किया है।

---

१. आचू पृ. २६ : भयं दुक्खं असातं मरणं असंति अणत्थाणमिति एगट्ठा।

लेकिन चूर्णिकार एवं टीकाकारों ने अनेक स्थलों पर इन्हें एकार्थक माना है।[१]

भवण (भवन)

आकार-प्रकार में भेद होते हुए भी 'भवण' आदि चारों शब्द घर के अर्थ में एकार्थक हैं। जैसे—

१. भवन—चतु:शाल आदि।

२. गृह—सामान्य घर।

३. शरण—तृण आदि से बनी झोंपड़ी।

४. लयन—पर्वत को खोदकर बनाया गया घर अथवा पत्थर से निर्मित घर।

भिक्खु (भिक्षु)

'भिक्खु' शब्द के पर्याय में तेंतीस शब्दों का उल्लेख हुआ है। प्रवृत्ति लभ्य दृष्टि से सभी शब्द भिक्षु के पर्याय हैं लेकिन व्युत्पत्तिलभ्य (समभिरूढ़ नय की) दृष्टि से सभी शब्द भिन्न-भिन्न अर्थ के वाचक हैं। कुछ शब्दों का तात्पर्य इस प्रकार है—

१. तीर्ण—संसार-समुद्र को पार करने का इच्छुक।

२. त्रायी—षड्जीवनिकाय का रक्षक।

३. द्रव्य—शुद्धचैतन्य स्वरूप।

४. मुनि—ज्ञानी।

५. प्रज्ञापक—धर्मदेशना देने वाला।

६. पाषण्डी—अनेक दर्शनों का ज्ञाता, पाप से पलायन करने वाला।

७. ब्राह्मण—ब्रह्मचर्य में रत।

८. श्रमण—श्रम करने वाला, सम रहने वाला तथा अच्छे मन वाला।

९. निर्ग्रन्थ—बाह्य और आभ्यन्तर ग्रंथि से मुक्त।

१०. तपस्वी—तपस्या में रत।

११. क्षपक—कर्म-क्षय करने वाला।

१२. भवान्त—संसार-प्रवाह का अन्त करने वाला।

ये सभी नाम भिक्षु के विभिन्न गुणों के आधार पर प्रचलित हैं। पाषण्डी, मुनि, प्रज्ञापक, बुद्ध, विदु आदि शब्द भिक्षु की ज्ञान चेतना को व्यक्त करते हैं। इसी प्रकार व्रती, क्षान्त, दान्त, विरत, यति, प्रव्रजित, संयत, साधु, तपरत, संयमरत आदि शब्द संयम चेतना के द्योतक हैं तथा मुक्त, अगार, तीर्ण, द्रव्य, निर्ग्रन्थ, भवान्त, क्षपक, तीरार्थी आदि शब्द साधु की मोहरहित वीतराग

चेतना के आधार पर प्रचलित हैं।

भीय (भीत)

भयभीत के अर्थ में चारों शब्द एकार्थक हैं।[१] इनका आशय इस प्रकार है—

भीत—डरपोक।

त्रस्त—क्षुब्ध एवं भय के कारण पसीने से तरबतर।

उद्विग्न—चिन्ता से भयभीत।

भूमि (भूमि)

देखें—'थेरभूमि'।

भेसण (भेषण)

'भेसण' आदि शब्द भयभीत करने के अर्थ में प्रयुक्त हैं—

भेषण—डराना।

तर्जन—अंगुली निर्देश पूर्वक डांटते हुए भयभीत करना।

ताडन—लकड़ी आदि से पीटते हुए डराना।

भोज्ज (भोज्य)

भोज और संखडि—ये दोनों जीमनवार के प्रतीक हैं। 'संखडि' जीमनवार के अर्थ में प्रयुक्त देशी शब्द है। संखडि शब्द का शाब्दिक अर्थ है—हिंसा। जीमनवार में हिंसा होती है इसलिए इसे 'संखडि' कहा जाता है। इसका दूसरा अर्थ संस्कृति भी किया जा सकता है क्योंकि भोज आदि में अन्न का संस्कार किया जाता है—पकाया जाता है।[२]

मंदर (मन्दर)

मंदर पर्वत के एकार्थकों का अनेक स्थलों से संग्रहण किया गया है। इन सब नामों की अर्थ-परम्परा इस प्रकार है[३]—

मंदर—मंदर देव के योग से प्रचलित नाम।

मेरु—मेरु देव के कारण प्रचलित नाम।

मनोरम—देवताओं के मन को प्रसन्न करने वाला।

---

१. विपाटी प. ४३ : भीया ...... इति भयप्रकर्षाभिधानायैकार्थाः।

२. दस. पृ. ३६२।

३. सूर्यटी प. ७८ : मंदरादयः शब्दा परमार्थतः एकार्थिकास्ततो भिन्नाभिप्रायतया प्रवृत्ताः।

सुदर्शन—स्वर्णमय एवं रत्नमय होने से दर्शनीय।
स्वयंप्रभ—रत्नों की बहुलता से स्वयं प्रकाशी।
गिरिराज—समस्त पर्वतों में मूर्धन्य तथा तीर्थंकरों का अभिषेक होने से गिरिराज।
रत्नोच्चय—अनेक प्रकार के रत्नों का समूह।
शिलोच्चय—जिस पर पांडुशिलाओं का उपचय है।
लोकमध्य—समस्त लोक का मध्यवर्ती।
लोकनाभि—लोक की नाभि के समान अवस्थित।
अच्छ—पवित्र।
अस्त—सूर्य आदि ग्रह-नक्षत्र इससे अन्तरित होकर अस्त होते हैं।
सूर्यावर्त—सूर्य-चन्द्र आदि जिसकी प्रदक्षिणा करते हैं।
सूर्यावरण—सूर्य-चन्द्र आदि नक्षत्र जिसको आवेष्टित करते हैं।
उत्तम—सर्वश्रेष्ठ।
उत्तर—भरत आदि क्षेत्रों के उत्तर में स्थित।
दिशादि—सभी दिशाओं का आदि/प्रारम्भ बिन्दु।
अवतंस—समस्त पर्वतों का मुकुट।
धरणिकील—पृथ्वी की धुरी।
धरणिशृंग—पृथ्वी पर सबसे ऊंचा।

महव्वय (महावय)

'महव्वय' शब्द के पर्याय में इक्कीस शब्दों का उल्लेख है। महावय से क्षीणवंश तक के लगभग सभी शब्द बूढ़े व्यक्ति के स्पष्ट वाचक हैं। क्षीण, निष्ठित, परिमलित, परिशुष्क, परिशटित आदि शब्द वृद्धावस्था से होने वाली परिणतियों के द्योतक होने से एकार्थक हैं।

महापउम (महापद्म)

आगामी चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर महापद्म (श्रेणिक का जीव) सन्मति कुलकर की पत्नी भद्रा की कुक्षि में जन्म लेंगे। जब उनका जन्म होगा तब शतद्वार नगर में बहुत विशाल पद्मों की वर्षा होगी, इसलिए बालक का नाम 'महापद्म' रखा जाएगा। कुमारावस्था में देव उनका सहयोग करेंगे अतः उनको 'देवसेन' कहा जायेगा। राजा होने के पश्चात् उनका मुख्य वाहन विमल, चतुर्दन्त हस्तिरत्न होगा, इसलिए उनका नाम 'विमलवाहन' रखा जायेगा। इस

१. स्था ९/६२।

प्रकार ये तीनों ही नाम सार्थक—गुणनिष्पन्न हैं।[१]

माण (मान)

मान के एकार्थक के प्रंसग में भगवती सूत्र में बारह नामों का उल्लेख है। यद्यपि सामान्य रूप से ये सभी शब्द एकार्थक हैं, लेकिन प्रत्येक शब्द मान की उत्तरोत्तर अवस्था को प्रकट करता है।[१]

१. मान—अभिमान की सामान्य अवस्था।
२. मद—प्रसन्नता से होने वाला उत्कर्ष का भाव।
३. दर्प—सफलता पर होने वाला अहंकार अथवा उन्मत्तता।
४. स्तम्भ—खम्भे की भांति अकड़कर रहना।
५. गर्व—शारीरिक स्तर पर विशेष रूप से दिखाई देने वाला अहंकार। जैसे—नाक फूलना, गर्दन कड़ी रहना आदि।
६. अत्युत्क्रोश—दूसरों के सामने अपने गुणों का कीर्तन करना और स्वयं को श्रेष्ठ बताना। इस स्थिति में अहं वाणी में प्रकट होने लगता है।
७. परपरिवाद—दूसरों की निंदा करना व उनकी विशिष्टता का अपलाप करना।
८. उत्कर्ष—अभिमानवश अपनी समृद्धि व ऐश्वर्य का दिखावा करना।
९. अपकर्ष—अहंकारवश ऐसा कार्य करना जिससे दूसरों की हीनता दिखाई दे।
१०. उन्नत— विनय-विमुखता अथवा नीति-न्याय से विमुख होना।
११. उन्नाम—अभिमानवश नमन न करना।
१२. दुर्नाम—श्रद्धेय के प्रति अकड़ाई से नमन करना।

स्तम्भ आदि शब्द मान के कार्य हैं लेकिन वस्तुतः ये सभी मान के एकार्थक हैं।[२]

बौद्ध साहित्य में १० क्लेशवस्तु में मान को क्लेश माना है तथा उस प्रसंग में मान के वाचक अनेक शब्दों का उल्लेख है, वैसे—मान, मञ्जना, मञ्जितत्त, उन्नति, उन्नम, धज, सम्पग्गाह, केतुकम्यता आदि।[३]

माया (माया)

'माया' शब्द के पर्याय में यहां पन्द्रह शब्द उल्लिखित हैं। यद्यपि ये सभी शब्द माया के कार्य रूप में उद्धृत हैं लेकिन उपचार से टीकाकार ने

१. भटी पृ. १०५१ : मान इति सामान्यं नाम मदादयस्तु तद्विशेषाः।
२. भटी पृ. १०५१ : स्तम्भादीनि मानकार्याणि मानवाचका वैते ध्वनयः।
३. धसं पृ. २७१, २७२।
४. भटी पृ. १०५२ : मायैकार्थाः वैते ध्वनयः।

इनको एकार्थक माना है।[४]

१. माया—सामान्य अवस्था।

२. उपधि—दूसरों को ठगने के विचार से उसके पास जाना।

३. निकृति—किसी को ठगने के पहले उसके प्रति आदर करना अथवा एक माया को छिपाने के लिए दूसरी माया करना।

४. वलय—वक्र आचरण, व्यंग्यपूर्ण वचन बोलना।

५. गहन—दूसरा समझ न सके ऐसा सघन शब्दजाल रचना।

६. नूम—दूसरों को ठगने के लिए अधम से अधम बर्ताव करना (दे)।

७. कल्क—हिंसात्मक उपायों से ठगना।

८. कुरूप—माया व षड्यंत्र करने वाले व्यक्ति का चेहरा घबराहट व बेचैनी से कुरूप हो जाता है अत: माया का एक अर्थ कुरूप है।

९. जिह्म—बगुले की भांति वंचनापूर्ण व्यवहार करना।

१०. किल्बिष—किल्विषिक देव की भांति कपटपूर्ण आचरण करना।

११. आचरण—किसी को छलने के लिए नाना प्रकार की कपटपूर्ण चेष्टाएं करना।

१२. गूहन—कपटाई करके अपने स्वरूप को छिपाना।

१३. वंचन—दूसरों को पूरी तरह ठगना।

१४. प्रतिकुञ्चन—दूसरों द्वारा सरलभाव से कहे वचन का खंडन करना तथा अपनी असत्य बात को अच्छे शब्दों में प्रस्तुत करना।

१५. सातियोग—मिलावट करना व कूट-माप-तोल करना।

प्रस्तुत एकार्थक में माया, उपधि और निकृति तक के शब्दों में मानसिक माया, वलय और गहन में वाचिक माया तथा नूम से सातियोग तक के सभी शब्दों में माया कार्यरूप में परिणत हो जाती है।

मित्त (मित्र)

स्वजन आदि शब्द मित्र के अन्तर्गत ही आते हैं अत: स्वजन के विभिन्न अंग ज्ञाति, सम्बन्धी आदि को भी मित्र के अन्तर्गत लिया है। इन शब्दों की अर्थवत्ता इस प्रकार है—

मित्र—स्नेही।

ज्ञाति—समान जाति वाला।

निजक—पितृव्य आदि निकट सम्बन्धी।

सम्बन्धी—सास, श्वसुर आदि।

परिजन—दास-दासी आदि।
वयस्क—समान वय का मित्र।
सखा—हर क्रिया साथ में करने वाला।
सुहृद्—हमेशा साथ में रहने वाला तथा हितकारी सलाह देने वाला।
सांगतिक—संगति मात्र से होने वाला मित्र।
घाडिय—सहयोगी (दे)।

मुच्छिय (मूर्च्छित)

'मुच्छिय' आदि शब्द आसक्ति से होने वाली विभिन्न अवस्थाओं के द्योतक हैं, जैसे—

मूर्च्छित—विवेक-चेतना शून्य।
ग्रथित—लोभ के तन्तुओं से बंधा हुआ।
गृद्ध—आकांक्षा वाला।
अध्युपपन्न—विषयों के प्रति एकाग्र।[1]
विपाक सूत्र के टीकाकार ने इनको एकार्थक माना है।[2]

मुम्मुर (मुर्मुर)

मुर्मुर आदि सभी शब्द अग्नि की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं को व्यक्त करते हैं। लेकिन समवेत रूप से अग्नि के वाचक होने के कारण एकार्थक हैं—

१. मुर्मुर—भस्म मिश्रित कंडे की अग्नि।
२. अर्चि—मूल अग्नि से विच्छिन्न ज्वाला अथवा दीपशिखा का अग्रभाग।
३. ज्वाला—अग्नि से संयुक्त अग्निशिखा।
४. अलात—अधजली लकड़ी।
५. शुद्ध अग्नि—ईंधन रहित अग्नि अथवा अय:पिण्ड में प्रविष्ट अग्नि।

मेंढि (मेढी)

'मेढि[3]' आदि शब्द कुटुम्ब या समाज के प्रधान व्यक्ति के बोधक हैं। वह व्यक्ति पूरे कुटुम्ब या समाज का आधारभूत होता है अत: ये सभी शब्द

---

१. ज्ञाटी प. ९१।
२. विपाटी प. ४१ : मुच्छिए·····त्ति एकार्थाः।
३. आप्टे, पृ. १२८९ : मेढि, मेढी, मेथिः।

उसकी गुणवत्ता को द्योतित करते हैं।

मोहणिज्जकम्म (मोहनीयकर्म)

ये सभी नाम मोहनीय कर्म की विभिन्न अवस्थाओं के द्योतक हैं। यहां अवयवों में अवयवी अथवा खंड में समुदाय का उपचार कर सभी को मोहनीय की संज्ञा दी गयी है। कषाय चार हैं—क्रोध, मान, माया और लोभ। इनमें क्रोध के दस, मान के ग्यारह, माया के सतरह और लोभ के चौदह—इस प्रकार चार कषायों के ५२ भेद मोहनीय के पर्याय मान लिए गये हैं। इसके अतिरिक्त भगवती सूत्र में क्रोध आदि चारों कषायों के भिन्न भिन्न पर्यायवाची शब्दों का उल्लेख मिलता है जो प्रायः इन शब्दों से समानता रखते हैं।

विशेष व्याख्या के लिए देखें—'क्रोध', 'मान', 'माया' और 'लोभ' के टिप्पण।

रज्ज (राज्य)

राज्य, देश और जनपद—ये तीनों शब्द स्थान के वाचक हैं।

१. राज्य—सम्पूर्ण राष्ट्र।

२. देश—प्रान्त।

३. जनपद—प्रान्त की ईकाई (जिला)।

इसके अतिरिक्त ग्राम, नगर, निगम, राजधानी, खेट, कर्बट, मडंब, द्रोणमुख, पत्तन, आकर, आश्रम, संवाह, सन्निवेश आदि शब्द भी वसति के प्रकार हैं। ये सभी शब्द यद्यपि क्षेत्ररचना की दृष्टि से भिन्न-भिन्न हैं, लेकिन वसति के रूप में इनको एकार्थक माना है।

रयस् (रयस्)

रय का अर्थ है—वेग। चेष्टा, अनुभव और फल इसी अर्थ के वाचक हैं। वृत्तिकार ने इन्हें एकार्थक माना है।[1] इनको एकार्थक मानने का रहस्य सुबोध नहीं है।

रहस्स (ह्रस्व)

'रहस्स' शब्द के एकार्थक के रूप में तेवीस शब्दों का उल्लेख है।

१. आवहाटी पृ. २९३।

यहां 'संपिंडित' 'सन्निरुद्ध' आदि शब्द ह्रस्व अर्थ के अन्तर्गत लिये गए हैं। जो रोका हुआ होगा, वह एकत्रित होने के कारण विस्तृत नहीं होगा। इसी दृष्टि से आकुंडित (आकुञ्जित), संवेल्लित (दे) आदि शब्द जो संवृत या संकुचित के अर्थ में हैं, वे भी अल्प या ह्रस्व के ही द्योतक हैं।

राग (राग)

राग का अर्थ है—अनुराग, लोभ, आसक्ति। यहां गृहीत कुछ शब्द आसक्ति की मंदता और कुछ शब्द उसकी तीव्रता के द्योतक हैं। जैसे—मूर्च्छा, स्नेह, गृद्धि, अभिलाषा आदि शब्द आसक्ति की तीव्रता की ओर संकेत करते हैं।

देखें—'लोभ' का टिप्पण।

राहु (राहु)

भगवती में राहु के नौ नाम उल्लिखित हैं। इनमें दर्दुर, मकर, कच्छप आदि कुछ नाम पशुवाची हैं। राहु एक देव है। उसके विमान पांच वर्णों के हैं—कृष्ण, नील, रक्त, पीत और श्वेत। राहु के अभिवचनों की सार्थकता अन्वेषणीय है। शब्दकल्पद्रुम में उसके अनेक नामों का उल्लेख है—राहु, तमस्, स्वर्भानु, सैंहिकेय, विधुन्तुद, अस्रपिशाच, ग्रहकल्लोल, उपप्लव, शीर्षक, उपराग, कृष्णवर्ण, कबन्ध, अगु, असुर आदि। राहु के प्रत्यधिदेवता का नाम सर्प है और राहु का वर्ण कृष्ण है।[१] इस प्रकार कृष्ण सर्प उसका पर्याय बन जाता है। इसी प्रकार अन्यान्य शब्द भी उसकी विभिन्न अवस्थाओं के द्योतक होने चाहिए।

रुण्ण (रुदित)

१. रुदित—रोना, आंसू बहाना।
२. रटित—सिसकते हुए रोना। गुजराती भाषा में रोने के अर्थ में 'रडे छे'—ऐसा प्रयोग होता है।
३. क्रंदन—इष्ट वियोग में क्रन्दन के साथ रुदन।
४. रसित—सूअर की भांति करुणोत्पादक शब्द करते हुए रोना।
५. करुणविलपित—करुण विलाप करना।[२]

देखें—'रोयमाणी' का टिप्पण ।

रोयमाणी (रुदती)

'रोयमाणी' आदि शब्द रुदन की विशेष अवस्थाओं के द्योतक हैं,

---

१. शक भा ४ पृ. १६०।
२. प्रटी प. १६७।

जैसे—

१. रुदन—रोना।
२. क्रन्दन—क्रन्दन के साथ रुदन।
३. तेपन—भय और पसीने से मिश्रित रुदन।
४. शोक—शोक व दु:ख के साथ निरन्तर रुदन।
५. विलपन—विलाप एवं छाती पीटते हुए रोना।

देखें—'रुण्ण' का टिप्पण।

लघुक (लघुक)

देखें—'गुरुक' का टिप्पण।

लता (लता)

जैन परम्परा में इन्द्रियविजय के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार की तपस्याएं की जाती थीं। उनको इन्द्रियविजय तप कहा जाता था। उसका क्रम इस प्रकार है—

पहले दिन दो प्रहर करना, दूसरे दिन एकासन, तीसरे दिन विगयवर्जन, चौथे दिन आचाम्ल, पांचवें दिन उपवास।

इस प्रकार एक-एक इन्द्रिय-विजय के लिए पांच दिनों तक यह तप करना होता था। यह पांच दिनों की एक लता, श्रेणी या परिपाटी होती थी।[१]

लद्धट्ठ (लब्धार्थ)

'लद्धट्ठ' आदि शब्द अर्थ-ग्रहण करने की क्रमिक अवस्थाओं के द्योतक हैं। लेकिन समवेतरूप में वे एक ही अर्थ को अभिव्यक्त करते हैं, जैसे—

१. लब्धार्थ—श्रवण के द्वारा अर्थ को जानना।
२. गृहीतार्थ—अर्थ का अवधारण करना।
३. पृष्टार्थ—संशय होने पर पूछना।
४. अभिगतार्थ—अर्थ का सम्यक् अवबोध करना।
५. विनिश्चितार्थ—तात्पर्य को समझ कर हृदयंगम कर लेना।

लद्धमईय (लब्धमतिक)

मति का अर्थ है बुद्धि, श्रुति का अर्थ ज्ञान तथा संज्ञा का अर्थ मानसिक

१. प्रसाटी प. ४३५।

अवबोध है। इस प्रकार ये तीनों शब्द ज्ञानार्थक हैं।

लोभ (लोभ)

लोभ के पर्याय शब्दों में यहां सोलह शब्दों का उल्लेख है। ये सभी शब्द लोभ की उत्तरोत्तर अवस्था के द्योतक हैं।[१] इन शब्दों का अर्थबोध इस प्रकार है—

इच्छा—किसी वस्तु के प्रति अभिलाषा।
मूर्च्छा—प्राप्त वस्तु की रक्षा का प्रयत्न।
कांक्षा—अप्राप्त की प्राप्ति का प्रयत्न।
गृद्धि—प्राप्त विषयों में आसक्ति।
तृष्णा—अतृप्ति भाव।
भिध्या—विषयों के प्रति दृढ़ अभिनिवेश।
अभिध्या—पदार्थासक्ति के कारण अपने संकल्प से डिगना।
आशंसना—प्रिय व्यक्ति की भौतिक समृद्धि की कामना।
प्रार्थना—दूसरों की समृद्धि की याचना।
लालपन—खुशामद करके इष्ट वस्तु की मांग करना।
कामाशा—इष्ट रूप तथा शब्द प्राप्ति की विशेष इच्छा।
भोगाशा—इष्ट गंध, रस और स्पर्श के संयोग की इच्छा।
जीविताशा—जीने की उत्कट अभिलाषा।
मरणाशा—विपत्ति में मरने की इच्छा।
नन्दीराग—भौतिक समृद्धि की सर्वात्मना प्रबल आसक्ति।

धम्मसंगहणि में 'लोभक्लेश' के प्रसंग में लोभ के वाचक अनेक शब्दों का उल्लेख है। उसमें कुछ शब्द भगवती में निर्दिष्ट लोभ के एकार्थक के संवादी हैं, जैसे—राग, नंदी, नन्दीराग, इच्छा, मुच्छा, अज्झोसान, गेधि, संग, पणिधि, आसा, आसिसना, रूपासा, लाभासा, धनासा, जीवितासा, पत्थना, अभिज्झा इत्यादि।

लोमसिका (दे)

'लोमसिका' आदि शब्द विभिन्न प्रान्तों में ककड़ी के अर्थ में प्रयुक्त देशी शब्द हैं। ककड़ी शब्द 'कक्कुडिगा' शब्द का बदला रूप प्रतीत होता है।

---

१. भटी पृ. १०५२, १०५३ : लोभ इति सामान्यं नाम, इच्छादयास्तद्विशेषाः।

'संगलिका' शब्द यद्यपि फली के अर्थ में प्रसिद्ध है लेकिन यहां ककड़ी के लिए प्रयुक्त है।

लोलुग

लोलुग का अर्थ है—प्रगाढ़। जो प्रगाढ़ होता है, वह अधिक होता ही है अत: प्रगाढ़ को भृश भी कहा जाता है और अव्यवच्छिन्न होने के कारण उसका एक नाम निरन्तर भी है।

वंझा (वन्ध्या)

'वंझा' आदि शब्द एक दृष्टि से बांझ के द्योतक हैं—

१. वन्ध्या—जो कभी प्रसव नहीं करती।

२. अजनयित्री—जो प्रजनन नहीं करती अथवा जिसकी सन्तान जीवित नहीं रहती।

३. जानुकूर्परमाता—जो हीन अंग होने के कारण संतान का प्रसव नहीं करती।

इस प्रकार तीनों शब्द भावार्थ में एक ही अर्थ के वाचक हैं।

वंदणग (वन्दनक)

'वंदणग' शब्द के पर्याय में ५ शब्दों का उल्लेख है। ये पांचों शब्द वंदना की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं के वाचक होने पर भी एकार्थक हैं।[१] इनका अर्थबोध इस प्रकार है—

वंदनक—प्रशस्त मन, वचन और काया से गुरु का अभिवादन व स्तुति करना।

चितिकर्म—दान आदि देकर सम्मानित करना।

कृतिकर्म—विधिपूर्वक नमन आदि करना।

पूजाकर्म—अक्षत आदि से पूजा करना।

विनयकर्म—विनय करना।

वंदित (वंदित)

देखें—'अच्चिय' तथा 'थुइ' का टिप्पण।

वक्क (वाक्य)

'वक्क' के एकार्थक में बारह शब्दों का उल्लेख है। कुछ शब्दों की अर्थध्वनि इस प्रकार है[२]—

---

१. प्रसाटी प. २९ : वंदनकस्य इमानि भवन्ति पञ्चैव नामानि।

२. दशअचू पृ. १५९ : वक्कएगट्ठिताणि।

१. वचन—जो अर्थ को अभिव्यक्त करता है।
२. गिरा—जो भाषा वर्गणा के पुद्गलों का भक्षण करती है।
३. सरस्वती—जो स्वरयुक्त होती है।
४. भारती—जो अर्थभार को धारण करती है।
५. गो—जो मुख से नि:सृत होकर लोकान्त तक पहुंच जाती है।
६. भाषा—जो बोली जाती है।
७. प्रज्ञापनी—जिसके द्वारा अर्थबोध किया जाता है।
८. देशनी—जो अर्थ का देशन/कथन करती है।
९. वाग्योग—जीव की वाचिक प्रवृत्ति।
१०. योग—शुभ और अशुभ का योग करने वाली।

वध (वध)

'वध' आदि शब्द पीड़ित करने के अर्थ में समानार्थक हैं। पीड़ित करने के साधनों की भिन्नता होने पर भी इनमें पीड़ा की समानता है—

१. वध—यष्टि आदि से मारना।
२. बन्धन—बांधना।
३. ताडन—पीटना।
४. अंकन—तप्त लोहे की शलाका से चिह्नित करना।
५. निपातन—गड्ढे आदि में फेंकना।
६. विघात—चोट पहुंचाना।

ववण (वपन)

'ववण' आदि शब्द बीज-वपन की विविध प्रक्रियाओं के द्योतक हैं—

१. वपन—सामान्यत: बीज बोना।
२. रोपण—अंकुर आदि को पुन: रोपना, जैसे—शालि धान्य आदि।
३. प्रकिरण—बीजों को इधर-उधर बिखेरना।
४. परिशाटन—कलमें लगाना।

यहां वपन शब्द का अर्थ है—कुछ लाभ देने वाला। ये चारों शब्द एकार्थक हैं।[1]

ववहार (व्यवहार)

१. व्यभा १ टी प. ५ : वपनशब्दस्य प्रदानलक्षणोऽर्थ: समर्थित:। ······शब्दचतुष्टयमेकार्थ, एकार्थप्रवृत्ता: परस्परमेते पर्याया:।

संघ-व्यवस्था की दृष्टि से निर्मित आचार-संहिता, जिसमें कर्तव्य और अकर्तव्य तथा प्रवृत्ति-निवृत्ति का निर्देश हो, वह व्यवहार कहलाती है। व्यवहार के पांच भेद हैं—आगम, श्रुत, आज्ञा, धारणा और जीत। भाव व्यवहार के ये पर्याय नाम हैं—

१. सूत्र—अर्थ की सूचना देने वाले पूर्व अथवा छेदसूत्र।
२. अर्थ—सूत्र का अभिधेय स्पष्ट करने वाला।
३. जीत—अनेक गीतार्थ मुनियों द्वारा आचीर्ण।
४. कल्प—संयम-पालन करने में शक्ति प्रदाता।
५. मार्ग—शुद्धि का साधन।
६. न्याय—मोक्ष का साधन।
७. ईप्सितव्य—मुमुक्षुओं द्वारा वांछित।
८. आचरित—महान् व्यक्तियों द्वारा आचरित।

ये आठों पर्याय 'व्यवहार' के विषय-वस्तु तथा प्रतिपाद्य के वाचक हैं।[१]

वाम (वाम)

वाम का अर्थ है—प्रतिकूल। वामावृत्त, वामायार, वामशील आदि शब्द प्रतिकूल शील व आचार के अर्थ में प्रयुक्त हैं। इनमें वामपक्ष, वामदेश, वामभाग आदि शब्द दाहिने भाग के वाचक हैं तथा अपसव्य आदि शब्द संस्कृत कोशों में भी वाम के अर्थ में प्रयुक्त हैं।

वितर्क (वितर्क)

देखें—'तक्क' का टिप्पण।

वुड्ढ (वृद्ध)

वृद्ध, श्रावक और ब्राह्मण ये तीनों शब्द आज भिन्न-भिन्न अर्थ के वाचक हैं। प्राचीन साहित्य में ये तीनों शब्द प्रौढ़ आचार वाले श्रावक के लिए प्रयुक्त थे। अनुयोगद्वार चूर्णि में ब्राह्मण के लिए वृद्ध श्रावक शब्द का उल्लेख हुआ है।[२]

शोधि (शोधि)

---

१. व्यभा १ टी प. ६।
२. अनुद्वाचू पृ. १२।
३. व्यभा १० टी प. ९७।

धर्म आत्मशोधि का कारण है अत: कारण में कार्य का उपचार करके यहां धर्म और शोधि को भाष्यकार ने एकार्थक माना है।[३]

संकित (शंकित)

'संकित' आदि तीनों शब्द संदिग्ध चेतना के द्योतक हैं। इनका अर्थबोध इस प्रकार हैं—

शंकित—लक्ष्य के प्रति संशयशीलता।

कांक्षित—कर्त्तव्य के प्रतिकूल सिद्धान्तों की आकांक्षा।

विचिकित्सित—फल के प्रति संदेह।

भगवती सूत्र में इन तीनों शब्दों के साथ इन दो शब्दों का प्रयोग इसी अर्थ में हुआ है।

भेदसमापन्न—लक्ष्य के प्रति मन में द्वैधभाव उत्पन्न होना।

कलुषसमापन्न—मतिविपर्यास।

धम्मसंगहणि में, कंखा, कंखायना, कंखायितत्त, विमति, विचिकिच्छा द्वेलहक द्वेधापथ, संसय, अनेकसंग्गाह, आसप्पना, परिसप्पना, अपरियोगाहना, थम्भितत्त आदि का एक ही अर्थ में प्रयोग हुआ है।[१]

संख (शंख)

शंख सफेद होता है। इसके पर्यायवाची ८ शब्द हैं। ये सभी शब्द श्वेतवर्ण के द्योतक हैं अत: वर्णसाम्य के कारण ये एकार्थक हैं।

संघ (संङ्घ)

संघ आदि चारों शब्द श्रमणसमुदाय को व्यक्त करने वाले हैं। लेकिन इनमें संख्याकृत भेद है—

संघ—गण-समुदाय।

गण—कुल-समुदाय।

कुल—गच्छ-समुदाय।

गच्छ—एक आचार्य का परिवार।

संजत (संयत)

इसके अन्तर्गत गृहीत संयत, विमुक्त आदि छहों शब्द संयमी व्यक्ति की भावधारा के द्योतक हैं। जो व्यक्ति संयमी होता है वह बाह्य आकर्षणों से

---

१. धसं पृ. २५९, २६०।

विमुक्त होता है, अनासक्त होता है। पदार्थ तथा शरीर के प्रति उसकी मूर्च्छा नहीं होती। वह ममकार तथा स्नेहबंधन से मुक्त होता है।

संजय (संयत)

अनगार या साधु के विशेषण के रूप में आगमों में अनेक स्थलों पर 'संजय' आदि शब्दों का उल्लेख हुआ है—

संयत—सतरह प्रकार के संयम में अवस्थित।

विरत—पापों से निवृत्त भिक्षु, अथवा बारह प्रकार के तप में अनेक प्रकार से रत।

प्रतिहतपापकर्मा—ज्ञानावरणीय आदि आठ कर्मों को हत करने वाला।

प्रत्याख्यातपापकर्मा—आस्रव द्वारों को निरुद्ध करने वाला।

अर्थभेद करते हुए भी चूर्णिकार जिनदास ने इनको एकार्थक माना है।[१] इसके अतिरिक्त अक्रिय, संवृत तथा एकान्तपंडित शब्द भी संयमी व्यक्ति के अर्थ को व्यक्त करते हैं।

संत (सत्)

सत्, तत्त्व, तथ्य, अवितथ और सद्‌भूत ये सारे शब्द सत्य—यथार्थ के द्योतक हैं। जो तथ्य होता है, वह यथार्थ ही होता है।[२]

संत (शान्त)

'संत' आदि शब्द शान्त के अर्थ में प्रयुक्त एकार्थक हैं।[३] इनका अर्थभेद इस प्रकार है—

शान्त—कषायमंदता।

प्रशान्त—कषाय के उदय को विफल करने वाला।

उपशान्त—कषायों को उदय में भी नहीं लाने वाला।

परिनिर्वृत—कषाय के पूर्ण नष्ट हो जाने पर चैतसिक स्वास्थ्य का धनी।

अनाश्रव—प्राणातिपात आदि आस्रव से रहित।

अमम—ममकार रहित।

अकिंचन—अपरिग्रही।

छिन्नस्रोत—संसार-प्रवाह के उद्‌गम मिथ्यात्व आदि स्रोतों से रहित।

---

१. दशजिचू पृ. १५४ : अहवा सव्वाणि एताणि एगट्ठियाणि।

२. ज्ञाटी प. १८४ : एकार्था वैते शब्दाः।

३. औपटी पृ. ६६ : प्रशमप्रकर्षाभिधानायैकार्थम्।

निरुपलेप—कर्म लेप से रहित।

इस प्रकार ये सभी शब्द निर्मलता की उत्तरोत्तर अवस्था के वाचक हैं।

संत (श्रान्त)

'संत' आदि तीनों शब्द थकान के अर्थ में प्रयुक्त हैं[१]—

श्रान्त—शारीरिक थकान।

तान्त—मानसिक थकान।

परितान्त—शारीरिक और मानसिक थकान।

संदाण (सन्दान)

किसी तपस्या या साधना के प्रतिफल में भौतिक ऋद्धि-सिद्धि की आकांक्षा करना संदान/बंधन है। निदान, पर्व आदि इसी के पर्याय हैं।

संबुद्ध (संबुद्ध)

संबुद्ध, पंडित व प्रविचक्षण—ये तीनों शब्द ज्ञानी व्यक्ति के लिए प्रयुक्त हैं। चूर्णिकार ने एकार्थक मानते हुए भी इनका सूक्ष्म अर्थभेद किया है—

संबुद्ध—बुद्धि-सम्पन्न, सम्यग् दर्शन युक्त।

पंडित—परित्यक्त भोगों के प्रत्याचरण में दोषों को जानने वाला, सम्यग् ज्ञान से युक्त।

प्रविचक्षण—पाप से विरत, सम्यक्चारित्र से युक्त।[२]

संयत (संयत)

जो सतरह प्रकार के संयम से संवृत है वह संयत, जो साधनाशील है वह साधु तथा जिसके सभी द्वन्द्व समाहित हो चुके हैं, वह सुसमाहित है। इस प्रकार ये तीनों शब्द मुनि के पर्याय हैं।

संरंभ (संरम्भ)

संरंभ आदि शब्द हिंसा की क्रमिक अवस्थाओं के द्योतक हैं। इनका आशय इस प्रकार है—

संरंभ—वध का संकल्प करना।

---

१. उपाटी पृ. १११ : एते समानार्थाः।

२. दशजिचू पृ. ९२, दशहाटी प. ९९।

३. स्थाटी प. ३८४।

समारंभ—परितापित करना।

आरंभ—वध करना।[३]

सक्क (शक्र)

'सक्क' शब्द के पर्याय में बारह शब्दों का उल्लेख है जो अर्थभेद रखते हुए भी भिन्न-भिन्न प्रवृत्ति के निमित्त से इन्द्र के अर्थ में रूढ़ हैं[१]—

१. शक्र—शक्ति सम्पन्नता का द्योतक।
२. देवेन्द्र—देवों का इन्द्र।
३. देवराज—देवों के मध्य सुशोभित होने वाला।
४. मघवा—मघ—मेघ को वश में रखने वाला।
५. पाकशासन—पाक नामक शत्रु पर शासन करने वाला।
६. शतक्रतु—सौ यज्ञ सम्पन्न करने वाला। जैन परम्परा के अनुसार कार्तिक सेठ के भव में सौ उपासक प्रतिमाओं का पालन करने से शतक्रतु।
७. सहस्राक्ष—इन्द्र के ५०० मंत्री होते हैं। वह उनकी हजार आंखों से देखता है अथवा हजार आंखों से जितना देखा जाता है उतना वह अपनी दो आंखों से देख लेता है अतः सहस्राक्ष।
८. वज्रपाणि—हाथ में वज्र रखने वाला।
९. पुरंदर—पुर नामक राक्षस का दारण करने वाला।
१०. दक्षिणार्धलोकाधिपति।
११. एरावणवाहन—एरावण नामक हाथी के वाहन से युक्त।
१२. सुरेन्द्र—सुर/देवों का इन्द्र।

सक्कार (सत्कार)

'सक्कार' शब्द के पर्याय में सात शब्दों का उल्लेख है। ये सभी शब्द सम्मान अभिव्यक्त करने की भिन्न-भिन्न रीतियों के द्योतक हैं, जैसे—

१. सत्कार—'सक्कारा पवरवत्थमाईहिं'—किसी को आदरपूर्वक भोजन, वस्त्र आदि देना।
२. सम्मान—स्तुतिवचन, चरणस्पर्श आदि।
३. कृतिकर्म—वन्दन करना।
४. अभ्युत्थान—सामने जाना अथवा आदरणीय व्यक्ति के सम्मान में खड़े होना।

---

१. अनुद्वामटी प. २४६ : प्रत्येकं भिन्नाभिधेयान् प्रतिपद्यते भिन्नप्रवृत्ति······।

५. अंजलिप्रग्रह—हाथ जोड़ना।
६. आसनाभिग्रह—आसन पर बैठने का आग्रह करना।
७. आसनानुप्रदान—आदरणीय व्यक्ति का आसन एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना।

सण्णिहि (सन्निधि)

सन्निधि आदि शब्द संग्रह के द्योतक हैं। लेकिन इन शब्दों में पदार्थ कृत भेद द्रष्टव्य है, जैसे—

सन्निधि—दूध, दही आदि विनाशी द्रव्यों का संग्रह।
सन्निचय—अविनाशी द्रव्यों का संग्रह।
निधि—सुरक्षित पूंजी।
निधान—भूमिगत खजाना।

सद्दूल (शार्दूल)

शार्दूल, सिंह और चिल्लल—ये तीनों शब्द सिंह की भिन्न-भिन्न जातियों के द्योतक हैं। 'चिल्लल' शब्द चीते के अर्थ में देशी पद है।

समण (श्रमण)

देखें—'भिक्खु' का टिप्पण।

समर (समर)

इसमें संगृहीत पांचों शब्द कलह, युद्ध के द्योतक हैं—

१. समर—घनघोर युद्ध।
२. संग्राम—रण।
३. डमर—राजकुमार आदि के द्वारा उत्पन्न उपद्रव।
४. कलि—सामान्य लड़ाई, मानसिक क्षोभ।
५. कलह—वाचिक लड़ाई।

सम्मद्दिट्ठि (सम्यग्दृष्टि)

ये सम्यक्त्व सामायिक के एकार्थक हैं। ये सम्यक्त्व की विविध अवस्थाओं के द्योतक हैं—

सम्यग्दृष्टि—अविपरीत प्रशस्त दृष्टि।
अमोह—अवितथ आग्रह।
शोधि—मिथ्यात्व का अपनयन।

सद्भावदर्शन—जिन-प्रवचन की उपलब्धि।
बोधि—परमार्थ का बोध।
अविपर्यय—तत्त्व का निश्चय।
सुदृष्टि—प्रशस्त दृष्टि।[१]

सागारिय (सागारिक)

सागारिक का अर्थ है—गृहस्थ। वह साधुओं को शय्या/वसति का दान करता है, अत: वह शय्यातर है। ये सारे शब्द मुनि को वसति का दान करने के कारण शय्यातर के वाचक हैं।

सामायिक (सामायिक)

सामायिक का अर्थ है—वह प्रवृत्ति जिसमें समता का लाभ होता है। समता, प्रशस्तता, शांति, सुख, अनवद्यता और पवित्रता—ये सारे शब्द सामायिक की निष्पत्तियां हैं, अत: कारण में कार्य का उपचार कर इनको भी सामायिक का पर्याय मान लिया गया है। यद्यपि ये शब्द पुनरुक्त जैसे लगते हैं किन्तु यहां पुनरुक्ति दोष नहीं है।

सामायिक—समता की विविध अवस्थाओं के आधार पर इनको एकार्थक माना गया है।
सामायिक—जिसमें सम-मध्यस्थभाव की उपलब्धि होती है।
समयिक—सब जीवों के प्रति सम्यक्-दयापूर्ण प्रवर्त्तन।
सम्यग्वाद—रागद्वेष मुक्त होकर यथार्थ कथन करना।
समास—जीव का संसार-समुद्र से पार होना अथवा कर्मों का सम्यक् क्षेपण।
संक्षेप—महान् अर्थ का अल्पाक्षर में कथन जैसे यह सामायिक द्वादशांगी का सार है।
अनवद्य—पापशून्य प्रक्रिया।
परिज्ञा—पाप के परित्याग का सम्पूर्ण ज्ञान।
प्रत्याख्यान—गुरु-साक्षी से हेय प्रवृत्ति से निवृत्ति।[२]

सिक्खिय (शिक्षित)

'सिक्खिय' आदि शब्द ज्ञानप्राप्ति की क्रमिक भूमिकाओं के द्योतक

---

१. आवहाटी पृ. २४२, २४३।
२. आवहाटी १ पृ. २४३।

हैं। इनकी अर्थ-परम्परा इस प्रकार है—

१. शिक्षित—शिक्षा-प्राप्ति की मान्य अवस्था में आदि से अन्त तक पढ़ना।

२. स्थित—पढ़े हुए ज्ञान का अविस्मरण, सतत स्मृति और आचरण।

३. जित—ज्ञान का निरन्तर परावर्तन कर उसे अत्यन्त परिचित कर लेना।

४. मित—पठित ज्ञान या ग्रंथ का श्लोक, पद, वर्ण, मात्रा आदि का विस्तार से अनुस्मरण।

५. परिजित—पठित का क्रम से या व्युत्क्रम से परावर्तन करने की क्षमता।[1] अथवा पूछे जाने पर क्रम या व्युत्क्रम से तत्काल बता देना।

सिग्घ (शीघ्र)

शीघ्र आदि सारे शब्द शीघ्रता की विशेष अवस्थाओं के द्योतक हैं।[2] देखें—'उक्किट्ठ' का टिप्पण।

सिद्ध (सिद्ध)

सिद्धि का अर्थ है—लक्ष्य प्राप्ति। जो लक्ष्य प्राप्त कर लेता है, वह सिद्ध है। सिद्ध के एकार्थक शब्द लक्ष्यप्राप्ति की ही विभिन्न अवस्थाओं के वाचक हैं। कुछ शब्दों की अर्थवत्ता इस प्रकार है—

१. सिद्ध—ऋद्धियों से युक्त।

२. परंपरगत—जो उत्कृष्ट-उत्कृष्ट स्थिति को प्राप्त हो गये हैं।

३. असंग—सभी बन्धनों से मुक्त।

४. अशरीरकृत—अशरीरी।

५. निष्प्रयोग—प्रवृत्ति रहित।

६. बुद्ध—केवल ज्ञान सम्पन्न।

७. मुक्त—कर्मबन्धन से मुक्त।

८. परिनिर्वृत—कर्मकृत विकारों से वियुक्त होने से शान्त।

सीतीभूत (शीतीभूत)

कषायों के उपशमन के अर्थ में ये सभी शब्द एकार्थक हैं।[3]

शीतीभूत—कषायाग्नि का उपशमन।

परिनिर्वृत—कषाय की ज्वाला को शांत करना।

---

१. विभामहेटी पृ. ३४६।

२. (क) ज्ञाटी प. ९१ : शीघ्रादीनि एकार्थिकानि शीघ्रतातिशयख्यापनार्थानि।

(ख) भटी प. ९९६ : शीघ्रमित्यादीन्येकार्थानि पदानि औत्सुक्योत्कर्षप्रतिपादनपराणि।

३. सूटी प. १५० : एकार्थिकानि वैतानीति।

उपशांत—राग-द्वेष की अग्नि का उपशमन।

प्रह्लादित—कषाय के परिताप का उपशमन कर शांत रहना।

सीलमंत (शीलमद्)

व्रती व्यक्ति के अर्थ में इन तीनों शब्दों का उल्लेख है। लेकिन इनका अर्थभेद इस प्रकार है—

१. शील—चारित्र।

२. गुण—ज्ञान।

३. व्रत—महाव्रत, गुणव्रत आदि।[१]

सुक्क (शुष्क)

'सुक्क' शब्द के पर्याय में ६ शब्दों का उल्लेख है। ये सभी शब्द कृश व्यक्ति की विभिन्न पर्यायों के द्योतक होने पर भी समवेत रूप से समान अर्थ को व्यक्त करते हैं। कुछ शब्दों की अर्थ-परम्परा इस प्रकार है—

शुष्क—खून की कमी से शुष्क आभा वाला।

भुक्ख—भोजन की कमी से दुर्बल। यह देशी शब्द है।

निर्मांस—मांस की कमी से कमजोर।

किटिकिटिकाभूत—मांस क्षय से उठने-बैठने में हड्डियों का चरमराना।

अस्थिचर्मावनद्ध—केवल हड्डियों का ढांचा वाला।

धमनिसंतत—शरीर में केवल नाड़ियों का जाल मात्र दिखाई देना। यह शब्द तपस्वी के विशेषण के रूप में बहुलता से प्रयुक्त होता है।

सुत्त (सूत्र)

सुत्त शब्द के दो अर्थ हैं—ज्ञान और आगम। यह समवेत रूप में शास्त्र या आगम का वाचक है।[२] इन शब्दों की अर्थ-परम्परा इस प्रकार है—

१. श्रुत—गुरु से सुना हुआ ज्ञान।

२. सूत्र—मूल आगम वाक्य।

३. ग्रन्थ—ग्रंथ रूप में ग्रथित।

४. सिद्धान्त—तथ्य का अन्त तक निर्वाह करने वाला।

---

१. उशांटी प. ३८५।

२. अनुद्वामटी प. ३४, ३५ एकार्थिकानि तत्त्वतः एकार्थविषयाणि नानाघोषाणि पृथग्भिन्नोदात्तादि-स्वराणि नानाव्यञ्जनानि पृथग्भिन्नाक्षराणि नामधेयानि पर्यायध्वनिरूपाणि भवन्ति।

५. शासन—धर्म की अनुशासना देने वाला।
६. आज्ञावचन—तीर्थंकर या केवली द्वारा प्रतिपादित वाक्य।
७. उपदेश—हित-अहित का विवेक देने वाला।
८. प्रज्ञापन—तत्त्व का यथार्थ बोध देने वाला।
९. आगम—आचार्य-परम्परा से प्राप्त।

सुद्ध (शुद्ध)

'सुद्ध' आदि सभी शब्द शुभ्रता/निर्मलता के द्योतक हैं। दिवस प्रकाश की दृष्टि से शुभ्र होता है और आकाश नीरज होने से प्रसन्न—शुभ्र होता है। इस प्रकार 'अतिविशुद्ध' वितिमिर, शुचिम आदि सभी शब्द शुभ्रता व निर्मलता की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं के द्योतक हैं।
देखें—'सेत' शब्द का टिप्पण।

सुरा (सुरा)

सुरा, मेरक आदि मादक रस मदिरा के ही विभिन्न प्रकार हैं, जैसे—
सुरा—पिष्ट आदि द्रव्य से निष्पन्न मदिरा।
मेरक—सुरा को पुनः सन्धान करके जो सुरा तैयार की जाती है।
मादक रस—इसके अन्तर्गत सभी मादक रस आते हैं।[1]

सुसील (सुशील)

देखें—'सीलमंत' और 'निस्सील' शब्द का टिप्पण।

सेज्जा (शय्या)

सेज्जा शब्द के पर्याय में नौ शब्दों का उल्लेख है। ये सभी शब्द बैठने अथवा सोने के भिन्न-भिन्न आकार के आसनों के द्योतक हैं। लेकिन जातिगत समानता से इन्हें पर्यायवाची मान लिया है। इनमें कुछ शब्द विशिष्ट अर्थवत्ता के संवाहक हैं, जैसे—
१. शय्या—शरीर प्रमाण बिछौना।
२. खट्वा—नीवार आदि से निर्मित पलंग।
३. वृषी—तापसों का कुश आदि से बना आसन।
४. आसंदी—कुर्सी।

---

१. दशहाटी प. १८८।

५. पेढिका—काष्ठ निर्मित बैठने का बाजौट।
६. महिशाखा—भूमी का वह साफ-सुथरा भाग, जो बैठने के काम आता है।
७. सिला—शिला/पत्थर से निर्मित आसन।
८. फलक—लेटने का पट्ट अथवा पीढा।
९. इट्टका—ईंट से निर्मित आसन।

सेत (श्वेत)

देखें—**'सुद्ध'** शब्द का टिप्पण।

स्वर् (स्वर्)

स्वर्ग के बोधक यहां छह शब्दों का उल्लेख है। इनमें कुछ शब्दों का आशय इस प्रकार है—

जिसके सुखों का वर्णन किया जाता है, वह स्वर्ग है। वह देवताओं का निवासस्थान होने से सुरसद्म तथा त्रिदशावास कहलाता है। तीसरा लोक होने के कारण त्रिविष्टप तथा त्रिदिव भी स्वर्ग का प्रसिद्ध नाम हैं।

हंता (हत्वा)

हिंसा की उत्तरोत्तर भूमिकाओं का वर्णन प्रस्तुत एकार्थक में हुआ है। लेकिन समवेत रूप में सभी शब्द एक ही अर्थ को व्यक्त करते हैं—

हनन—लकड़ी आदि से मारना।
छेदन—लोढे आदि से दो टुकड़े करना।
भेदन—शूल आदि से छिन्न-भिन्न करना।
लोपन—शरीर के अवयव का लोप करना।
विलोपन—त्वचा उधेड़ना।
अपद्रावण—प्राण-वियोजन करना।

हक्कार (हक्कार)

देखें—**'रोयमाणी'** शब्द का टिप्पण।

हट्ठचित्त (हृष्टचित्त)

हृष्टचित्त—आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता अथवा बाहर से पुलकित होना।
तुष्टचित्त—संतोष से उत्पन्न खुशी, आन्तरिक प्रसन्नता।[१]
नन्दित—समृद्धि से प्राप्त प्रसन्नता।

---

१. उशांटी प. ४४१ : हृष्टा: बहि: पुलकादिमन्त:, तुष्टा आन्तरिकप्रीतिभाज:।

प्रीतिमन—प्रीतियुक्त प्रसन्नता।
परमसौमनस्यिक—परम प्रसन्न मन वाला।
हर्षवशविसर्पद्‌हृदय—हर्ष से उत्फुल्ल हृदय वाला।

मानसिक स्थिति की प्रसन्नता में तरतमता होने पर भी टीकाकार ने इनको एकार्थक माना है।[1]

हत्थिक (हास्तिक)

अंगविज्जा में 'हत्थिक' शब्द के पर्याय में ५ शब्दों का उल्लेख है। ये पांचों शब्द कटक—कङ्गन के बोधक हैं। कुछ शब्दों का अर्थबोध इस प्रकार है—
हास्तिक, हत्थिक—हाथ में पहना जाने वाला।
चक्रकमिथुनक—गोलाकार जोड़ा।
कंगण—हाथ को सुशोभित करने वाला आभूषण।

हय (हत)

ये सभी शब्द प्रहार करने के अर्थ में एकार्थक हैं लेकिन इनका अवस्थाकृत भेद इस प्रकार है—

हत—शस्त्र आदि से घात करना।
मथित—भूमि पर पछाड़ना।
घात—मर्मस्थानों पर प्रहार करना।
विपतित—भूमि पर डालकर घसीटना।

हयतेय (हततेज)

'हयतेय' आदि पांचों शब्द विनष्ट तेज वाले व्यक्ति के विशेषण के रूप में एकार्थक हैं।[2] इनकी अर्थ-परम्परा इस प्रकार है—

हततेज—आवरण आदि के कारण तेज रहित होना।
नष्टतेज—स्वत: ही तेज का नष्ट होना।
भ्रष्टतेज—अव्यक्त तेज, जलने आदि से तेज समाप्त होना।
लुप्ततेज—तेज का लुप्त हो जाना।
विनष्टतेज—तेज का सर्वथा विनाश।

---

१. (क) औपटी पृ. ४३ : सर्वाणि चैतानि हृष्टादिपदानि प्राय: एकार्थानि।
(ख) भटी प. ११९ : एकार्थिकानि वैतानि प्रमोदप्रकर्षप्रतिपादनार्थानीति।
२. भटी पृ. १२५७ : एकार्था वैते शब्दा:।

हिय (हित)

हित आदि शब्द प्रतिपाद्य विषय पर बल देने वाले हैं। साधारणतया इन शब्दों में हितकारी अर्थ ही ध्वनित होता है लेकिन प्रत्येक शब्द की अर्थभिन्नता इस प्रकार है—

हित—अपाय रहित कल्याणकारी।

शुभ—पुण्यकर।

क्षम—औचित्यकर।

पथ्य—दु:ख से परित्राण।

नि:श्रेयस—निश्चित कल्याणकर।

आनुगमिक—भविष्य में निरन्तर कल्याणकारी।

हीलणा (हीलना)

'हीलणा' आदि शब्द तिरस्कार करने के अर्थ में प्रयुक्त हैं। अभिव्यञ्जना में अर्थभेद होते हुए भी ये समान अर्थ में प्रयुक्त हैं—

हीलना—जाति आदि से अवहेलना करना अथवा जाति से बहिष्कृत करना।

निंदना—मन से दूसरों के समक्ष कुत्सा करना।

खिंसना—अपने समक्ष अपमानजनक शब्दों से कुत्सा करना। यह देशी धातु है।

तर्जना—तर्जनी अंगुली दिखाते हुए डांटना।

ताड़ना—थप्पड़ मारना।

गर्हणा—गर्हणीय लोगों के सामने निंदा करना।[१]

हीलिज्जमाणी

देखें—'हीलणा' शब्द का टिप्पण।

हेउगोवएस (हेतुकोपदेश)

जो अवबोध हेतु/कारण से होता है, वह हेतुकोपदेश संज्ञा कहलाती हैं। विकलेन्द्रिय और असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीव हित की प्रवृत्ति और अहित की निवृत्ति इसी संज्ञा से करते हैं। जैसे चींटी गंध के आधार पर वस्तु का ज्ञान कर लेती है। यह प्राय: वार्तमानिकी संज्ञा है।

---

१. औपटी पृ. १९५।